Directorate of Film Festivals

सत्यमेव जयते
Government of India

राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार
National Film Awards

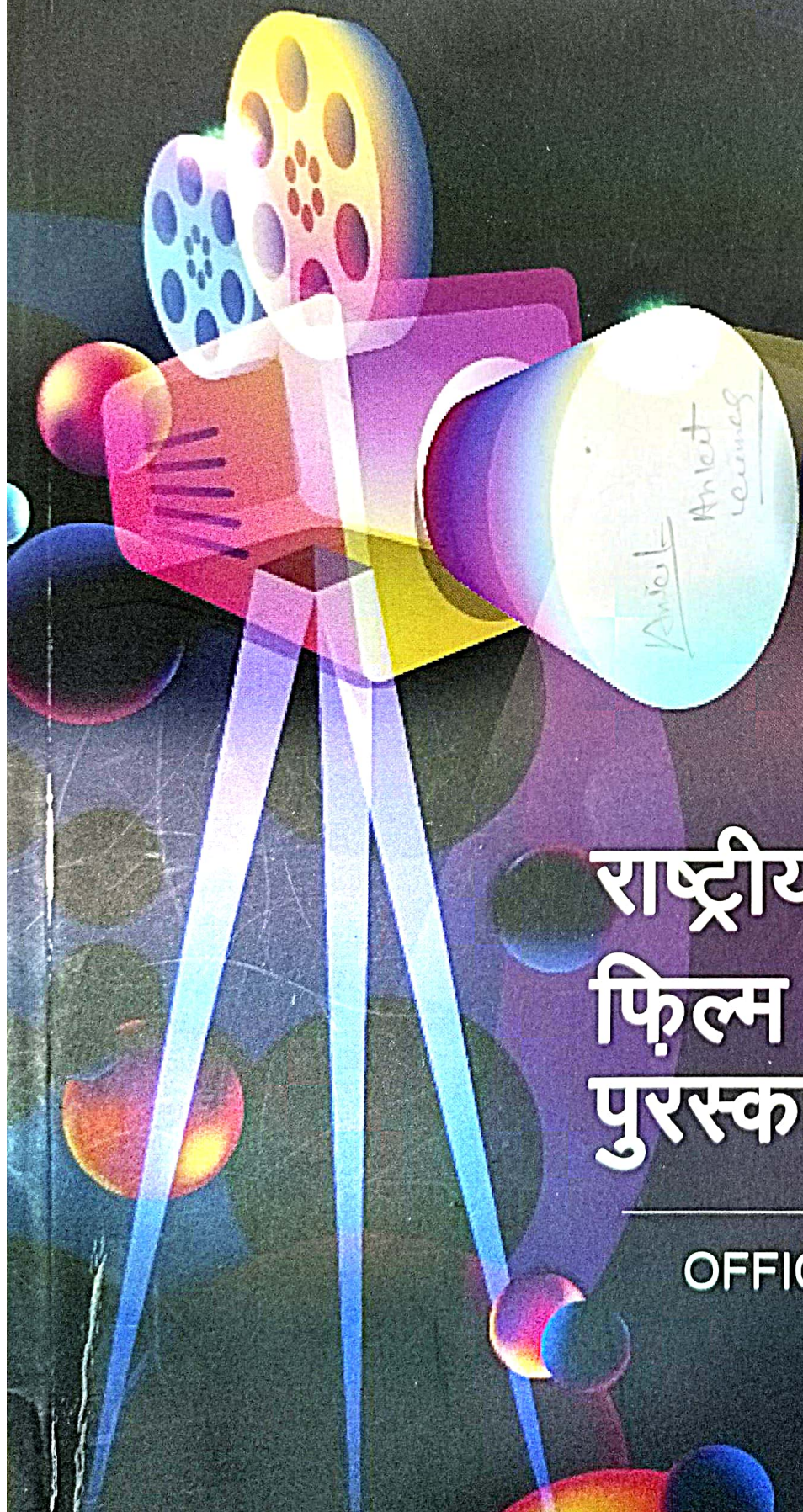

65TH

2017

राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार | National Film Awards

OFFICIAL CATALOGUE

आधिकारिक विवरणिका

THE OFFICIAL CATALOGUE

चैतन्य प्रसाद, अतिरिक्त महानिदेशक, फिल्म समारोह निदेशालय
Chaitanya Prasad, Additional Director General, Directorate of Film Festivals

इन्द्राणी बोस, उप–निदेशक, फिल्म समारोह निदेशालय
Indrani Bose, Deputy Director, Directorate of Film Festivals

मुकेश चंद, निजी सचिव एवं नोडल ऑफिसर, राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार
Mukesh Chand, Private Secretary & Nodal Officer, National Film Awards

अंशुमन शेखर, प्रोग्रामर, राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार
Anshuman Shekhar, Programmer, National Film Awards

संपादक: शिव सन्नी (अंग्रेजी), मोहित पारीक (हिन्दी)
Editors: Shiv Sunny (English), Mohit Pareek (Hindi)

संपादक सहायक: अरविंद कुमार, अवर श्रेणी लिपिक, फिल्म प्रभाग
Editorial Assistance: Arvind Kumar, Lower Division Clerk, Films Division

सचिन कुमार, अवर श्रेणी लिपिक, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
Sachin Kumar, Lower Division Clerk, Ministry of Information & Broadcasting

संयोजनकर्ता: रजत अग्रवाल, सुरेन्द्र कुमार
Co-ordination: Rajat Aggarwal, Surender Kumar

कला निर्देशक: पवन यादव
Creative Director: Pawan Yadav

ज्युरी सहायक: गीतेश कुमार
Jury Assistance: Geetesh Kumar

प्रकाशक: वि. दृ. प्र. नि., सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
Publisher: DAVP, Ministry of Information & Broadcasting

मुद्रक:
Printed at:

© Directorate of Film Festivals, Ministry of Information & Broadcasting, Government of India except the film related material.

65TH

विषय सूची
CONTENTS

दादासाहब फ़ाल्के पुरस्कार
DADASAHEB PHALKE AWARD

दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार के विषय में	10	About Dadasaheb Phalke Award
दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार : अब तक सम्मानित	12	Dadasaheb Phalke Award Past Recipients
पुरस्कार चयन समिति	16	Award Committee
विनोद खन्नाः प्रोफ़ाइल	21	Vinod Khanna: Profile
निर्णायक मंडल (फ़ीचर फ़िल्म)	24	Feature Film Jury
निर्णायक मंडल (गैर–फ़ीचर फ़िल्म)	32	Non-Feature Film Jury
निर्णायक मंडल (सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ लेखन)	36	Best Writing on Cinema Jury
प्रादेशिक निर्णायक मंडल (फ़ीचर फ़िल्म)	38	Regional Feature Film Jury
फ़िल्म अनुकूल प्रदेश निर्णायक समिति	43	Film Friendly State Jury Committee

फ़ीचर फ़िल्में
FEATURE FILMS

फ़ीचर फ़िल्में . एक नज़र में	47	Feature Films - At a Glance
सर्वश्रेष्ठ फ़ीचर फ़िल्म	49	Best Feature Film
इन्दिरा गांधी पुरस्कारः निर्देशक की पहली सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म	50	Indira Gandhi Award for Best Debut Film of a Director
लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म	51	Best Popular Film Providing Wholesome Entertainment
राष्ट्रीय सद्भाव और एकता के लिए सर्वश्रेष्ठ फ़ीचर फ़िल्म का नर्गिस दत्त पुरस्कार	52	Nargis Dutt Award for Best Feature Film on National Integration
सामाजिक मुद्दों पर सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म	53	Best Film on Social Issues
पर्यावरण संरक्षण/परिरक्षण पर सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म	54	Best Film on Environment Conservation / Preservation
सर्वश्रेष्ठ बाल फ़िल्म	55	Best Children's Film
सर्वश्रेष्ठ निर्देशन	56	Best Direction
सर्वश्रेष्ठ अभिनेता	57	Best Actor
सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री	58	Best Actress
सर्वश्रेष्ठ सह अभिनेता	59	Best Supporting Actor
सर्वश्रेष्ठ सह अभिनेत्री	60	Best Supporting Actress
सर्वश्रेष्ठ बाल कलाकार	61	Best Child Artist
सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायक	62	Best Male Playback Singer
सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायिका	63	Best Female Playback Singer
सर्वश्रेष्ठ छायांकन	64	Best Cinematography
सर्वश्रेष्ठ पटकथा (मौलिक)	65	Best Screenplay (Original)
सर्वश्रेष्ठ पटकथा (रूपांतरित)	66	Best Screenplay (Adapted)
सर्वश्रेष्ठ पटकथा (संवाद)	67	Best Screenplay (Dialogue)
सर्वश्रेष्ठ ध्वन्यांकन (लोकेशन साउंड)	68	Best Audiography (Location Sound)
सर्वश्रेष्ठ ध्वन्यांकन (साउंड डिज़ाइन)	69	Best Audiography (Sound Design)
सर्वश्रेष्ठ ध्वन्यांकन (फ़ाइनल साउंड मिक्सिंग)	70	Best Audiography (Re-recording of Final Mixed Track)

विषय सूची
CONTENTS

फ़ीचर फ़िल्में
FEATURE FILMS

सर्वश्रेष्ठ सम्पादन	071	Best Editing
सर्वश्रेष्ठ प्रोडक्शन डिज़ाइन	072	Best Production Design
सर्वश्रेष्ठ वेशभूषा	073	Best Costume Design
सर्वश्रेष्ठ रूपसज्जा	074	Best Make-up Artist
सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशन (गीत)	075	Best Music Direction (Songs)
सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशन (पार्श्व संगीत)	076	Best Music Direction (Background Score)
सर्वश्रेष्ठ गीत	077	Best Lyrics
निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार	078	Special Jury Award
सर्वश्रेष्ठ स्पेशल इफैक्ट	079	Best Special Effect
सर्वश्रेष्ठ नृत्य संयोजन	080	Best Choreography
सर्वोत्तम एक्शन निर्देशन	081	Best Action Direction
सर्वश्रेष्ठ असमिया फ़िल्म	82	Best Assamese Film
सर्वश्रेष्ठ बांग्ला फ़िल्म	83	Best Bengali Film
सर्वश्रेष्ठ हिन्दी फ़िल्म	84	Best Hindi Film
सर्वश्रेष्ठ कन्नड़ फ़िल्म	85	Best Kannada Film
सर्वश्रेष्ठ मलयालम फ़िल्म	86	Best Malayalam Film
सर्वश्रेष्ठ मराठी फ़िल्म	87	Best Marathi Film
सर्वश्रेष्ठ ओड़िया फ़िल्म	88	Best Odiya Film
सर्वश्रेष्ठ तमिल फ़िल्म	89	Best Tamil Film
सर्वश्रेष्ठ तेलुगू फ़िल्म	90	Best Telugu Film
सर्वश्रेष्ठ गुजराती फ़िल्म	91	Best Gujarati Film
सर्वश्रेष्ठ तुलू फ़िल्म	92	Best Tulu Film
सर्वश्रेष्ठ जसारी फ़िल्म	93	Best Jasari Film
सर्वश्रेष्ठ लद्दाखी फ़िल्म	94	Best Ladakhi Film
विशेष उल्लेख	95	Special Mention

विषय सूची
CONTENTS

गैर फ़ीचर फ़िल्में
NON-FEATURE FILMS

गैर फ़ीचर फ़िल्में – एक नज़र में	102	Non-Feature Films - At a Glance
निर्देशक की पहली सर्वश्रेष्ठ गैर फ़ीचर फ़िल्म	103	Best Debut Non-Feature Film of a Director
सर्वश्रेष्ठ मानवशास्त्रीय / मानवजातीय फ़िल्म	104	Best Anthropological/Ethnographic Film
सर्वश्रेष्ठ जीवनी / ऐतिहासिक पुनः निर्माण संकलन फ़िल्म	106	Best Biographical/Historical Reconstruction Film
सर्वश्रेष्ठ कला / सांस्कृतिक फ़िल्म	108	Best Arts and Culture Film
सर्वश्रेष्ठ प्रोत्साहन देने वाली फ़िल्म	109	Best Promotional Film
सर्वश्रेष्ठ पर्यावरण फ़िल्म	110	Best Environment Film
सामाजिक मुद्दों पर सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म	111	Best Film on Social Issues
सर्वश्रेष्ठ शैक्षणिक फ़िल्म	113	Best Educational Film
सर्वश्रेष्ठ गवेषणा / साहसिक फ़िल्म	114	Best Exploration/Adventure Film
सर्वश्रेष्ठ खोजपरक फ़िल्म	115	Best Investigative Film
सर्वश्रेष्ठ एनिमेशन फ़िल्म	116	Best Animation Film
निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार	118	Special Jury Award
सर्वश्रेष्ठ लघु कल्पित फ़िल्म	120	Best Short Fiction Film
पारिवारिक मूल्यों पर सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म	121	Best Film on Family Values
सर्वेश्रेष्ठ निर्देशन	122	Best Direction
सर्वश्रेष्ठ छायांकन	123	Best Cinematography
सर्वश्रेष्ठ ध्वनि आलेखन	125	Best Audiography
सर्वोत्तम ऑन–लोकेशन साउंड	126	Best On-Location Sound
सर्वश्रेष्ठ संपादन	127	Best Editing
सर्वश्रेष्ठ संगीत आलेखन	128	Best Music
सर्वश्रेष्ठ प्रकथन / वॉइस ओवर	129	Best Narration/Voice Over
विशेष उल्लेख	130	Special Mention

सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ लेखन
BEST WRITING ON CINEMA

सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ पुस्तक	135	Best Book on Cinema
सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म समीक्षक	136	Best Film Critic
विशेष उल्लेख	137	Special Mention

फ़िल्म अनुकूल प्रदेश पुरस्कार
FILM FRIENDLY STATE AWARD

सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म अनुकूल राज्य	140	Most Film Friendly State
विशेष उल्लेख		Special Mention

दादासाहब फ़ाल्के पुरस्कार
DADASAHEB PHALKE AWARD

65TH

राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार 2017

National Film Awards 2017

दादासाहेब फाल्के पुरस्कार भारतीय सिनेमा के संवर्धन और विकास में अप्रतिम योगदान के लिए किसी एक फिल्मी व्यक्तित्व को दिया जाता है। इसके अंतर्गत पुरस्कार स्वरूप स्वर्ण कमल, ₹10,00,000/– प्रशस्ति पत्र तथा शॉल प्रदान किया जाता है। भारत सरकार ने वर्ष 1969 में भारतीय सिनेमा के जनक, धुंडिराज गोविन्द फाल्के के सम्मान में इसे स्थापित किया था।

The Dadasaheb Phalke Award is given to a film personality for his/her outstanding contribution to the growth and development of Indian Cinema. The Award comprises a Swarna Kamal, a cash Prize of ₹10,00,000/- (Rupees Ten Lakh) and a shawl. The award was instituted in 1969 by the government in honour of the father of Indian Cinema, Dhundiraj Govind Phalke.

दादासाहब फ़ाल्के पुरस्कार
DADASAHEB PHALKE AWARD

भारतीय सिनेमा के जनक धुंडिराज गोविंद फाल्के या दादासाहेब फाल्के (1870–1944) ने 1913 में भारत की पहली फ़ीचर फिल्म *राजा हरिश्चंद्र* के द्वारा एक विलक्षण नवोन्मेषी फिल्मी जीवन की शुरुआत की। निर्माता, निर्देशक और पटकथा लेखक के रूप में उन्होंने अपनी कंपनी हिंदुस्तान फिल्म्स के द्वारा सिर्फ 15 सालों में 95 फ़ीचर फिल्मों और 26 लघु फिल्मों का निर्माण किया। उनकी महत्त्वपूर्ण फिल्मों में *मोहिनी भस्मासुर* (1913), *सत्यवान सावित्री* (1914), *लंका दहन* (1917), *श्री कृष्ण जन्म* (1918) और *कालिया मर्दन* (1919) शामिल हैं।

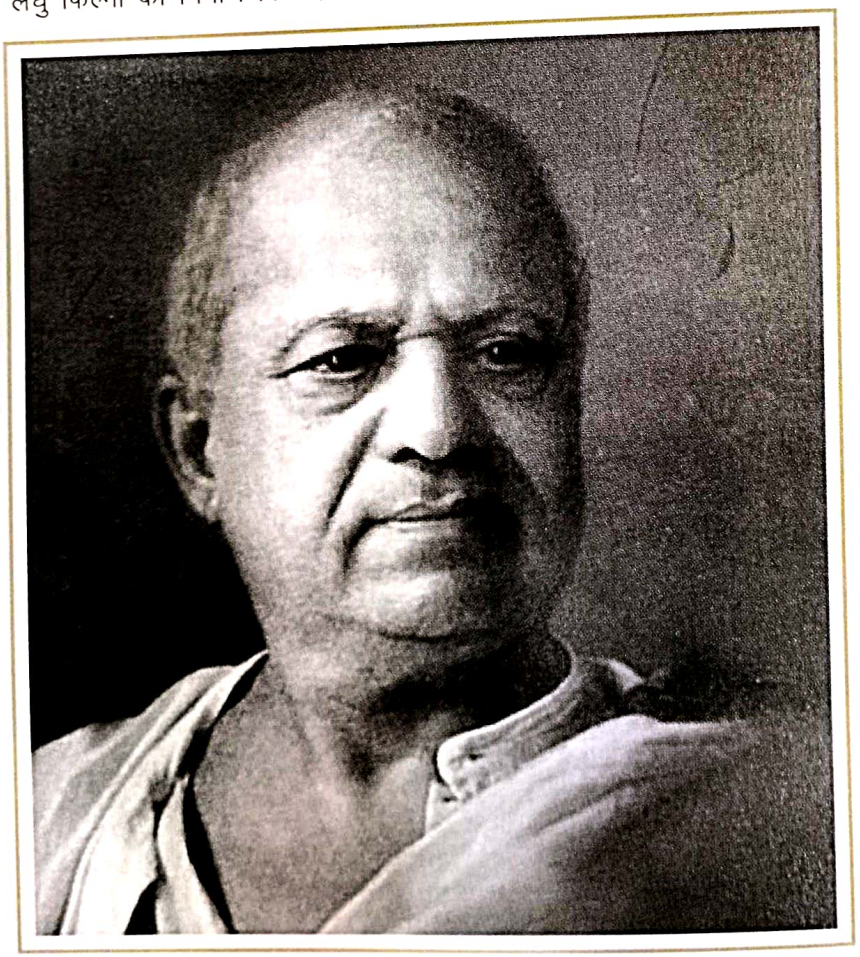

तेजी से बदलता कैरियर, हठी स्वभाव और विदेश यात्राएं, 20वीं सदी के उषाकाल में एक पारिवारिक व्यक्ति के बजाए उन्हें 21वीं सदी के किशोर के ज्यादा नजदीक ले आते हैं। मुद्रण व्यवसाय में प्रवेश करने से पहले उन्होंने फोटोग्राफी स्टुडियो से अपना कार्य शुरू किया। फिर कला की शिक्षा प्राप्त की और वे एक जादूगर और मंच कलाकार भी बने। चित्रकार राजा रवि वर्मा से प्रेरित होकर उन्होंने लीथोग्राफी और ओलियोग्राफी में दक्षता हासिल की। बाद में उन्होंने अपना प्रिंटिंग प्रेस स्थापित किया। आधुनिकतम प्रौद्योगिकी और मशीनरी के बारे में सीखने के लिए उन्होंने जर्मनी की यात्रा भी की। हालांकि अपने भागीदार के साथ विवाद होने पर उन्होंने मुद्रण व्यवसाय छोड़ दिया। एक मूक फिल्म *दि लाइफ ऑफ क्राइस्ट* से गहरे रूप में प्रभावित होने पर उन्होंने फिल्म बनाने का निर्णय लिया। उन्होंने लंदन से एक कैमरा, प्रिंटिंग मशीन, परफ़ोरेटर और कच्चा माल खरीदा। उन्होंने वहीं पर फिल्म बनाने का क्रैश कोर्स भी किया। इसके बाद उन्होंने भारत की पहली फ़ीचर फ़िल्म *राजा हरिश्चंद्र* बनायी। इस फ़िल्म को 1913 में बंबई के कोरोनेशन सिनेमा में प्रदर्शित किया गया और उसे अपार सफलता मिली। प्रथम विश्वयुद्ध के कारण भयंकर वित्तीय और कच्चे माल का संकट पैदा हो गया था, फिर भी उनका हौसला पस्त नहीं हुआ। उन्होंने लघु, वृत्तचित्र, शिक्षाप्रद, ऐनिमेशन और हास्य फ़िल्में बनायीं। जल्दी ही उन्होंने पाँच व्यावसायिकों की भागीदारी में एक फ़िल्म कंपनी हिंदुस्तान फ़िल्म्स की स्थापना की, जिसमें एक स्टूडियो था और प्रशिक्षित टेक्नीशियन और अभिनेता भी थे। एक बार फिर वे अपने भागीदारों के साथ संकट में फंस गये और उन्होंने कंपनी छोड़ दी।

फाल्के ने कुछ और फ़िल्मों का निर्देशन किया लेकिन वे अब अवरोध महसूस करने लगे थे। 1931 के बाद उनकी मूक फ़िल्में सवाक फ़िल्मों के साथ प्रतिद्वंद्विता नहीं कर पा रही थीं। उनकी अंतिम फ़िल्मों में *सेतु बंधन* (1932) और सवाक फिल्म *गंगावतरण* (1937) थीं। 1944 में उनका देहावसान हो गया। दादा साहब फाल्के ने फिल्मों की एक महान परंपरा का सूत्रपात किया। उन्होंने कई विपत्तियों और निजी त्रासदियों को झेला और ऐसे भारतीय फ़िल्म उद्योग की बुनियाद रखी जो आज विश्व में सर्वाधिक सफल और वैविध्यपूर्ण फ़िल्म उद्योग है।

दादासाहब फ़ाल्के पुरस्कार
DADASAHEB PHALKE AWARD

Dhundiraj Govind Phalke or Dadasaheb Phalke (1870-1944) is regarded as the father of Indian cinema. He directed India's first feature film, *Raja Harishchandra*, in 1913, flagging off a remarkably inventive career. A producer, director and screenwriter, he is believed to have made a significant number of the 95 feature films and 26 short films that his company Hindustan Films made in barely 15 years. His amazing body of films include *Mohini Bhasmasur* (1913), *Satyavan Savitri* (1914), *Lanka Dahan* (1917), *Shri Krishna Janma* (1918) and *Kaliya Mardan* (1919).

His rapid career switches, headstrong nature and trips abroad, more closely characterise a teenager in the 21st century, than a family man at the dawn of the 20th century. Starting out in a photography studio, he studied art, was a magician and stage performer, before joining the printing business. Inspired by the painter Raja Ravi Varma, Phalke specialised in lithographs and oleographs. Later, he started his own printing press, and even travelled to Germany to learn more about the latest technology and machinery. However, following a dispute with his partners, he quit the printing business. Greatly impressed by a silent film, *The Life of Christ*, he decided to make a film. He sailed for London and bought a camera, printing machine, perforator and raw stock, and even got a crash course in film-making. He soon made *Raja Harishchandra*, on a righteous king who sacrifices his family and kingdom to fulfil a vow and uphold the truth. India's first feature film *Raja Harishchandra* was exhibited at Bombay's Coronation Cinema in 1913, and was a grand success. Undeterred when World War I brought a severe financial and raw stock crunch, he made shorts, documentary features, educational, animation and comic films. Soon he established a film company, Hindustan Films, in partnership with five businessmen, with a studio, and trained technicians and actors. Again he ran into trouble with his partners and quit.

Phalke directed a few more films, but felt constrained. Moreover, his silent films were unable to cope with competition from the talkies after 1931. Among his last films were *Setu Bandhan* (1932) and a talkie, *Gangavataran* (1937). He died in 1944. Dadasaheb Phalke leaves behind a pioneer's legacy, not only of his astonishing films, but a joyous inventiveness, and a resilient, unbowed spirit that weathered many reverses and personal tragedies. Little did he know then that he was laying the foundation for the Indian film industry, today the most prolific and diverse in the world.

पूर्ववर्ती दादासाहब फ़ाल्के पुरस्कार विजेता
DADASAHEB PHALKE AWARD PAST RECIPIENTS

01

देविका रानी रोरिच
Devika Rani Roerich
▪ 1969 ▪

02

बी एन सरकार
B.N. Sircar
▪ 1970 ▪

03

पृथ्वीराज कपूर
Prithviraj Kapoor
▪ 1971 ▪

04

पंकज मल्लिक
Pankaj Mullick
▪ 1972 ▪

05

सुलोचना (रूबी मेयर्स)
Sulochana (Ruby Myers)
▪ 1973 ▪

06

बी एन रेड्डी
B.N. Reddy
▪ 1974 ▪

07

धीरेन गांगुली
Dhiren Ganguly
▪ 1975 ▪

08

कानन देवी
Kanan Devi
▪ 1976 ▪

09

नितिन बोस
Nitin Bose
▪ 1977 ▪

10

आर सी बोराल
R.C. Boral
▪ 1978 ▪

11

सोहराब मोदी
Sohrab Modi
▪ 1979 ▪

12

पी जयराज
P. Jairaj
▪ 1980 ▪

पूर्ववर्ती दादासाहब फ़ाल्के पुरस्कार विजेता
DADASAHEB PHALKE AWARD PAST RECIPIENTS

13

नौशाद अली
Naushad Ali
▪ 1981 ▪

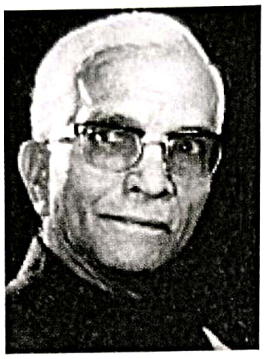

14

एल. वी. प्रसाद
L.V. Prasad
▪ 1982 ▪

15

दुर्गा खोटे
Durga Khote
▪ 1983 ▪

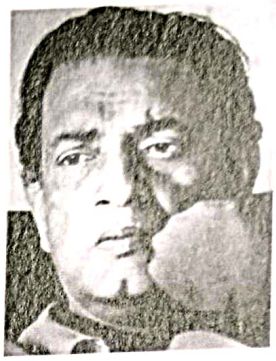

16

सत्यजीत राय
Satyajit Ray
▪ 1984 ▪

17

वी. शांताराम
V. Shantaram
▪ 1985 ▪

18

बी. नागी रेड्डी
B. Nagi Reddy
▪ 1986 ▪

19

राज कपूर
Raj Kapoor
▪ 1987 ▪

20

अशोक कुमार
Ashok Kumar
▪ 1988 ▪

21

लता मंगेशकर
Lata Mangeshkar
▪ 1989 ▪

22

ए. नागेश्वर राव
A. Nageswara Rao
▪ 1990 ▪

23

बी.जी. पेंठारकर
B.G. Pendharkar
▪ 1991 ▪

24

डॉ. भूपेन हजारिका
Dr. Bhupen Hazarika
▪ 1992 ▪

पूर्ववर्ती दादासाहब फ़ाल्के पुरस्कार विजेता
DADASAHEB PHALKE AWARD PAST RECIPIENTS

25

मज़रूह सुल्तानपुरी
Majrooh Sultanpuri
▪ 1993 ▪

26

दिलीप कुमार
Dilip Kumar
▪ 1994 ▪

27

डॉ. राजकुमार
Dr. Rajkumar
▪ 1995 ▪

28

शिवाजी गणेशन
Shivaji Ganesan
▪ 1996 ▪

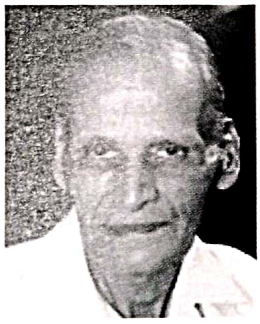

29

कवि प्रदीप
Kavi Pradeep
▪ 1997 ▪

30

बी.आर. चोपड़ा
B.R. Chopra
▪ 1998 ▪

31

ऋषिकेश मुखर्जी
Hrishikesh Mukherjee
▪ 1999 ▪

32

आशा भोंसले
Asha Bhosle
▪ 2000 ▪

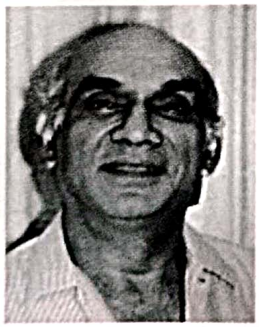

33

यश चोपड़ा
Yash Chopra
▪ 2001 ▪

34

देव आनंद
Dev Anand
▪ 2002 ▪

35

मृणाल सेन
Mrinal Sen
▪ 2003 ▪

36

अडूर गोपालाकृष्णन
Adoor Gopalakrishnan
▪ 2004 ▪

पूर्ववर्ती दादासाहब फ़ाल्के पुरस्कार विजेता
DADASAHEB PHALKE AWARD PAST RECIPIENTS

37

श्याम बेनेगल
Shyam Benegal
▪ 2005 ▪

38

तपन सिन्हा
Tapan Sinha
▪ 2006 ▪

39

मन्ना डे
Manna Dey
▪ 2007 ▪

40

वी.के. मूर्ति
V.K. Murthy
▪ 2008 ▪

41

डी. रामानायडू
D. Ramanaidu
▪ 2009 ▪

42

के. बालाचंदर
K. Balachander
▪ 2010 ▪

43

सौमित्र चटर्जी
Soumitra Chatterjee
▪ 2011 ▪

44

प्राण
Pran
▪ 2012 ▪

45

गुलज़ार
Gulzar
▪ 2013 ▪

45

शशि कपूर
Shashi Kapoor
▪ 2014 ▪

46

मनोज कुमार
Manoj Kumar
▪ 2015 ▪

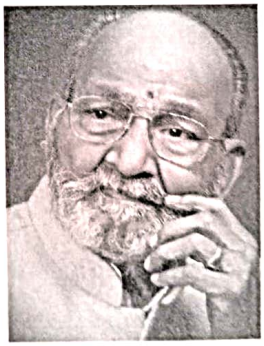

47

के विस्वनाथ
K Viswanath
▪ 2016 ▪

दादासाहब फ़ाल्के पुरस्कार समिति
DADASAHEB PHALKE AWARD COMMITTEE

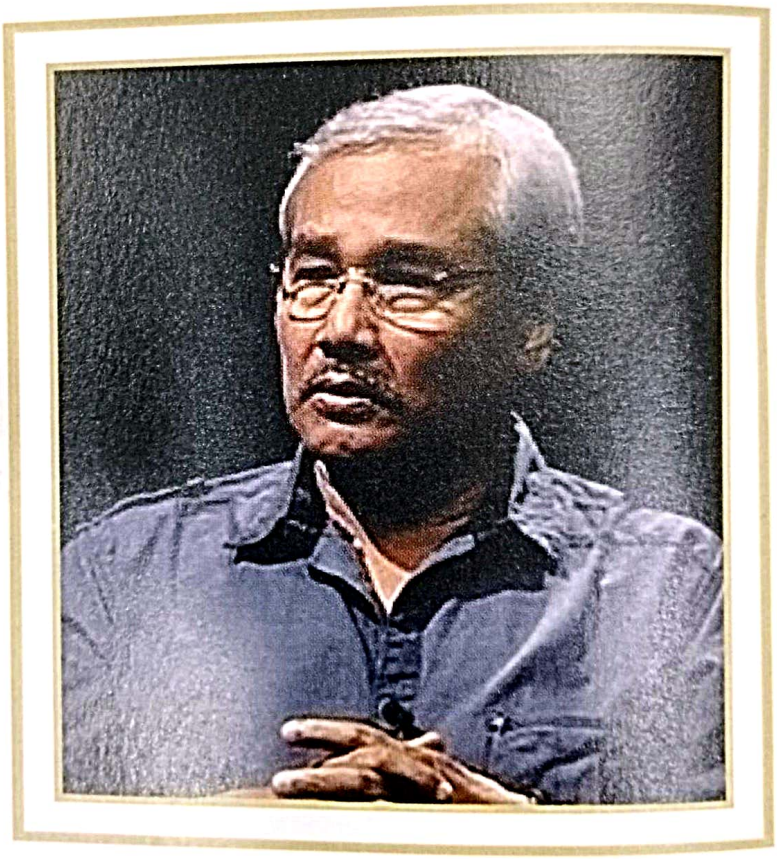

जाहनु बरूआ
Jahnu Barua

Jahnu Barua is a multiple national and international award-winning Indian film director. His notable credits include Maine Gandhi Ko Nahin mara, Xagoroloi Bohu Door, Tora, Baandhon and Ajeyo. His films carry strong human messages based on universal themes. He has won several film awards including 12 National Film Awards and 20 international awards. He is a recipient of Padma Shri (2003) and Padma Bhushan (2015).

जाहनु बरुआ राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार विजेता एक भारतीय फिल्म निर्देशक हैं। उन्होंने कई असमिया और हिंदी फिल्में निर्देशित की है। उन्हें मैंने गाँधी को नही मारा जागोरोलोई बोहू दूर, तोरा, बांधोन और अजेयो जैसी उल्लेखनीय फिल्मों का श्रेय जाता है। उनकी फिल्मों मे सार्वभौमिक विषयों के आधार पर मजबूत मानव संदेश दिया गया है। उन्हें 12 राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार और 20 अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों सहित कई फिल्म पुरस्कार प्राप्त किए हैं। साथ ही उन्हें पद्मश्री (2003) और पद्म भूषण (2015) से सम्मानित किया जा चुका है।

दादासाहब फ़ाल्के पुरस्कार समिति
DADASAHEB PHALKE AWARD COMMITTEE

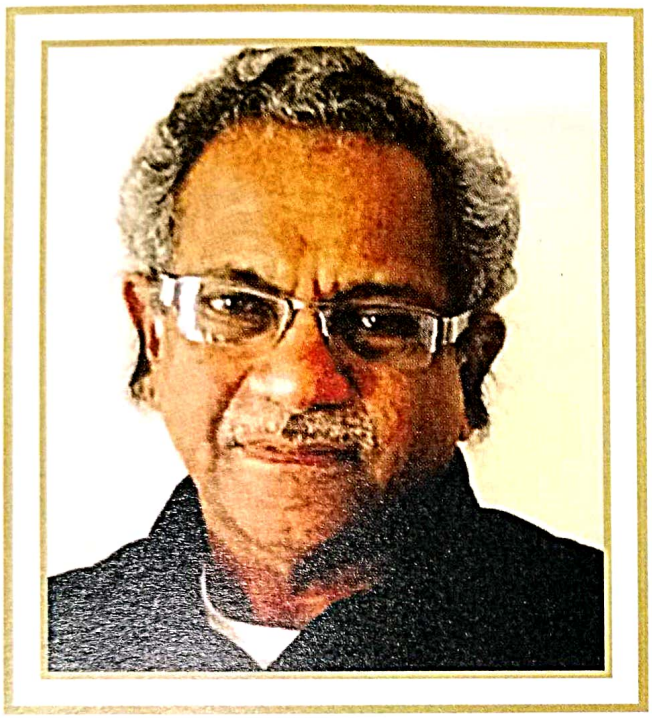

शाजी एन करूण
Shaji N. Karun

Shaji N. Karun is a national award-winning Indian film director and cinematographer. His debut film Piravi (1988) won the camera d'or - mention d'honneur at the 1989 Cannes film festival. He was the premiere chairman of the Kerala State Chalachitra Academy, the first academy for film and TV in India and was also the executive chairman of International Film Festival of Kerala from 1998 to 2001. He is best known for his award-winning films Piravi, Vanaprastham and Kutty Srank. In 2011, he was honoured with the Padma Shri by the Government of India.

शाजी एन करुण एक राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता भारतीय फिल्म निर्देशक और छायाकार हैं। उनकी पहली फिल्म पिरवी (1988) को 1989 के कान्स फिल्म फेस्टिवल में कैमरा डी ऑर – मेंशन डी ऑनर से सम्मानित किया गया था। वे केरल राज्य चलचित्र अकादमी के प्रीमियर चेयरमैन रह चुके हैं, जो भारत में फिल्म और टीवी के लिए पहली अकादमी थीं। साथ ही उन्होंने 1998 से 2001 तक केरल के अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह के कार्यकारी अध्यक्ष के रुप में भी सेवाएं दी है। वे अपनी पुरस्कार विजेता फिल्म पिरवी, वानप्रस्थम और कुट्टी श्रेंक के लिए जाने जाते हैं। वर्ष 2011 में, उन्हें भारत सरकार द्वारा पदमश्री से सम्मानित किया गया था।

उषा किरण खान
Usha Kiran Khan

Dr. Usha Kiran Khan has served as head of the ancient Indian History and Archeology Department at a degree college of Magadha University. She is giving equal contribution to Hindi as well as Maithili literature. His stories have been consistently published in popular literary journals and magazines. He was conferred the Hindi Savvy Award by the National Language Council in 1995, the Mahadevi Verma Award by the Bihar State Language Department in 1998, the Dinkar Award in 2000, the Sahitya Akademi Award by the Government of India, the Kusumanjali Award in 2013, Vidyanivas Mishra Award for Siraj in 2014, and the 2015 Brijkishor Prasad Award has been honored.

डॉ उषाकिरण खान ने मगध विश्वविद्यालय के एक डिग्री कॉलेज में प्राचीन भारतीय इतिहास और पुरातत्व विभाग के प्रमुख के रूप में सेवाएं दी हैं। वह हिंदी के साथ–साथ मैथिली साहित्य में भी समान योगदान दे रही हैं। उन्हें लेखन के लिए कई बार विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया है। उन्हें 1995 में राष्ट्रभाषा परिषद द्वारा हिंदी सेवी पुरस्कार, 1998 में बिहार राजभाषा विभाग द्वारा महादेवी वर्मा पुरस्कार, 2000 में दिनकर पुरस्कार, 2012 में भारत सरकार द्वारा साहित्य अकादमी पुरस्कार, 2013 में कुसुमंजली पुरस्कार, 2014 में सिराजर के लिए विद्यानिवास मिश्रा पुरस्कार और 2015 में बृजकिशोर प्रसाद पुरस्कार द्वारा सम्मानित किया गया है।

दादासाहब फ़ाल्के पुरस्कार समिति
DADASAHEB PHALKE AWARD COMMITTEE

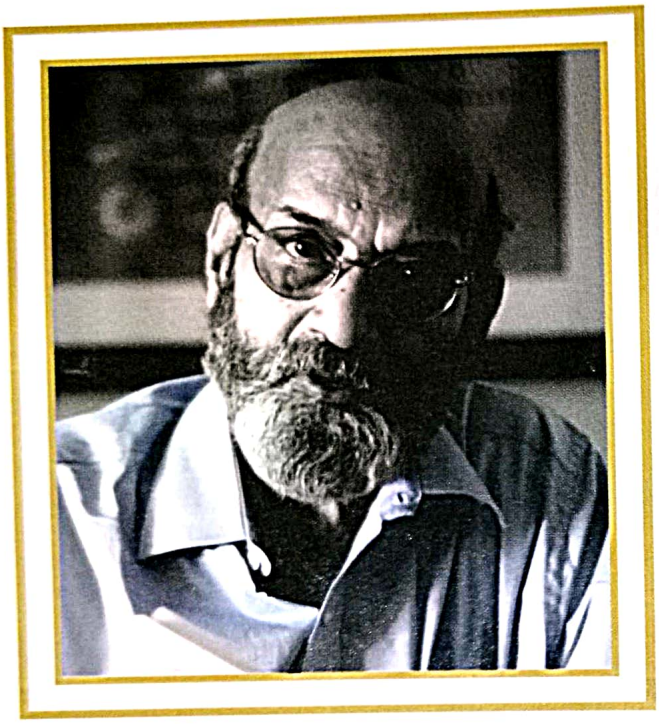

राम गोपाल बजाज
Ram Gopal Bajaj

Ram Gopal Bajaj is a noted Indian theatre director, academician, and a Hindi film actor. He has also been a faculty member and a former director of National School of Drama, New Delhi. He directed numerous plays with the National School of Drama such as "surya ki antim kiran se, surya ki pehli kiran tak " Jai Shankar Prasad's "skand gupta", quaid-e-hayaat and ashadh ka ek din. He was awarded Sangeet Natak Akademi Award in 1996 and the Padma Shri in 2003 for his contribution to theatre. In 2017 he was honoured by Kalidas Samman by the Government of Madhya Pradesh.

राम गोपाल बजाज एक प्रसिद्ध भारतीय रंगमंच के निर्देशक, शिक्षाविद् और एक हिंदी फिल्म अभिनेता हैं। वे नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा, नई दिल्ली के पूर्व शिक्षक और निदेशक रह चुके हैं। उन्होंने एनएसडी के 'सूर्य की अंतिम किरण से, सूर्य की पहली किरण तक', जय शंकर प्रसाद का 'स्कंद गुप्ता', क्वैद–ए–हयात और आषाढ़ का एक दिन के साथ कई नाटकों को निर्देशित किया है। उन्हें 1996 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार और थियेटर में उनके योगदान के लिए 2003 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया था। 2017 में उन्हें मध्य प्रदेश सरकार द्वारा कालीदास सम्मान द्वारा सम्मानित किया गया था।

मनमोहन महापात्रा
Manmohan Mahapatra

Manmohan Mahapatra is an Odia filmmaker, director, producer, and writer. He studied film making at the FTII, Pune and his debut feature film Seeta Raati made in 1976 was the first Odia film to be screened at International Film Festival in 1982. He has won eight consecutive national film awards for his films Nishita Swapna, Majhi Pahacha, Tired Afternoon, Neeraba Jhada, Seeta Raati, Bhinna Samaya and more. He made couple of short films and then directed Neerab Jhada that won him another national film award for best feature film in Odia out of eight consecutive national awards for best feature film in Odia.

मनमोहन महापात्रा उड़िया फिल्म निर्माता, निर्देशक, निर्माता और लेखक हैं। उन्होंने 1976 में एफटीआईआई से फिल्म निर्माण की पढ़ाई की और उनकी पहली फीचर फिल्म सीता राती (1976) के रूप में पदार्पण किया और यह अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह में प्रदर्शित की जाने वाली पहली उड़िया फिल्म थी। उन्होंने अपनी फिल्म निशिता स्वप्न, माझी पहाचा, टायर्ड आफ्टरनून, नारबा झदा, सीती राती, भिन्ना समय के लिए लगातार आठ राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार जीते हैं। उन्होंने कुछ लघु फिल्में में भी बनाई है।

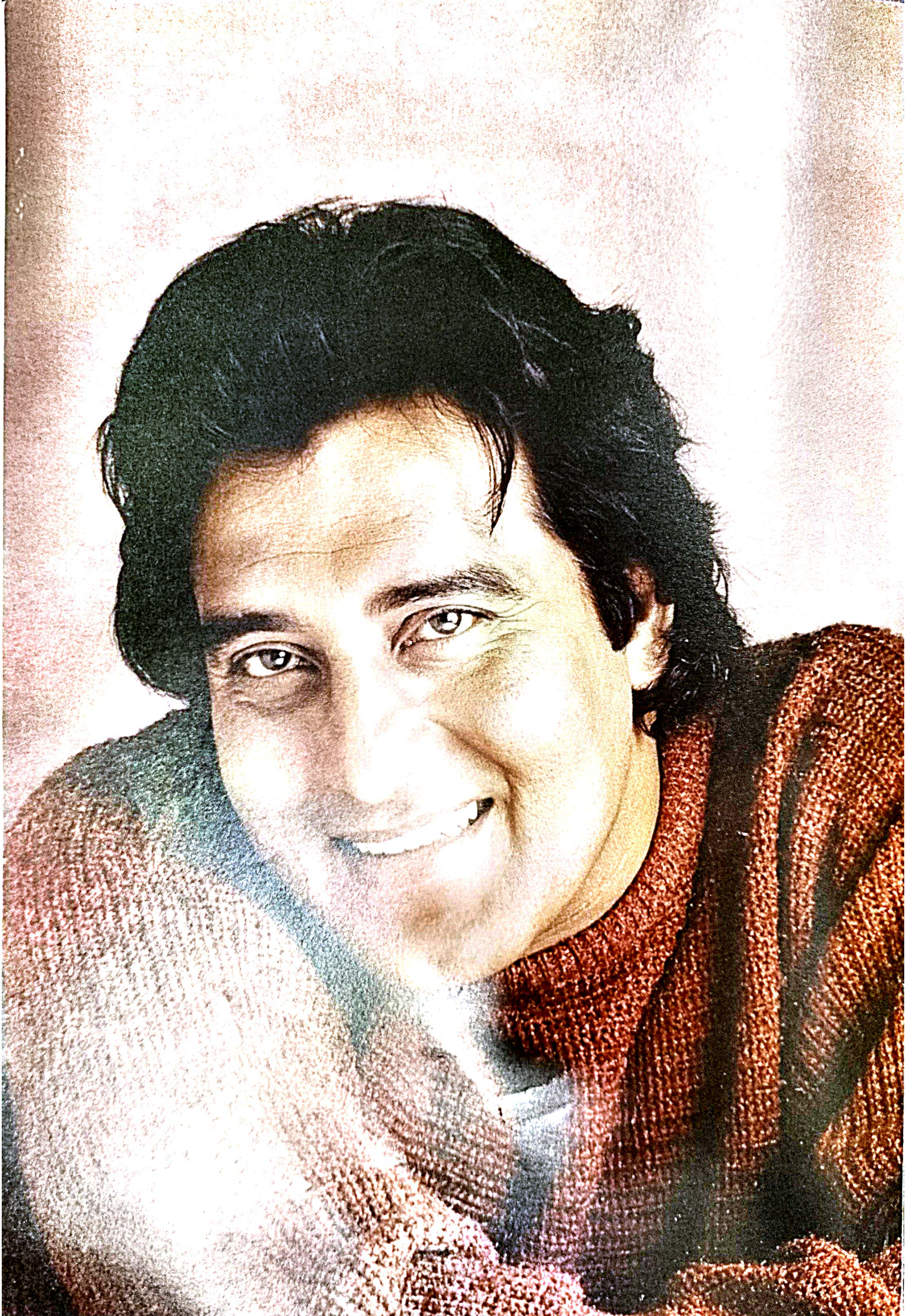

दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार विजेता परिचय
DADASAHEB PHALKE AWARD WINNER PROFILE

Vinod Khanna

DADASAHEB PHALKE AWARD WINNER, 2017

Born on 6 October 1946, Vinod Khanna has featured in as many as 146 films in his film career spanning over four decades. He made his debut in 1968 with Mann. A terrific combination of ruggedness, suave good looks and fine acting chops, Khanna had a fan following to reckon.

His solid screen presence ensured that irrespective of whether his role was positive or negative, he was noticed in all his films – be it Purab Aur Paschim with Manoj Kumar or Aan Milo Sajna and Saccha Jootha with Rajesh Khanna.

Projects like Nehle Pe Delha, the multi-starrers Amar Akbar Anthony and Muqaddar Ka Sikandar and his double role in Mahesh Bhatt's Lahu Ke Do Rang, remain his most popular roles.

The year 1971 proved to be a turning point in Khanna's career – with three films presenting him in three very different avatars. Sunil Dutt's Reshma Aur Shera, which also launched Amitabh Bachchan, Gulzar's Mere Apne, that defined him as an actor and Raj Khosla's dacoit drama Mera Gaon Mera Desh, where he shared screen space with Sunil Dutt and Dharmendra.

The emerging trend of multi-starrers saw Khanna acting in many films as a 'parallel hero', with Bachchan, Jeetendra and Feroz Khan, where, as the true friend who sacrifices himself, he made a special place for himself in the industry. These films made him a favorite with the audiences as well as the producers.

Vinod Khanna had no filmy background. His father Kishanchand Khanna ran a business in textiles, dyes and chemicals. Khanna was a commerce graduate from Sydenham College, Mumbai.

During the 1980s, the actor left his fans and everyone in the industry shocked when he decided to quit his career and embrace spiritualism. He shifted to Rajneeshpuram in the US, where he worked as Osho's gardener.

On returning, Vinod Khanna was first spotted on a popular cover with a white beard. It was a back-with-a-bang statement to the film industry that the prodigal son had returned to rule the hearts of millions, again. His first release this time was Mukul Anand-directed Insaaf, starring Dimple Kapadia, followed by Feroze Khan's Dayavan. The character of Shakti Velu aka Dayavan earned him accolades from all everyone, he had official made his comeback.

Khanna then forayed into politics in 1997. In 1998, he got elected to the Lok Sabha from the Gurdaspur constituency in Punjab on a BJP ticket. He served as Union Minister for culture and tourism in 2002 under Atal Bihari Vajpayee government. Later, he also became Minister of state in Ministry of External Affairs.

During his career, Khanna won five Filmfare awards, including the Filmfare Lifetime Achievement Award in 1999. He was last seen in the 2015 Bollywood film Dilwale, starring Shah Rukh Khan.

He is survived by his wives Kavita, Gitanjali, daughter Shraddha, and actor sons Rahul, Akshaye and Sakshi. He nonetheless left behind a legacy that will stay etched in our memories for many years to come.

दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार विजेता परिचय
DADASAHEB PHALKE AWARD WINNER PROFILE

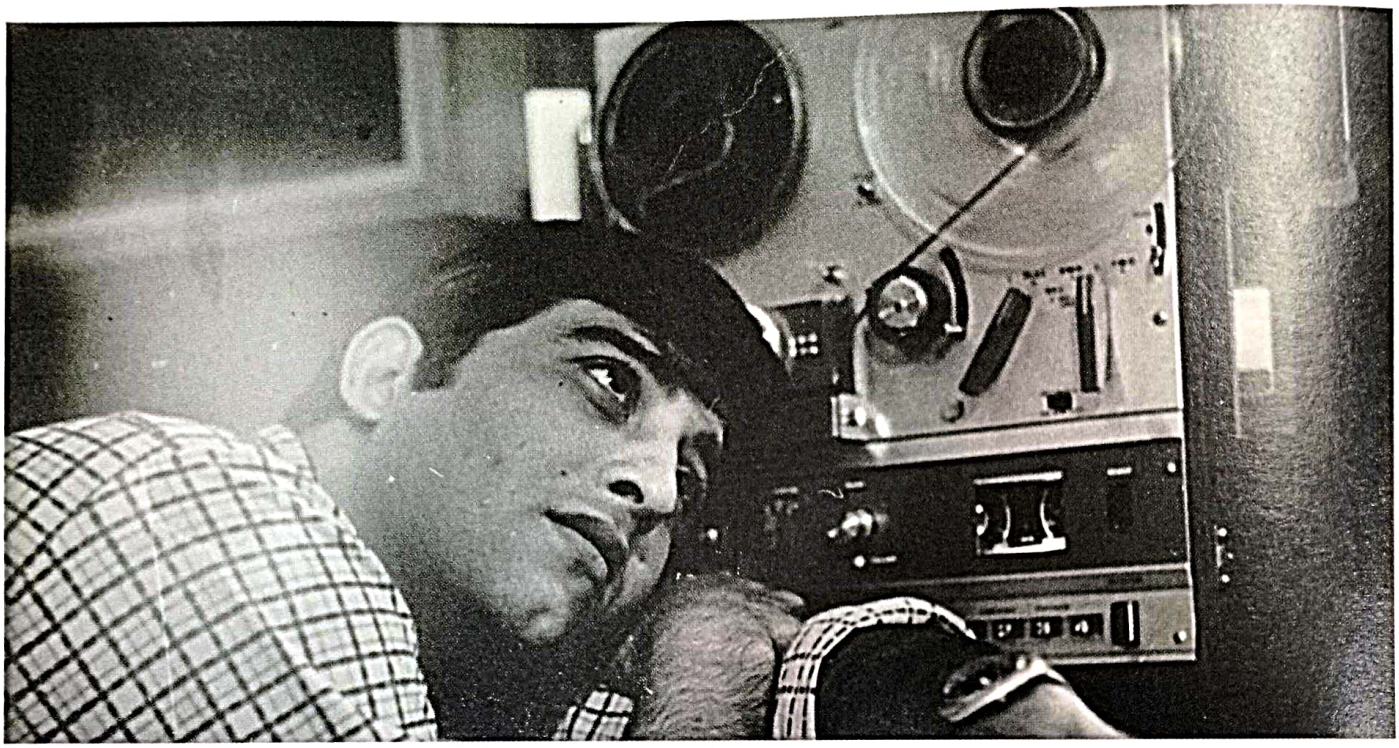

6 अक्टूबर 1946 को जन्में, अभिनता और राजनेता विनोद खन्ना के चार दशक लंबे फिल्मी करियर में 146 फिल्में शामिल हैं। उन्होंने वर्ष 1968 में फिल्म मन के साथ फिल्म जगत में कदम रखा था। विनोद खन्ना अच्छे आकर्षण, उत्कृष्ट अभिनय कला के शानदार संयोजन थे और उनके प्रंशसक इस बात के गवाह हैं।

किरदार में उनकी सकारात्मक या नकारात्मक भूमिका, स्क्रीन पर उनकी मौजदूगी को सुनिश्चित करती है और यह उनकी हर फिल्म में देखा गया है, चाहे वो मनोज कुमार के साथ 'पूरब और पश्चिम' हो या राजेश कुमार के साथ 'आन मिलो सजना' और 'सच्चा झूठा'। उन्हें फिल्म 'नहले पे देहला', 'अमर अकबर एंथनी' और 'मुकद्दर का सिकंदर' और महेश भट्ट की 'लहू के दो रंग' में उनकी दो भूमिकाओं के लिए जाना जाता है।

वर्ष 1971 खन्ना के करियर में तीन फिल्मों के साथ एक महत्वपूर्ण मोड़ आया। सुनील दत्त की फिल्म 'रेशमा और शेरा', जिससे अभिनेता अमिताभ बच्चन ने भी करियर की शुरुआत की थी, गुलजार की 'मेरे अपन' से उन्हें अभिनेता के रूप में काफी सराहना मिली। उन्होंने राज खोसला की फिल्म 'मेरा गांव मेरा देश' में भी अभिनय किया, जहां उन्होंने सुनील दत्त और धर्मेंद्र के साथ स्क्रीन साझा की थी.

उभरते कलाकारों के दौर में खन्ना ने कई फिल्मों में अमिताभ बच्चन, जीतेन्द्र और फिरोज खान के साथ 'समांतर नायक' के रूप में अभिनय किया और खुद के लिए फिल्म जगत में अलग जगह और पहचान बनाई। इन फिल्मों ने उन्हें दर्शकों के साथ–साथ निर्माता के लिए पसंदीदा बना दिया।

विनोद खन्ना की कोई फिल्मी पृष्ठभूमि नहीं थी। उनके पिता किशनचंद खन्ना कपड़ा, रंग और रसायनों एक व्यवसाय करते थे। खन्ना ने सिडेंहम कॉलेज, मुंबई से वाणिज्य स्नातक किया था। 1980 के दशक के दौरान, अभिनेता ने उस वक्त अपने प्रशंसकों और फिल्म जगत को चौंका दिया कि वो उन्होंने अपना करियर छोड़कर आध्यात्मिकता को गले लगाने का फैसला किया है। वह अमेरिका में राजनीशपुरम चले गए, जहां उन्होंने ओशो के माली के रूप में काम किया।

दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार विजेता परिचय
DADASAHEB PHALKE AWARD WINNER PROFILE

विनोद खन्ना

दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार विजेता परिचय, 2017

वहां से लौटने पर, विनोद खन्ना को पहली बार सफेद दाढ़ी के साथ देखे गए थे। उस वक्त फिल्म उद्योग में वापसी के लिए एक बयान आया कि वे लाखों लोगों के दिल पर राज करने के लिए वापस लौट रहे हैं।

इस वक्त मुकुल आनंद द्वारा निर्देशित उनकी पहली फिल्म आई, जो डिंपल कपाडिया अभिनीत थीं और उसके बाद फिरोज खान की 'दयावन' बड़े पर्दे पर रिलीज हुई। दयावान के किरदार से उन्होंने तालियां बटोरीं और वो उनकी आधिकारिक वापसी मानी गई।

फिल्म जगत में अपना नाम कमाने के बाद 1997 में उन्होंने राजनीति में कदम रखा। वर्ष 1998 में, वे पंजाब के गुरदासपुर निर्वाचन क्षेत्र से भारतीय जनता पार्टी की टिकट पर लोकसभा के लिए चुने गए। उन्होंने 2002 में अटल बिहारी वाजपेयी सरकार में संस्कृति और पर्यटन मंत्री के रूप में कार्य भी किया। बाद में, वे विदेश मामलों के मंत्रालय में राज्य मंत्री बने।

अपने करियर के दौरान उन्हें 1999 में फिल्मफेयर लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड सहित पांच फिल्मफेयर पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आखिरी बार 2015 की बॉलीवुड फिल्म दिलवाले में वे दिखाई दिए थे। जीवन में उनकी पत्नी कविता, गीतांजली, बेटी श्रद्धा और पुत्र राहुल, अक्षय ने उसका साथ दिया। वे अपने पीछे अपनी एक विरासत छोड़कर गए हैं, जो कई वर्षों तक हमारी यादों में जिंदा रहेगा।

ज्यूरी
JURY

65TH

राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार 2017

National Film Awards 2017

राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार [illegible] जाते हैं–फ़ीचर फ़िल्म, गैर–फ़ीचर फ़िल्म तथा सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ लेखन [illegible] वर्ग के लिए अलग निर्णायक मण्डल होता है। 57वें राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कारों से [illegible] फ़िल्म श्रेणी में विजेताओं का चयन द्वि–स्तरीय समिति द्वारा किया जाता है। ये हैं पां[illegible] आंचलिक समितियाँ और एक केन्द्रीय समिति। चयन समिति के सदस्य सिनेमा, संबद्ध क्षेत्रों और [illegible] क्षेत्रों से जुड़े हुए प्रतिष्ठित लोग होते हैं। चयन प्रक्रिया के दौरान विचार–विमर्श पूर्ण रूप [illegible] होते हैं जिससे सदस्यों को बाहरी प्रभावों से दूर रखने में मदद मिलती है और पूरी स्वतन्त्रता, निष्पक्षता के साथ पुरस्कार विजेताओं का चयन किया जाता है।

[illegible]given in three sections, viz., Feature Films, Non-Feature Films and Best [illegible] a different jury. Since the 57th National Film Awards, the awards in [illegible]gh a two-tier selection process comprising five regional panels [illegible]guished persons in the field of cinema, other allied arts and [illegible], which provides an enabling environment to insulate [illegible] selection with impartiality, freedom and fairness.

फ़ीचर फ़िल्म केन्द्रीय ज्यूरी
(FEATURE FILMS CENTRAL JURY)

अध्यक्ष (Chairman)

शेखर कपूर Shekhar Kapur

Shekhar Kapur is a film director and producer who has left an imprint in Indian as well as international cinema. Known for critically acclaimed films like Elizabeth, Bandit Queen and Mister India, Kapur's movies have bagged top international awards. A former Chartered Accountant, Kapur made his directorial debut with the film Masoom in 1983. Kapur is a recipient of Padma Shri, India's fourth highest civilian award.

शेखर कपूर एक फिल्म निर्देशक और निर्माता हैं, जिन्होंने भारतीय और अंतरराष्ट्रीय सिनेमा में अपनी अमिट छाप छोड़ी है. उन्हें फिल्म 'एलिजाबेथ', 'बैंडिट क्वीन', 'मिस्टर इंडिया' के लिए जाना जाता है. उनकी कई फिल्मों को कई अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है. चार्टेड अकाउंटेंट रह चुके कपूर ने वर्ष 1983 में फिल्म 'मासूम' से निर्देशक के रूप में अपने फिल्मी करियर की शुरुआत की थी. उन्हें नागरिक सम्मान 'पद्मश्री' से भी सम्मानित किया जा चुका है.

फ़ीचर फ़िल्म केन्द्रीय ज्यूरी
(FEATURE FILMS CENTRAL JURY)

इमतियाज हुसैन Imtiaz Hussain

Imtiaz Hussain is a writer and actor who has primarily worked for Hindi cinema. Having written screenplays, dialogues as well as stories in films, Hussain has tried his hand at multiple disciplines of film writing. Among notable films he has written dialogues for are Astitva and Vaastav. The story and screenplay of 2002 film Annarth was written by Hussain. As an actor, he has performed in films like Vaastav and Parinda.

इमतियाज हुसैन एक लेखक और अभिनेता हैं, जिन्होंने कई हिंदी फिल्मों में काम किया है. उन्होंने पटकथा और संवाद लेखन के साथ कई प्रकार का फिल्म लेखन किया है. उनकी यादगार फिल्मों में 'अस्तित्व' और 'वास्तव' का नाम शामिल है. वर्ष 2002 में आई फिल्म अनर्थ की कहानी और पटकथा हुसैन द्वारा लिखी गई थी. अभिनेता के तौर पर उन्होंने वास्तव और परिंदा फिल्म में प्रदर्शन किया था.

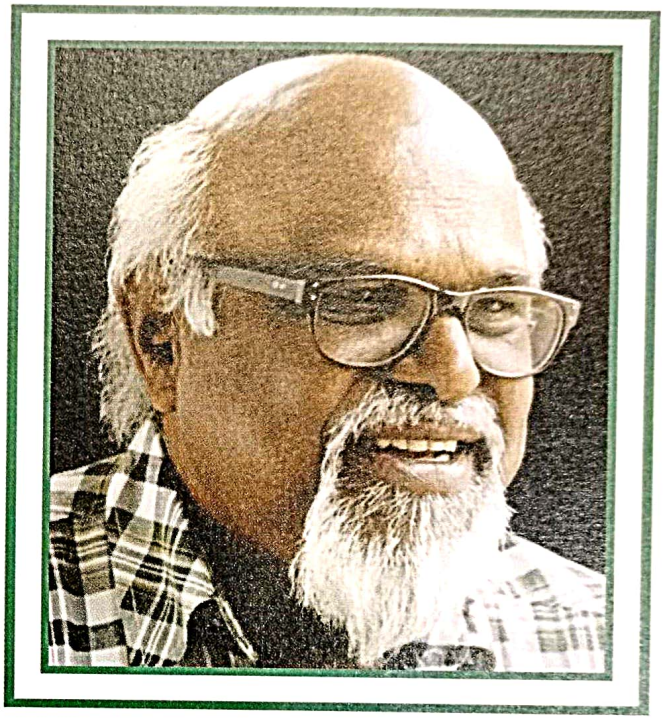

गोपालकृष्ण पई Gopalakrishna Pai

Gopalakrishna Pai is an author who writes fiction and non-fiction books in the Kannada language. He is a recipient of the Kannada Sahitya Academi Award and the Kendra Sahitya Academi Award. He got the National Film Award for his film 'Kanassemba Kudureyanneri'. Pai has authored the 2009 book 'Swapna Saraswat' for which he began researching two decades earlier and referred to 4,000 books.

गोपालकृष्ण पई एक लेखक हैं, जो कन्नड़ भाषा में उपन्यास और गैर–कल्पित पुस्तकें लिखते हैं. उन्हें कन्नड़ साहित्य अकादमी पुरस्कार और केंद्र साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है. उनकी फिल्म 'कंससेम्बा कुदुरेन्नेरी' ने राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार जीता था. पई ने 2009 में पुस्तक श्स्वप्न सारस्वतश की रचना की थी, जिसके लिए उन्होंने दो दशक पहले शोध शुरू किया था.

फ़ीचर फ़िल्म केन्द्रीय ज्यूरी
(FEATURE FILMS CENTRAL JURY)

गौतमी तड़ीमल्ला Gautami Tadimalla

Gautami Tadimalla is an actress who has performed in films in not only south Indian languages but also in Hindi cinema. Her career has spanned three decades, most of her roles being in Tamil and Telugu cinema. She has worked with actors like Rajinikanth and Mohanlal and directors such as Mani Ratnam. She has also successfully tried her hand as a costume designer, hosting television shows and performing on the silver screen.

गौतमी तड़ीमल्ला एक भारतीय अभिनेत्री हैं, जिन्होंने दक्षिण भारतीय फिल्मों के साथ साथ हिंदी फिल्मों में भी अभिनय किया है। वे गत तीन दशक से भारतीय सिनेमा में सक्रिय हैं और उन्होंने तमिल और तेलुगु सिनेमा में अधिक कार्य किया है। उन्होंने रजनीकांत और मोहनलाल जैसे दिग्गज अभिनेताओं और मणि रतणम जैसे दिग्गज निर्देशक के साथ काम किया है.उन्होंने वेशभूषा डिजाइनर के रुप में किया है और कई टीवी कार्यक्रमों को होस्ट किया है।

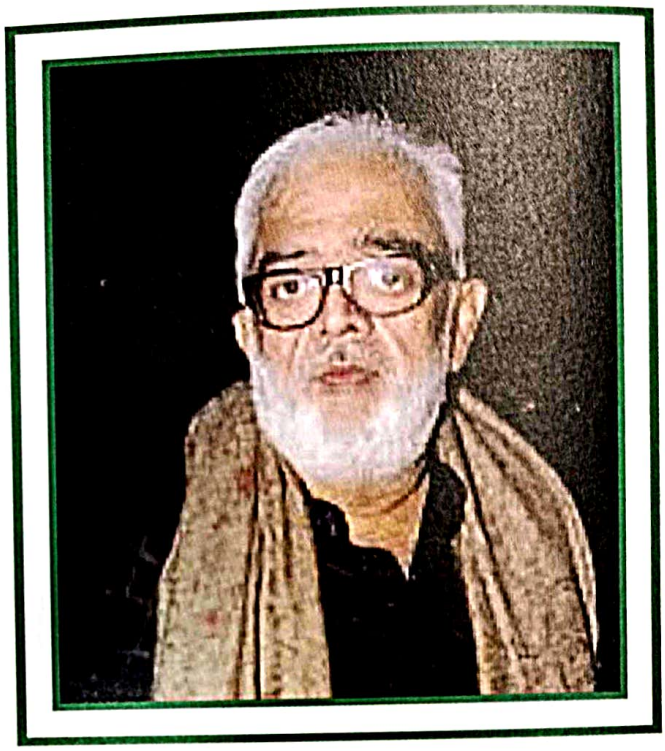

राहुल रवैल Rahul Rawail

Rahul Rawail is an Indian film director whose work has spanned over three decades. Some of his notable films include Love Story, Betaab and more recently Jo Bole So Nihaal. He gets the credit for launching in his films acting starts such as Aishwarya Rai, Sunny Deol, Kajol, Kumar Gaurav and Amrita Singh. Rawail has been twice nominated for the Filmfare Award in the best director category.

राहुल रवैल एक भारतीय फिल्म निर्देशक हैं, जो तीन दशक से भारतीय सिनेमा में सक्रिय हैं. उनकी यादगार फिल्मों में लव स्टोरी, बेताब और जो बोले जो निहाल जैसी कई फिल्में शामिल है। उन्हें ऐश्वर्या राय, सन्नी देओल, काजोल, कुमार गौरव और अमृता सिंह जैसे अभिनेता–अभिनेत्रियों को पहला अवसर देने का श्रेय दिया जाता है। उन्हें सर्वश्रेष्ठ निर्देशक श्रेणी में दो बार फिल्मफेयर अवार्ड के लिए नामांकित किया जा चुका है।

फ़ीचर फ़िल्म केन्द्रीय ज्यूरी
(FEATURE FILMS CENTRAL JURY)

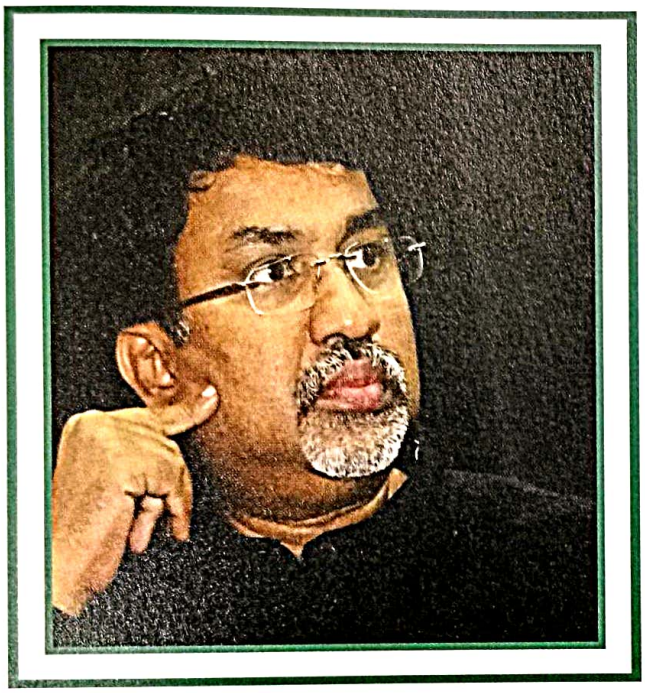

पी शेशाद्री P Sheshadri

P Sheshadri is a director who has worked in films and television for nearly two decades. Between 2000 and 2013, Sheshadri won nine National Film Awards. Some of his notable films include Munnudi, Atithi, Beru and Tutturi. A former journalist, Sheshadri began his film career as a screenplay and dialogue writer. He soon took to directing big screen films, television serials and documentaries.

पी शेशद्री एक निर्देशक हैं, जो फिल्म और टेलीविजन क्षेत्र में करीब दो दशकों से कार्य कर रहे हैं। वर्ष 2000 से 2013 के बीच शेशाद्री ने नौ राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार जीते थे। उनकी यादगार फिल्मों में मुन्नुडी, अतिथि, बेरु और तुत्तुरी जैसी कई फिल्में हैं। पत्रकार के तौर पर काम कर चुके शेशद्री ने पटकथा और संवाद लेखक के रुप में अपनी फिल्मी करियर की शुरुआत की थी।

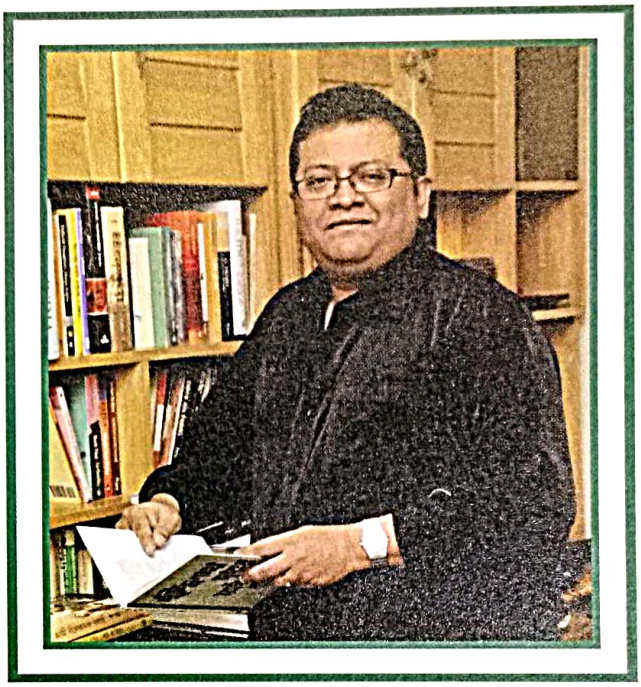

अनिरुद्ध रॉय चौधरी Aniruddha Roy Chowdhury

Aniruddha Roy Chowdhury is a director and producer who has been active in the Bengali and Hindi film industry for over a decade. Chowdhary has also tried his hand at acting in the form of a cameo in Piku. His recent courtroom drama Pink was critically acclaimed. His 2009 Bengali movie Antaheen won the National Film Award for the best film.

अनिरुद्ध रॉय चौधरी एक फिल्म निर्देशक और निर्माता हैं, जो बंगाली और हिंदी फिल्म जगत में पिछले एक दशक से कार्य कर रहे हैं। उन्होंने फिल्म पीकू में अभिनय भी किया था। हाल ही में उन्होंने फिल्म पींक में निर्देशन किया था, जिसे समीक्षकों द्वारा सराहा गया था। उनकी बंगाली फिल्म अंतहीन को सर्वश्रेष्ठ फिल्म के रुप में राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार प्रदान किया।

फ़ीचर फ़िल्म केन्द्रीय ज्यूरी
(FEATURE FILMS CENTRAL JURY)

रुमी जाफरी Rumi Jaffery

Rumi Jaffery is a writer and director in India's Hindi film industry. In a career spanning more than two decades, Jaffery has written scripts and dialogues and directed over 40 films. Some of his notable works include popular and commercially successful films like Mujhe Kuch Kehna Hai, God Tussi Great Ho, Bade Miyan Chite Miyan and Gali Gali Mein Chor Hai.

रुमी जाफरी एक लेखक और निर्देशक हैं और दो दशकों से फिल्म जगत में सक्रिय हैं। जाफरी ने 40 से अधिक फिल्मों में निर्देशन और संवाद–कहानी लेखन किया ह। उनकी चर्चित और लोकप्रिय फिल्मों में मुझे कुछ कहना है, गोड तुस्सी ग्रेट हो, बड़े मियां छोटे मियां और गली गली में चोर है जैसी कई फिल्में शामिल है।

रंजीत दास Ranjit Das

Ranjit Das is an award-winning film director and editor who has also been a successful documentary film maker. His 1997 film Sanskar premiered at the Kolkata Film Festival, bagging three state awards. His documentary film, 'All Alone If The Need Be' won the National Film Award for the 'Best First Non-Feature Film Of A Director' and brought him the much deserved reputation. He has twice served on the National Film Awards Jury.

रंजीत दास पुरस्कार विजेता फिल्म निर्देशक और संपादक हैं और सफल डॉक्यूमेंट्री फिल्म निर्माता भी हैं। उनकी लोकप्रिय फिल्म संस्कार (1997) को कोलकाता फिल्म समारोह में प्रदर्शित किया गया था और उसे तीन राज्य पुरस्कारों से सम्मानित भी किया गया ह। उनके वृत्तचित्र (डॉक्यूमेंट्री) 'ऑल अलोन इफ द नीड बी' ने 'निर्देशक की सर्वश्रेष्ठ गैर फीचर फिल्म' के रुप में राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार जीता था। वे पहले भी दो बार राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार ज्यूरी में रह चुके हैं।

फ़ीचर फ़िल्म केन्द्रीय ज्यूरी
(FEATURE FILMS CENTRAL JURY)

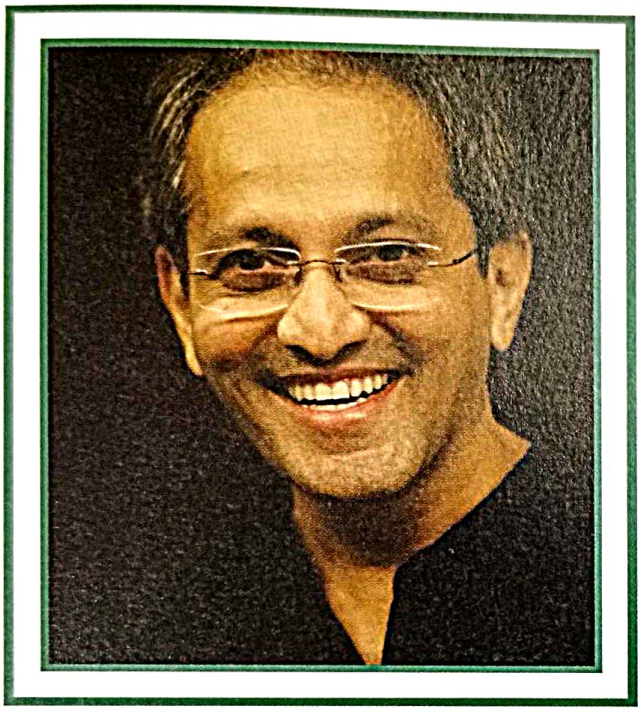

राजेश मापुस्कर Rajesh Mapuskar

Rajesh Mapuskar is a film director, producer and writer who has worked in the Hindi as well as Marathi film industry. He made his directorial debut with the 2012 film Ferrari ki Sawaari. He went on to write and direct the critically acclaimed Marathi film Ventilator in 2016. Earlier, Mapuskar assisted Rajkumar Hirani in the Munnabhai series and 3 Idiots. His family's ownership of a cinema hall helped Mapuskar get involved with films at an early age.

राजेश मापुस्कर एक फिल्म निर्देशक, निर्माता और लेखक हैं, जिन्होंने हिंदी के साथ साथ मराठी फिल्म जगत में काम किया है. उन्होंने वर्ष 2012 में फिल्म फरारी की सवारी से फिल्म जगत में कदम रखा था। उसके बाद उन्होंने वर्ष 2016 में समीक्षकों द्वारा सराही गई मराठी फिल्म वेंटिलेटर में लेखन और निर्देशन किया. इससे पहले उन्होंने मापुस्कार ने मुन्नाभाई सीरीज और 3 इडियट्स में निर्देशक राजकुमारी हिरानी के साथ सह–निर्देशन किया था. उनके परिवार का सिनेमा हॉल होने की वजह से वो फिल्मों की तरफ आकर्षित हुए।

त्रिपुरारी शर्मा Tripurari Sharma

Professor Tripurari Sharma has written and directed several plays and has been associated with theatre groups in India as well as abroad. Sharma is an English graduate and went on to receive a diploma in direction from the National School of Drama. She has written plays like Bahu and Kath ki Gaadi and translated Indian and Western plays such as Andha Yug and Othello. Sharma represented India at the First International Women Playwrights Conference in USA in 1986.

प्रोफेसर त्रिपुरारी शर्मा भारत और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई रंगमंच समूहों से जुड़े रहे हैं। उन्होंने कई नाटक भी लिखे और उनका निर्देशन भी किया है। वे अंग्रेजी में स्नातक हैं और उसके बाद राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से निर्देशन में डिप्लोमा भी हासिल किया है. उन्होंने बहू और काठ की गाड़ी जैसे कई नाटक लिखे हैं और अंधा युग और ओथेलो जैसे भारतीय और पश्चिमी नाटकों का अनुवाद भी किया है। उन्होंने वर्ष 1986 में अमेरिका में पहली इंटरनेशनल वुमेन प्लेराइट्स कॉन्फ्रेंस में भारत का प्रतिनिधित्व किया था।

गैर फ़ीचर फ़िल्म केन्द्रीय ज्यूरी
(NON-FEATURE FILMS CENTRAL JURY)

अध्यक्ष (Chairman)

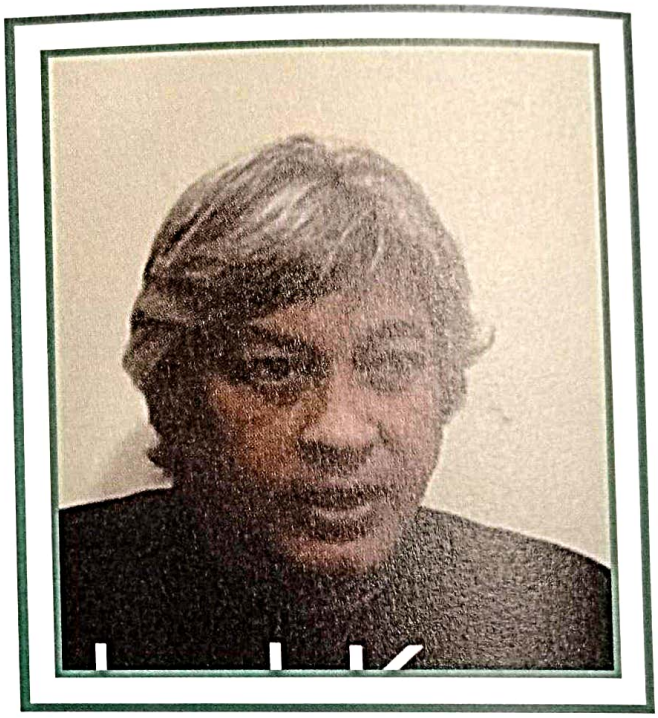

नकुल कामते Nakul Kamte

Nakul Kamte is well known sound designer known for his work on Lagaan: Once Upon a Time in India (2001), Rang De Basanti (2006) and Bhaag Milkha Bhaag (2013). He got the National Film Award for lagan.

नकुल कामते फिल्म 'लगानः वन्स अपॉन ए टाइम इन इंडिया' (2001), रंग दे बसंती (2006) और भाग मिल्खा भाग (2013) में अपने ध्वनि डिजाइनर के बेहतरीन काम के लिए जाते हैं। उन्हें लगान के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

गैर फ़ीचर फ़िल्म केन्द्रीय ज्यूरी
(NON-FEATURE FILMS CENTRAL JURY)

भास्कर हजारिका Bhaskar Hazarika

Bhaskar Hazarika, whose directorial debut 'Kothanodi' won the National Award for Best Assamese Feature Film. The filmmaker, who has shot many of his documentaries in the city of Delhi.

भास्कर हजारिका ने निर्देशक के रुप में फिल्म 'कोठानोडी' से अपने करियर का पदार्पण किया था और फिल्म को सर्वश्रेष्ठ असमिया फीचर फिल्म के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिला। उन्होंने राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में अपनी कई वृत्तचित्र शूट किए हैं।

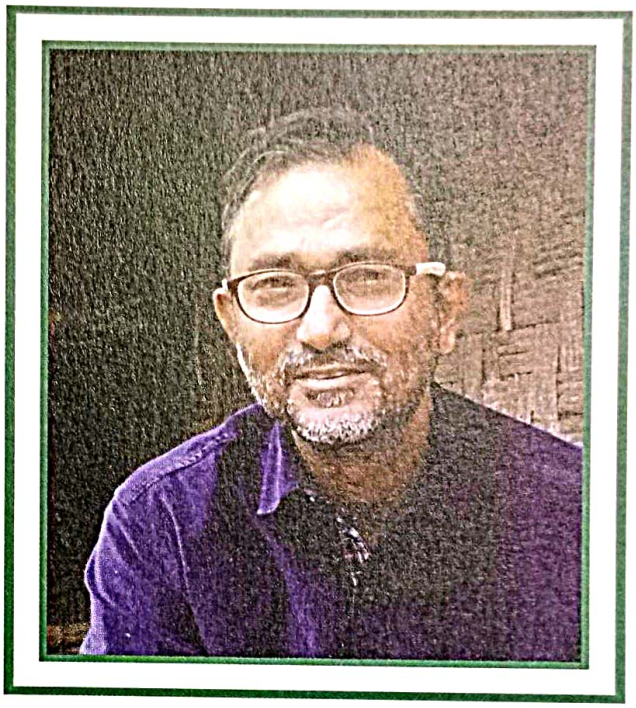

रणजीत रे Ranajit Ray

Ranajit Ray is a filmmaker from West Bengal. He is studied Cinematography from Film and TelevisionInsitute of India, Pune. He is the recipient of 4 National Film Awards for his documentaries.

रणजीत रे पश्चिम बंगाल के रहने वाले हैं और एक फिल्म निर्माता हैं। उन्होंने फिल्म और टेलीविजन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया, पुणे से छायांकन का अध्ययन किया है। उन्हें अपनी वृत्तचित्रों फिल्मों के लिए चार बार राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है.

गैर फ़ीचर फ़िल्म केन्द्रीय ज्यूरी
(NON-FEATURE FILMS CENTRAL JURY)

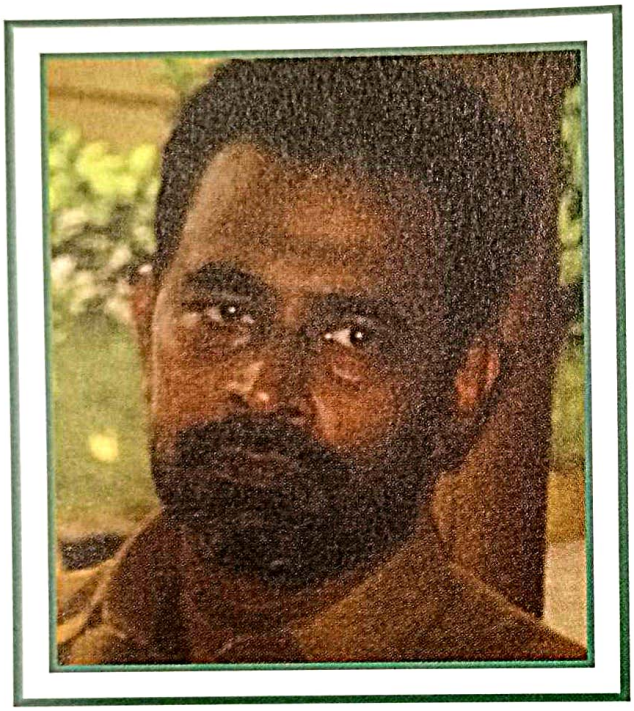

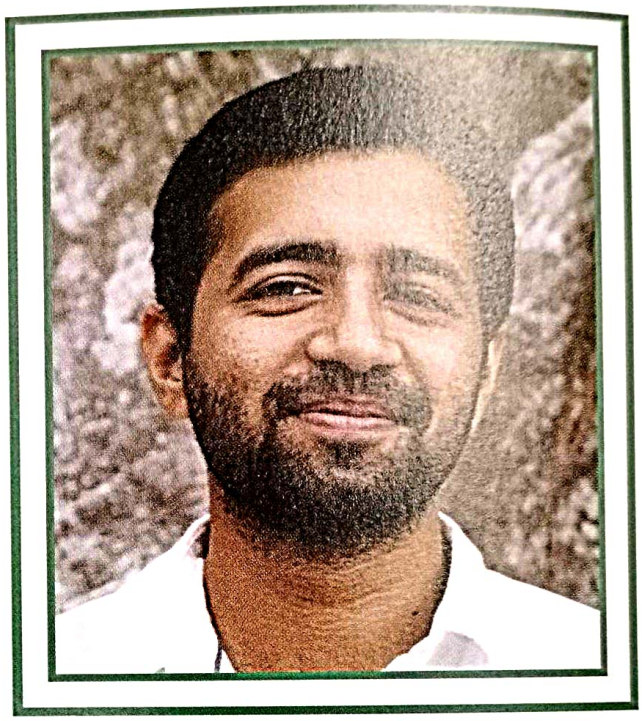

आर वी रमानी R. V. Ramani

R. V. Ramani graduated from the Film and Television Institute of India, Pune, specializing in Cinematography. He is a documentaries and short filmsmaker. Ramani's works have been shown in numerous international film festivals. His Retrospectives were presented at the Mumbai International Film Festival, the Third Asia-Pacific Triennial of Contemporary Art, and DokumentART. Ramani has also worked on many films as a cinematographer. He also serves as faculty member with many institutions and regularly conducts documentary film workshops.

आर वी रमानी ने फिल्म और टेलीविजन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया, पुणे से स्नातक किया है। वे एक वृत्तचित्र और लघु फिल्म निर्माता हैं। उनकी फिल्मों को कई अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह में भी प्रदर्शित किया गया है। वहीं उनकी रचनाओं को मुंबई अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव, द थर्ड एशिया पेसिफिक टर्मिनल ऑफ कनटेंप्ररी आर्ट और डॉक्यूमेंट आर्ट में प्रदर्शित किया गया था। रमनी ने छायांकार के रूप मे भी कई फिल्मों पर भी काम किया है। वह कई संस्थानों के साथ संकाय सदस्य के रूप में भी कार्य करते हैं और उन्होंने नियमित रूप से वृत्तचित्र फिल्म कार्यशालाओं का आयोजन भी किया है।

क्रिस्टो टोमी Christo Tomy

Christo Tomy, the young filmmaker from Kerala made his mark in 2014 when his short feature film 'Kanyaka' won the National Film Award for best first non-feature film of a director. Earlier this year, Tomy's movie 'Kamuki' won the National Film Award for best Non-Feature Film Direction.

केरल के रहने वाले क्रिस्टो टोमी एक युवा फिल्म निर्माता हैं. उनकी लघु फिल्म फिल्म 'कन्याका' ने वर्ष 2014 निर्देशक की सर्वश्रेष्ठ पहली गैर–फीचर फिल्म के रूप में राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार जीता था। इस साल की शुरुआत में, टोमी की फिल्म 'कामुकी' ने सर्वश्रेष्ठ गैर फीचर फिल्म निर्देशन के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार प्राप्त किया था।

गैर फ़ीचर फ़िल्म केन्द्रीय ज्यूरी
(NON-FEATURE FILMS CENTRAL JURY)

अराधना प्रधान Aradhana Pradhan

Aradhana Pradhan is the founder director of Masi Inc.a company associated with literary and cultural activities across India. An M.A and M.Phil in English Literature, she also holds Diplom de Langue in French and ZertifikatzumBerufsdeutsch in German. She has taught in various schools including Sardar Patel Vidyalay, New Delhi. She also works as freelance translator and content writer for art and craft websites. She is a trustee of Muktaangan, a centre for literary and cultural activities, and vocational training for underprivileged children.

अराधना प्रधान भारत में साहित्यिक और सांस्कृतिक गतिविधियों से जुड़ी हुई हैं और मसि इंक कंपनी की संस्थापक निदेशक भी हैं। अंग्रेजी साहित्य में एमए और एम.फिल कर चुकीं अराधना ने फ्रेंच और जर्मन में भी कई डिप्लोमा हासिल किए हैं। उन्होंने सरदार पटेल विद्यालय, नई दिल्ली समेत विभिन्न स्कूलों में अध्ययन भी करवाया है। वह कला और क्राफ्ट वेबसाइटों के लिए स्वतंत्र लेखक और अनुवादक के रूप में भी काम करती हैं। वह मुक्तांगन की एक ट्रस्टी भी है, जो साहित्यिक और सांस्कृतिक गतिविधियों और वंचित बच्चों के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण का केंद्र है।

मनीषा कुलश्रेष्ठ Manisha Kulshreshtha,

Manisha Kulshreshtha, a well-known writer of hindi literature was born on August 26, 1967 in Jodhpur, Rajasthan. After completing graduation from science, she did his postgraduate and M.phil in Hindi literature. The story collections written by her are 'Katputali', 'Kuch Bhi To Rumani Nahi', 'Bauni Hoti Parchhai','Care of Swat Ghati' are most popular.

हिन्दी साहित्य जगत की जानी मानी लेखिका मनीषा कुलश्रेष्ठ का जन्म 26 अगस्त, 1967 को जोधपुर, राजस्थान में हुआ। विज्ञान से स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के बाद इन्होंने स्नातकोत्तर और एमफिल हिन्दी साहित्य से किया। इनके लिखे कहानी संग्रह 'कठपुतलियां', 'कुछ भी तो रूमानी नहीं', 'बौनी होती परछाई', 'केयर ऑफ स्वात घाटी' लोकप्रिय हैं।

सिनेमा पर सर्वोत्तम लेखन ज्यूरी
BEST WRITING ON CINEMA JURY

अध्यक्ष (Chairman)

आनंद विजय Anand Vijay

Anand Vijay is a prominent senior journalist who has worked with TV media and is currently working for Dainik Jagran. With over two decades of journalistic experience, Vijay is a popular columnist and author. He has penned nine books, including the bestselling 'Bollywood Selfie'. Vijay's latest book is titled Loktantra ki Kasauti and is based on the 2014 parliamentary elections.

आनंद विजय एक वरिष्ठ पत्रकार हैं, जिन्होंने टीवी मीडिया के साथ काम किया है और वर्तमान में दैनिक जागरण के लिए काम कर रहे हैं। पत्रकारिता के क्षेत्र में दो साल से सक्रिय विजय एक लोकप्रिय स्तंभकार और लेखक हैं। उन्होंने नौ पुस्तकें लिखी हैं, जिसमें चर्चित पुस्तक 'बॉलीवुड सेल्फी' भी शामिल है। उन्होंने हाल ही में 'लोकतंत्र की कसौटी' शीर्षक की एक पुस्तक लिखी है और यह 2014 के संसदीय चुनावों पर आधारित है।

सिनेमा पर सर्वोत्तम लेखन ज्यूरी
BEST WRITING ON CINEMA JURY

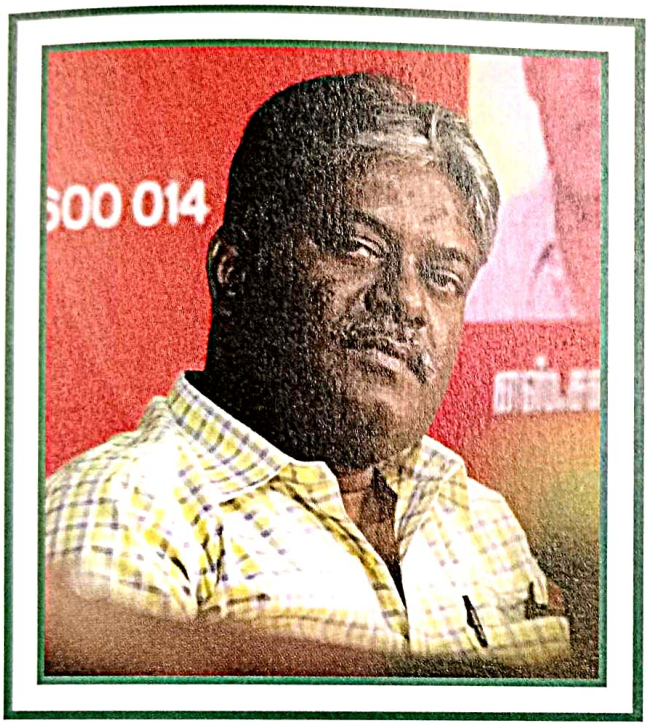

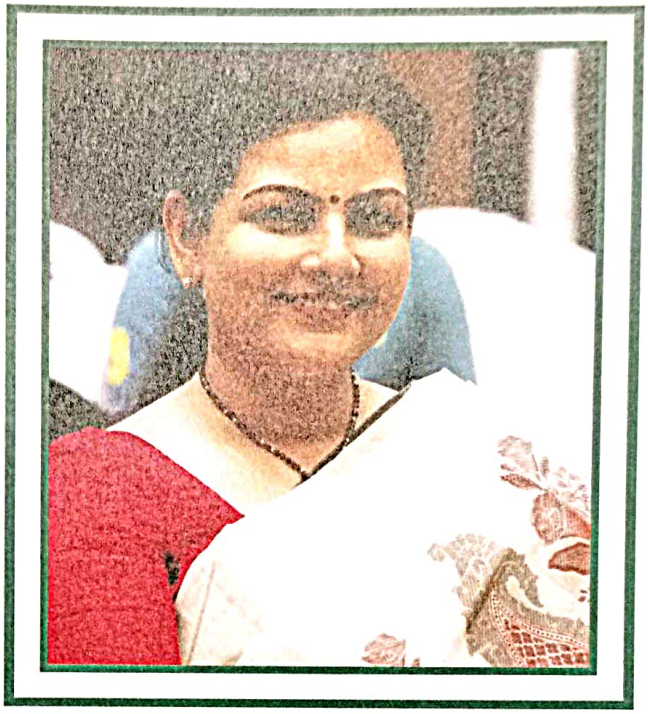

रवि सुब्रमण्यन Ravi Subramanian

Ravi Subramanian is a poet, short writer and documentary filmmaker hailing from Tamilnadu. Documentaries made by Subramanian involve years of research on the subject.

रवि सुब्रमण्यन तमिलनाडु के एक कवि, लघु लेखक और वृत्तचित्र फिल्म निर्माता हैं. सुब्रमण्यन द्वारा बनाई गए वृत्तचित्रों में किसी विषय पर किया गया वर्षों का शोध शामिल है.

नेहा तिवारी Neha Tiwari

Neha Tiwari is a Jharkhand-based academician with nearly two decades of teaching experience. She is a member of the Jharkhand Film Board and specialises in cinema studies, romantic poets, Indian writings in English and mass communication. Tiwari has published multiple research papers and has held several academic and administrative responsibilities. She holds a doctorate degree in English from Bihar's Magadh University.

नेहा तिवारी झारखंड प्रांत से आते हैं और शिक्षाविद् भी हैं, जिन्हें करीब दो दशकों का शिक्षण अनुभव है. वे झारखंड फिल्म बोर्ड के सदस्य हैं और सिनेमा अध्ययन, रोमांटिक कवियों और अंग्रेजी और जन संचार में लेखन में माहिर हैं. तिवारी ने कई शोध पत्र प्रकाशित किए हैं और कई शैक्षणिक और प्रशासनिक पदों पर भी रहे हैं. उन्होंने बिहार के मगध विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में डॉक्टरेट की पढ़ाई की है.

फ़ीचर फ़िल्म ज्यूरी । पूर्व पैनल
(FEATURE FILMS JURY | EASTERN PANEL)

जदुमोनी दत्ता Jadumoni Dutta

Jadumoni Dutta is an Assam-based film director, producer, actor and screenplay writer. An alumnus of Arya Vidyapeeth College in Assam, Dutta has worked in many Bangla and Assamese films in various capacities. He is a recipient of the National Film Awards.

जदुमोनी दत्ता असम के एक फिल्म निर्देशक, निर्माता, अभिनेता और पटकथा लेखक हैं. असम में आर्य विद्यापीठ कॉलेज से पढ़ाई कर चुके दत्ता ने कई बांग्ला और असमिया फिल्मों में काम किया है. उन्हें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों से भी सम्मानित किया जा चुका है.

जी एस भास्कर GS Bhaskar

GS Bhaskar is a well-known cinematographer who works predominantly in Kannada films. An alumnus of FTII, Bhaskar is known for his work as a second unit cameraman in the multiple Academy Award-winning film, Gandhi. Bhaskar's other works include films such as Papeeha, Saaz, Disha, Hyderabad Blues, Tabarana Kathe, Kurmavatara, Ijjodu and Accident. Bhaskar takes inspiration from Hollywood actor-director Richard Attenborough.

जी एस भास्कर एक प्रसिद्ध छायांकार हैं, जो मुख्यतः कन्नड़ फिल्मों में काम करते हैं. एफटीआईआई से पढाई कर चुके भास्कर कई अकादमी पुरस्कार विजेता फिल्म गांधीजी में दूसरे यूनिट कैमरामैन के रूप में काम करने के लिए जाने जाते हैं. भास्कर ने पपीहा, साज, दिशा, हैदराबाद ब्लूज, ताबराना कहेत, कुरमावतार, इज्जोडु और एक्सीडेंट जैसी फिल्मों में काम किया है. भास्कर हॉलीवुड अभिनेता–निर्देशक रिचर्ड एटेनबरो से प्रेरणा लेते हैं.

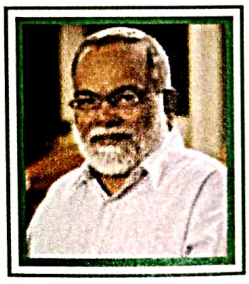

इंद्रजीत नेयोगी Indrajit Neogi

Indrajit Neogi is a sound recordist who graduated from the Film and Television Institute of India in 1980 with a specialisation in sound. In the formative phase of his life, Neogi was involved in theatre and that inspired him to join FTII. He began his career in 1980 with the film 36, Chowrangee Lane. A recipient of the National Film Awards, Neogi has worked in films such as Aarth, Vijeta, Ardh-Satya and Khamosh.

इंद्रजीत नेयोगी एक ध्वनि रिकॉर्डिस्ट हैं, जिन्होंने 1980 में फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया से ध्वनि में स्नातक की थी. अपने जीवन के प्रारंभिक चरण में वे थिएटर से जुड़े हुए थे और इसकी वजह से वे एफटीआईआई में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित हुए थे. उन्होंने 1980 में फिल्म 36, चौरांगी लेन के साथ अपना करियर शुरू किया था. रायष्ट्री फिल्म पुरस्कार से सम्मानित नियोगी ने अर्थ, विजेता, अर्ध–सत्य और खमोश जैसी फिल्मों में काम किया है.

सांगे डोरजी Sange Dorjee

Sange Dorjee is a filmmaker from Arunachal Pradesh and an alumnus of the Satyajit Ray Film and Television Institute in Kolkata. His film Crossings Bridges won him the National Film Awards and was screened at international film festivals. The film was shot in Shertukpen, a dialect and tribal community living in Arunachal Pradesh. His other films include Pratyabartan and Evening Café.

सांगे डोरजी अरुणाचल प्रदेश के एक फिल्म निर्माता हैं और सत्यजीत रे फिल्म और टेलीविजन संस्थान (कोलकाता) के पूर्व छात्र हैं. उनकी फिल्म क्रॉसिंग ब्रिजेज को लेकर उन्हें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार जीता था और इसे कई अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में प्रदर्शित भी किया गया था. यह फिल्म अरुणाचल प्रदेश के आदिवासी समुदाय शेर्तुक्पेन पर आधारित थी. उनकी अन्य फिल्मों में प्रत्यबर्टन और इवनिंग कैफे शामिल है.

फ़ीचर फ़िल्म ज्यूरी | उत्तर पैनल
(FEATURE FILMS JURY | NORTH PANEL)

सुजाता शिवेन Sujata Shiven

Sujata Shiven is a writer and poet who has translated several award-winning Odia literary work into the Hindi and English languages. Her short stories and poems are frequently published in literary magazines and leading newspapers across the country. Having passed out from the Sambalpur University, Shiven has an active presence at literary functions and award ceremonies.

सुजाता शिवेन एक लेखक और कवयित्री हैं, जिन्होंने कई पुरस्कार–प्राप्त उड़िया साहित्यिक रचनाओं का हिंदी और अंग्रेजी भाषा में अनुवाद किया है. उनकी लघु कथाएं और कविताओं को साहित्यिक पत्रिकाओं और देश में अग्रणी समाचार पत्र में प्रकाशित किया जाता रहा है. संबलपुर विश्वविद्यालय से पढ़ाई करने के बाद से शिवेन साहित्यिक कार्यों तथा पुरस्कार समारोह में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं.

संजीव रतन Sanjeev Rattan

Sanjeev Rattan is an actor and director who has predominantly worked in Hindi cinema, but has also made contributions to Himachal Pradesh films. He is known for films such as Naya Chand that he directed and Mission Kashmir and Kareeb in which he acted. Currently working from his hometown in Himachal Pradesh, Rattan has received two National Film Awards for his Himachali films.

संजीव रतन एक अभिनेता और निर्देशक हैं, जो मुख्यतः हिंदी सिनेमा में काम करते हैं, साथ ही उन्होंने हिमाचल प्रदेश के सिनेमा में भी अहम योगदान दिया है. वे नई चांद, जिसे उन्होंने निर्देशित किया और मिशन कश्मीर, करीब जिसमें उन्होंने अभिनय किया, के लिए जाने जाते हैं. वर्तमान में हिमाचल प्रदेश में वे अपने गृहनगर से काम कर रहे हैं. उन्हें उनकी हिमाचली फिल्मों के लिए दो बार राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार से सम्मानित किया गया है.

राजीव भाटिया Rajeev Bhatia

Rajeev Bhatia is a film director hailing from Hisar in Haryana. He won the National Film Award for 'Pagdi', a film on the subject of honour killing. He produced, directed and wrote the film. He has also been a successful television serial director, working in more than 30 soaps, including 11 for Ekta Kapoor. His notable TV serials include Kasautti Zindagi Ke and Kyunki Saas Bhi Kabhi Bahu Thi.

राजीव भाटिया हरियाणा के हिसार से आते हैं और एक फिल्म निर्देशक हैं. उन्होंने 'ऑनर कीलिंग' के विषय पर बनाई गई फिल्म 'पगड़ी' के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार जीता था. उन्होंने इस फिल्म में निर्माता, निर्देशक और लेखक की भूमिका अदा की थी. वे एक सफल टेलीविजन धारावाहिक निर्देशक भी रहे हैं. उन्होंने 30 धारावाहिकों में काम किया है, जिसमें 11 एकता कपूर के धारावाहिक भी शामिल है. उनके उल्लेखनीय टीवी धारावाहिकों में 'कसौटी जिंदगी की' और 'क्योंकि सास भी कभी बहू थी' शामिल है।

जूधाजीत सरकार Judhajit Sarkar

Judhajit Sarkar is a director and actor who has feature as well as documentary films to his credit. His film, 'Thinking Aloud on Calcutta and Mother Teresa, received international recognition for his different take on Teresa. Having pursued direction at Pune's FTII, Sarkar has been making attempts to produce low-budget films for young talented directors who have no backing. He is also known for his other films such as Khashi Katha and White Lies

जूधाजीत सरकार एक निर्देशक और अभिनेता हैं, उन्हें कई फीचर फिल्म और वृत्तचित्र को भी श्रेय जाता है। उनकी फिल्म थिंकिंग अलौड ऑन कैलकटा एंड मदर टेरेसा, को अंतर्राष्ट्रीय मान्यता मिली थी। एफटीआईआई, पुणे में निर्देशन की पढ़ाई करने के बाद, वे उन युवा प्रतिभाशाली निर्देशकों के लिए कम बजट वाली फिल्मों को निर्मित कर रहे हैं, जिन्हें कोई साथ नहीं मिलता है. वे अपनी खासी कथा और व्हाईट लाइज़ जैसी फिल्मों के लिए जाने जाते हैं।

फ़ीचर फ़िल्म ज्यूरी | दक्षिण- 1 पैनल
(FEATURE FILMS JURY | SOUTH PANEL - 1)

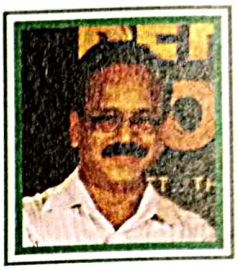

जी धनंजयन G Dhananjayan

G Dhananjayan is two time National Film Award-winning movie producer. He has also acted and directed in a number of films. His field of work has not been limited to films in only south Indian languages, but also in Hindi cinema. He is the founder-deam of BOFTA Film Institute based in Chennai. An active columnist, Dhananjayan is an author of four books.

जी धनंजयन दो बार राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार से सम्मानित फिल्म निर्माता हैं. उन्होंने कई फिल्मों में अभिनय और निर्देशन भी किया है. उन्होंने सिर्फ दक्षिण भारतीय भाषा में ही नहीं, बल्कि हिंदी सिनेमा में भी काम किया है. वे चेन्नई में स्थित बॉफटा फिल्म इंस्टीट्यूट केविनदकमत–कमंउ भी हैं. वे एक सक्रिय स्तंभकार और चार पुस्तकों के लेखक हैं.

प्रिया कृष्णस्वामी Priya Krishnaswamy

Priya Krishnaswamy is a film director and editor whose work spans three decades. She has edited award-winning feature and documentary films, TV serials and ad films. A post-graduate in film editing from the FTII, she began directing documentary film in 1998. Her works include films such as Percy, Against All Odds and Gangoobai. She served as jury member for the National Film Awards in 2014 and 2017.

प्रिया कृष्णस्वामी एक फिल्म निर्देशक और संपादक हैं, जिन्होंने तीन दशक तक भारतीय सिनेमा में कार्य किया है. उन्होंने कई पुरस्कार विजेता फीचर फिल्म, वृत्तचित्र, टीवी धारावाहिक और विज्ञापन संपादित किए हैं. एफटीआईआई से फिल्म संपादन में स्नातकोत्तर कर चुकी कृष्णास्वामी ने वर्ष 1998 में दस्तावेजी फिल्म निर्देशन करना शुरू कर दिया था. उनकी अहम फिल्मों में पर्सी, अगेंस्ट ऑल ऑड्स और गंगूबाई शामिल हैं. वे वर्ष 2014 और 2017 में राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार की ज्यूरी सदस्यों में से थे.

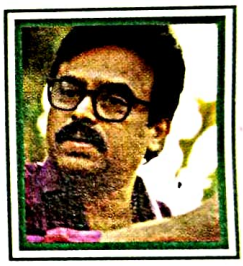

विनोद मानकर Vinod Mankara

Vinod Mankara is a filmmaker from Kerala and has more than 600 documentary films to his credit. His Sanskrit film, Priyamanasam – the third film in this language in the history of world cinema – fetched him the National Film Award. He has been the jury chairman and member in many national and international film festivals and award committees. He has received the Kerala State Film Award for three consecutive times.

विनोद मानकर केरल के एक फिल्म निर्माता हैं और उन्हें 600 से अधिक वृत्तचित्रों का श्रेय जाता है. उनकी संस्कृत फिल्म प्रियंमनसम ने राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार जीता था और उनकी यह फिल्म विश्व सिनेमा के इतिहास में संस्कृत भाषा की तीसरी फिल्म है. वे कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोहों और पुरस्कार समितियों में जूरी अध्यक्ष और सदस्य रहे हैं. उन्होंने लगातार तीन बार केरल राज्य फिल्म पुरस्कार से सम्मानित किया गया था.

विनोद अनुपम Vinod Anupam

Vinod Anupam is a writer and film critic who is renowned for his movie reviews in the Hindi language. A native of Bihar and a strong advocate of children's films, Anupam regularly writes for dailies and has published books on cinemas. At the 46th National Film Awards in 2001, Anupam received the award for the 'Best Film Critic'.

विनोद अनुपम एक लेखक और फिल्म आलोचक हैं, जो हिंदी फिल्म की समीक्षाओं के लिए प्रसिद्ध हैं। बिहार के रहने वाले और बच्चों की फिल्मों के एक मजबूत वकील अनुपम नियमित रूप से दैनिक समाचार पत्रों के लिए लिखते हैं और सिनेमा पर उनकी कई किताबें भी प्रकाशित हुई हैं। वर्ष 2001 में 46 वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार में अनुपम को 'सर्वश्रेष्ठ फिल्म समीक्षक' का पुरस्कार मिला।

फ़ीचर फ़िल्म ज्यूरी | दक्षिण- 2 पैनल
(FEATURE FILMS JURY | SOUTH PANEL - 2)

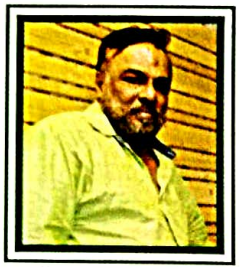

महबूब Mehboob

Mehboob is a lyricist who has made a mark in India cinema in a career spanning over two decades. Preferring to call himself a poet, Mehboob took little time to turn his poetry into lyrics for commercial cinema. Some notable films for which Mehboob wrote song lyrics include Rangeela, Hum Dil De Chuke Sanam and Bombay. He often worked in association with film director Ram Gopal Verma and music composer AR Rahman

महबूब एक गीतकार हैं और पिछले दो दशक से भारतीय सिनेमा में काम कर रहे हैं. खुद को कवि बताने वाले महबूब ने अपनी कविताओं को व्यावसायिक सिनेमा के गीतों के लिए उपयोग किया था. उनकी यादगार फिल्मों में रंगीला, हम दिल दे चुके सनम और बॉम्बे का नाम शामिल है, जिसमें उन्होंने बतौर गीतकार अपनी भूमिका निभाई थी. उन्होंने फिल्म निर्देशक राम गोपाल वर्मा और संगीतकार ए आर रहमान के साथ काम किया है.

राजेश टचरिवेर Rajesh Touchriver

Rajesh Touchriver is a filmmaker, production designer and scriptwriter whose work spans two decades. His feature films, short films and documentaries have fetched him international recognition and two National Film Awards. Holding a Masters degree in visual language/scenography and direction from the Wimbledon College of Art in London, Touchriver won the Charles Wallace Trust Award in 2001. His 2002 film 'In the Name of Buddha' was screened at the Cannes Film Festival.

राजेश टचरिवेर एक फिल्म निर्माता, प्रोडक्शन डिजाइनर और पटकथा लेखक हैं, जो गत दो दशकों से सिनेमा जगत में सक्रिय हैं. उनकी फीचर, लघु फिल्म और वृत्तचित्रों ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता दिलाई है और दो राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार भी प्राप्त किए हैं. लंदन में विंबलडन कॉलेज ऑफ आर्ट से दृश्य भाषा और निर्देशन में स्नातकोत्तर डिग्री हासिल करने के बाद, टचरिवेर ने 2001 में चार्ल्स वालेंस ट्रस्ट अवार्ड जीता था. वर्ष 2002 में आई उनकी फिल्म 'इन द नेम ऑफ बुद्ध' को कांस फिल्म समारोह में प्रदर्शित किया गया था.

चंद्र सिद्धार्थ Chandra Siddhartha

Chandra Siddhartha is a film director, screenwriter and producer who has mainly contributed to Telugu cinema. His work includes films such as Inscrutable Americans, Aa Naluguru, and Madhumasam. He has received three state Nandi Awards. Under FTII, he produced Nirantharam, a film that received a special mention at the Cairo and Locarno International Film Festival. He has served in the Filmfare jury five times.

चंद्र सिद्धार्थ एक फिल्म निर्देशक, पटकथा लेखक और निर्माता हैं, जिन्होंने मुख्यतः तेलुगु सिनेमा में योगदान दिया है. उनकी अहम फिल्मों में इंस्क्रुटेबल अमेरिकंस, अ नलुगुरु और मधुमासम का नाम शामिल हैं. उन्हें तीन राज्य नंदी पुरस्कार प्राप्त हुए हैं. एफटीआईआई में, उन्होंने निर्थरम नामक एक फिल्म का निर्माण किया, जिसे काइरो और लोकार्नो इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में विशेष उल्लेख मिला था. वे पांच बार फिल्मफेयर जूरी में रह चुके हैं.

शेखर दास Sekhar Das

Sekhar Das is a film director who also writes screenplays and dialogues. With four award-winning feature films under his belt, he is a leading filmmaker in Bengali cinema. He has also made over 20 short films and mystery thrillers for television. He has learnt film scripting from screen play writer, Jean Claude Carrier. Das has served on the juries for international film festivals and for the National Film Awards in India.

शेखर दास एक फिल्म निर्देशक हैं, जो पटकथा और संवाद लेखक भी हैं. इन्हें चार अवार्ड जीतने वाली फिल्मों का श्रेय जाता है और वे बंगाली सिनेमा के दिग्गज फिल्म निर्माता हैं. उन्होंने टेलीविजन के लिए 20 से अधिक लघु फिल्में और रहस्यमयी थ्रिलर बनाई है. उन्होंने पटकथा लेखक जीन क्लॉड कैरियर से फिल्म स्क्रिप्टिंग सीखी है. दास अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोहों और राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों की ज्यूरी के सदस्य रह चुके हैं.

फ़ीचर फ़िल्म ज्यूरी । पश्चिम पैनल
(FEATURE FILMS JURY | WEST PANEL)

साइबल चटर्जी Saibal Chatterjee

Saibal Chatterjee is an independent and renowned writer and film critic. His film reviews are a regular feature on websites and newspapers. Before turning into a freelancing film critic, Chatterjee worked with major news organisations such as Hindustan Times and the Times Group. An alumnus of Calcutta's St Xavier's College, Chatterjee has received the Best Film Critic award at the 51st National Film Awards in 2003.

साइबल चटर्जी एक स्वतंत्र और प्रसिद्ध लेखक और फिल्म आलोचक हैं. उनकी फिल्म की समीक्षाएं नियमित रुप से वेबसाइटों और समाचार पत्रों मे प्रकाशित होती रहती है. फिल्म समीक्षक बनने से पहले, उन्होंने प्रमुख समाचार संगठनों जैसे हिंदुस्तान टाइम्स और टाइम्स ग्रुप के साथ काम किया है. उन्होंने कलकत्ता के सेंट जेवियर्स कॉलेज से पढ़ाई की है और उन्हें वर्ष 2003 में 51 वें राष्ट्रीय फिल्म अवॉर्ड में सर्वश्रेष्ठ फिल्म समीक्षक का पुरस्कार मिला था.

राजेश जोशी Rajesh Joshi

Rajesh Joshi is a alumni of FTII. He is specialized in Cinematography. He worked as DOP for feature films like Ghasiram Kotwal (Mani kaul), Main Zinda Hoon And Dharavi (Sudhir Mishra). He also worked as a DOP for several TV serials like Zamana Badal Gaya , Naya Nukkad, Wagle Ki Duniya, A Mouthful Of Sky, Circus, Yeh Hai India Meri Jaan etc to name a few.

राजेश जोशी एफटीआईआई के पूर्व छात्र हैं। वह छायांकन में विशिष्ट है। उन्होंने घसीराम कोटवाल (मनी कौल), मैं जिंदा हूं और धारवी (सुधीर मिश्रा) जैसी फीचर फिल्मों के लिए डीओपी के रूप में काम किया। उन्होंने जमाना बादल गया, नया नुक्कड़, वागल की दुनिया, ए मुथफुल ऑफ स्काई, सर्कस, ये है इंडिया मेरी जान आदि जैसे कई टीवी धारावाहिकों के लिए डीओपी के रूप में भी काम किया।

अमृत गंगार Amrit Gangar

Amrit Gangar is a film scholar, historian, critic and writer from Mumbai. He has worked as a consultant content developer for Mumbai's National Museum of Indian Cinema that was set up by the National Council of Science Museums. He was actively involved with India's film society movement. Having worked in Indian cinema in different capacities for over two decades, Gangar holds film appreciation workshops across India.

अमृत गंगार मुबई एक फिल्म विद्वान, इतिहासकार, आलोचक और लेखक हैं. उन्होंने भारतीय सिनेमा के राष्ट्रीय संग्रहालय में सलाहकार सामग्री डेवलपर के रूप में काम किया है. वे भारत के फिल्म समाज आंदोलन के साथ सक्रिय रूप से जुड़े थे. दो दशकों से भारतीय सिनेमा के विभिन्न क्षेत्रों मे काम करने के बाद, गंगार ने पूरे भारत में फिल्म एप्रिसेशन की कार्यशालाएं आयोजित की हैं.

सुनील सुकथांकर Sunil Sukthankar

Sunil Sukthankar is a director and producer who works predominantly with Marathi cinema and Marathi theatre. In collaboration with Sumitra Bhave, Sukthankar has made 14 feature films, over 50 short films, and multiple TV serials. Apart from three National Film Awards, Sukthankar has won more than three dozen other awards. His prominent works include Devrai, Kaasav: Turtle and Doghi.

सुनील सुकथांकर एक निर्देशक और निर्माता है, जो मुख्य रूप से मराठी सिनेमा और मराठी थिएटर में काम करते हैं. सुमित्रा भावे के साथ सुकथांकर ने 14 फीचर फिल्में, 50 शॉर्ट फिल्म और कई टीवी धारावाहिक बनाए हैं. तीन राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों के साथ ही, सुकथांकर ने तीन दर्जन से अधिक पुरस्कार जीते हैं. उनके सराहनीय कार्यों में देवराई, कासवरू टर्टल और डोघी शामिल हैं.

फ़िल्म अनुकूल प्रदेश निर्णायक समिति
(FILM FRIENDLY STATE JURY COMMITTEE)

अध्यक्ष (Chairman)

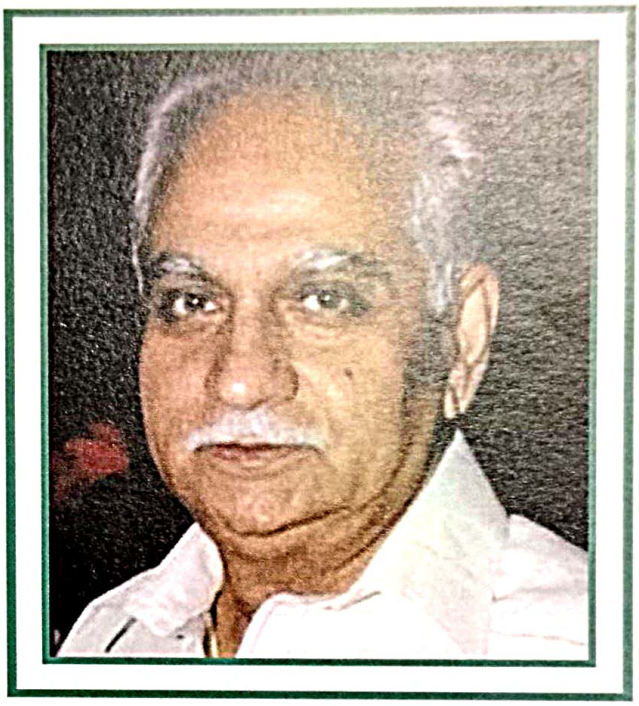

रमेश सिप्पी Ramesh Sippy (Chairperson)

Ramesh Sippy- Chairman of the Jury Ramesh Sippy is one of the major Hindi film-makers of the Indian Film Industry, Son of producer-distributor G.P. Sippy, Ramesh Sippy debuted as a director with Andaaz (1971). He followed it up with Seeta Aur Geeta and then Sholay (1975), which set the benchmark for commercial success in Hindi cinema. He also directed one of the most popular TV serials in India, Buniyaad. He established RS Entertainment in 2002 and has since produced a number of films under the banner. He was elected the president of the Film and Television Producers Guild of India in 2010.He has also served as Chairman of the National Film Development Corporation from 2012-2016. He has been conferred with the Padma Shri in 2013. He was also the Chairman, Feature Film Central Jury of the National Film Awards 2015.He has recently launched RSACE, the Ramesh Sippy Academy of Cinema & Entertainment at the Kalina Campus of the University of Mumbai in affiliation with GICED (The Ganware Institute of Career Education and Development)

रमेश सिप्पी एक फिल्म निर्माता है और निर्माता–वितरक जीपी सिप्पी के बेटे है। रमेश सिप्पी ने फिल्म अंदाज (1971) के साथ निर्देशक के रूप पदार्पण किया था। उसके बाद उन्होंने भारतीय सिनेमा को 'सीता और गीता' और 'शोले' जैसी फिल्में दी, जो हिंदी सिनेमा में मील का पत्थर साबित हुई और हिंदी सिनेमा में वाणिज्यिक सफलता हासिल की। उन्होंने मशहूर टीवी धारावाहिक बुनियाद में भी निर्देशन किया था। उन्होंने 2002 में आरएस एंटरटेनमेंट की स्थापना की और तब से इसके तहत कई फिल्मों का निर्माण किया है। वे वर्ष 2012 में फिल्म और टेलीविजन प्रोड्यूसर गिल्ड ऑफ इंडिया के अध्यक्ष चुने गए। साथ ही उन्होंने वर्ष 2012 से 2016 तक राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम के अध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया है। उन्हें 2013 में नागरिक सम्मान पद्मश्री से सम्मानित किया गया और वे राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2015 की फीचर फिल्म केंद्रीय ज्यूरी के अध्यक्ष भी थे।

फ़िल्म अनुकूल प्रदेश निर्णायक समिति
(FILM FRIENDLY STATE JURY COMMITTEE)

नागराज मंजूले Nagraj Manjule

Nagraj Manjule hails from Jeur, a small village in Maharashtra. His debut short film Pistulya won best non-feature film and special mention for actor Suraj Pawar at 58th National Film Awards. His debut feature film Fandry won the Indira Gandhi Award for best first film of a Director while Somnath Awghade, won best child actor award at the 61st national film awards. Sairat was officially selected at the 66th Berlin International Film Festival 2016. Sairat's lead actress Rinku Rajguru has won special mention award at 63rd National Film Awards. Nagraj is also a leading poet in Marathi. His poetry collection Unhachya Katavirudhha has won many prestigious awards.

महाराष्ट्र के एक छोटे से गांव ज्यूर के रहने वाले नागराज मंजूले इस पीढ़ी के सबसे प्रसिद्ध फिल्म निर्माताओं में से एक है। उनकी पहली लघु फिल्म, पिस्तुल्य को 58 वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार में सर्वश्रेष्ठ गैर–फीचर फिल्म और अभिनेता सूरजपावर को विशेष उल्लेख मिला था। उनकी पहली फीचर फिल्म, फैंड्री ने निर्देशक की सर्वश्रेष्ठ पहली फिल्म के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार हासिल किया था। साथ ही उन्होंने सफल भारतीय फिल्मों में से एक सैराट भी बनाई है, जिसे कई फिल्म समारोह में सम्मानित किया गया।

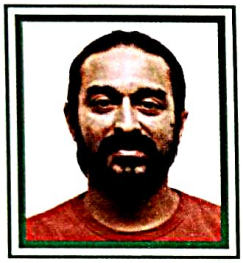

राजा कृष्ण मेनन Raja Krishna Menon

Raja Menon has produced, written, and directed four Hindi features films (Bas Yun Hi, Barah Aana, Airlift (wrote and directed, not produced, Chef). He has also directed and produced over 300 TV commercials, and directed a few documentaries including one on HIV AIDS, Bas Yun Hi showcased in North America where at the 45th Chicago International Film Festival, the oldest North American film festival, it was the first Indian film since Lagaan. Raja's then wrote and directed Airlift, starring Akshay Kumar, Nimrat Kaur and an incredible ensemble cast.

राजा मेनन एक निर्माता, लेखक और निर्देशक हैं, जिन्होंने बस यूं ही, बारह आना, एयरलिफ्ट जैसी फिल्मों में लेखन और निर्देशन जबकि फिल्म शेफ को निर्मित किया है। उन्होंने अभी तक 300 टीवी विज्ञापन और एचआईवी एड्स सहित कई मुद्दों पर वृत्तचित्रों का निर्माण और निर्देशन किया। उनकी फिल्म बारह आना को देश–विदेश में काफी सराहा गया है। अमेरिका के 45वें शिकागो इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल समेत भारत के कई फिल्म समारोह में इसे प्रदर्शित किया गया। यह लगान के बाद पहली भारतीय फिल्म थी, जिसे इतना सराहा गया था। वहीं वर्ष 2016 में रिलीज हुई अक्षय कुमार, निम्रत कौर अभिनीत फिल्म एयरलिफ्ट ने भी काफी अच्छा प्रदर्शन किया।

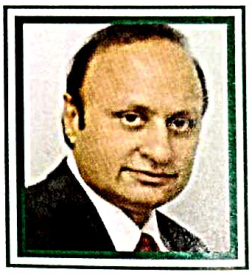

उदय सिंह Uday Singh

Uday Singh is the Managing Director of the Motion Picture Association's India office, responsible for promoting and protecting the commercial and creative interests of the Hollywood studios in India as well as those of the local screen communities. In this capacity, he oversees all operations including: strategic partnerships, government advocacy, public relations, content protection, and technology. He is on the working committee of the MIB Five Year Plan for the film sector, the FICCI-IP committee, CII and FICCI Entertainment Committee and the Chairman of the Los Angeles India Film Council.

उदय सिंह, मोशन पिक्चर एसोसिएशन भारत के प्रबंध निदेशक हैं और भारत में हॉलीवुड फिल्मों के वाणिज्यिक और रचनात्मक हितों को बढावा देने और उनकी सुरक्षा के लिए कार्य करते हैं। इसके साथ ही वे रणनीतिक साझेदारी, जनसंपर्क, सामग्री संरक्षण और प्रौद्योगिकी सहित अन्य विभागों के कार्य भी देखते हैं। वे फिल्म क्षेत्र के लिए बनाई गई एमआईबी पंचवर्षीय योजना, फिक्की–आईपी समिति, सीआईआई और फिक्की मनोरंजन समिति के सदस्य हैं और लॉस एंज्लेस इंडिया फिल्म काउंसिल की समिति के अध्यक्ष हैं। इससे पहले वे पीवीआर पिक्चर्स के सीईओ थे, जहां उन्होंने सुमित एंटरटेनमेंट और हाइड पार्क के साथ साझेदारी की। वेकोलंबिया त्रिस्टार मोशन पिक्चर ग्रुप के लिए कार्यकारी उपाध्यक्ष भी रह चुके हैं।

विवेक अग्निहोत्री Vivek Agnihotri

Vivek is an award-winning filmmaker, writer and a free thinker. An ex-advertising man, Vivek is a very popular public speaker on socio-political issues and lectures on 'Creative Thinking' and 'Innovation' in top global institutes. His prophetic film, 'Buddha In A Traffic Jam' dealt with the theme of Urban Naxalism and exposed the sinister nexus between the Naxals, Media,NGOs and the academia. The film faced extreme resistance from the Left and was stuck for five years before Vivek travelled all across India to show his film, encountering a violent attempt to curb his freedom of speech. Vivek is married to national award winner actor Pallavi Joshi and has two children. Vivek is an avid traveler, columnist and a social media influencer.

विवेक अग्निहोत्री एक पुरस्कार विजेता फिल्म निर्माता, लेखक और एक स्वतंत्र विचारक हैं। वे सामाजिक–राजनीतिक मुद्दों और शीर्ष वैश्विक संस्थानों में 'क्रिएटिव थिंकिंग' और 'इनोवेशन' पर व्याख्यान देने के लिए बहुत लोकप्रिय वक्ता हैं। उनकी भविष्यवाणी पर आधारित फिल्म, 'बुद्धा इन ए ट्रैफिक जाम' में शहरी नक्सलवाद और उनसे जुड़े मुद्दे का चित्रण किया है। इस फिल्म फिल्म को वामपंथियों से अत्यधिक प्रतिरोध का सामना करना पड़ा और पांच साल तक इसे अटका दिया गया और उन्होंने अभिव्यक्ति की आजादी को लेकर बहुत प्रयास किए। उन्होंने राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार विजेता अभिनेता पल्लवी जोशी से विवाह किया और उनके दो बच्चे हैं। विवेक एक स्तंभकार और एक सोशल मीडिया प्रभावक हैं।

फ़ीचर फ़िल्में
FEATURE FILMS

65TH
राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार 2017
National Film Awards 2017

35 मि.मि. या बड़े गेज या डिजिटल प्रारूप में बनी किन्तु फिल्म प्रारूप अथवा वीडियो/डिजिटल प्रारूप में जारी किसी भी भारतीय भाषा में बनी और केन्द्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड द्वारा फीचर या फीचरेट के रूप में प्रमाणीकृत फिल्म फीचर फिल्म श्रेणी के लिए पात्र है।

Films made in any Indian language, shot on 35 mm or in a wider gauge or digital format but released on a film format or video/digital format and certified by the Central Board of Film Certification as a feature film or featurette are eligible for feature film section.

FEATURE FILMS | AT A GLANCE

VILLAGE ROCKSTARS (Assemese)
विलेज रॉकस्टार्स (असमिया)
Best Feature Film
सर्वोत्तम फीचर फिल्म
Best Child Artist
Bhanita Das
सर्वोत्तम बाल कलाकार
भानिता दास
Best Audiography (Location Sound Recordist)
Mallika Das
सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन (लोकेशन साउण्ड रिकॉर्डिस्ट)
मल्लिका दास
Best Editing
Rima Das
सर्वोत्तम संपादन
रीमा दास

SINJAR (Jasari)
सिंजर (जसारी)
Indira Gandhi Award For Best Debut Film Of A Director
निर्देशक की सर्वोत्तम प्रथम फिल्म के लिए इंदिरा गाँधी पुरस्कार
Best Jasari Film
सर्वोत्तम जसारी फ़िल्म

BAAHUBALI – THE CONCLUSION (Telugu)
बाहुबली– द कंक्लूजन (तेलुगु)
Best Popular Film Providing Wholesome Entertainment
लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन करनेवाली सर्वोत्तम फिल्म के लिए पुरस्कार
Best Special Effects
RC Kamalakannan
सर्वोत्तम विशेष प्रभाव
आर सी कमलाकनन्न
Best Action Direction Award
King Solomon
Lee Whittaker
Kecha Khamphakdee
सर्वोत्तम एक्शन निर्देशन
किंग सोलमन
ली विट्टाकेर
केचा खाम्पहकड़ी

DHAPPA (Marathi)
धप्पा (मराठी)
Nargis Dutt Award for Best Feature Film on National Integration
राष्ट्रीय एकता संबंधी सर्वोत्तम फिल्म के लिए नरगिस दत्त पुरस्कार

IRADA (Hindi)
इरादा (हिन्दी)
Best Film on Environment Conservation / Preservation
पर्यावरण संरक्षण/परिरक्षण पर सर्वोत्तम फिल्म
Best Supporting Actress
Divya Dutta
सर्वोत्तम सह अभिनेत्री
दिव्या दत्ता

MHORKYA (Marathi)
म्होरक्या (मराठी)
Best Children's Film
सर्वोत्तम बाल फिल्म
Special Mention
Raman Devkar
Yashraj Karhade
रमन देवकर
यशराज करहड़े

BHAYANAKAM (Malayalam)
भयानकम (मलयालम)
Best Direction
सर्वोत्तम निर्देशन
Jayaraj
Best Cinematography
Nikhil S Praveen
सर्वोत्तम सिनेमैटोग्राफी
निखिल एस प्रवीण
Best Screenplay (Screenplay Writer – Adapted)
JAYARAJ
सर्वोत्तम पटकथा
जयराज

NAGARKIRTAN (Bengali)
नगर कीर्तन (बांग्ला)
Best Actor
Riddhi Sen
सर्वोत्तम अभिनेता
रिद्धी सेन
Best Costume Design
Gobinda Mandal
सर्वोत्तम वेशभूषाकार
गोबिंदा मंडल
Best Make-up Artist
Ram Rajjak
सर्वोत्तम मेक–अप कलाकार
राम रज्जाक
Special Jury Award
निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार

MOM (Hindi)
मॉम (हिन्दी)
Best Actress
सर्वोत्तम अभिनेत्री
श्रीदेवी
Background Music
A-R Rahman
सर्वोत्तम संगीत निर्देशन (बैकग्राउण्ड स्कॉर)
ए आर रहमान

THONDIMUTHALUM DRIKSAKSHIYUM (Malayalam) (मलयालम)
तोन्डिमुतलुम दृक्साक्षियुम
Best Supporting Actor
Fahad Fazil
सर्वोत्तम सह अभिनेता
फहद फाजिल
Best Screenplay (Screenplay Writer – Original)
Sajeev Pazhoor
सर्वोत्तम पटकथा
सजीव पाज़ूर
Best Malayalam Film
सर्वोत्तम मलयालम फिल्म

फ़ीचर फ़िल्में । एक नज़र में

Aalorukkam (Malayalam)
आलोरुक्कम (मलयालम)
Best Film on Social Issues
सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फिल्म

VISWASAPOORVA M MANSOOR (Malayalam)
विश्वासपूर्वम मनसूर (मलयालम)
Best Male Playback Singer
K-J Yesudas
सर्वोत्तम पार्श्व गायक
के जे येसूदास

KAATRU VELIYIDAI (Tamil)
काट्टु वेलियिडाइ (तमिल)
Best Female Playback Singer
Shashaa Tirupati
सर्वोत्तम पार्श्व गायिका
शाशा तिरुपति
Best Music Direction
A-R Rahman
सर्वोत्तम संगीत निर्देशन
ए आर रहमान

HELLO ARSI (Odia)
हेलो अर्सी (उड़िया)
Best Screenplay (Dialogues)
Sambit Mohanty
सर्वोत्तम संवाद
संबित मोहंती
Best Odiya Film
सर्वोत्तम उड़िया फ़िल्म
Special Mention
विशेष उल्लेख
Prakruti Mishra
प्रकृति मिश्रा

MARCH 22 (Kannada)
मार्च 22
Best Lyrics
J M Prahalad
सर्वोत्तम गीत
जे एम प्रह्लाद

WALKING WITH THE WIND (Ladakhi Kashmiri)
वॉकिंग विद द विंड (लद्दाखी)
Best Audiography (Sound Designer)
Sanal George
सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन
सनल जॉर्ज
Best Audiography (Re-recordist of the final mimxed track)
Justin A Jose
सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन (रि–रिकॉर्डिस्ट ऑफ द फाइनल मिक्सड ट्रैक)
जस्टिन ए जोस
Best Audiography (Sound Designer)
Best Ladakhi Film
सर्वोत्तम लद्दाखी फिल्म

TAKE OFF (Malayalam)
टेक ऑफ (मलयालम)
Best Production Design
Santhosh Raman
सर्वोत्तम प्रोडक्शन डिजाइन
संतोष रमन
Special Mention
Parvathy
पार्वती

TOILET EK PREM KATHA (Hindi)
टॉयलेट एक प्रेमकथा (हिन्दी)
Best Choreography
Ganesh Acharya
सर्वोत्तम नृत्यकला
गणेश आचार्य

ISHU (Assamese)
इशु (असमिया)
Best Assamese Film
सर्वोत्तम असमिया फिल्म

MAYURAKSHI (Bengali)
मयूराक्षी (बांग्ला)
Best Bengali Film
सर्वोत्तम बंगला फिल्म

NEWTON (Hindi)
न्यूटन (हिन्दी)
Best Hindi Film
सर्वोत्तम हिन्दी फिल्म
Special Mention (Supporting Actor)
विशेष उल्लेख
Pankaj Tripathy

HEBBETTU RAMAKKA (Kannada)
हेब्बेट्टु रामाक्का (कन्नड़)
Best Kannada Film
सर्वोत्तम कन्नड फिल्म

KACHCHA LIMBU (Marathi)
कच्चा लिम्बु (मराठी)
Best Marathi Film
सर्वोत्तम मराठी फिल्म

TO LET (Tamil)
टु लेट (तमिल)
Best Tamil Film
सर्वोत्तम तमिल फिल्म

GHAZI (Telugu)
गाज़ी (तेलुगु)
Best Telugu Film
सर्वोत्तम तेलुगू फिल्म

DHH (Gujarati)
ढ... (गुजराती)
Best Gujarati Film
सर्वोत्तम गुजराती फिल्म

PADDAYI (Tulu)
पद्दई (तुलू)
Best Tulu Film
सर्वोत्तम तुलू फिल्म

विलेज रॉकस्टार्स
VILLAGE ROCKSTARS

Assamese | 87 mins
SWARNA KAMAL | ₹2,50,000/-

Direction: Rima Das
Producer: Rima Das
Writer: Rima Das
Editor: Rima Das
Cinematographer: Rima Das
Cast: Bhanita Das, Basanti Das

प्रशस्ति :

एक गांव की लड़की की जीवंत भावना का अद्भुत चित्रण, जिसमें वह अपने स्वयं के रॉक बैंड का सपना देखती है।

उत्तर–पूर्व भारत के एक छोटे से गांव में रहने वाली एक 10 वर्षीय लड़की धुनू का स्वयं का रॉक बैंड बनाने का सपना होता है। आत्मविश्वास से परिपूर्ण धुनू की जीवंत भावना और कल्पना उसे उस दुनिया से अलग करती है, जहां लड़कियों से अक्सर शर्मीली और विनम्र होने की उम्मीद की जाती है। धुनू अपने जीवन में आने वाले दैनिक संघर्षों का सामना करने और अपने सपने को साकार करने के लिए अपनी विधवा मां से समर्थन के साथ लड़कों के एक समूह से हाथ मिलाती है।

Set in a tiny Assam village in north-east India, 10-year-old Dhunu dreams of setting up her own rock band. A self-assured girl, Dhunu's vibrant spirit and imagination sets her apart in a world where girls are often expected to be shy and submissive. With the support from her widowed mother, Dhunu joins hands with a group of boys to face the daily struggles of life and realize her dream.

CITATION:

A marvellous picturisation of a village girl who with her vibrant spirit achieves her dream of having her own rock band.

सर्वोत्तम फ़ीचर फ़िल्म | Best Feature Film

Rima Das

A self-taught film producer and director, Rima Das is native of Assam and shuffles between her home state and Mumbai. She not only writes and directs feature and documentary films, she also runs a film-production company named 'Flying River Films' that she uses to support local, independent filmmakers. Her films have travelled to multiple film festivals and have bagged numerous awards in renowned film circles.

रीमा दास असम की रहने वाली एक फिल्म निर्माता और निर्देशक हैं, जो अपने गृह राज्य और मुंबई के बीच घूमती रहती हैं। वह सिर्फ फीचर और वृत्तचित्र फिल्मों के लिए ही लेखन या निर्देशन नहीं करती है, बल्कि 'फ्लाइंग रिवर फिल्मस' नाम की एक फिल्म–निर्माण कंपनी भी चलाती है, जिससे वह स्थानीय, स्वतंत्र फिल्म निर्माताओं की मदद करती है। उनकी फिल्मों को कई फिल्म समारोह में प्रदर्शित किया गया है और उन्हें कई पुरस्कारों से सम्मानित भी किया गया है।

सिंजर
SINJAR

Jasari | 114.56 mins
SWARNA KAMAL | ₹1,25,000/-

Direction: Pampally
Producer: Shibu G Suseelan
Writer: Pampally
Editor: Lijo Paul
Cinematographer: Sanjay Harris
Music: Dileep Singh
Cast: Musthafa, Mythili, Srinda Arhan, Sethulakshmi, Binoy Nambala

प्रशस्ति :

यह फिल्म वैश्विक युवा आतंकवादियों के पुरुषों द्वारा बलात्कार के बाद दो युवतियों के आघात से संबंधित है, जिसमें वे अपने अवैध बच्चों को सर्वोत्तम इंसान बनाने का फैसला करती हैं।

यह लक्षद्वीप द्वीप में रहने वाले एक मछुआरे अनसार के जीवन पर पड़ने वाले अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के प्रभाव की कहानी है। जब उनकी बहन और मंगेतर को आईएसआईएस आतंकवादियों के चंगुल से बचाया जाता है, तो यह पता चलता है उनके साथ दुष्कर्म भी किया गया था। कहानी अनसार की दिक्कतों के आसपास घूमती है, जो कि उसकी मंगेतर के साथ होने वाले भविष्य पर आधारित है। स्थिति उस वक्त ज्यादा जटिल हो जाती है, जब वह अपनी बहन की स्थिति के बारे में मालूम होता है।

This is the story of the impact of international terrorism on the life of Ansar, a fisherman living on Lakshadweep Island. When his sister and fiancée are rescued from the clutches of ISIS terrorists, it emerges that they were raped in captivity. The story revolves around Ansar's predicament about his future with his fiancée when he suspects that she too was among those raped. The situation gets complicated when he realizes the truth about sister too.

CITATION:

The film deals with trauma of two young girls who after being raped by men belonging to global terrorists decide to bring up their illegitimate kids in the best possible way.

इन्दिरा गांधी पुरस्कार: निर्देशक की पहली सर्वोत्तम फ़िल्म | Indira Gandhi Award For Best Debut Film Of A Director

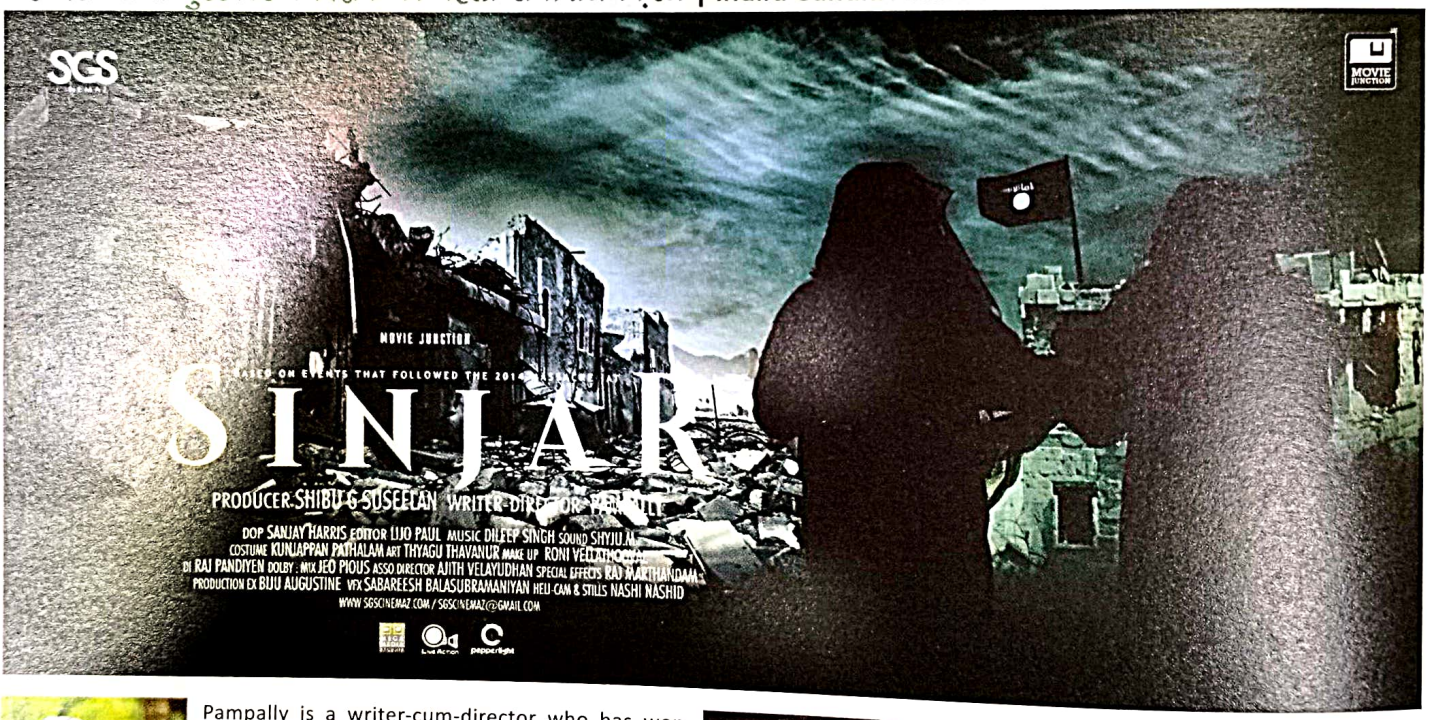
SGS
MOVIE JUNCTION
SINJAR
PRODUCER SHIBU G SUSEELAN
DOP SANJAY HARRIS EDITOR LIJO PAUL MUSIC DILEEP SINGH SOUND SHYJU.N
COSTUME KUNJAPPAN PATHALAM ART THYAGU THAVANUR MAKE UP RONI VELLATHOOR
DI RAJ PANDIYEN DOLBY : MIX JEO PIOUS ASSO DIRECTOR AJITH VELAYUDHAN SPECIAL EFFECTS RAJ KARTHANDAM
PRODUCTION EX BIJU AUGUSTINE VFX SABAREESH BALASUBRAMANIYAN HELI-CAM & STILLS NASHI NASHID
WWW.SGSCINEMAZ.COM / SGSCINEMAZ@GMAIL.COM

Pampally

Pampally is a writer-cum-director who has won multiple awards on national and international stage. Some of his notable works include films like 'Laadam', 'Lorry Girl' and 'Tooba'. Pampally has also worked as an actor with the All India Radio for a long time. He runs his own production house under the banner of 'Pampally Productions'.

पैंपली एक लेखक और निर्देशक हैं, जिन्होंने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई पुरस्कार जीते हैं। उनकी कुछ उल्लेखनीय रचनाओं में 'लादम', 'लॉरी गर्ल' और 'तूबा' जैसी कई फिल्में शामिल हैं। पैंपली ने लंबे समय तक अखिल भारतीय रेडियो में एक अभिनेता के रूप में काम किया है। वे 'पैंपली प्रोडक्शंस' के बैनर के तहत अपना खुद का प्रोडक्शन हाउस भी चलाते हैं।

Shibu G Suseelan

Suseelan is a film producer and his movies like Oridam, Pulijanmam, Nottam, Vasthavam and Pakal has won several National-State level award. He has launched his own production house under the banner of 'Movie Junction'. By producing the film 'Sinjar', Suseelan became the first Jasari-language movie producer in India.

सुसीलन एक फिल्म निर्माता हैं एवं उनकी कई फिल्मों जैसे ऑरिडम, पुलिजनमम, नॉटम, वस्थमम और पकल को कई राष्ट्रीय और राज्यीय पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। उन्होंने 'मूवी जंक्शन' के बैनर के तहत अपना खुद का प्रोडक्शन हाउस भी शुरू किया था और फिल्म 'सिंजर' का निर्माण किया. इस फिल्म के निर्माण के साथ वे भारत में पहली जसारी भाषा के फिल्म निर्माता बने थे।

बाहुबली – द कंक्लुजन
BAAHUBALI - THE CONCLUSION

Telegu | 167 mins
SWARNA KAMAL | ₹2,00,000/-

Direction: S.S. Rajamouli
Production Company: Arka Media Works LLP
Writer: S.S. Rajamouli
Editor: Kotagiri Venkateswara Rao & Thammiraju Bikkina
Cinematographer: KK Senthil Kumar
Music: MM Keeravaani
Cast: Upallapati Suryanarayana Prabhas, Daggubati Rama Naidu, Shetty Sweety, Sathyaraj, Ramya Krishnan, Nassar

प्रशस्ति :

उत्तर चढाव से भरी कल्पना की उल्लेखनीय प्रस्तुति

अपनी विरासत की सच्चाई को उजागर करने के बाद, बाहुबली 2 में महेंद्र बाहुबली अपने अत्याचारी शासक और चाचा भल्लालदेव से बदला लेने के लिए महिषमती के राज्य लौटता है। मध्यकालीन भारत पर आधारित, फिल्म में वह अपने पिता की हत्या का बदला लेता है और भल्लालदेव के क्रूर शासन को समाप्त करते हुए राज्य में शांति स्थापित करता है।

Having uncovered the truth of his legacy, in Baahubali 2 - The Conclusion, Mahendra Baahubali returns to the kingdom of Mahishmati to seek revenge against his the tyrannical ruler - his uncle Bhallaladeva. Set in medieval India, the film follows Baahubali's story as he avenges his father's murder, ends the cruel regime of Bhallaladeva and brings peace to the kingdom.

CITATION:

Remarkable presentation of fantasy, filled with twists and turns

लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वोत्तम फ़िल्म | Best Popular Film Providing Wholesome Entertainment

S.S. Rajamouli

S. S. Rajamouli is one of the most renowned Indian filmmakers in contemporary Indian cinema. He is known for going beyond the norm, both in concept and the use of technology, while continuing to appeal to a larger, mainstream, movie loving audience. His Baahubali franchise brings together his varied interests - film, entertainment, and technology.

एस एस राजामौली, समकालीन भारतीय सिनेमा में सबसे प्रसिद्ध भारतीय फिल्म निर्माताओं में से एक हैं। वे किसी अवधारणा और प्रौद्योगिकी के बखूबी इस्तेमाल के लिए जाने जाते हैं और वे फिल्म प्रेमियों और एक बड़े दर्शक वर्ग के आधार पर कार्य करते हैं। उनकी फिल्म बाहुबली में फिल्म, मनोरंजन और प्रौद्योगिकी का मिश्रण है।

Arka Media Works LLP

Arka Mediaworks LLP, a new-age Production House based out of Hyderabad, is a leading name in motion picture production, television programming and syndication and digital content distribution.

अर्का मीडिया वर्क्स एक नए युग का प्रोडक्शन हाऊस है, जो कि हैदराबाद में है। यह मोशन पिक्चर उत्पादन, टेलीविजन प्रोग्रामिंग और सिंडिकेशन, डिजिटल सामग्री वितरण में अग्रणी संस्था है।

धप्पा

DHAPPA

Marathi | 115.31 mins
RAJAT KAMAL | ₹1,50,000/-

Direction: Nipun Dharmadhikari
Producer: Sumatilal Popatlal Shah
Writer: Girish Pandurang Kulkarni & Nipun Dharmadhikari
Editor: Suchitra Sathe
Cinematographer: Swapnil Sonawane
Music: Gandhaar Sangoram
Cast: Akash Kamble, Sharavi Kulkarni, Vrushali Kulkarni, Akshay Yadav, Girish Kulkarni, Sunil Barve, Irawati Harshe

प्रशस्ति :

बच्चों का एक समूह जो खुद मामले को सुलझाने का फैसला करते हैं जिसमे उनके नाटक प्रदर्शन को एक राजनीतिक संगठन द्वारा बाधा पहुँचाई जाती है।

पुणे की एक सोसाएटी में अनुराधा ने एक ऐसा नाटक लिखा है, जो राजनीतिक संगठन द्वारा बाधित है। वहीं समाज के बुजुर्ग इस व्यवधान को लेकर ज्यादा चिंतित नहीं है, लेकिन बच्चे इस समस्या को लेकर काफी उलझन में हैं और अपने बुजुर्गों से समाधान की अपेक्षा रखते हैं। आखिरकार बड़े–बूढ़ों द्वारा समाधान न मिलने पर वो पूरे मामले को अपने हाथ में लेते हैं और अपने नाटक के माध्यम से जवाब खोजने का फैसला करते हैं।

In a society in Pune, Anuradha has written a play which is disrupted by a political outfit. The society's elders relent to the disruption, but the children are confused and unsuccessfully seek a solution from their elders. Finally, they decide to take matters into their own hands and find answers through their play.

CITATION:

The group of children who decide to take matters in their own hands after their play performance is disrupted by a political outfit.

राष्ट्रीय सद्भाव और एकता के लिए सर्वोत्तम फीचर फिल्म का नर्गिस दत्त पुरस्कार | Nargis Dutt Award for Best Feature Film on National Integration

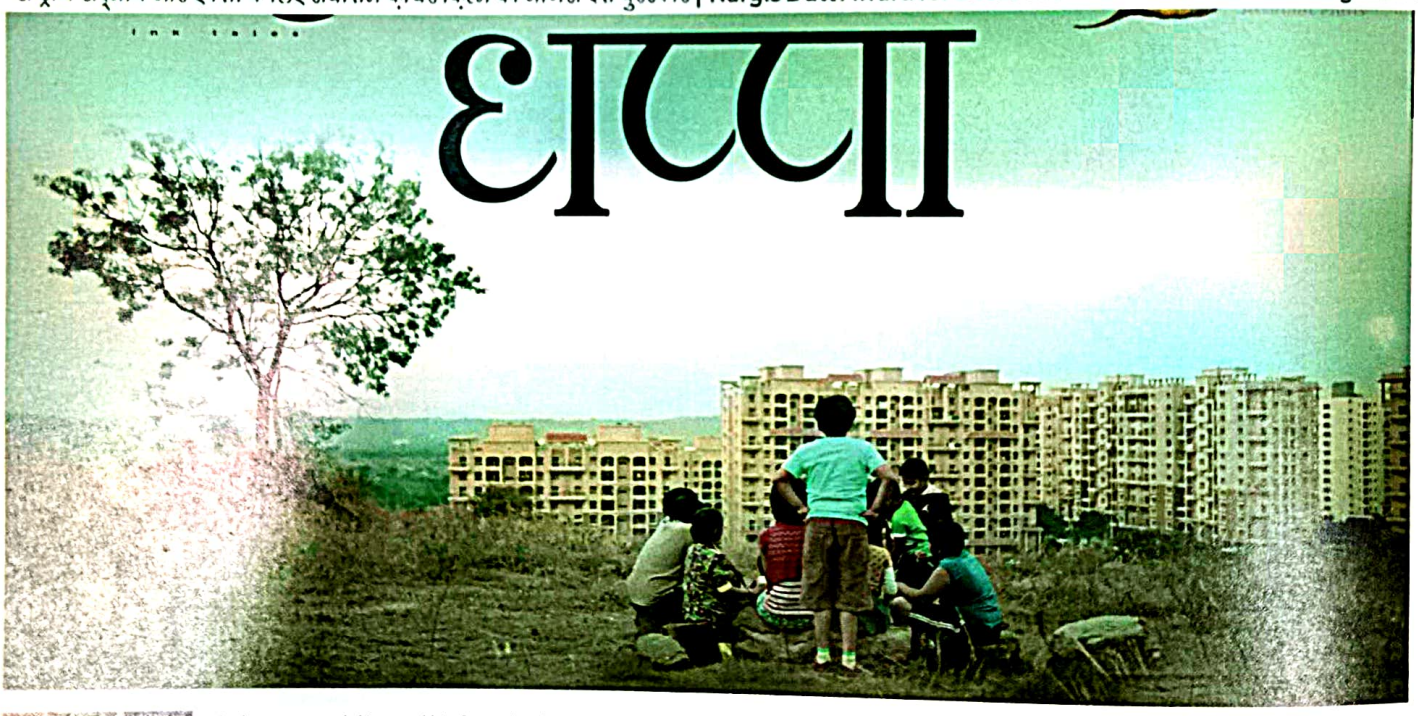

Sumatilal Popatlal Shah

Shah wrote and directed his first play, 'Cycle' at the age of 18 and it fetched him numerous state awards. In 2009, he co-founded a theatre group named 'Natak Company' to produce plays directed at the youth. The theatre group is one of the front-runners in youth theatre in the country.

शाह ने 18 साल की उम्र में अपना पहला नाटक 'साइकिल' लिखा था और उसे निर्देशित भी किया था, जिसे कई राज्य पुरस्कार प्राप्त हुए। 2009 में, उन्होंने युवाओं द्वारा निर्देशित नाटकों का उत्पादन करने के लिए 'नाटक कंपनी' नामक एक रंगमंच समूह की स्थापना की। यह रंगमंच समूह देश के युवा रंगमंच समूहों में से एक है।

Nipun Dharmadhikari

Nipun Dharmadhikari is a director of various real estate companies such as Sumix Club & Resorts Pvt Ltd, Sumix Aqua Sports Pvt Ltd, Steelgar Agrofarms Pvt Ltd and Lamhe Agrofarms Pvt. Ltd. He also owns The Splendour Country Club, a popular resort in Pune. In 2017, he produced the Marathi film 'Baapjanma'.

निपुण धर्माधिकारी विभिन्न रियल एस्टेट कंपनियों जैसे सुमीक्स क्लब एंड रिसॉर्ट्स प्राइवेट लिमिटेड, सुमीक्स एक्वा स्पोर्ट्स प्राइवेट लिमिटेड, स्टीलगर एग्रोफार्म प्राइवेट लिमिटेड और लम्हे एग्रोफार्म प्राइवेट्स के निदेशक हैं। वे पुणे के एक लोकप्रिय रिसॉर्ट द स्प्लेंडर कंट्री क्लब के मालिक भी हैं। 2017 में, उन्होंने मराठी फिल्म 'बापजनम' का निर्माण किया था।

आलोरुक्कम
AALORUKKAM

Malayalam | 123.17 mins
RAJAT KAMAL | ₹1,50,000/-

Direction: V C Abhilash
Production Company: Jolly Lonappan
Writer: V C Abhilash
Editor: Vishnu Kalyani
Cinematographer: Samlal P Thomas
Music: RONNIE RAPHAEL
Cast: Indrans, Sreekanth Menon, Vishnu Agasthya, Seetha Baala, Shaji John, Aliyar, Baby Thraya

प्रशस्ति :

फिल्म एक पिता की गहन खोज को दर्शाती है, जिसका बेटा 16 साल से गायब है. अंत में उसे पता चलता है कि बेटे ने अपना लिंग बदल लिया, जिसे वह स्वीकार नहीं कर सका।

आलोरुक्कम एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है, जो अपने 16 साल तक लापता बेटे की खोज कर उसे ढूंढ लेता है। लेकिन उसकी खुशी अल्पकालिक होती है, क्योंकि उसे पता चलता है कि उसके बेटे ने खुद को औरत में परिवर्तित कर लिया है। वह इस परिवर्तन को स्वीकार करने में असमर्थ है और एक संन्यासी बन जाता है। उसका बेटा, पत्नी और उनके दत्तक बच्चा उसे वास्तविकता स्वीकार करने में मदद करने की कोशिश करते हैं, लेकिन इसका कोई असर नहीं होता है।

Aalorukkam is the story of a man who searches for his missing son for 16 years before tracing him. But his joy was short-lived when he realizes that his son had changed into a woman. He is unable to accept the change and becomes a recluse. His son, his (her) wife and their adopted child try to help him accept the reality, but without much impact.

CITATION:

The film deals with the intense search of a father whose son has been missing for 16 years. Finally he finds out that the son has changed his gender which he could not accept.

सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फिल्म | Best Film on Social Issues

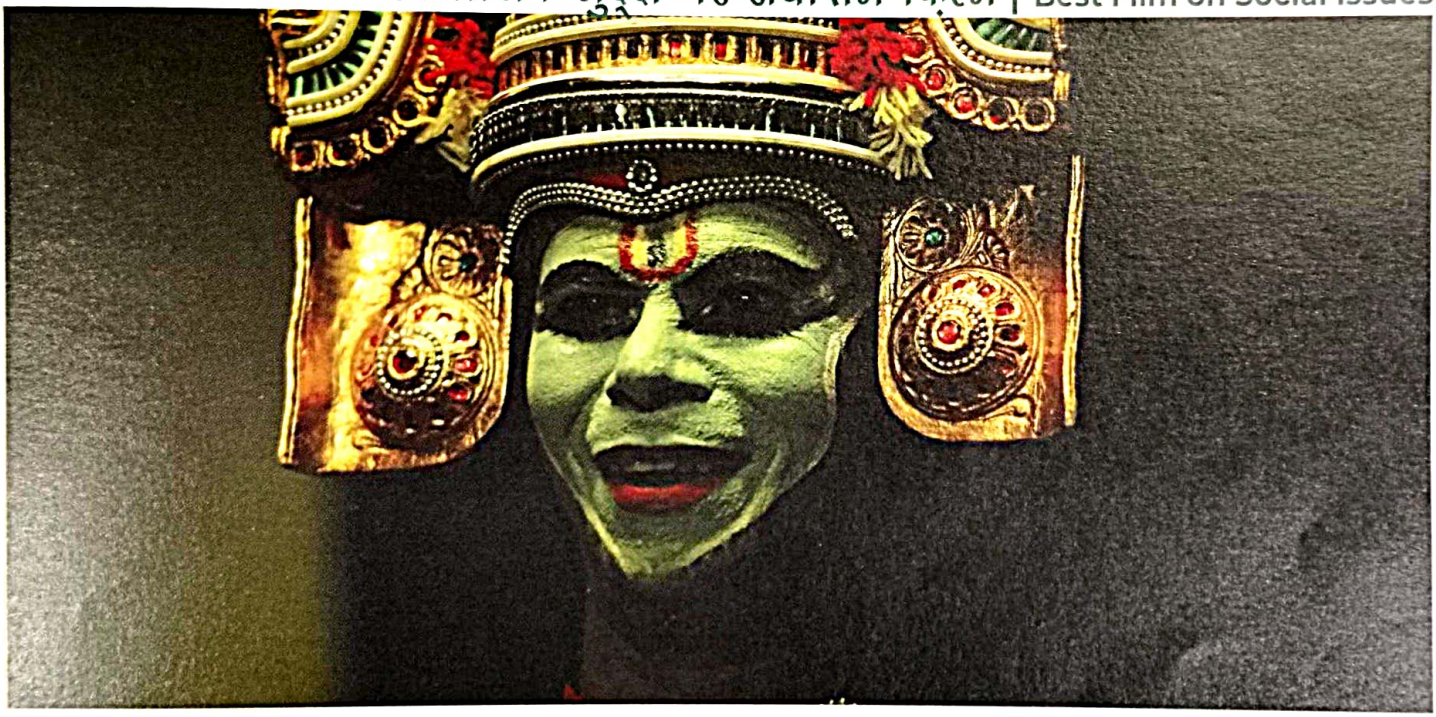

Jolly Lonappan

Jolly Lonappan, a mechanical engineer by profession and an entrepreneur at heart. He is currently running his own businesses in the Middle East and India. Aalorukkam is his first movie under his production house Jollywood Movies. His ultimate mission when starting the Jollywood Movies production company was to make movies focused on virtues of goodness and social relevance.

जॉली लोनाप्पन एक यांत्रिक इंजीनियर और उद्यमी हैं। वे वर्तमान में मध्य पूर्व और भारत में अपना कारोबार संचालित कर रहे हैं। आलोरुक्कम उनके प्रोडक्शन हाउस जोलीवुड मूवीज द्वारा निर्मित पहली पहली है। जोलीवुड मूवीज प्रोडक्शन कंपनी शुरू करते समय उनका उद्देश्य सामाजिक प्रासंगिकता के गुणों पर केंद्रित फिल्म बनाना था।

V C Abhilash

VC Abhilash, an aspiring film director and script writer, started as a journalist and cartoonist. He was into writing stories and scripts in Malayalam and well known for his realistic style of film making. He is also the author of the book "Cartoon Charithram".

वीसी अभिलाष महत्वाकांक्षी फिल्म निर्देशक और पटकथा लेखक हैं और उन्होंने पत्रकार और कार्टूनिस्ट के रूप में करियर की शुरुआत की। वे मलयालम में कहानियां और पटकथाएं लिखते रहे हैं और फिल्म निर्माण की यथार्थवादी शैली के लिए जाने जाते थे। वे 'कार्टून चरित्रम' पुस्तक के लेखक भी हैं।

इरादा

IRADA

Hindi | 110.07 mins
RAJAT KAMAL | ₹1,50,000/-

Direction: Aparnaa Singh
Production Company: Irada Entertainment LLP
Writer: Aparnaa Singh & Anushka Rajan
Editor: Yashishwani
Cinematographer: Ravi Walia
Music: Neeraj Shridhar
Cast: Naseeruddin Shah, Arshad Warsi, Sharad Kelkar, Divya Dutta, Sagrika Ghatge

प्रशस्ति :

यह समाज को आईना दिखाने वाली फिल्म है, जिसमें दिखाया गया है कि लोग पर्यावरण के साथ भूजल को प्रदूषित करते हैं और उसके विपरीत प्रयास भी करते हैं

'इरादा', हमारे समय की सबसे अपरिचित बुराइयों में से एक इको–टेरेरिज्म को दर्शाती है। फिल्म पंजाब के 'कैंसर बेल्ट' के लिए जिम्मेदार जहरीले रासायनिक आतंकवाद का खुलासा करती है और इस प्रक्रिया में उद्योग की आपराधिक और भ्रष्ट प्रकृति के बारे में भी बताती है। यह मुद्दा एक सेवानिवृत्त भारतीय सेना अधिकारी की कहानी के माध्यम से उठाया गया है, जो अपनी बेटी को कैंसर से मरने के बाद उद्योग घरानों और राजनेताओं के बीच खतरनाक गठजोड़ का खुलासा करते हैं।

Irada deals with one of the most unrecognized evils of our time – eco-terrorism. The film exposes the toxic chemical terrorism responsible for the 'cancer belt' of Punjab and in the process reveals the criminal and corrupt nature of the industry. The issue is raised through the story of a retired Indian Army officer who exposes the dangerous nexus between the corporates and politicians after his daughter dies of cancer.

CITATION:

It is an eye opening film where the greed of human beings leads to pollute the environment including the ground water and efforts to reverse the same

पर्यावरण संरक्षण/परिक्षण पर सर्वोत्तम फिल्म | Best Film on Environment Conservation / Preservation

Irada Entertainment LLP

Irada Entertainment is an India-based film production house that focuses on meanigful Cinema. Irada was the first film of this production house. The film dealt with a subject of eco-terrorism, an extremely critical movie from environmental perspective. The production house believes in telling impactful stories that are coupled with the right talent and technology.

इरादा एंटरटेनमेंट एक भारतीय फिल्म प्रोडक्शन हाउस है, जो कि अर्थपूर्ण सिनेमा पर कार्य करता है। इरादा इस प्रोडक्शन हाउस की पहली फिल्म थी। यह प्रोडक्शन हाऊस प्रभावशाली कहानियों दर्शाने में विश्वास करता है, जिन्हें सही प्रतिभा और प्रौद्योगिकी के साथ मिलकर निर्मित किया जाता है।

Aparnaa Singh

Aparnaa Singh has written the critically acclaimed film 'Gulaal' with Anurag Kashyap, 'Shaurya' with Samar Khan and Valley of Flowers with Pan Nalin and Anurag Kashyap. Singh worked as the research head for Black Friday and Buddha. She makes her debut in feature films by directing 'Irada'.

अपर्णा सिंह ने अनुराग कश्यप के साथ समीक्षकों द्वारा प्रशंसित फिल्म 'गुलाल', समर खान के साथ 'शौर्य' और पैन नलिन व अनुराग कश्यप के साथ वैली ऑफ फ्लॉअर्स में लेखन किया है। उन्होंने ब्लैक फ्राइडे और बुद्ध के लिए बतौर शोध प्रमुख काम किया। उन्होंने 'इरदा' निर्देशित करके फीचर फिल्मों में अपनी शुरुआत की है।

म्होरक्या
MHORKYA

Marathi | 123.52 mins
SWARNA KAMAL | ₹1,50,000/-

Direction: Amar Bharat Deokar
Production Company: Kalyan Rajmogli Padal
Writer: Amar Bharat Deokar
Editor: Nilesh Rasal
Cinematographer: Girish Jambhalikar
Cast: Anil Kambale, Yasharaj Karhade, Raman Vasant Devkar, Amar Bharat Deokar, Ramachandra Dhumal, Surekha Gavhane

प्रशस्ति :

फिल्म में एक 12 वर्ष के गरीब और निराश लड़के की कहानी के माध्यम से नेता बनने के लिए किए जाने वाले प्रयासों को दर्शाया गया है, जो उसे सफलता के शिखर तक पहुंचाते हैं।

'म्होरक्या' जिसका अर्थ है 'नेता'। यह अशोक (आश्या) नाम के एक लड़के की उम्र की कहानी है। एक गरीब परिवार से ताल्लुक रखने वाला आश्या एक चरवाहा है, जिसे पढ़ाई आदि में कोई रूचि नहीं है। सातवीं कक्षा में होने के बावजूद, उसे अपने झुंड के साथ घूमना अच्छा लगता है और वो स्कूल से नफरत करता है। एक दिन, उसके दोस्त उसे जबरदस्ती स्कूल ले जाते हैं और अंततः, उसे गणतंत्र दिवस परेड के अभ्यास सत्र में ले जाते हैं। यहां अपनी तेज आवाज से वह लोगों का ध्यान आकर्षित करता है और उसे परेड का नेतृत्व करने के लिए कहा जाता है।

'Mhorkya' which means 'Leader' is a coming of age story of a boy named Ashok (Aashya). Coming from a poor household, Aashya is a shepherd, with no interest in academics, whatsoever. Despite being in class seven, Aashya loves gallivanting with his herd and hates school. One day, his friends drag him to school and eventually, he gets pulled into the Republic Day Parade practice session. Here, Aashya gets noticed for his powerful voice, and is asked to compete for the place of the leader.

CITATION:

Perpetual effort to become a leader from the young age is shown in this film through a 12 year old poor, downtrodden and abandoned boy, whose endearing journey leads to a grand achievement.

सर्वोत्तम बाल फ़िल्म | Best Children's Film

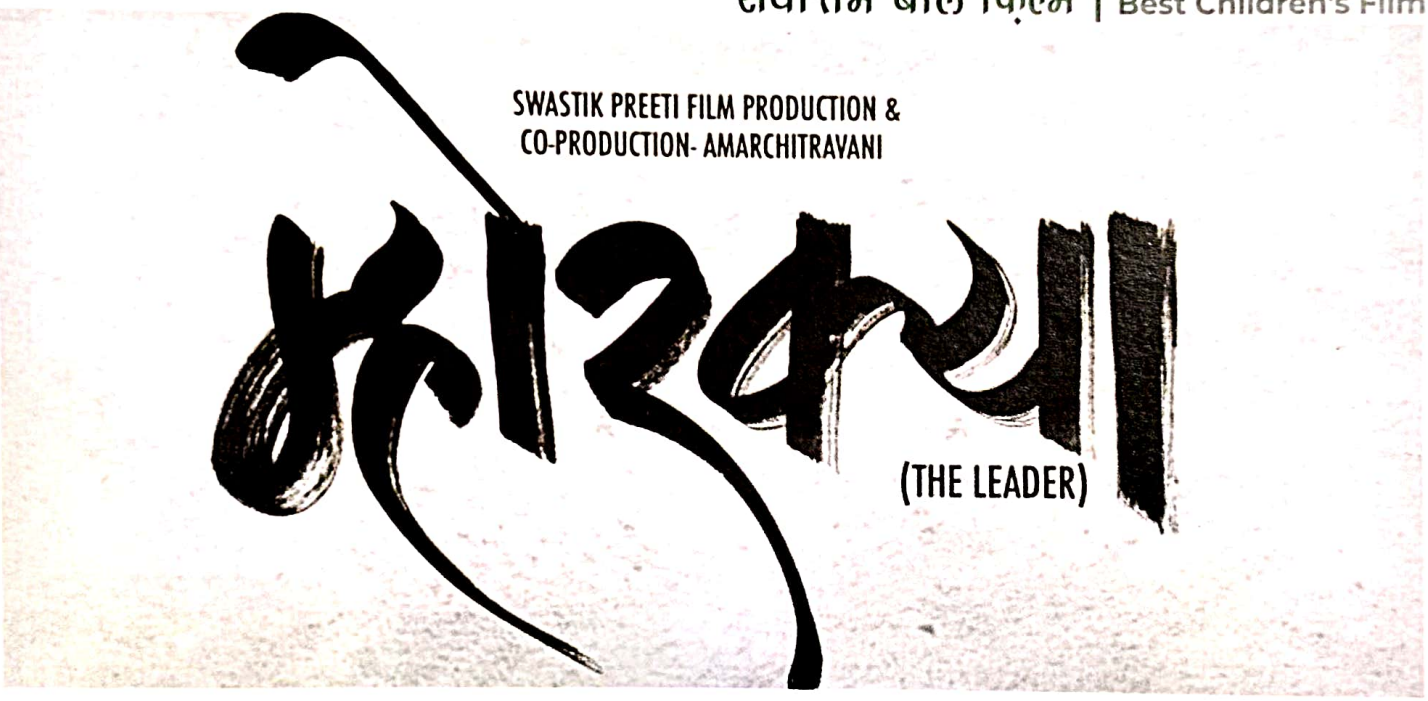

Kalyan Rajmogli Padal

Kalyan Rajmogali Padal was born in 1980, in Solapur, Maharashtra. Mhorkya is his first film as a producer.

कल्याण राजमोगली पदल का जन्म 1980 में महाराष्ट्र के सोलापुर में हुआ था। महोरक्या निर्माता के रूप में उनकी पहली फिल्म है।

Amar Bharat Deokar

Amar Bharat Deokar born in Barshi (Dist- Solapur, Maharashtra) India, did his masters in Video Production at Department of Media and Communication Studies from Savitribai Phule, University of Pune. MHORKYA is his debut feature film as a writer, director, actor and co-producer.

अमर भारत देवकर का जन्म बरशी (जिला–सोलापुर, महाराष्ट्र) में हुआ था और उन्होंने पुणे विश्वविद्यालय के सावित्रीबाई फुले से मीडिया और संचार अध्ययन विभाग में वीडियो प्रोडक्शन में स्नातकोत्तर की पढ़ाई की है। महोरक्या एक लेखक, निर्देशक, अभिनेता और सह–निर्माता के रूप में उनकी पहली फीचर फिल्म है।

भयानकम
BHAYANAKAM

Malayalam | 124.27 mins
SWARNA KAMAL | ₹2,50,000/-

Direction: Jayaraj
Producer: Dr Sureshkumar Muttath
Writer: Jayaraj
Editor: Jinu Sobha & Afsal A M
Cinematographer: Nikhil S Praveen
Music: M.K Arjunan
Cast: Renji Panicker, Asha Sarath, Master Keshav Jayaraj, Sabita Jayaraj

प्रशस्ति :

फिल्म में एक छोटे से गांव में सैनिकों के परिवारों को टेलीग्राम और पत्र वितरित करने वाले एक डाकिया के माध्यम से मजबूत रूपकों का उपयोग करते हुए युद्ध के दर्द और प्रभाव को प्रभावी ढंग से प्रदर्शित किया गया है।

प्रथम विश्व युद्ध का एक दिग्गज सिपाही पोस्टमैन के रूप में भारत के कुट्टानंद में एक छोटे से गांव में रहने आता है। वह खुशी के प्रतीक के रूप में सैनिकों के परिवार को पैसे और पत्र वितरित करने का काम करता है। हालांकि वे द्वितीय विश्व युद्ध शुरू होने के बाद मौत की सूचना देने वाला बन गया है। फिल्म में द्वितीय विश्व युद्ध का दर्द और प्रभाव टेलीग्राम और डाकिया की दुविधा के माध्यम से दिखाया गया है।

A 1st World War veteran is coming to a small backwater village in Kuttanand, India as a Postman. He is distributing money orders and letters to the family of soldiers as a symbol of happiness. He turns out to be an Omen of death once Second World War starts. The pain and impact of Second World War is shown through the telegrams and postman's dilemma.

CITATION:

For effectively showing the pains and impact of the wars by using strong metaphors through a postman who distributes telegrams and letters to the family members of soldiers in a small village in the Malayalam film Bhayanakam.

सर्वोत्तम निर्देशन | Best Direction

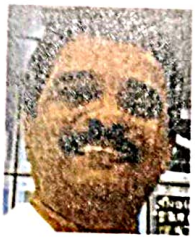

Jayaraj

Jayarajan Rajasekharan Nair, professionally credited as Jayaraj, is an Indian filmmaker, who predominantly works in Malayalam film industry. He is the founder of the Birds Club International and is actively involved in philanthropic work. Jayaraj is a recipient of the Crystal Bear Award at the Berlin International Film Festival, the Golden Peacock award at the IFFI , the Golden Crow Pheasant award at the IFFK , the FIPRESCI Award from the International Federation of Film Critics, the Don Quijote Award from the International Federation of Film Societies, The Network for the Promotion of Asian Cinema (NETPAC) award and a special mention award at the Karlovy Vary International Film Festival. He is also a 6 time recipient of the National Film Award and several Kerala State Film Awards. Some of his notable films include, Desadanam, Kaliyattam, Karunam, Shantham, Otaal etc.

जयराजन राजशेखरन नय्यर एक भारतीय फिल्म निर्माता हैं, जो मुख्य रूप से मलयालम फिल्म उद्योग में काम कर रहे हैं। वह बर्ड्स क्लब इंटरनेशनल के संस्थापक हैं और सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहते हैं। उन्हें बर्लिन अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में क्रिस्टल बियर पुरस्कार, आईएफएफके में गोल्डन पीकॉक पुरस्कार, आईएफएफके में गोल्डन क्रो फिजेंट अवॉर्ड, इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ फिल्म क्रिटिक्स से एफआईपीआरएससीआई पुरस्कार और इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ फिल्म सोसाइटीज की ओर से द डॉन क्विजोट अवॉर्ड सम्मानित किया गया है। उन्हें 6 बार राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार और कई केरल राज्य फिल्म पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है उनकी कुछ उल्लेखनीय फिल्मों में देसादनम, कलियट्टम, करुणम, शानम, ओटाल आदि फिल्में शामिल है।

नगरकीर्तन
NAGARKIRTAN

Bengali | 115.10 mins
RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction: Kaushik Ganguly
Producer: Acropolis Entertainment Pvt. Ltd
Writer: Kaushik Ganguly
Editor: Subhajit Singha
Cinematographer: Sirsha Roy
Music: Prabuddha Banerjee
Cast: Ritwick Chakraborty, Riddhi Sen, Shankari

प्रशस्ति :

फिल्म में अपना लिंग परिवर्तन करने और आसपास की दिक्कतों को सामना करने वाले लड़के का प्रदर्शन अद्भुत है।

ग्रामीण बंगाल में पैदा हुए एक लड़के परिमल को जल्द ही पता चलता है कि वह अंदर से एक महिला है, हालांकि बाहरी तौर पर वो पुरुष ही है। उसने कोलकाता शहर में एक ट्रांसजेंडर आश्रय में शरण मांगी और पुटी में बदल गया। यहां पुटी अपने जीवन के प्यार मधु से मिला जो एक बांसुरी वादक थीं. लेकिन उनके इस रिश्ते को ना ही मुख्यधारा का समाज स्वीकार करता है और न ही ट्रांसजेंडर समाज इस रिश्ते को अपनाने के लिए तैयार होता है, इसलिए भागना ही उनके लिए एकमात्र तरीका था।

Born as a boy in rural Bengal, Parimal realised soon enough that from inside he was a woman, even though he had the physical attributes of a man. He seeked refuge at a transgender shelter in the city of Kolkata, and turned into Puti. It was here that Puti met the love of her life, Madhu, a flute player. Neither the mainstream society nor the transgender clan would've accepted this relationship so the only way out was to flee.

CITATION:

For the role displaying the complexities of a boy who changes his gender in the Bengali film Nagarkirtan.

सर्वोत्तम अभिनेता | Best Actor

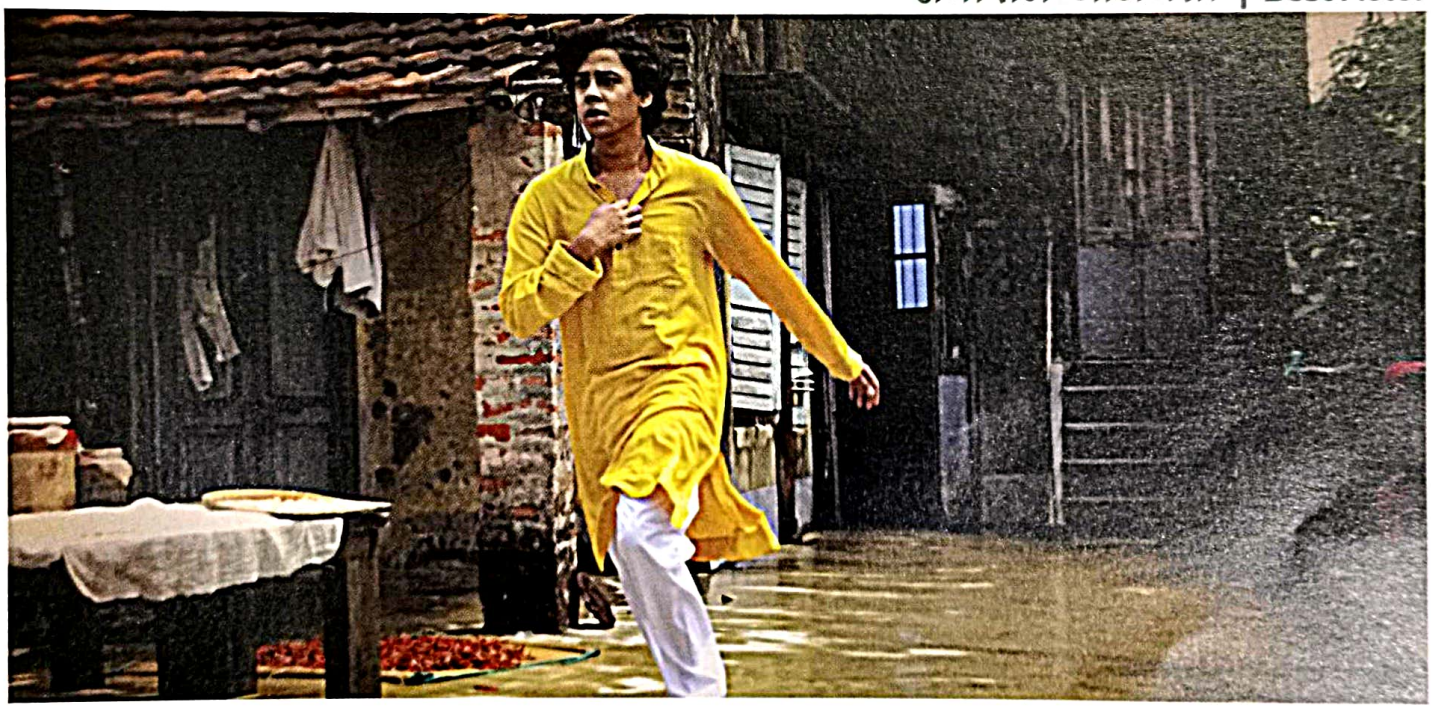

Riddhi Sen

Ridhi Sen started his career at the age of 4, with a play directed by his father, Koushik Sen. He has done 12 major characters on stage, he has been a part of several Bengali and Hindi films. He has been a major part of both highly appreciated regional and national Films like Open Tee Bioscope, Kahaani, Parched, Chauranga, Bhoomi etc.He had an important role in the international film 'LION'.

ऋधि सेन ने चार साल की उम्र में ही अपने पिता कौशिक सेन द्वारा निर्देशित एक नाटक से अपना करियर शुरू किया था। उन्होंने मंच पर 12 प्रमुख किरदार निभाए हैं और वे कई बंगाली और हिंदी फिल्मों का हिस्सा रहे हैं। उन्होंने ओपन टी बायोस्कोप, कहानी, पार्श्ड, चौरंगा, भूमि जैसे कई प्रशंसनीय क्षेत्रीय और राष्ट्रीय फिल्मों में काम किया है। अंतरराष्ट्रीय फिल्म 'लिओन' में भी उनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी।

मॉम

MOM

Hindi| 147.43 mins
RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction: Ravi Udyawar
Producer: Boney Kapoor
Writer: Girish Kohli
Editor: Monisha R. Baldawa
Cinematographer: Anay Goswami, Ralph Kaechele
Music: A R Rahman
Cast: Sridevi Kapoor, Nawazuddin Siddiqui, Akshaye Khanna

प्रशस्ति :

**एक मां का आघात जिसकी बेटी के साथ बलात्कार किया गया है।
यह स्वर्गीय श्रीमती श्रीदेवी को श्रद्धांजलि भी है।**

मॉम, एक स्कूल शिक्षक देवकी पर आधारित बदला लेने वाला नाटक है, जिसकी बेटी आर्य पर हमला किया जाता है और चलती गाड़ी में 4 लोगों द्वारा दुष्कर्म किया जाता है। यह एक सीधा सरल मामला होता है, लेकिन एक आरोपी द्वारा गवाह और फोरेंसिक रिपोर्ट में छेड़छाड़ की जाती है, जो जिसकी अपराधिक दुनिया में बहुत दूर तक पहुंच थी। देवकी ने शुरुआत में अपनी बेटी के लिए न्याय पाने के कानून का दरवाजा खटखटाया, लेकिन उसकी उम्मीद बेकार साबित हुई। उसके बाद वह कानून और पुलिस में विश्वास खो देती है और इस मामले को अपने हाथों में लेने का फैसला करती है।

Mom, is a revenge drama based on a school teacher, Devki whose step-daughter Arya is assaulted and raped by 4 men in a moving car. Though it is an open and shut case, the witness and forensic reports were scrupulously manipulated by one of the accused, who had a far reach in the world of crimes. Devki, who initially knocked the door of the law of to get justice for her daughter, is hope bereft. She loses every drop of trust in law and police she had in her and decides to take the matter in her own hands.

CITATION:

**The trauma of a mother whose daughter is gang raped.
It is also a tribute to late Smt. Sridevi.**

सर्वोत्तम अभिनेत्री | Best Actress

Sridevi

Adept in several south Indian languages, Sridevi was involved in the Tamil, Telugu, Kannada and Malayalam cinema industries. Acting began when she was a toddler, with roles in devotional films such as Kandhan Karunai (1967) and Thunaivan (1969, but she also managed what was for her time a rare crossover from the southern film industry to the Hindi film industry, thereby gaining nationwide recognition and appeal. Born in Sivakasi, a small town in Tamil Nadu famous for its firecracker factories, she was the daughter of K Ayyappan, a lawyer, and his wife, Rajeshwari. The family ran a small plastic manufacturing unit. With a filmography of close to 300 movies in at least five Indian languages, she held her own as a leading lady, a box office magnet from the 1970s to the late 1990s. The world lost this beautiful and talented artist in the year 2018, months before she won this prestigious award.

कई दक्षिण भारतीय भाषाओं में कुशल श्रीदेवी ने तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम सिनेमा में अहम योगदान दिया था। उन्होंने बचपन से ही अभिनय की शुरुआत कर दी थी और कंधन करुणई (1967) और थुनैवन (1969) जैसी धार्मिक फिल्मों में भी कार्य किया। हालांकि दक्षिणी फिल्म उद्योग से हिंदी फिल्म उद्योग में उनके आगमन ने उन्हें पूरे देश में पहचान दिलाई। तमिलनाडु के एक छोटे से शहर शिवकाशी में जन्मीं श्रीदेवी के वकील के अय अयप्पन और उनकी पत्नी राजेश्वरी की बेटी थीं। पांच भाषाओं में 300 फिल्मों में काम करने के साथ ही उन्होंने 1970 से 1990 तक के दशक में बॉलीवुड पर राज किया था। हालांकि यह प्रतिष्ठित पुरस्कार जीतने से कुछ महीने पहले ही, उन्होंने 2018 में हमें हमेशा के लिए अलविदा कह दिया।

तोंडीमुतलूम दृक्साक्षियुम

THONDIMUTHALUM DRIKSAKSHIYUM

Malayalam| 135.46 mins

RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction: Dileesh Pothan
Producer: Sandip Senan
Writer: Sajeev Pazhoor
Editor: Kiran Das
Cinematographer: Rajeev Ravi
Music: Bijibal
Cast: Fahad Fazil, Suraj Venjaramoodu, Nimisha Sajayan, Alencier Ley Lopez

प्रशस्ति :

फिल्म में उत्कृष्ट अभिनय के साथ किरदार को दर्शाने के लिए।

एक निचले मध्यम वर्गीय दम्पति का जीवन एक चोर की वजह से बाधित हो जाता है, जब वो उनकी कोई कीमती वस्तु चुरा लेता है। फिल्म कासरगोड के एक पुलिस स्टेशन में घटने वाली विभिन्न घटनाओं के इर्द–गिर्द घूमती है जिसमें भ्रष्टाचार, हास्य और हमारे प्रशासन के गलत कृत्यों का बखूबी चित्रण किया गया है।

A young lower middle-class couple's life is disrupted one day by a petty thief when he steals their only precious belonging. The film is set in Kasargode, in a police station where the action plays out, mirroring the corruption, pathos, humour and ridiculousness in what we routinely decry as the 'system'. The conversation and incidents at that station and how it affects the lives of everyone involved are what the film is about.

CITATION:

For the role of displaying with an excellent histrionics in the Malayalam film Thondmutthil Driksakshyam

सर्वोत्तम सह अभिनेता | Best Supporting Actor

Fahad Fazil

Fahadh Fazil is an Indian film actor and producer. He is acclaimed for the realistic and self-styled portrayal of the characters he plays. Backed by many impressive performances on screen, he is regarded as one of the most talented actors in the film industry. He pursued M.A in philosophy from university of Miami, Florida, United States.

फहाद फाज़िल एक भारतीय फिल्म अभिनेता और निर्माता हैं। उनकी किरदारों के यथार्थवादी और आत्मनिर्भर चित्रण के लिए सराहना की जाती है। स्क्रीन पर उनके कई प्रभावशाली प्रदर्शनों का समर्थन करते हुए, उन्हें फिल्म उद्योग में सबसे प्रतिभाशाली कलाकारों में से एक माना जाता है। उन्होंने यूनिवर्सिटी ऑफ मियामी, अमेरिका से दर्शनशास्त्र में एमए की पढ़ाई की है।

इरादा

IRADA

Hindi | 110.07 mins
RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction: Aparnaa Singh
Production Company: Irada Entertainment LLP
Writer: Aparnaa Singh & Anushka Rajan
Editor: Yashishwani
Cinematographer: Ravi Walia
Music: Neeraj Shridhar
Cast: Naseeruddin Shah, Arshad Warsi, Sharad Kelkar, Divya Dutta, Sagrika Ghatge

प्रशस्ति :

फिल्म में एक काल्पनिक राज्य के मुख्यमंत्री के सुन्दर व्यवहार को प्रदर्शित करने वाली भूमिका के लिए।

'इरादा', हमारे समय की सबसे अपरिचित बुराइयों में से एक इको–टेरेरिज्म को दर्शाती है। फिल्म पंजाब के 'कैंसर बेल्ट' के लिए जिम्मेदार जहरीले रासायनिक आतंकवाद का खुलासा करती है और इस प्रक्रिया में उद्योग की आपराधिक और भ्रष्ट प्रकृति के बारे में भी बताती है। यह मुद्दा एक सेवानिवृत्त भारतीय सेना अधिकारी की कहानी के माध्यम से उठाया गया है, जो अपनी बेटी को कैंसर से मरने के बाद उद्योग घरानों और राजनेताओं के बीच खतरनाक गठजोड़ का खुलासा करते हैं।

Irada deals with one of the most unrecognized evils of our time – eco-terrorism. The film exposes the toxic chemical terrorism responsible for the 'cancer belt' of Punjab and in the process reveals the criminal and corrupt nature of the industry. The issue is raised through the story of a retired Indian Army officer who exposes the dangerous nexus between the corporate and politicians after his daughter dies of cancer.

CITATION:

For the role displaying the graceful nature of a chief minister of an imaginary state in Hindi film Irada.

सर्वोत्तम सह अभिनेत्री | Best Supporting Actress

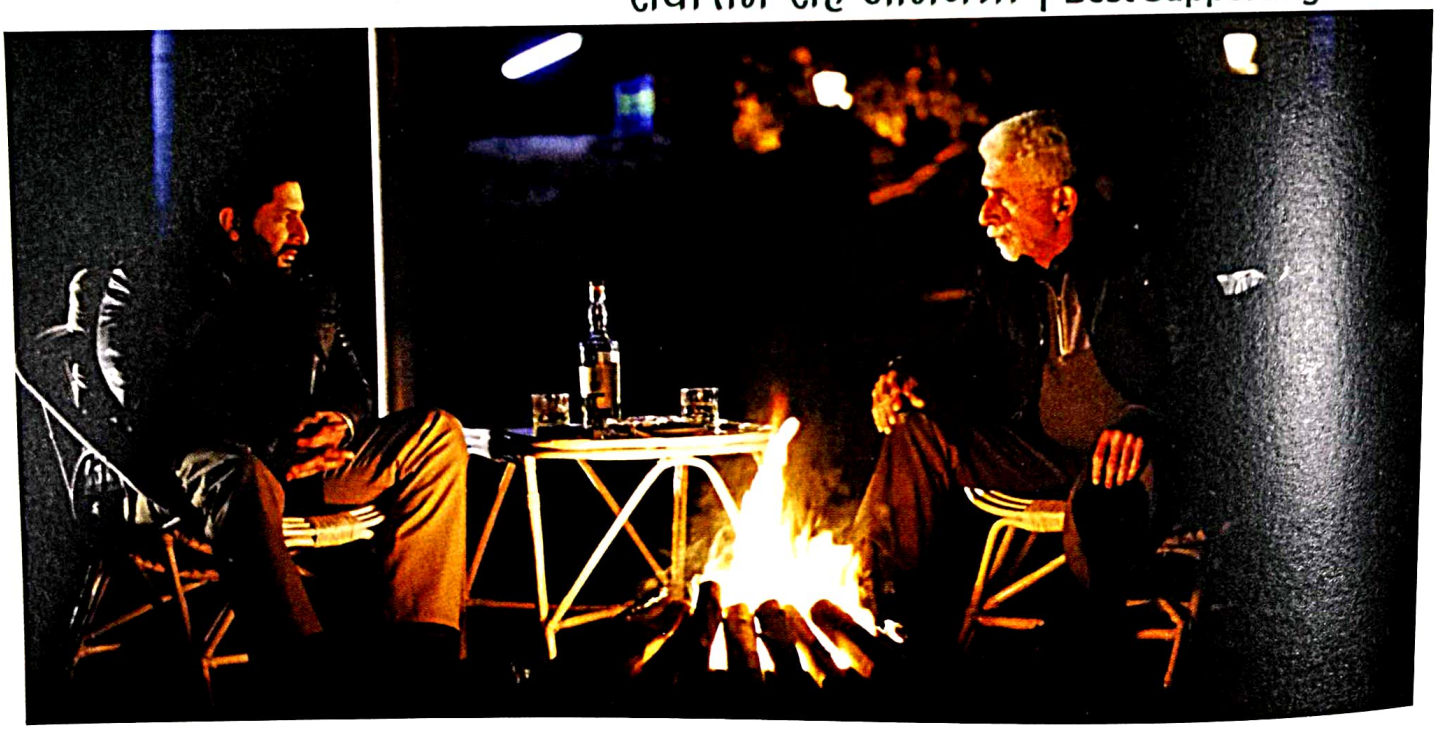

Divya Dutta

Divya Dutta, from Ludhiana (Punjab) has acted in various Hindi and Punjabi movies. She did her schooling from Sacred Heart Convent in Ludhiana. She has won more than 25 awards in the industry. She has worked in more than 60 movies which includes various international movies. The actor, is known for her stupendous performances in films like Welcome to Sajjanpur, Bhaag Milka Bhaag, Dilli-6 and Badlapur.

लुधियाना (पंजाब) की रहने वाली दिव्या दत्ता ने विभिन्न हिंदी और पंजाबी फिल्मों में अभिनय किया है। उन्होंने लुधियाना के सेक्रेड हार्ट कॉन्वेंट से अपनी स्कूली शिक्षा की शुरुआत की थी। उन्होंने फिल्म जगत में 25 से अधिक पुरस्कार जीते हैं। उन्होंने 60 से अधिक फिल्मों में काम किया है, जिसमें विभिन्न अंतरराष्ट्रीय फिल्में भी शामिल हैं। अभिनेत्री अपनी फिल्म सज्जनपुर, भाग मिल्खा भाग, दिल्ली–6 और बदलापुर जैसी फिल्मों में शानदार प्रदर्शन के लिए जानी जाती हैं।

विलेज रॉकस्टार्स
VILLAGE ROCKSTARS

Assamese | 87 mins
RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction: Rima Das
Producer: Rima Das
Writer: Rima Das
Editor: Rima Das
Cinematographer: Rima Das
Cast: Bhanita Das, Basanti Das

प्रशस्ति :

फिल्म में एक मासूम लड़की के किरदार के लिए, जो एक गिटारवादक बनने की इच्छा रखती हैं.

उत्तर–पूर्व भारत के एक छोटे से गांव में रहने वाली एक 10 वर्षीय लड़की धुनू का स्वयं का रॉक बैंड बनाने का सपना होता है। आत्मविश्वास से परिपूर्ण धुनू की जीवंत भावना और कल्पना उसे उस दुनिया से अलग करती है, जहां लड़कियों से अक्सर शर्मीली और विनम्र होने की उम्मीद की जाती है। धुनू अपने जीवन में आने वाले दैनिक संघर्षों का सामना करने और अपने सपने को साकार करने के लिए अपनी विधवा मां से समर्थन के साथ लड़कों के एक समूह से हाथ मिलाती है।

In a small village in Assam, northeast India, 10-year-old Dhunu dreams of having her own rock band. Her vibrant spirit, imagination and self-insurance stand out in a world where girls are expected to be shy and submissive. With her gang of boys and the support of her widowed mother, Dhunu faces the struggles of her daily life and hopes for the day she finally play on a real guitar.

CITATION:

For the role of a small innocent girl who yearns to become a guitarist in Assamese film village Rockstars.

सर्वोत्तम बाल कलाकार | Best Child Artist

Bhanita Das

Bhanita Das currently attending Class IX at Chayygaon Champak Nagar girls high school at Chhaygaon Village is a bubbly, energetic and exploratory young person. Her role as Dhunu is her first attempt at acting. She has great listening and observations skills with an imaginative and inquisitive mind. Bhanita's confident and adaptive personality allows her to explore acting roles easily and during the shoot of Village Rockstar she was able to bring out the desired outcome.

भनीता दास एक ऊर्जावान, उत्साहित लड़की हैं और वो अभी चायगांव के एक चायगांव चंपक नगर गर्ल्स हाईस्कूल में कक्षा 9 में पढ़ाई कर रही है। धुनु के किरदार में उनका अभिनय पदार्पण है। भनीता एक कल्पनाशील और जिज्ञासु दिमाग के साथ अवलोकन कौशल की धनी है। भनीता के आत्मविश्वास और अनुकूल व्यक्तित्व से वह आसानी से अभिनय करने में सक्षम है और विलेज रॉकस्टार की शूटिंग के दौरान वह वांछित परिणाम लाने में सक्षम थीं।

विश्वासपुर्वम् मनसूर
VISWASAPOORVAM MANSOOR

Malayalam | 127 mins
RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction: P.T Kunhimohammed
Producer: K V Mohanan
Writer: P.T Kunhimohammed
Editor: Donmax
Cinematographer: M.J Radhakrishnan
Music: Ramesh Narayanan
Cast: Roshan Mathew, Mumtaz, Sairabanu, Fathibi, Kalanthan Hajee, Damodaran Nair, Comrade Jayarajan, Soumya, Firoz

फिल्म की कहानी वामपंथी विचारधारा के कुछ लोगों के इर्द–गिर्द घूमती है। इसमें मां और बेटी समेत उनके मकान मालिक का परिवार भी शामिल है। एक दिन पुलिस गलत खबर के आधार पर इन लोगों से पूछताछ करती है, इसमें मकान मालिक मंसूर पर आंतकवादी होने का झूठा आरोप लगा दिया जाता है। मंसूर जेल चला जाता है और उसका परिवार बिखर जाता है। जब मंसूर कैद से बाहर आता है तो दुनिया में अपनी जगह खोजने में असमर्थ महसूस करता है और कई परेशानियों से रूबरू होता है।

Film belongs to a circle of left-minded youngsters. This includes a mother and her daughter. One day the Police takes Mansoor away. He is brutally tortured for revelation of terrorist links. Mansoor is sent to jail and his family is shattered. Released from custody, Mansoor finds himself unwanted everywhere. There are tragedies many more in store for him....

प्रशस्ति :

फिल्म में गीत पॉय मरंजा करंजा के सुंदर प्रस्तुतीकरण के लिए.

CITATION:

For the lovely rendering of the song 'poy maranja kaalam' in Malayalam film Vishvaasapoorvamaaya Mansoor

सर्वोत्तम पार्श्व गायक | Best Male Playback Singer

K.J Yesudas

Performing in the industry for more than five decades, KJ Yesudas remains one of India's most acclaimed and regarded singers having sung more than 50,000 songs and in every Indian language including Malayalam, Tamil and Hindi etc. This is his 8th National Film award, in different languages. K.J. Yesudas has sung for all the legends in the film industry such as M.G.Ramachandran, Shivaji Ganesan, N.T.Ramarao, Amitabh Bachchan, Sanjeev Kumar, Sathyan, Prem Nazir, Mammooty, Mohanlal, Rajinikanth and Kamal Haasan etc. He's one of the few Indian Artists to have performed at the Royal Albert Hall, London.

पांच दशकों से अधिक समय से फिल्म जगत में सक्रिय के जे यसुदास भारत के सबसे प्रशंसित और सम्मानित गायकों में से एक है, जिन्होंने मलयालम, तमिल और हिंदी सहित कई भारतीय भाषाओं में 50,000 से अधिक गाने गाए हैं। विभिन्न भाषाओं में यह उनका 8वां राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार है। उन्होंने फिल्म उद्योग के सभी दिग्गजों के लिए गाने गाए हैं, जिसमें एमजी रामचंद्रन, शिवाजी गनेशन, एनटी रामाराओ, अमिताभ बच्चन, संजीव कुमार, सत्यन, प्रेम नाजीर, मोहनलाल, रजनीकांत और कमल हासन आदि शामिल है। वह उन भारतीय कलाकारों में से एक हैं, जिन्होंने रॉयल अल्बर्ट हॉल, लंदन में प्रदर्शन किया है।

काट्रु वेलियिडई
KAATRU VELIYIDAI

Tamil | 138 mins
RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction: Mani Ratnam
Producer: Mani Ratnam
Writer: Mani Ratnam
Editor: Sreekar Prasad
Cinematographer: Ravi Varman
Cast: Karthi, Aditi Rao Hydari, Ganesh, Rukmini Vijayakumar

प्रशस्ति :

फिल्म में गीत वान शाशा तिरुपति के सुंदर प्रस्तुतीकरण के लिए.

एक वायु सेना पायलट वरुण और एक डॉक्टर लीला आपस में प्यार करते हैं, लेकिन उनका विपरीत व्यक्तित्व, विशेष रूप से उनकी आत्म केंद्रितता, उनके रिश्ते में तनाव की वजह बनती है। दोनों भले ही अलग–अलग हो, लेकिन उनके बीच आकर्षण उतना ही मजबूत है। कारगिल युद्ध के दौरान सीमा पर संकट बढ़ता है और लीला यह सब संभाल नहीं पाती है और वरुण का छोड़कर चली जाती है। तीन साल बाद, एक बदला हुआ वरुण लीला की तलाश में है और उससे क्षमा मांगने के लिए ढूंढता रहता है।

An air force pilot, Varun and a doctor, Leela, fall in love, but their contrasting personalities, especially his self-centeredness, keep their relationship tense. He's like an untamed whirlwind and she's like the ocean, calm and deep. Binary opposites, Varun and Leela are very different but the attraction just as strong. Kashmir's border skirmish grows into the Kargil war. Leela can't handle his extremes. 3 years later, a changed Varun is looking for Leela... to apologise for letting her go or reeling her in.

CITATION:

For the beautiful rendering of the song 'vaan varuvam' in Tamil film Katru veliyidai

सर्वोत्तम पार्श्व गायिका | Best Female Playback Singer

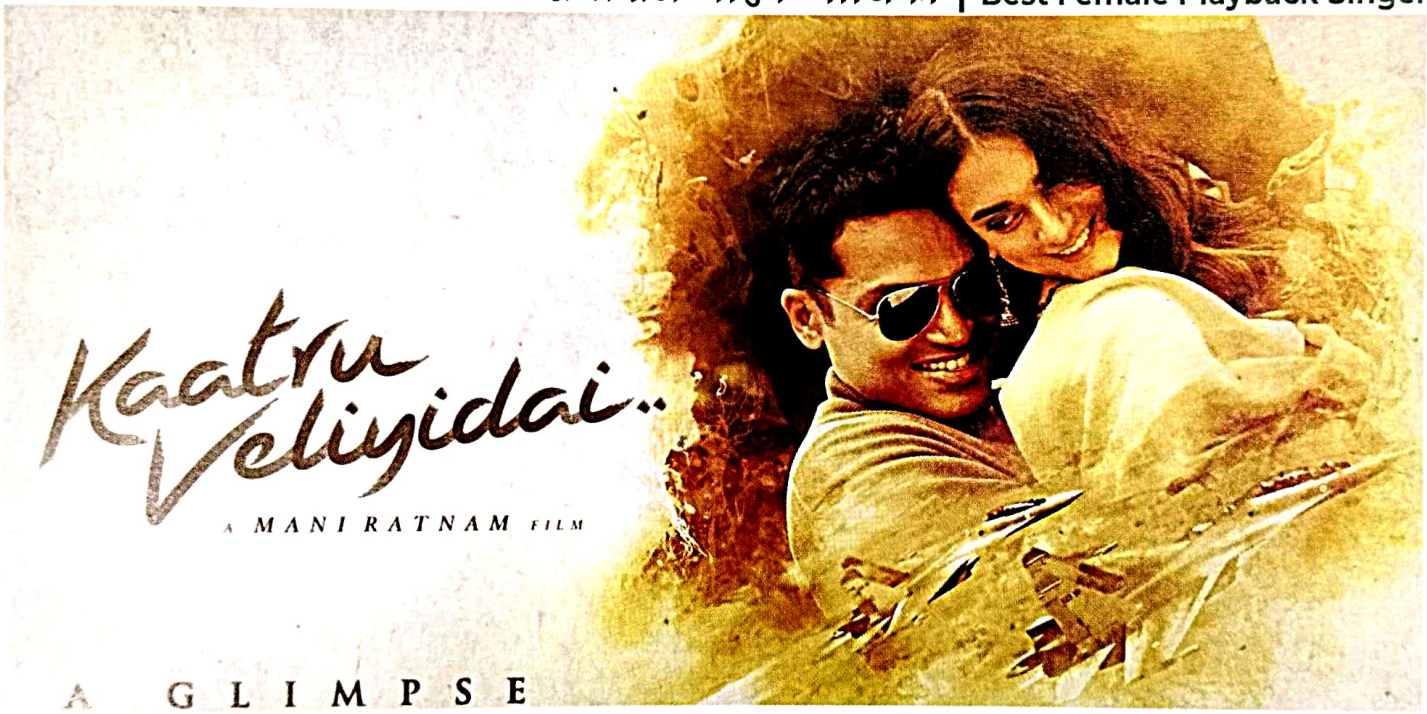

Shashaa Tirupati

Shashaa Tirupati is a National Award Winning, Indo-Canadian playback singer, songwriter, motivational speaker, theatre actor and voice over artist of Indian origin. Her family is from Kashmir, she predominantly works in the Hindi and South Indian music industries. She has sung in films like OK Janu, Jab Harry Met Sejal, Half Girlfriend etc.

शाशा तिरुपति एक राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता हैं और वह भारतीय मूल के इंडो–कनाडाई पार्श्वगायक, गीतकार, प्रेरक वक्ता, रंगमंच, वॉइस ऑवर आर्टिस्ट अभिनेत्री हैं। वे कश्मीर से ताल्लुक रखती हैं और वे मुख्य रूप से हिंदी और दक्षिण भारतीय संगीत उद्योगों में काम करती है। उन्होंने ओके जानू, जब हैरी मेट सेजल, हाफ गर्लफ्रेंड इत्यादि जैसी फिल्मों में गाने गाए हैं। साशा ने तमिल, हिंदी, तेलुगु, पंजाबी, मलायलम, कन्नड़, बंगाली, कोंकणी, अरेबिक और अंग्रेजी भाषाओं में भी गाने गाए हैं।

भयानकम
BHAYANAKAM

Malayalam | 124.27 mins
RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction: Jayaraj
Producer: Dr Sureshkumar Muttath
Writer: Jayaraj
Editor: Jinu Sobha & Afsal A M
Cinematographer: Nikhil S Praveen
Music: M.K Arjunan
Cast: Renji Panicker, Asha Sarath, Master Keshav Jayaraj, Sabita Jayaraj

प्रशस्ति :

एक मुश्किल इलाके में उत्कृष्ट छायांकन के लिए।

प्रथम विश्व युद्ध का एक दिग्गज सिपाही पोस्टमैन के रूप में भारत के कुट्टानंद में एक छोटे से गांव में रहने आता है। वह खुशी के प्रतीक के रूप में सैनिकों के परिवार को पैसे और पत्र वितरित करने का काम करता है। हालांकि वे द्वितीय विश्व युद्ध शुरू होने के बाद मौत की सूचना देने वाला बन गया है। फिल्म में द्वितीय विश्व युद्ध का दर्द और प्रभाव टेलीग्राम और डाकिया की दुविधा के माध्यम से दिखाया गया है।

A 1st World War veteran is coming to a small backwater village in Kuttanand, India as a Postman. He is distributing money orders and letters to the family of soldiers as a symbol of happiness. He turns out to be an Omen of death once Second World War starts. The pain and impact of Second World War is shown through the telegrams and postman's dilemma.

CITATION:

For an excellent photography in a difficult terrain in Malayalam film Bhayanakam

सर्वोत्तम छायांकन | Best Cinematography

Nikhil S Praveen

NIKHIL S. PRAVEEN from Kerala completed his Diploma in Cine photography. He has worked as a cinematographer in numerous music videos, short films and Advt. films

केरल के रहने वाले निखिल एस प्रवीण ने सिने फोटोग्राफी में अपना डिप्लोमा पूरा किया है। उन्होंने कई संगीत वीडियो, लघु फिल्मों और विज्ञापन में छायाकार के रूप में कार्य किया है।

तोंडीमुतलूम दृक्साक्षियुम
THONDIMUTHALUM DRIKSAKSHIYUM

Malayalam| 135.46 mins
RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction: Dileesh Pothan
Producer: Sandip Senan
Writer: Sajeev Pazhoor
Editor: Kiran Das
Cinematographer: Rajeev Ravi
Music: Bijibal
Cast: Fahad Fazil, Suraj Venjaramoodu, Nimisha Sajayan, Alencier Ley Lopez

एक निचले मध्यम वर्गीय दम्पत्ति का जीवन एक चोर की वजह से बाधित हो जाता है, जब वो उनकी कोई कीमती वस्तु चुरा लेता है। फिल्म कासरगोड के एक पुलिस स्टेशन में घटने वाली विभिन्न घटनाओं के इर्द–गिर्द घूमती है जिसमें भ्रष्टाचार, हास्य और हमारे प्रशासन के गलत कृत्यों का बखूबी चित्रण किया गया है।

A young lower middle-class couple's life is disrupted one day by a petty thief when he steals their only precious belonging. The film is set in Kasargode, in a police station where the action plays out, mirroring the corruption, pathos, humour and ridiculousness in what we routinely decry as the 'system'. The conversation and incidents at that station and how it affects the lives of everyone involved are what the film is about.

प्रशस्ति :

फिल्म में पटकथा के उत्कृष्ट लेखन के लिए।

CITATION:

For an excellent writing of the screenplay for the Malayalam film Thondamutthil Driksakshyam.

सर्वोत्तम पटकथा (मौलिक) | Best Screenplay Writer (Original)

Sajeev Pazhoor

Sajeev Pazhoor is an Indian novelist and film director from Kerala. Currently he is working as the assistant cultural officer at Tagore Theatre, Thiruvananthapuram for the Department of Information and Public Relations, Government of Kerala. Sajeev entered the film industry in 2013 as the screenwriter of "Swapaanam" directed by Shaji N Karun. His short film Chood (Soddem) (2011) got wide recognition. His screenplay for Thondimuthalum Driksakshiyum had won huge critical acclaim.

सजीव पाजूर केरल के एक भारतीय उपन्यासकार और फिल्म निर्देशक हैं। वर्तमान में वह टैगोर थियेटर, तिरुवनंतपुरम में सहायक सांस्कृतिक अधिकारी के रूप में काम कर रहे हैं। सजीव ने 2013 में शाजी एन करुण द्वारा निर्देशित फिल्म स्वप्नम के पटकथा लेखक के रूप में फिल्म जगत में प्रवेश किया था। उनकी लघु फिल्म चूड (सोद्दम) (2011) को व्यापक मान्यता मिली। फिल्म की पटकथा को काफी सराहना मिली थी।

भयानकम
BHAYANAKAM

Malayalam | 124.27 mins
RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction: Jayaraj
Producer: Dr Suresh kumar Muttath
Writer: Jayaraj
Editor: Jinu Sobha & Afsal A M
Cinematographer: Nikhil S Praveen
Music: M.K Arjunan
Cast: Renji Panicker, Asha Sarath, Master \Keshav Jayaraj, Sabita Jayaraj

प्रशस्ति :

फिल्म में पटकथा के उत्कृष्ट लेखन के लिए।

प्रथम विश्व युद्ध का एक दिग्गज सिपाही पोस्टमैन के रूप में भारत के कुट्टानंद में एक छोटे से गांव में रहने आता है। वह खुशी के प्रतीक के रूप में सैनिकों के परिवार को पैसे और पत्र वितरित करने का काम करता है। हालांकि वे द्वितीय विश्व युद्ध शुरू होने के बाद मौत की सूचना देने वाला बन गया है। फिल्म में द्वितीय विश्व युद्ध का दर्द और प्रभाव टेलीग्राम और डाकिया की दुविधा के माध्यम से दिखाया गया है।

A 1st World War veteran is coming to a small backwater village in Kuttanand, India as a Postman. He is distributing money orders and letters to the family of soldiers as a symbol of happiness. He turns out to be an Omen of death once Second World War starts. The pain and impact of Second World War is shown through the telegrams and postman's dilemma.

CITATION:

For an excellent writing of screenplay for the Malayalam film Bhayanakam.

सर्वोत्तम पटकथा (रूपांतरत) | Best Screenplay Writer – (Adapted)

Jayaraj

Jayarajan Rajasekharan Nair, professionally credited as Jayaraj, is an Indian filmmaker, who predominantly works in Malayalam film Industry. He is the founder of the Birds Club International and is actively involved in philanthropic work. Jayaraj is a recipient of the Crystal Bear Award at the Berlin International Film Festival, the Golden Peacock award at the IFFI, the Golden Crow Pheasant award at the IFFK, the FIPRESCI Award from the International Federation of Film Critics, the Don Quijote Award from the International Federation of Film Societies, The Network for the Promotion of Asian Cinema (NETPAC) award and a special mention award at the Karlovy Vary International Film Festival. He is also a 6 time recipient of the National Film Award and several Kerala State Film Awards. Some of his notable films include, Desadanam, Kaliyattam, Karunam, Shantham, Otaal etc.

जयराजन राजशेखरन नय्यर एक भारतीय फिल्म निर्माता हैं, जो मुख्य रूप से मलयालम फिल्म उद्योग में काम कर रहे हैं। वह बर्ड्स क्लब इंटरनेशनल के संस्थापक हैं और सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहते हैं। उन्हें बर्लिन अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में क्रिस्टल बियर पुरस्कार, आईएफएफआई में गोल्डन पीकॉक पुरस्कार, आईएफएफके में गोल्डन क्रो फिजेंट अवॉर्ड, इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ फिल्म क्रिटिक्स से एफआईपीआरएससीआई पुरस्कार और इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ फिल्म सोसाइटीज की ओर से द डॉन क्विजोट अवॉर्ड सम्मानित किया गया है। उन्हें 6 बार राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार और कई केरल राज्य फिल्म पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है उनकी कुछ उल्लेखनीय फिल्मों में देसादनम, कलियट्टम, करुणम, शानम, ओटाल आदि फिल्में शामिल है।

हैलो अर्सी
HELLO ARSI

Odia | 97.20 mins
RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction: Sambit Mohanty
Producer: Ajaya Routray
Writer: Sambit Mohanty
Editor: Sibaprasad Mohanty
Cinematographer: Prasantanu Mohapatra
Music: Mitrabhanu Mohanty
Cast: Prakruti Mishra, Parthasarathi Ray, Pryambada Ray

प्रशस्ति :

फिल्म में दिल को छूने वाले संवाद लेखन के लिए।

21वीं शताब्दी में केंद्रीय–पूर्वी भारत में अचानक से बढ़े औद्योगिकीकरण और बड़े पैमाने पर हुई खनन गतिविधियों ने समाज के सामाजिक–आर्थिक वर्ग को प्रभावित किया, जो पहले कृषि पर निर्भर था। इस पृष्ठभूमि में, एक जवान आदमी और एक जवान औरत अचानक एक टकरा जाते हैं, दोनों ही अपने जीवन का नया अर्थ ढूंढ रहे हैं। उनकी यात्रा सड़क पर एक कार में शुरू होती है। यह चलती कार वास्तविक घर से दूर एक अस्थायी घर बन जाती है। हालांकि सड़क झूठ और विश्वासघात का मार्ग बन जाती है। दोनों पात्र स्वतंत्रता की तलाश में हैं।

Sudden industrialization and big scale mining activities in central- eastern India, in the 21st century, has affected the socio-economic fabric of the society which was earlier dependent on agriculture. In this backdrop, a young man and a young woman cross each other's path accidentally, both searching for their respective identities. Their journey starts in a car on the ever expanding ROAD. The moving car becomes a temporary home away from the real home which never is anymore.

CITATION:

For the heart touching dialogues in the Odia film Hello Arsi

सर्वोत्तम पटकथा (संवाद) | Best Screenplay (Dialogues)

Sambit Mohanty

Late Sambit Mohanty did majority of his education in Bhubaneswar. He also learnt direction at FTII, Pune. His Diploma film' TAAT TWAM ASHI' also got a National Award for best Sound recording and designing. He was deeply involved in film education and served as a visiting faculty at various Institutions. He passed away on the 5th of February 2017, just after completing his first feature film 'HELLO ARSI'.

स्वर्गीय संबित मोहंती ने अपनी अधिकांश शिक्षा भुवनेश्वर में ली थी और एफटीआईआई, पुणे से निर्देशन में पढ़ाई की। उनकी फिल्म 'तात त्वम आशी' को सर्वश्रेष्ठ ध्वनि रिकॉर्डिंग और डिजाइनिंग के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिला था। वे फिल्मी शिक्षा से जुड़े थए और उन्होंने विभिन्न संस्थानों में एक विजिटिंग शिक्षक के रूप में कार्य किया था। अपनी पहली फीचर फिल्म 'हेल्लो अर्सी' पूरा करने के ठीक बाद ही 5 फरवरी 2017 को उनका निधन हो गया।

विलेज रॉकस्टार्स
VILLAGE ROCKSTARS

Assamese | 87 mins
RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction: Rima Das
Producer: Rima Das
Writer: Rima Das
Editor: Rima Das
Cinematographer: Rima Das
Cast: Bhanita Das, Basanti Das

प्रशस्ति :

किसी भी रुकावट और त्रुटि के बिना सेट पर ध्वनि रिकॉर्ड का शानदार काम।

उत्तर–पूर्व भारत के एक छोटे से गांव में रहने वाली एक 10 वर्षीय लड़की धुनू का स्वयं का रॉक बैंड बनाने का सपना होता है। आत्मविश्वास से परिपूर्ण धुनू की जीवंत भावना और कल्पना उसे उस दुनिया से अलग करती है, जहां लड़कियों से अक्सर शर्मीली और विनम्र होने की उम्मीद की जाती है। धुनू अपने जीवन में आने वाले दैनिक संघर्षों का सामना करने और अपने सपने को साकार करने के लिए अपनी विधवा मां से समर्थन के साथ लड़कों के एक समूह से हाथ मिलाती है।

In a small village in Assam, northeast India, 10-year-old Dhunu dreams of having her own rock band. Her vibrant spirit, imagination and self-insurance stand out in a world where girls are expected to be shy and submissive. With her gang of boys and the support of her widowed mother, Dhunu faces the struggles of her daily life and hopes for the day she finally play on a real guitar.

CITATION:

A splendid job of recording the sound on the sets without any flaw

सर्वोत्तम ध्वन्यांकन (साउंड रिकॉडिस्ट) | Best Audiography (Location Sound Recordist)

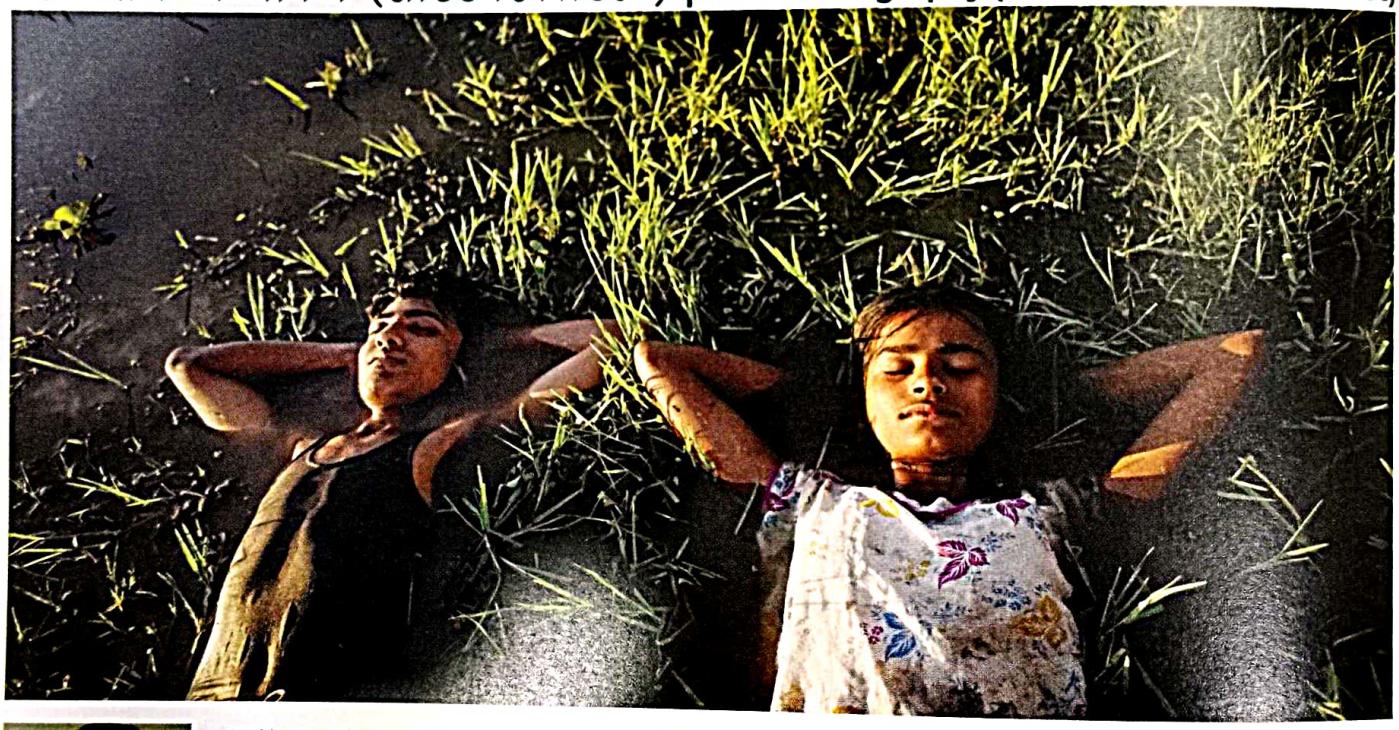

Mallika Das

Malika Das 21 years old currently doing her graduation at Chaygaon College is a go-getter. Her first foray into filmmaking started around 2011-12 when she was following Rima Das during location shoots of Man with the Binoculars. When Village Rockstar shoot commenced, Malika gathered confidence in handling logistics and gradually she started taking production assistant responsibilities. Throughout the creation of Village Rockstars, over time Mallika then became an integral crew memberand mostly doing location sound in this "one woman army band" Mallika has a gifted smile with her amiable deposition.

21 वर्षीय मालिका दास वर्तमान में चायगांव कॉलेज में स्नातक की पढ़ाई कर रही हैं। उन्होंने साल 2011–12 में रीमा दास के साथ फिल्म निर्माण में करियर शुरू किया था. जब विलेज रॉकस्टार की शूटिंग शुरू हुई, तो मालिका ने काम अपने हाथ में लिया और प्रोडक्शन सहायक के रूप में कार्य किया। विलेज रॉकस्टार के निर्माण के दौरान, उन्होंने निर्माण में कई विभागों में कार्य किया।

वॉकिंग विद द विंड
WALKING WITH THE WIND

Ladakhi (Kashmiri) | 80.32 mins
RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction: Praveen Morchhale
Producer: Mahesh Mohan
Writer: Praveen Morchhale
Editor: Ujjwal Chandra
Cinematographer: Mohammad Reza Jahanpanah
Cast: Sonam Wangyal, Phunchok Toldan, Rigzin Dolkar, Sachi Joko, Namgyal Dorjey, Phuntsog Dolma, Sonam Wangyal, Ama Dolma

प्रशस्ति :

फिल्म के अनुभव को शानदार बनाने के लिए खूबसूरती से सज्जित की गई।

हिमालय के इलाकों में रहने वाला एक 10 वर्षीय लड़का त्सेरिंग गलती से अपने दोस्त की स्कूल की कुर्सी तोड़ देता है। हर रोज पहाड़ी इलाके में गधे पर 7 किलोमीटर की स्कूल की यात्रा उस वक्त चुनौतीपूर्ण हो जाती है, जब वो अपने गांव में दो कुर्सी लाने का फैसला करता है। अब यह कुर्सी जीवन की जागृति यात्रा, वयस्क दुनिया में आंतरिक सत्य और वास्तविकता की खोज में एक रूपक बन जाती है।

Tsering, a 10 year old boy in the Himalayan terrain, mistakenly breaks his friend's school chair. His everyday, 7 kms long journey to school in mountainous terrain on donkey, turns mammoth and challenging when he decides to bring the chair to his village. Now the chair silently becomes a metaphor in his awakening journey of life, quest for inner truth and reality in the adult world, which is deeply engrossed in their own.

CITATION:

Designed beautifully to uplift the experience of the film.

सर्वोत्तम ध्वन्यांकन (साउंड डिज़ाइनर) | Best Audiography (Sound Designer)

Sanal George

Sanal George is a Sound Designer and Production Sound Mixer based in Mumbai, India. He started his career as an Assistant Sound Mixer in Shashant Shah's 'Chalo Dilli' in 2010. He has worked on numerous AD films, web series and has been associated with top Indian and International production houses.

सनल जॉर्ज एक ध्वनि डिजाइनर और प्रोडक्शन साउंड मिक्सर हैं। उन्होंने 2010 में शशांत शाह की 'चलो दिल्ली' में एक सहायक ध्वनि मिक्सर के रूप में अपना करियर शुरू किया था। उन्होंने कई विज्ञापन फिल्मों, वेब श्रृंखलाओं में काम किया है और वे कई भारतीय और अंतरराष्ट्रीय प्रोडक्शन हाऊस से जुड़े रहे हैं।

वॉकिंग विद द विंड
WALKING WITH THE WIND

Ladakhi (Kashmiri) | 80.32 mins
RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction: Praveen Morchhale
Producer: Mahesh Mohan
Writer: Praveen Morchhale
Editor: Ujjwal Chandra
Cinematographer: Mohammad Reza Jahanpanah
Cast: Sonam Wangyal, Phunchok Toldan, Rigzin Dolkar, Sachi Joko, Namgyal Dorjey, Phuntsog Dolma, Sonam Wangyal, Ama Dolma

प्रशस्ति :

वांछित प्रभाव प्राप्त करने के लिए प्रभावी ढंग से मिश्रित किया गया ध्वनि ट्रैक।

हिमालय के इलाकों में रहने वाला एक 10 वर्षीय लड़का टसेरिंग गलती से अपने दोस्त की स्कूल की कुर्सी तोड़ देता है। हर रोज पहाड़ी इलाके में गधे पर 7 किलोमीटर की स्कूल की यात्रा उस वक्त चुनौतीपूर्ण हो जाती है, जब वो अपने गांव में वो कुर्सी लाने का फैसला करता है। अब यह कुर्सी जीवन की जागृति यात्रा, वयस्क दुनिया में आंतरिक सत्य और वास्तविकता की खोज में एक रूपक बन जाती है।

Tsering, a 10 year old boy in the Himalayan terrain, mistakenly breaks his friend's school chair. His everyday, 7 kms long journey to school in mountainous terrain on donkey, turns mammoth and challenging when he decides to bring the chair to his village. Now the chair silently becomes a metaphor in his awakening journey of life, quest for inner truth and reality in the adult world, which is deeply engrossed in their own.

CITATION:

Effectively mixed the sound tracks to achieve the desired effects.

सर्वोत्तम ध्वन्यांकन (फानइल साउंड मिक्सिंग) | Best Audiography (Re-recording of Final Mixed Track)

Justin A Jose

Justin A Jose is an Indian Sound Engineer and Sound Mixer from Kerala. He has worked in Hindi, Marathi, Tamil, Telugu, Bengali and Malayalam films. In 2005 he became premix engineer for feature films and by 2008 he became independent re-recording mixer. Since then he is working as re-recording mixer for Indian Movies and also on regional language version mix of Hollywood movies totaling to more than 250.

जस्टिन ए जॉय एक भारतीय ध्वनि अभियंता और ध्वनि मिक्सर हैं। उन्होंने हिंदी, मराठी, तमिल, तेलुगु, बंगाली और मलयालम फिल्मों में काम किया है। वे 2005 में फीचर फिल्मों के लिए प्रीमिक्स इंजीनियर बने और 2008 तक वे स्वतंत्र पुनः रिकॉर्डिंग मिक्सर बन गए। उसके बाद से वे भारतीय फिल्मों के लिए री–रिकॉर्डिंग मिक्सर के रूप में काम कर रहे हैं और 250 से अधिक फिल्मों में काम कर चुके हैं, जिसमें क्षेत्रीय भाषा के साथ हॉलीवुड फिल्में भी शामिल है।

विलेज रॉकस्टार्स
VILLAGE ROCKSTARS

Assamese | 87 mins
RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction: Rima Das
Producer: Rima Das
Writer: Rima Das
Editor: Rima Das
Cinematographer: Rima Das
Cast: Bhanita Das, Basanti Das

प्रशस्ति :

फिल्म में सबसे उपयुक्त संपादन कार्य के लिए।

उत्तर–पूर्व भारत के एक छोटे से गांव में रहने वाली एक 10 वर्षीय लड़की धुनू का स्वयं का रॉक बैंड बनाने का सपना होता है। आत्मविश्वास से परिपूर्ण धुनू की जीवंत भावना और कल्पना उसे उस दुनिया से अलग करती है, जहां लड़कियों से अक्सर शर्मीली और विनम्र होने की उम्मीद की जाती है। धुनू अपने जीवन में आने वाले दैनिक संघर्षों का सामना करने और अपने सपने को साकार करने के लिए अपनी विधवा मां से समर्थन के साथ लड़कों के एक समूह से हाथ मिलाती है।

In a small village in Assam, northeast India, 10-year-old Dhunu dreams of having her own rock band. Her vibrant spirit, imagination and self-insurance stand out in a world where girls are expected to be shy and submissive. With her gang of boys and the support of her widowed mother, Dhunu faces the struggles of her daily life and hopes for the day she finally play on a real guitar.

CITATION:

For the most appropriate editing work for Assamese film Village Rockstars

सर्वोत्तम संपादन | Best Editing

Rima Das

A self-taught film producer and director, Rima Das is native of Assam and shuffles between her home state and Mumbai. She not only writes and directs feature and documentary films, she also runs a film-production company named 'Flying River Films' that she uses to support local, independent filmmakers. Her films have travelled to multiple film festivals and have bagged numerous awards in renowned film circles.

रीमा दास असम की रहने वाली एक फिल्म निर्माता और निर्देशक हैं, जो अपने गृह राज्य और मुंबई के बीच घूमती रहती हैं। वह सिर्फ फीचर और वृत्तचित्र फिल्मों के लिए ही लेखन या निर्देशन नहीं करती है, बल्कि 'फ्लाइंग रिवर फिल्मस' नाम की एक फिल्म–निर्माण कंपनी भी चलाती है, जिससे वह स्थानीय, स्वतंत्र फिल्म निर्माताओं की मदद करती है। उनकी फिल्मों को कई फिल्म समारोह में प्रदर्शित किया गया है और उन्हें कई पुरस्कारों से सम्मानित भी किया गया है।

टेक ऑफ
TAKE OFF

Malayalam | 132 mins
RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction: Mahesh Narayanan
Producer: Anto Joseph
Writer: Mahesh Narayanan and PV Shaji Kumar
Editor: Mahesh Narayanan and Abhilash Balachandran
Cinematographer: Sanu John Varghese
Music: Gopi Sundar
Cast: Parvathy Thiruvoth, Kunchacko Boban, Fahad Fasil, P G Divyaprabha

प्रशस्ति :

फिल्म में एक बहुत ही चुनौतीपूर्ण उत्पादन कार्य के लिए।

टेक ऑफ उस सत्य घटना से प्रेरित है, जब वर्ष 2014 में गृहयुद्ध के दौरान ईराक, टिक्रित, इराक में फंसी हुई भारतीय नर्सों को बचाया जाता है। फिल्म, नायिका समीरा के जीवन का अनुसरण करती है, जो एक बहादुर नर्स है और अपने पति के साथ काम के सिलसिले में इराक जाती है। यहां आईएस के आतंकवादी अस्पताल पर कब्जा कर लेते हैं। क्या सभी नर्सें आतंकियों के चंगुल से बचकर निकल पाएंगीं?

Take Off is inspired by the real-life rescue of Indian nurses who were stranded in Tikrit, Iraq, during the country's civil war in 2014. The movie follows the life of its protagonist Sameera, a strong-willed nurse who along with her husband travels to Iraq for work. IS militants soon take control of their hospital. Will they make it out alive from the crisis?

CITATION:

For a very challenging production designing in Malayalam Film Take Off

सर्वोत्तम प्रोडक्शन डिज़ाइन | Best Production Design

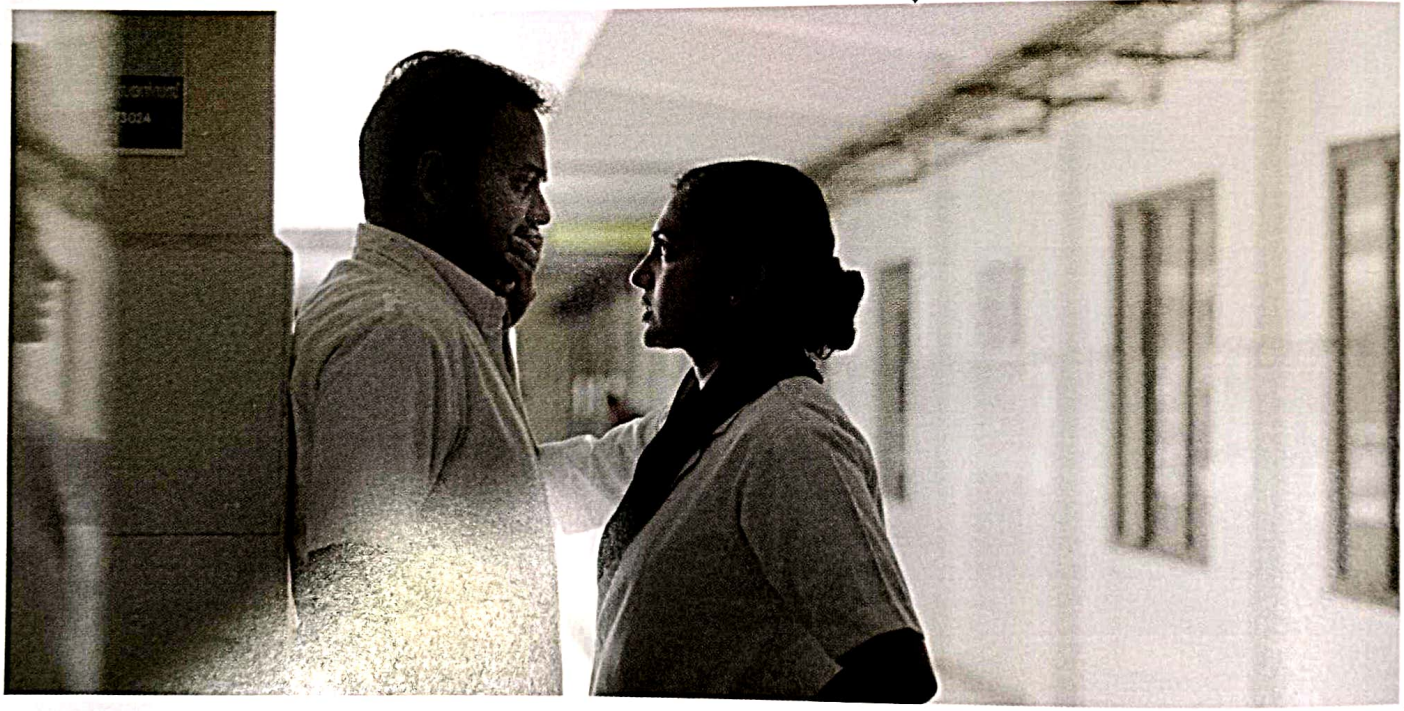

Santosh Raman

Born and brought up in Thalasseri, he inherited the nuances of the place which gave him a taste for art and architecture. A distinguished and recognized name in media industry today, Santosh Raman polished the born artist in him with institutionalized training in Fine Arts at Government College of Fine Arts, Thrissur. His initiation was into the world of drawings and illustrations which soon found way into film industry with his debut attempt as Independent Art Director for the movie "Anachandam" in 2005, his ability to perceive the story line, his keen eye for situational details and the natural and marvelous settings that he has crafted. He is today, one of the most valued art director in south Indian Film industry.

थलसेरी में पले–बढ़े संतोष रमन को उस स्थान की बारीकियां विरासत में मिली और उन्हें कला और वास्तुकला के लिए आकर्षण दिया। आज मीडिया जगत में वे एक प्रतिष्ठित और मान्यता प्राप्त नाम हैं। उन्होंने थ्रिसुर के सरकारी कॉलेज में ललित कला में संस्थागत प्रशिक्षण हासिल किया। उनकी पढ़ाई चित्रकला में हुई और 2005 में फिल्म 'अनचंदम' में स्वतंत्र कला निदेशक के रूप में कार्य करके उन्होंने फिल्म उद्योग में कदम रखा। कहानी के भाव को समझने की उनकी क्षमता, परिस्थिति संबंधी विवरणों पर पैनी नजर जैसी चीजें उन्होंने तैयार की थी। वे आज दक्षिण भारतीय फिल्म उद्योग में सबसे मूल्यवान कला निर्देशकों में से एक है।

नगरकीर्तन
NAGARKIRTAN

Bengali | 115.10 mins
RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction: Kaushik Ganguly
Producer: Acropolis Entertainment Pvt. Ltd
Writer: Kaushik Ganguly
Editor: Subhajit Singha
Cinematographer: Sirsha Roy
Music: Prabuddha Banerjee
Cast: Ritwick Chakraborty, Riddhi Sen, Shankari

प्रशस्ति :

फिल्म में वेशभूषा के उचित रंग के इस्तेमाल के लिए।

ग्रामीण बंगाल में पैदा हुए एक लड़के परिमल को जल्द ही पता चलता है कि वह अंदर से एक महिला है, हालांकि बाहरी तौर पर वो पुरुष ही है। उसने कोलकाता शहर में एक ट्रांसजेंडर आश्रय में शरण मांगी और पुटी में बदल गया। यहां पुटी अपने जीवन के प्यार मधु से मिला जो एक बांसुरी वादक थीं, लेकिन उनके इस रिश्ते को ना ही मुख्यधारा का समाज स्वीकार करता है और न ही ट्रांसजेंडर सामज इस रिश्ते को अपनाने के लिए तैयार थे, इसलिए भागना ही उनके लिए एकमात्र तरीका था।

Born as a boy in rural Bengal, Parimal realised soon enough that from inside he was a woman, even though he had the physical attributes of a man. He seeked refuge at a transgender shelter in the city of Kolkata, and turned into Puti. It was here that Puti met the love of her life, Madhu, a flute player. Neither the mainstream society nor the transgender clan would've accepted this relationship so the only way out was to flee.

CITATION:

For the use of appropriate color in the costumes in Bengali film Nagar Kirtan

सर्वोत्तम वेशभूषा डिज़ाइनर | Best Costume Designer

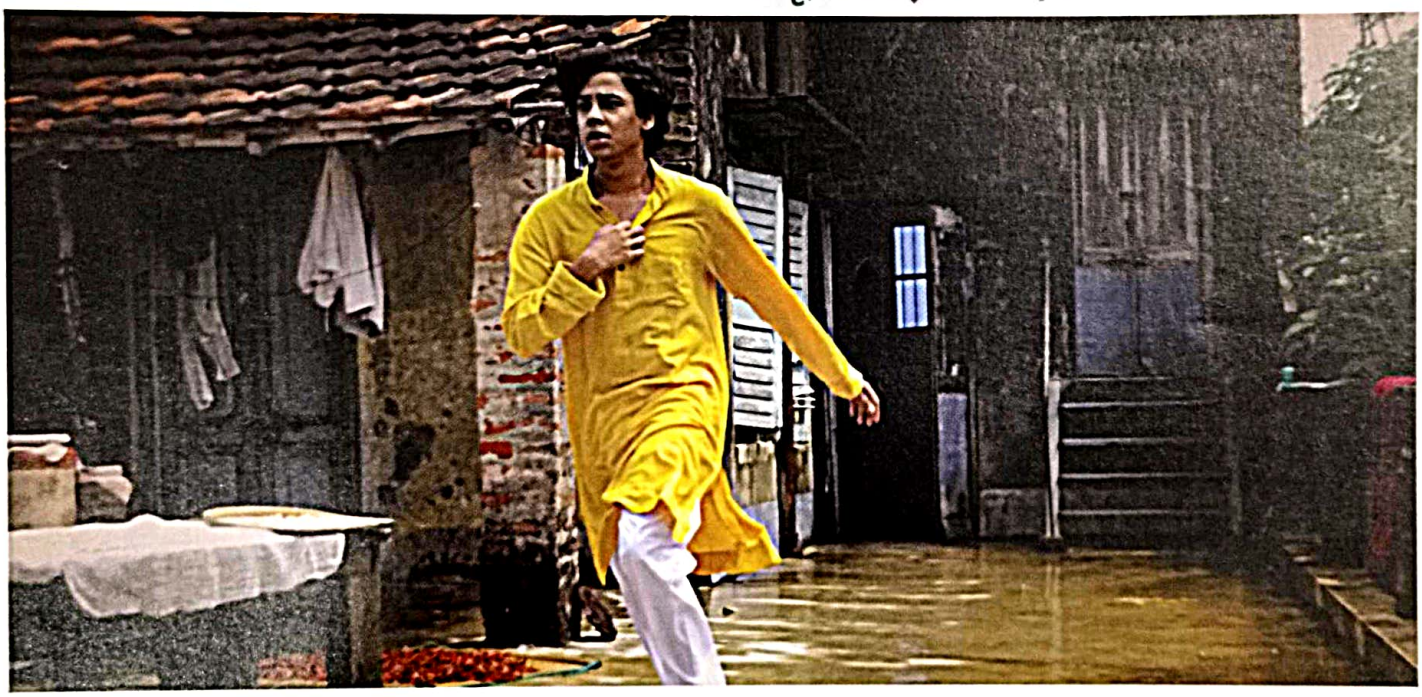

Gobinda Mandal

Gobinda Mondal completed his B.com from Calcutta University in 1998. Goray Gandogol, Mati O Manush, Mahapurush O Kapurush, Sahaj Patther Gappo, Alleya etc. are some the films he has worked on. He has also worked on numerous advertisements. Gobinda has been a costume designer in various shows for E-Tv Bangla, Zee Bangla, Mohua Bangla & Ruposi Bangla

गोबिंदा मंडल ने 1998 में कलकत्ता विश्वविद्यालय से बीकॉम की पढ़ाई की। गोरे गंडोगोल, मती ओ मनुश, महापुरुष ओ कपूरष, सहज पाथेर गप्पो, अलीया आदि ऐसी फिल्में हैं, जिसमें उन्होंने काम किया है। उन्होंने कई विज्ञापनों के लिए भी काम किया है। वे ई–टीवी बांग्ला, जी बांग्ला, महुआ बांग्ला और रूपोसी बांग्ला के विभिन्न कार्यक्रमों में एक वेशभूषा डिजाइनर रहे हैं।

नगरकीर्तन
NAGARKIRTAN

Bengali | 115.10 mins
RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction: Kaushik Ganguly
Producer: Acropolis Entertainment Pvt. Ltd
Writer: Kaushik Ganguly
Editor: Subhajit Singha
Cinematographer: Sirsha Roy
Music: Prabuddha Banerjee
Cast: Ritwick Chakraborty, Riddhi Sen, Shankari

प्रशस्ति :

फिल्म में नवीन और प्रतीतिजनक रूप–सज्जा के लिए।

ग्रामीण बंगाल में पैदा हुए एक लड़के परिमल को जल्द ही पता चलता है कि वह अंदर से एक महिला है, हालांकि बाहरी तौर पर वो पुरुष ही है। उसने कोलकाता शहर में एक ट्रांसजेंडर आश्रय में शरण मांगी और पुटी में बदल गया। यहां पुटी अपने जीवन के प्यार मधु से मिला जो एक बांसुरी वादक थीं. लेकिन उनके इस रिश्ते को ना ही मुख्यधारा का समाज स्वीकार करता है और न ही ट्रांसजेंडर सामज इस रिश्ते को अपनाने के लिए तैयार थे, इसलिए भागना ही उनके लिए एकमात्र तरीका था।

Born as a boy in rural Bengal, Parimal realised soon enough that from inside he was a woman, even though he had the physical attributes of a man. He seeked refuge at a transgender shelter in the city of Kolkata, and turned into Puti. It was here that Puti met the love of her life, Madhu, a flute player. Neither the mainstream society nor the transgender clan would've accepted this relationship so the only way out was to flee.

CITATION:

For the innovative and convincing make up in the Bengali film Nagar Kirtan

सर्वोत्तम रूपसज्जा कलाकार | Best Make-up Artist

Ram Rajak

Ram Rajak has been working in the Bengali film industry for over 12 years now. Autograph, Baishe Shrabon, Apur Panchali, Nirbashito etc. are some of his most acclaimed film with award winning film makers.

राम राजक 12 साल से बंगाली फिल्म उद्योग में काम कर रहे हैं। ऑटोग्राफ, बाईशे श्रबोन, अपूर पांचली, निर्बाशितो इत्यादि उनकी सराहनीय फिल्में हैं, जो पुरस्कार विजेता फिल्म निर्माताओं के साथ तैयार की गई है।

काट्रू वेलियिडई
KAATRU VELIYIDAI

Tamil | 138 mins
RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction: Mani Ratnam
Producer: Mani Ratnam
Writer: Mani Ratnam
Editor: Sreekar Prasad
Cinematographer: Ravi Varman
Cast: Karthi, Aditi Rao Hydari, Ganesh, Rukmini Vijayakumar

प्रशस्ति :

फिल्म में मधुर गीतों की रचना के लिए।

एक वायु सेना पायलट वरुण और एक डॉक्टर लीला आपस में प्यार करते हैं, लेकिन उनका विपरीत व्यक्तित्व, विशेष रूप से उनकी आत्म केंद्रितता, उनके रिश्ते में तनाव की वजह बनती है। दोनों भले ही अलग-अलग हो, लेकिन उनके बीच आकर्षण उतना ही मज़बूत है। कारगिल युद्ध के दौरान सीमा पर संकट बढ़ता है और लीला यह सब संभाल नहीं पाती है और वरुण का छोड़कर चली जाती है। तीन साल बाद, एक बदला हुआ वरुण लीला की तलाश में है और उससे क्षमा मांगने के लिए ढूंढता रहता है

An air force pilot, Varun and a doctor, Leela, fall in love, but their contrasting personalities, especially his self-centeredness, keep their relationship tense. He's like an untamed whirlwind and she's like the ocean, calm and deep. Binary opposites, Varun and Leela are very different but the attraction just as strong. Kashmir's border skirmish grows into the Kargil war. Leela can't handle his extremes. 3 years later, a changed Varun is looking for Leela... to apologise for letting her go or reeling her in.

CITATION:

For the composition of melodious songs in Tamil film Katru Veliyidai

सर्वोत्तम संगीत निर्देशन (गीत) | Best Music Direction (Songs)

A R Rahman

A R Rahman, India's only Academy-award winning music composer. Rahman was first introduced to the audience in 1992 with the release of Mani Ratnam's Roja, which was followed by several new and memorable sounds — Rangeela (1995), Bombay (1995), Pukar (2000), Dil Se (1998), Taal (1999), Swades (2004), Rang De Basanti (2005) and Slumdog Millionaire (2008), among others. Time magazine, dubbed him "the Mozart of Madras", placed him in its list of the world's 100 most influential people. He was born to a Hindu-Tamil family, in which his father was a composer, arranger and conductor for Malayalam movies. Rahman's great innovation for Indian movies was to introduce orchestral melodies.A.R. Rahman is undoubtedly one of the few Indians who have achieved that critical transition from being a national icon to being a globally notable musician.

ए आर रहमान, भारत के इकलौते अकादमी पुरस्कार विजेता संगीतकार है। उन्होने मणिरत्नम की फिल्म रोजा से पहली बार खुद को पेश किया था, उसके बाद उन्होने रंगीला, (1995), बॉम्बे (1995), पुकार (2000), दिल से (1998), ताल (1999), स्वदेस (2004), रंग दे बसंती (2005) और स्लमडॉग मिलियनेयर (2008) जैसी फिल्मों के गानों में अपनी मधुर आवाज दी है। टाइम मैगजीन ने उन्हें 'मोजार्ट ऑफ मद्रास' बताया था और उन्हें दुनिया के 100 सबसे प्रभावशाली लोगों की सूची में रखा था। उनका जन्म हिंदू-तमिल परिवार मे हुआ था और उनके पिता मलयालम फिल्मों मे संगीतकार, अभिलेखी थे. उन्होने पहली बार भारतीय फिल्मों में ऑर्केस्ट्रल मेलोडी की शुरुआत की थी। ए.आर. रहमान निस्संदेह उन कुछ भारतीयों मे से एक हैं, जिन्होंने उल्लेखनीय संगीतकार होने के लिए वैश्विक स्तर पर लोकप्रियता हासिल की है।

मॉम

MOM

Hindi| 147.43 mins
RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction: Ravi Udyawar
Producer: Boney Kapoor
Writer: Girish Kohli
Editor: Monisha R. Baldawa
Cinematographer: Anay Goswami , Ralph Kaechele
Music: A R Rahman
Cast: Mrs. Sridevi Kapoor, Mr. Nawazuddin Siddiqui, Mr. Akshaye Khanna

प्रशस्ति :

फिल्म में मधुर गीतों की रचना के लिए।

मॉम, एक स्कूल शिक्षक देवकी पर आधारित बदला लेने वाला नाटक है, जिसकी बेटी आर्य पर हमला किया जाता है और चलती गाड़ी में 4 लोगों द्वारा दुष्कर्म किया जाता है। यह एक सीधा सरल मामला होता है, लेकिन एक आरोपी द्वारा गवाह और फोरेंसिक रिपोर्ट में छेड़छाड़ की जाती है, जो जिसकी अपराधिक दुनिया में बहुत दूर तक पहुंच थी। देवकी ने शुरुआत में अपनी बेटी के लिए न्याय पाने के कानून का दरवाजा खटखटाया, लेकिन उसकी उम्मीद बेकार साबित हुई। उसके बाद वह कानून और पुलिस में विश्वास खो देती है और इस मामले को अपने हाथों में लेने का फैसला करती है।

Mom, is a revenge drama based on a school teacher, Devki whose step-daughter Arya is assaulted and raped by 4 men in a moving car. Though it is an open and shut case, the witness and forensic reports were scrupulously manipulated by one of the accused, who had a far reach in the world of crimes. Devki, who initially knocked the door of the law of to get justice for her daughter, is hope bereft. She loses every drop of trust in law and police she had in her and decides to take the matter in her own hands.

CITATION:

For the composition of melodious songs in Hindi film Mom

सर्वोत्तम संगीत निर्देशन (पार्श्व संगीत) | Best Music Direction (Background Music)

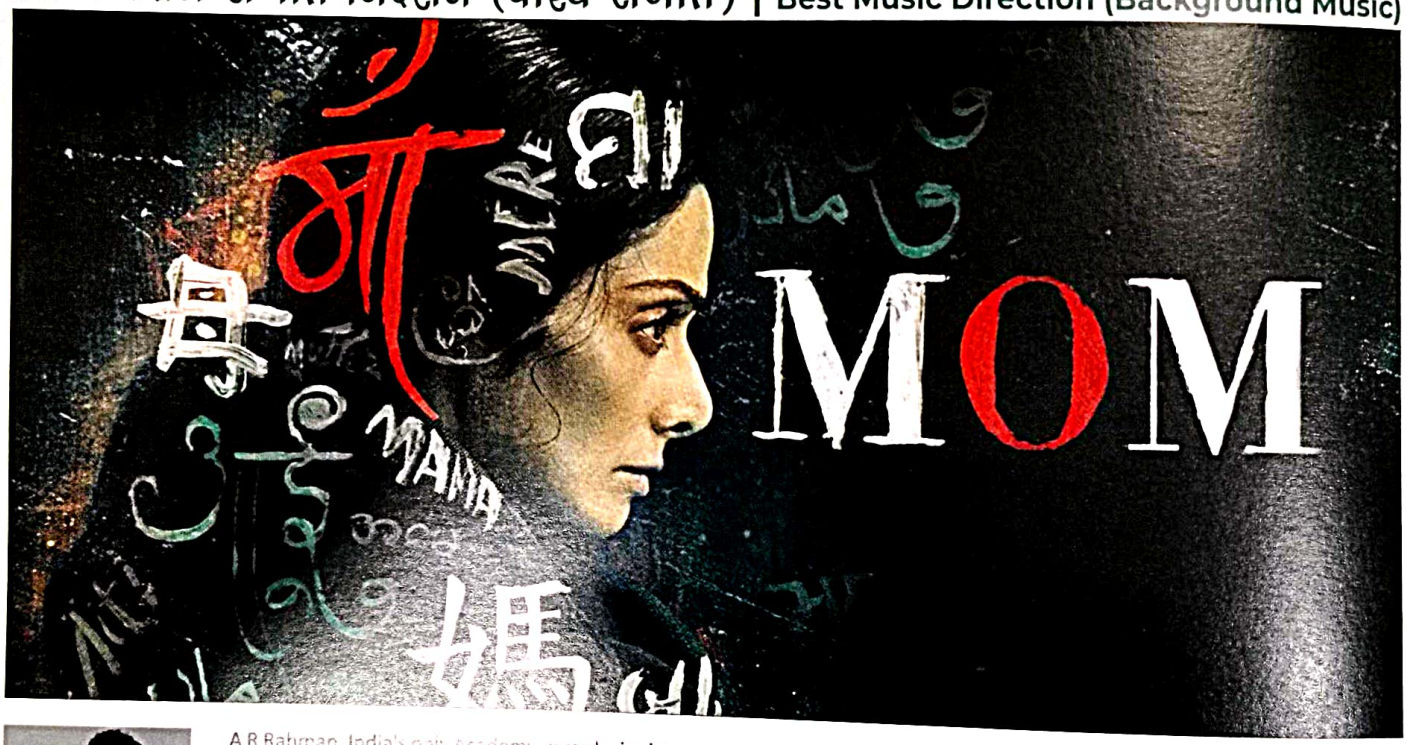

A R Rahman

A R Rahman, India's multi Academy-award winning music composer. Rahman was first introduced to the audience in 1992 with the release of Mani Ratnam's Roja, which was followed by several new and memorable sounds — Rangeela (1995), Bombay (1995), Pukar (2000), Dil Se (1998), Taal (1999), Swades (2004), Rang De Basanti (2005) and Slumdog Millionaire (2008), among others. Time magazine, dubbed him "the Mozart of Madras", placed him in its list of the world's 100 most influential people. He was born to a Hindu-Tamil family in which his father was a composer, arranger and conductor for Malayalam movies. Rahman's great innovation for Indian movies was to introduce orchestral melodies.A.R. Rahman is undoubtedly one of the few Indians who have achieved that critical transition from being a national icon to being a globally notable musician.

ए.आर. रहमान, भारत के इकलौते अकादमी पुरस्कार विजेता संगीतकार हैं। उन्होंने मणिरत्नम की फिल्म रोजा से पहली बार खुद को पेश किया था, जिसके बाद उन्होंने रंगीला, (1995), बॉम्बे (1995), पुकार (2000), दिल से (1998), ताल (1999), स्वदेस (2004), रंग दे बसंती (2005) और स्लमडॉग मिलियनेयर (2008) जैसी फिल्मों के गानों में अपनी मधुर आवाज दी है। टाइम मैगजीन ने उन्हें 'मोजार्ट ऑफ मद्रास' बताया था और उन्हें दुनिया के 100 सबसे प्रभावशाली लोगों की सूची में रखा था। उनका जन्म हिंदू–तमिल परिवार में हुआ था और उनके पिता मलयालम फिल्मों में संगीतकार, अभिलेखी और ऑर्केस्ट्रेटर थे। उन्होंने पहली बार भारतीय फिल्मों में ऑर्केस्ट्रल मेलोडी की शुरुआत की थी। ए.आर. रहमान निस्संदेह उन कुछ भारतीयों में से एक हैं, जिन्होंने वैश्विक स्तर पर राष्ट्रीय संगीतकार होने के लिए वैश्विक स्तर पर लोकप्रियता हासिल की है।

मार्च 22
MARCH 22

Kannada | 153.25 mins
RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction: Kodlu Ramakrishna
Producer: Harish Sherigar Kumar
Writer: Kodlu Ramakrshna
Editor: Basavraj URS
Cinematographer: Mohan
Music: Ravishekhar, Kadri Manikanth
Cast: Ananth Nag, Arya Vardhan, Kiran Raj, Megha Sri, Deepthi Shetty, Vinaya Prasad, Ashish Vidhyarthi, Jai Jagadeesh

प्रशस्ति :

फिल्म के गीत मुत्थु राथनाडा कोट के लिए, जिसमें धार्मिक सहिष्णुता का संदेश दिया गया है।

यह एक गांव की कहानी है, जिसका आदर्श सांप्रदायिक सद्भाव है। लेकिन आदर्शों में उस वक्त परिवर्तन होता है, जब वर्षों तक पड़े सूखे के परिणामस्वरूप पीने के पानी की भारी कमी होती है। गांव को बचाने के लिए एक दृढ़ मुस्लिम युवा स्थानीय विधायक बन जाता है और पानी खोजने में मदद के लिए एक प्रसिद्ध भूविज्ञानी को लाता है। लेकिन जब ऐसा लगता है कि गांव बचाया जा सकता है तब केवल उपलब्ध समाधान गांव में हिंदुओं और मुसलमानों के बीच सांप्रदायिक टकराव में उभर जाता है।

It is a story of a village that is a utopia of communal harmony. But all of that changes when years of drought result in a drastic scarcity of drinking water. A young Muslim man , determined to rescue the village, becomes the local MLA and brings a famous geologist to help them find water. But just when it seems the village is saved, the only available solution erupts into communal confrontation between the village's Hindus and Muslims.

CITATION:

For the song 'Mutthu Rathnada kote' having the message of religious tolerance in Kannada Film March 22

सर्वोत्तम गीत | Best Lyrics

J M Prahalad

J M PRAHALAD from Bangalore is a writer in the television and film industry. He has over 8000 episodes to his credit. He has written numerous serials for different T.V. channels in regional languages as well. Vanitha, Parampare, Abhimana, Anuraga Sangama etc. are some the serials he has worked on. Prahalad has worked for films which have won national and international awards. He is the writer of the novel, 'PRAVAHA'.

जे एम प्रहलाद टेलीविजन और फिल्म जगत के एक लेखक हैं। उन्हें 8000 से ज्यादा एपिसोड का श्रेय जाता है। उन्होंने क्षेत्रीय भाषाओं में भी विभिन्न टीवी चौनलों के लिए कई धारावाहिक लिखे हैं, जिसमें वनीथा, परम्पारे, अभिमना, अनुरागा संगमा इत्यादि शामिल है। प्रहलाद की फिल्मों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। वे उपन्यास 'प्रवाह' के लेखक भी हैं।

नगरकीर्तन
NAGARKIRTAN

Bengali | 115.10 mins
RAJAT KAMAL | ₹2,00,000/-

Direction: Kaushik Ganguly
Producer: Acropolis Entertainment Pvt. Ltd
Writer: Kaushik Ganguly
Editor: Subhajit Singha
Cinematographer: Sirsha Roy
Music: Prabuddha Banerjee
Cast: Ritwick Chakraborty, Riddhi Sen, Shankari

प्रशस्ति :

कला और सामाजिक मुद्दों के मिश्रण के साथ खूबसूरती से तैयार की गई फिल्म, जिसने एक अविभाज्य प्रभाव पैदा किया है।

ग्रामीण बंगाल में पैदा हुए एक लड़के परिमल को जल्द ही पता चलता है कि वह अंदर से एक महिला है, हालांकि बाहरी तौर पर वो पुरुष ही है। उसने कोलकाता शहर में एक ट्रांसजेंडर आश्रय में शरण मांगी और पुटी में बदल गया। यहां पुटी अपने जीवन के प्यार मधु से मिला जो एक बांसुरी वादक थीं. लेकिन उनके इस रिश्ते को ना ही मुख्यधारा का समाज स्वीकार करता है और न ही ट्रांसजेंडर सामज इस रिश्ते को अपनाने के लिए तैयार थे, इसलिए भागना ही उनके लिए एकमात्र तरीका था।

Born as a boy in rural Bengal, Parimal realised soon enough that from inside he was a woman, even though he had the physical attributes of a man. He seeked refuge at a transgender shelter in the city of Kolkata, and turned into Puti. It was here that Puti met the love of her life, Madhu, a flute player. Neither the mainstream society nor the transgender clan would've accepted this relationship so the only way out was to flee.

CITATION:

Beautifully crafted film with a blend of art and social issues which has created an indelible effect .

निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार | Special Jury Award

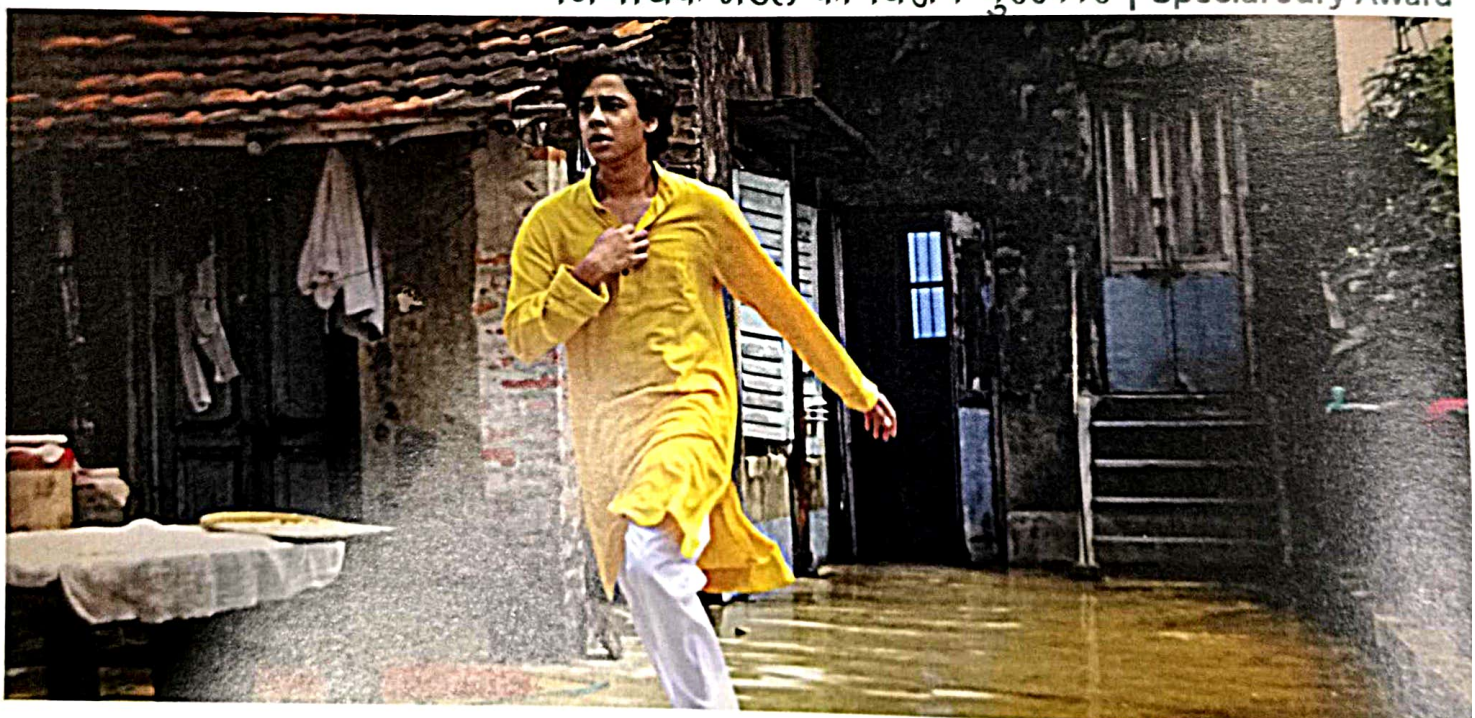

Kaushik Ganguly

In 1987, Kaushik Ganguly began working as a screenwriter in television and films. In 1995, he moved to television to direct telefilms like Ushnatar Jonyo Utka and Atithi. In 2004 Ganguly directed his first feature film, Waarish. Some of his national and international award winning films are Shabdo, Just Another Love Story, Laptop, Apur Panchali, Chhotoder Chhobi, Cinemawala and Bishorjon to name a few.

वर्ष 1987 में कौशिक गांगुली ने बतौर पटकथा लेखक टेलीविजन और फिल्मों में काम शुरू किया था। 1995 में उन्होंने उष्णतार जान्ये, उल्का और अतिथि जैसे टेलीफिल्मों का निर्देशन किया। 2004 में गांगुली ने अपनी पहली फीचर फिल्म वारिश निर्देशित की। उनकी कुछ राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार विजेता फिल्मों में शब्दो, जस्ट अनोदर लव स्टोरी, लैपटॉप, छोटेदार छोबी, सिनेमावाला और बिसोर्जोन नाम शामिल है।

ACROPOLIS

Acropolis Entertainment Pvt. Ltd

Acropolis Entertainment Pvt. Ltd (AEPL), founded i 2008 is dedicated towards providing engrossing an intriguing entertainment through films and televisio software for the Indian audience. Acropol Entertainment has produced over 3000hrs of T software and has successfully created some no prime time slots into channel leaders. 'Raashi' for Z Bangla, 'Badhubaran' for Star Jalsha to name a few.

एक्रोपोलिस एंटरटेनमेंट प्राइवेट लिमिटेड की स्थापना 2008 की गई थी, जो भारतीय दर्शकों के लिए फिल्मों औ टेलीविजन फिल्मों के माध्यम से मनोरंजन करने के लिए तैय है। एक्रोपोलिस एंटरटेनमेंट ने 3000 से अधिक टे सॉफ्टवेयर का उत्पादन किया है और चैनलों के लिए क गैर-प्राइम टाइम स्लॉट बनाए है। जिसमे जी बांग्ला के लि 'राशी', स्टार जल्सा के लिए 'बदुबरन' कुछ नाम शामिल है।

बाहुबली – द कंक्लुजन
BAAHUBALI – THE CONCLUSION

Telugu | 167 mins
RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction: S.S. Rajamouli
Production Company: Arka Mediaworks Entertainment LLP
Writer: S.S. Rajamouli
Editor: Kotagiri Venkateswara Rao & Thammiraju Bikkina
Cinematographer: KK Senthil Kumar
Music: MM Keeravaani
Cast: Upallapati Suryanarayana Prabhas, Daggubati Rama Naidu, Shetty Sweety, Sathyaraj, Ramya Krishnan, Nassar

प्रशस्ति :
फिल्म में विशेष प्रभावों का एक अद्भुत प्रदर्शन।

अपनी विरासत की सच्चाई को उजागर करने के बाद, बाहुबली 2 में महेंद्र बाहुबली अपने अत्याचारी शासक और चाचा भल्लालदेव से बदला लेने के लिए महिष्मती के राज्य लौटता है। मध्यकालीन भारत पर आधारित, फिल्म में वह अपने पिता की हत्या का बदला लेता है और भल्लालदेव के क्रूर शासन को समाप्त करते हुए राज्य में शांति स्थापित करता है।

Having uncovered the truth of his legacy, in Baahubali 2 - The Conclusion, Mahendra Baahubali returns to the kingdom of Mahishmati to seek revenge against his the tyrannical ruler – his uncle Bhallaladeva. Set in medieval India, the film follows Baahubali's story as he avenges his father's murder, ends the cruel regime of Bhallaladeva and brings peace to the kingdom.

CITATION:
An amazing display of special effects in Hindi Film Bahubali-2 The conclusion

सर्वोत्तम स्पेशल इफैक्ट | Best Special Effects

RC Kamalakannans

RC Kamalakannan first worked with S.S. Rajamouli on Sye in 2004. Since then, they have collaborated multiple times to seamlessly bring visual effects into mainstream cinema with Yamadonga, Magadheera, and Eega. Their latest collaboration, Baahubali - The Conclusion took VFX in mainstream cinema to the next level with over 35 studios across the world working together under Kamalakannan's supervision to bring the desired scale and effect to the big screen.

आरसी कमलाकनन ने पहली बार 2004 में एसएस राजमौली के साथ काम किया था। उसके बाद उन्होंने यमाडोंगा, मगाधिरा और अईगा जैसी फिल्मों में दृश्य प्रभाव का कार्य किया है। बाहुबली– द कन्क्लूजन में किए गए उनके कार्य ने मुख्यधारा के सिनेमा में वीएफएक्स को अलग स्तर तक पहुंचा दिया है।

टॉयलेट एक प्रेम कथा
TOILET EK PREM KATHA

Hindi | 161 mins
RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction: Shree Narayan Singh
Production Company: Shital Bhatia, Arjun N. Kapoor
Writer: Siddharth And Garima
Editor: Shree Narayan Singh
Cinematographer: Anshuman Mahaley
Music: Vickey Prasad, Sachet Parampara
Cast: Akshay Kumar, Bhumi Pednekar, Divyendu Sharma, Anupam Kher, Ayesha Raza Mishra, Sudhir Pandey, Atul Srivastava, Shubha Khote

प्रशस्ति :

नृत्य अनुक्रम का खूबसूरती से संयोजन के लिए

'टॉयलेट एक प्रेम कथा' में मथुरा के केशव और जया की वास्तविक प्रेम कहानी दिखाई गई है, जिनका प्रेम समाज और परंपरा की बाधाओं से परे है, लेकिन इसमें अप्रत्याशित बाधा शौचालय की वजह से जीवन में चुनौतियां आ जाती है। हालांकि, यह ग्रामीण भारत में उन लाखों महिलाओं की सच्ची कहानी है, जो आज भी सुबह या शाम को अपने घरों से कुछ किलोमीटर दूर शौच के लिए जाती हैं, जिसकी वजह से उन्हें कई दिक्कतों का सामना करना पड़ता है।

Toilet Ek Prem Katha consists of a real-life love story between Keshav and Jaya from Mathura whose love transcends across barriers of society and tradition but is challenged by the most unexpected hurdle, a toilet. This is the true story of millions of those women in rural India who till date, walk a few kilometers away from their homes just to be able to relieve themselves, at break of dawn or fall of dusk and face the risk of rape/kidnapping.

CITATION:

Choreographed the dance sequence beautifully

सर्वोत्तम नृत्य संयोजन | Best Choreography

Ganesh Acharya

Ganesh Acharya is one of India's most noted and regarded dance choreographer. He has been working in the industry for more than thirty years, and has choreographed for almost all the actors in the country. Ganesh is also a film director. His style is very unique and is loved by all and sundry.

गणेश आचार्य भारत के सबसे प्रसिद्ध और सम्मानित नृत्य संयोजको में से एक हैं। वे इस क्षेत्र में तीस से अधिक वर्षों से काम कर रहे हैं और उन्होंने देश के लगभग सभी कलाकारों के लिए काम किया है। गणेश एक फिल्म निर्देशक भी हैं। उनकी शैली बहुत अनोखी है और उसे काफी पसंद किया जाता है।

बाहुबली – द कंक्लुजन
BAAHUBALI – THE CONCLUSION

Telugu | 167 mins
RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction: S.S. Rajamouli
Production Company: Prasad Devineni, .Shobu Yarlagadda
Writer: S.S. Rajamouli
Editor: Kotagiri Venkateswara Rao & Thammiraju Bikkina
Cinematographer: KK Senthil Kumar
Music: MM Keeravaani
Cast: Upallapati Suryanarayana Prabhas, Daggubati Rama Naidu, Shetty Sweety, Sathyaraj, Ramya Krishnan, Nassar

प्रशस्ति :

खूबसूरत तरीके से तैयार किया गया एक एक्शन नाटक

अपनी विरासत की सच्चाई को उजागर करने के बाद, बाहुबली 2 में महेंद्र बाहुबली अपने अत्याचारी शासक और चाचा भल्लालदेव से बदला लेने के लिए महिषमती के राज्य लौटता है। मध्यकालीन भारत पर आधारित, फिल्म में वह अपने पिता की हत्या का बदला लेता है और भल्लालदेव के क्रूर शासन को समाप्त करते हुए राज्य में शांति स्थापित करता है।

Having uncovered the truth of his legacy, in Baahubali 2 - The Conclusion, Mahendra Baahubali returns to the kingdom of Mahishmati to seek revenge against his the tyrannical ruler – his uncle Bhallaladeva. Set in medieval India, the film follows Baahubali's story as he avenges his father's murder, ends the cruel regime of Bhallaladeva and brings peace to the kingdom.

CITATION:

Amazingly well designed action drama

सर्वोत्तम एक्शन निर्देशन | Best Action Direction Award

Kecha Khamphakdee

Kecha Khamphakdee is a stunt coordinator known for his works in Hollywood and Indian film industry. Kecha started as a stunt double at the age of 14. He has worked in over 60 films.

केछा खम्फाकडी एक स्टंट समन्वयक हैं, जो हॉलीवुड और भारतीय फिल्म उद्योग में जाने जाते हैं। 14 साल की उम्र में वे स्टंट मास्टर बने और उन्होंने 60 से अधिक फिल्मों में काम किया है।

Lee Whittaker

Born in North Carolina, Lee started his career right out of high school with George Lucas in Japan. He moved to Los Angeles working on many of Hollywood's largest blockbusters.

उत्तरी कैरोलिना में पैदा हुए, ली ने जापान में ही पढ़ाई की। फिल्म और मनोरंजन के लिए अपने प्यार को मजबूती से निभाते हुए वे लॉस एंजिल्स चले गए और उन्होंने हॉलीवुड की कई ब्लॉकबस्टर फिल्मों में काम किया है।

King Solomon

Having started as a stunt man in 2004, Solomon raised to the ranks of Stunt Director, in no time with his passion and hard work. His association with the director SS Rajamouli has been since the film Rajanna (2011).

2004 में एक स्टंट मैन के रूप में अपने करियर की शुरुआत करने के बाद सोलोमन अपने जुनून और कड़ी मेहनत से स्टंट निर्देशक बने। उन्होंने 2011 में फिल्म राजन्ना में निर्देशक एसएस राजमौली के साथ काम किया था।

इशु
ISHU

Assamese | 91 mins
RAJAT KAMAL | ₹1,00,000/-

Direction: Utpal Borpujari
Producer: Children's Film Society, India
Writer: Utpal Borpujari
Editor: A. Sreekar Prasad
Cinematographer: Sumon Dowerah
Music: Anurag Saikia
Cast: Kapil Garo, Tonthoingambi Leishangthem Devi, Bishnu Khargharia, Dipika Deka, Chetana Das

प्रशस्ति :

एक आदिवासी लड़का अपनी पसंदीदा आंटी को बचाने के लिए प्रयास करता है, जिनपर गांव में किसी को गायब करने या जादू–टोने का झूठा आरोप है।

इशू की दुनिया असम के आदिवासी गांव में अपने दोस्तों और अपने पालतू कुत्ते भालु के इर्द–गिर्द घूमती है। वो अपने कुत्ते और अपनी पसंदीदा अंबिका जेठी (आंटी) के साथ खुशी से रहता है। लेकिन एक दिन उसकी खुशहाल दुनिया में मुश्किलों का पहाड़ टूट जाता है और उसकी दूसरी जेठी भदरेश्वरी, अंबिका पर जादू–टोना करने का झूठा आरोप लगा देती है। लोगों का समूह उसके साथ मारपीट करता है और घर जल जाने के बाद अंबिका गायब हो जाती है।

Happy-go-lucky Ishu's world in a remote, tribal village in Assam, revolves around his friends or Bhalu, his pet puppy. His days are spent with them, and with his favourite Ambika "Jethi" (aunt). But one day this happy world of Ishu turns around as the village "Bej" (quack), in a conspiracy hatched with Ishu's another Jethi Bhadreswari, declares Ambika as a witch. Beaten up by the mob and her house burnt down, Ambika vanishes, and no one seems to know where she is.

CITATION:

A tribal boy's efforts to save his favorite aunt from the false accusation of being turned as a witch and vanished from the village.

सर्वोत्तम असमिया फ़िल्म | Best Assamese Film

Utpal Borpujari

An M.Tech in Applied Geology from IIT-Roorkee, Utpal Borpujari won the Swarna Kamal for Best Film Critic at the 50th National Film Awards of India in 2003. He has made several acclaimed documentary films that have been screened across the world in various film festivals. "Ishu" is his debut fiction feature.

उत्पल बोरपुजारी को 2003 में भारत के 50 वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार में सर्वश्रेष्ठ फिल्म आलोचक के रुप में सम्मानित किया गया था। उन्होंने कई प्रशंसित वृत्तचित्र फिल्में बनाई हैं, जिन्हें दुनिया भर में प्रदर्शित किया गया है। 'इशू' उनकी पहली फिक्शन फीचर है।

Children's Film Society, India

CFSI started functioning in 1955 as an autonomous body under Ministry of Information & Broadcasting, to create and nurture a dynamic child`s film culture in the country with a purpose of stimulating creativity, compassion and critical thinking. CFSI has produced, exhibited and distributed films, serials, animations and documentaries in 15 different languages.

सीएफएसआई ने देश में बाल आधारित फिल्म संस्कृति बनाने के लिए सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के तहत एक स्वायत्त निकाय के रूप में 1955 में काम करना शुरू किया था। सीएफएसआई ने 15 अलग–अलग भाषाओं में कई फिल्म, धारावाहिक, एनीमेशन और वृत्तचित्र निर्माण, प्रदर्शन और वितरण को लेकर कार्य किया है।

मयूराक्षी
MAYURAKSHI

Bengali | 102.08 mins
RAJAT KAMAL | ₹1,00,000/-

Direction: Atanu Ghosh
Producer: Firdausul Hasan, Prabal Halder
Writer: Atanu Ghosh
Editor: Sujay Dattaray
Cinematographer: Soumik Halder
Music: Debojyoti Mishra
Cast: Prosenjit Chatterjee, Indrani Halder, Soumitra Chatterjee, Sudipta Chakraborty

प्रशस्ति :

घूमक्कड़ बेटा अपने पिता से मिलने के लिए एक लंबे अंतराल के बाद लौटता है, जिन्होंने जिसे अतीत में खो दिया था।

सुशोभन 80 साल का बूढ़ा आदमी है जो कोलकाता में रहता है। बूढ़ों को मदद देने वाली एक एजेंसी का आदमी उसके घर में रहता है और उसकी देखभाल करता है। समय के साथ वो और चिड़चिड़ा और हताश होता जा रहा है। उसका बेटा अर्यानिल उसके साथ रहता है, जिसके जीवन में भी दुख है क्योंकि उसकी कई शादियां नाकाम साबित हुई हैं। यह फिल्म इन दो पुरुषों के आपसी झगड़ों और बाद में एक दूसरे के प्रति आने वाले बदलाव को दर्शाती है।

The film dwells on the ailing octogenarian Sushobhan, whose sedate, routine life in Kolkata is regulated by his agency caregiver and an old retainer. With dementia phasing out his immediate past, he tends to be silent, and also irritable and fretful. His son Aryanil faces life stolidly and without hope with failed marriages behind him. When the two encounter, their separate angst affects them both, causing shifts in their attitudes to life and to each other.

CITATION:

Meandering son returns after a long gap to meet his father who has lost his past.

सर्वोत्तम बांग्ला फिल्म | Best Bengali Film

Atanu Ghosh

His films have been widely shown in most prominent film festivals across the world. Winner of numerous national and international awards, his works reflects an urge for exploring unique complexities of human behavior pitted against the backdrop of rapidly changing society. His films are known for perceptual precision and economy of expression.

अतानु घोष की फिल्मों को व्यापक रूप से दुनिया भर के सबसे प्रमुख फिल्म समारोहों में दिखाया गया है। कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों के विजेता घोष का काम तेजी से बदलते समाज की पृष्ठभूमि के खिलाफ मानव व्यवहार की अनूठी जटिलताओं की खोज के आग्रह को दर्शाते हैं। उनकी फिल्मों को अवधारणात्मक परिशुद्धता और अभिव्यक्ति की अर्थव्यवस्था के लिए जाना जाता है।

Firdausul Hasan

Producer, networker, and evangelist, Hasan, is the heart and soul of the organization. He is a globetrotting entrepreneur with a passion for everything on celluloid and has, deep knowledge covering all the aspects of filmmaking from production to distribution.

फ्रिदौसुल हसन एक निर्माता, नेटवर्कर और प्रचारक हैं। वह वैश्विक उद्यमी हैं और उन्हें उत्पादन से लेकर वितरण तक सभी पहलुओं का गहरा ज्ञान है।

न्यूटन
NEWTON

Hindi | 106.27 mins
RAJAT KAMAL | ₹1,00,000/-

Direction: Amit V Masurkar
Producer: Manish Mundra, Anand L Rai
Writer: Mayank Tewari, Amit V Masurkar
Editor: Shweta Venkat
Cinematographer: Swapnil S Sonawane
Music: Rachita Arora, Naren Chandavarkar and Benedict Taylor
Cast: Rajkummar Rao, Pankaj Tripathi, Anjali Patil, Raghubir **Yadav**

प्रशस्ति :

सांरक्षण और शिल्प के साथ उच्चतम गुणवत्ता की अच्छी तरह से बनाई गई फिल्म।

सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश भारत में एक बार फिर आम चुनाव होते हैं, 90 लाख मतदान केंद्रों पर करोड़ों लोग वोट डालते हैं, जिसके लिए 5 बिलियन डॉलर खर्च किए जाते हैं. ऐसे में सरकारी क्लर्क न्यूटन कुमार को ऐसा भयानक काम सौंपा जाता है, जो कि दिखने में बड़ा सरल होता है। यह कार्य मध्य भारत के जंगलों में एक दूरस्थ गांव में चुनाव आयोजित कराना है, जो नक्सल प्रभावित इलाका भी है। यह न्यूटन के ऐसे स्थान पर मतदान करवाने के इरादे पर आधारित कहानी है, जहां कोई भी मतदान में रूचि नहीं रखता है।

As India, the world's largest democracy, braces itself for another general election- with 9 million polling booths, more than 800 million voters, and costing nearly $5 billion -- Newton Kumar, a rookie government clerk finds himself entrusted with a task that appears deceptively simple: conducting elections in a remote village in the jungles of central India. It is a story about Newton's intent on enabling voting in a place where nobody is interested in the vote.

CITATION:

Well made film of highest quality with care and craft.

सर्वोत्तम हिन्दी फ़िल्म | Best Hindi Film

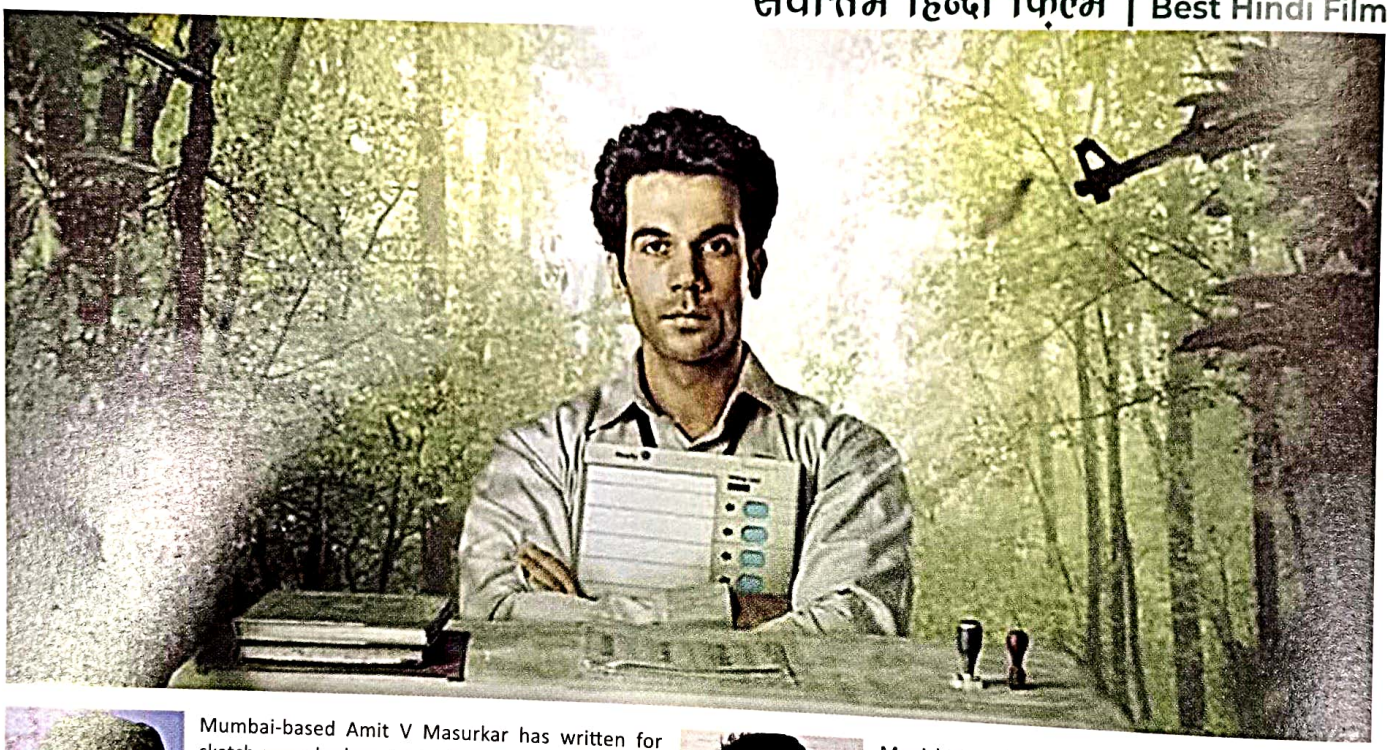

Amit V Masurkar

Mumbai-based Amit V Masurkar has written for sketch comedy shows and Hindi films. His directorial debut, the uber low-budget comedy, Sulemani Keeda was an indie sleeper hit. Newton is his second film.

मुंबई के रहने वाले अमित वी मासुरकर ने कॉमेडी शो और हिंदी फिल्मों के लिए लेखन कार्य किया है। उनकी निर्देशक के रुप में पहली और कम बजट वाली फिल्म सुलेमानी कीड़ा एक स्लीपर हिट थी। न्यूटन उनकी दूसरी फिल्म है।

Manish Mundra

Manish Mundra is a Indian film producer and the founder of Drishyam Films. Manish has pursued his passion for content-driven cinema with a single-minded dedication. He has set up Drishyam Films, a global motion-picture studio that has produced international award-winning films such as Masaan, Umrika, Waiting, Dhanak, Newton, Rukh and Kadvi Hawa.

मनीष मुंद्रा एक भारतीय फिल्म निर्माता और दृश्यम फिल्म्स के संस्थापक हैं। उन्होंने सामग्री संचालित सिनेमा के लिए ही काम किया है। दृश्यम फिल्म्स ने मसान, उमृका, वेटिंग, धनक, न्यूटन, रुख और कडवी हवा जैसी कई अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार विजेता फिल्मों का निर्माण किया है।

हेब्बेट्टु रामाक्का
HEBBETTU RAMAKKA

Kannada | 143.51 mins
RAJAT KAMAL | ₹1,00,000/-

Direction: N.r Nanjunde Gowda
Producer: Putta Raju S.a.
Writer: N.R. Nanjunde Gowda
Editor: Basavaraj Arasu
Cinematographer: B. Satish
Music: Poorna Chandra Tejasvi
Cast: Devaraj, Tara, Hanumanthe Gowda, Nagaraja Murthy, K .ganesh Rao, Sanni, Kusvanth, Punya

प्रशस्ति :

सभी बाधाओं के खिलाफ भ्रष्ट समाज की कुरीतियों को बदलने के लिए एक अशिक्षित महिला के प्रयासों का चित्रण।

पुरूष प्रधान और भ्रष्ट समाज में एक महिला के पहचान की गाथा।

A saga of identity of an woman in male dominated and corrupted society.

CITATION:

Depiction of an illiterate woman's effort to change the ills of corrupt society against all odds.

सर्वोत्तम कन्नड़ फ़िल्म | Best Kannada Film

N.R Nanjunde Gowda

N.R. Nanjunde Gowda from Hassan District, Karnataka has over 2 decades of experience in the in the Media and Film industry. Inspired by the new wave and off-beat cinema of 1970s, he began his career in the Kannada Film Industry as an 'Assistant Director'. His first independent film was 'Sankranti' in 1989. He has directed 12 feature films.

कर्नाटक के हसन जिले के रहने वाले एन.आर. नानजुंदे गौड़ा को मीडिया और फिल्म जगत में 2 दशकों का अनुभव है। 1970 के दशक की में आई ऑफ–बीट सिनेमा की लहर से प्रेरित होकर, उन्होंने कन्नड़ फिल्म जगत में 'सहायक निदेशक' के रूप में अपना करियर शुरू किया। 1989 में उनकी पहली स्वतंत्र फिल्म 'संक्राति' रिलीज हुई। उन्होंने 12 फीचर फिल्मों को निर्देशित किया है।

Putta Raju S.A.

S.A. Puttaraju is a very successful industrialist. As a social worker he himself is identified with a few social organizations. Since, he believed that films are a powerful medium and can be used as a tool of social reforms, he started his production company Saviraj Cinemas with his wife Kavitha Raj and produced Hebbet Ramakka.

एसए पुट्टाराजू एक बहुत सफल उद्योगपति हैं। एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में वे कुछ सामाजिक संगठनों की वजह से जाने जाते हैं. उनका मानना है कि फिल्म एक शक्तिशाली माध्यम हैं और इनका सामाजिक सुधारो के साधन के रूप में उपयोग किया जा सकता है। इसलिए उन्होंने अपनी पत्नी कविता राज के साथ अपनी निर्माण कपनी सविराज सिनेमाज की स्थापना की और फिल्म हेबेट रामक्का का निर्माण किया।

तोंडीमुतलूम दृक्साक्षियुम
THONDIMUTHALUM DRIKSAKSHIYUM

Malayalam | 135.46 mins
RAJAT KAMAL | ₹1,00,000/-

Direction: Dileesh Pothan
Producer: Sandip Senan
Writer: Sajeev Pazhoor
Editor: Kiran Das
Cinematographer: Rajeev Ravi
Music: Bijibal
Cast: Fahad Fazil, Suraj Venjaramoodu, Nimisha Sajayan, Alencier Ley Lopez

प्रशस्ति :

यह एक मध्यम वर्गीय जोड़े की कहानी है, जिनकी जिंदगी तब अचानक गड़बड़ा जाती है जब एक चोर उनकी कीमती चीज चुरा लेता है। फिल्म सामाजिक व्यवस्था में मौजूद भ्रष्टाचार, करुणा, हास्य और बेतुके प्रयासों का मिश्रण है।

एक निचले मध्यम वर्गीय दम्पत्ति का जीवन एक चोर की वजह से बाधित हो जाता है, जब वो उनकी कोई कीमती वस्तु चुरा लेता है। फिल्म कासरगोड के एक पुलिस स्टेशन में घटने वाली विभिन्न घटनाओं के इर्द–गिर्द घूमती है जिसमें भ्रष्टाचार, हास्य और हमारे प्रशासन के गलत कृत्यों का बखूबी चित्रण किया गया है।

A young lower middle-class couple's life is disrupted one day by a petty thief when he steals their only precious belonging. The film is set in Kasargode, in a police station where the action plays out, mirroring the corruption, pathos, humour and ridiculousness in what we routinely decry as the 'system'. The conversation and incidents at that station and how it affects the lives of everyone involved are what the film is about.

CITATION:

The life of a young lower middle class couple suddenly disrupted by a petty thief when he steals their only precious belongings mirroring the corruption, pathos, humour and ridiculousness in what we routinely decry as system in this film.

सर्वोत्तम मलयालम फ़िल्म | Best Malayalam Film

Dileesh Pothan

Dileesh Pothan, is an Indian Film Director and Actor who works primarily in Malayalam Film Industry. He has an M.A and M.Phil in Theatre Arts. His slice-of-life narratives are widely appreciated for having a progressive impact on the society. Dileesh's debut film Maheshinte Prathikaram (2016) won The National Award for the Best Feature Film in Malayalam.

दिलीश पोथन, एक भारतीय फिल्म निर्देशक और अभिनेता हैं, जो मुख्य रूप से मलयालम फिल्म जगत में काम करते हैं। उन्होंने रंगमंच कला में एमए और एमफिल किया है। समाज पर प्रगतिशील प्रभाव रखने के लिए उनकी जीवन कथाओं की व्यापक सराहना की जाती है। दिलीश की पहली फिल्म महेशिनते प्रतिकारम (2016) ने मलयालम में सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिला था।

Sandip Senan

Sandeep Senan is one of the most successful producers in the film industry. He has produced three films under the Banner "Urvasi Theatres" which includes "Nee Ko Njaa Cha" - Malayalam (2013), "Best Actors" - Telugu (2015) and "Thondimuthalum Driksakshiyum (2017). He is a Graduate in Commerce and is currently also a Member in Central Board of Film Certification, India.

संदीप सेनान फिल्म जगत में सबसे सफल निर्माताओं में से एक हैं। उन्होंने 'उर्वसी थिएटर' के तहत तीन फिल्में बनाई हैं, जिनमें 'नी को नजा छा' – मलयालम (2013), 'बेस्ट एक्टर्स' – तेलुगू (2015) शामिल है। वे वाणिज्य में स्नातक हैं और वर्तमान में सेंट्रल बोर्ड ऑफ फिल्म सर्टिफिकेशन, भारत में सदस्य भी हैं।

कच्चा लिंबू
KACHCHA LIMBU

Marathi | 116 mins
RAJAT KAMAL | ₹1,00,000/-

Direction: Prasad Oak
Producer: Mandarr Bhaskar Devasthali
Writer: Chinmay Mandlekar
Editor: Jayant Jathar
Cinematographer: Amalendu Choudhary
Music: Rahul Ranade
Cast: Ravi Jadhav, Sonali Kulkarni, Manmeet Pem, Sachin Khedekar, Anantha Mahadevan

प्रशस्ति :

माता-पिता मानसिक रूप से बीमार पुत्र के साथ संबंध बनाने की का बेहतर चित्रण

कच्चा लिंबू जयवंत दलवी के एक मराठी उपन्यास पर आधारित है। फिल्म कटदारे और उनके मानसिक रूप से बीमार बच्चे की दुनिया को चित्रित करती है। 1980 के समय में स्थित इस कहानी में कटदारे हमेशा रात के शिफ्ट में टेलीग्राफ कार्यालय में काम करते हैं और उनकी पत्नी शैलजा एक निजी कंपनी में काम करती है। उनका बेटा बच्चु अब 16 साल का है और उसकी लैंगिकता उसके माता-पिता, खासकर शैलजा के लिए चिंता का विषय है।

KACHCHA LIMBU is based on a Marathi novel by Jaywant Dalvi. The film portrays the world of Mr. and Mrs. Katdare and their mentally retarded child. Taking place in 1980s, Mr. Katdare works in telegraph office in perpetual night shifts and his wife Shailaja works in a private firm. Their son Bachchu is now 16 years old and his sexuality is a concern for his parents, especially Shailaja.

CITATION:

Struggling parents trying to come to terms with a the Mentally Challenged Son

सर्वोत्तम मराठी फिल्म | Best Marathi Film

Prasad Oak

Prasad Oak has been a professional actor since the last 20 years. He has also performed as a singer & voice over artist. He was the first brand ambassador for Zee Marathi Channel. Vittahal Vitthal, Chaukhat, Bayo, Full 3 Dhamaal etc. are some of his Marathi films. His hindi films include Zeher, Kalyug and Raja Natwarlal.

प्रसाद ओएक पिछले 20 सालों से एक अभिनेता रहे हैं। उन्होंने गायक और वॉइस ओवर आर्टिस्ट के रूप में भी प्रदर्शन किया है। वे जी मराठी चौनल के लिए पहले ब्रांड एंबेसडर थे। वित्तहल वित्तहल, चौखट, बायो, फुल 3 धामाल इत्यादि उनकी कुछ मराठी फिल्में हैं। उनकी हिंदी फिल्मों में जहर, कलयुग और राजा नटवरलाल शामिल है।

Mandarr Bhaskar Devasthali

Mandarr Devsthali started his career in the television industry as an assistant director and went onto direct tele-films. Mandarr Devsthali has been working in the film/television industry from last 25 years and has directed more than 5000 episodes for various shows. He has started his own production house "Teamwork Ultra Creations" in 2013.

मंदार देवस्थली ने बतौर सहायक निदेशक टेलीविजन जगत से अपने करियर की शुरुआत की थी और फिर टेली फिल्म की ओर रुख किया। वे गत 25 सालों से फिल्म और टेलीविजन जगत में अहम भूमिका निभा रहे हैं और उन्होंने करीब 5000 से अधिक एपिसोड निर्देशित किए हैं। उन्होंने 2013 में अपना खुद का प्रोडक्शन हाउस 'टीमवर्क अल्ट्रा क्रिएशन' शुरू किया था।

हैलो अर्सी
HELLO ARSI

Odia | 97.20 mins
RAJAT KAMAL | ₹1,00,000/-

Direction: Sambit Mohanty
Producer: Ajaya Routray
Writer: Sambit Mohanty
Editor: Sibaprasad Mohanty
Cinematographer: Prasantanu Mohapatra
Music: Mitrabhanu Mohanty
Cast: Prakruti Mishra, Parthasarathi Ray, Priyambada Ray

प्रशस्ति :

फिल्म में यह व्यक्तिगत संबंधों की खोज में एक युवक की उल्लेखनीय और शानदार अभिव्यक्ति

इस पृष्ठभूमि में, एक जवान आदमी और एक जवान औरत अचानक एक टकरा जाते हैं, दोनों ही अपने जीवन का नया अर्थ ढूंढ रहे हैं। उनकी यात्रा सड़क पर एक कार में शुरू होती है। यह चलती कार वास्तविक घर से दूर एक अस्थायी घर बन जाती है। हालांकि सड़क झूठ और विश्वासघात का मार्ग बन जाती है। दोनों पात्र स्वतंत्रता की तलाश में हैं।

In this backdrop, a young man and a young woman cross each other's path accidentally, both searching for their respective identities. Their journey starts in a car on the ever expanding ROAD. The moving car becomes a temporary home away from the real home which never is anymore. The ROAD however becomes a ROAD of lies and betrayal. Both the characters are seeking freedom.

CITATION:

It is a remarkable and honest expression of youth in search of personal relationship.

सर्वोत्तम उड़िया फिल्म | Best Odiya Film

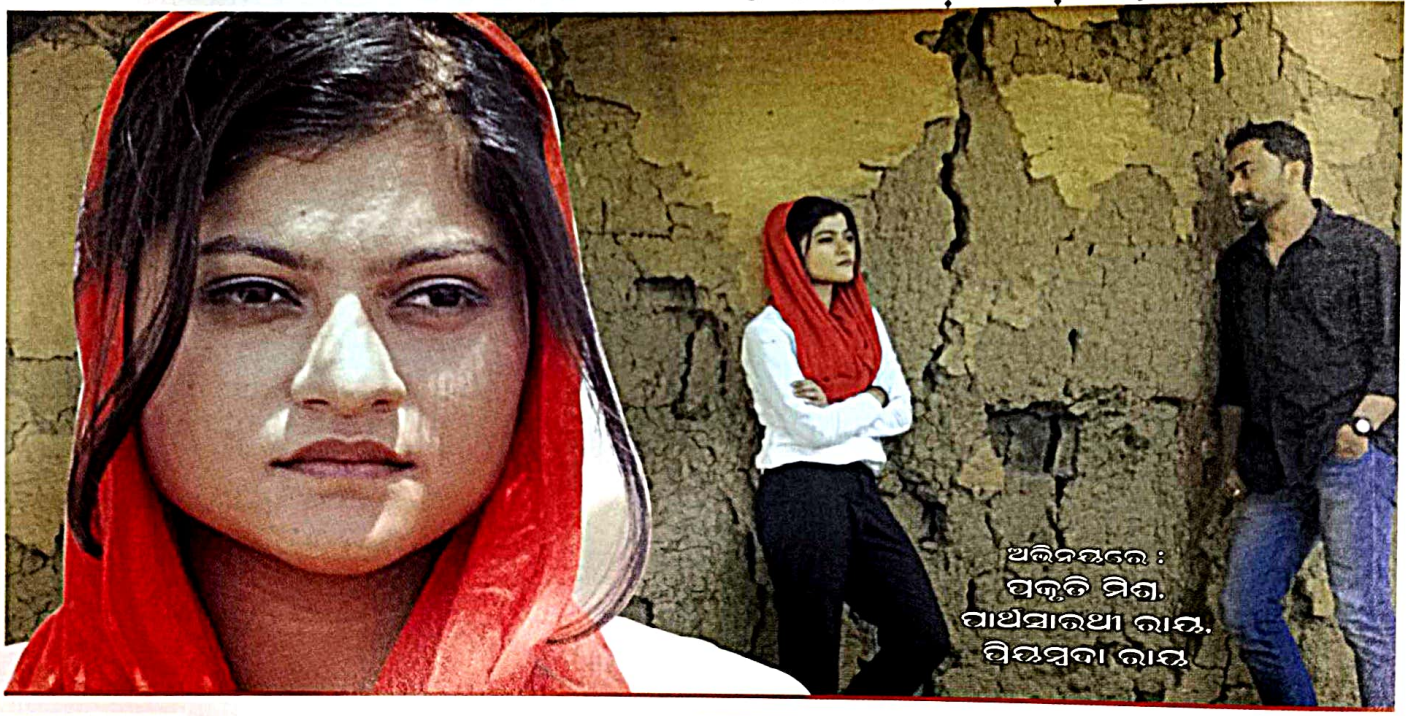

Sambit Mohanty

Late Sambit Mohanty did majority of his education in Bhubaneswar and learnt direction at FTII, Pune. His Diploma film' TAAT TWAM ASHI' also got a National Award for best Sound recording and designing. He was deeply involved in film education and served as a visiting faculty at various Institutions. He passed away just after completing his first feature film 'HELLO ARSI'.

स्वर्गीय संबित मोहंती ने अपनी अधिकांश शिक्षा भुवनेश्वर में ली थी और एफटीआईआई, पुणे से निर्देशन में पढ़ाई की। उनकी फिल्म 'तात त्वम आशी' को सर्वश्रेष्ठ ध्वनि रिकॉर्डिंग और डिजाइनिंग के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिला था। वे फिल्मी शिक्षा से जुड़े थे और उन्होंने विभिन्न संस्थानों में एक विजिटिंग शिक्षक के रूप में कार्य किया था. अपनी पहली फीचर फिल्म 'हेल्लो अर्सी' पूरा करने के ठीक बाद ही उनका निधन हो गया।

Ajaya Routray

Ajaya Routray, an Oriya movie producer and director has been long working in the film industry. He is well known for directing the first Santali movie 'Jiwi Juri' (Life partner) & his production- TV serial Nabakalebara . Ajaya began his creative Journey in the year 1985 as associate director.Later he entered into field of Documentary Production, produced and directed over 300 numbers of documentary films.

उड़िया फिल्म निर्माता और निर्देशक अजय रूत्रे फिल्म उद्योग में लंबे समय से काम कर रहे हैं। वे पहली संताली फिल्म 'जिवी जूरी (लाइफ पार्टनर)' के निर्देशन एवं उनके द्वारा निर्मित टीवी धारावाहिक नाबाकलेबारा के लिए जाने जाते हैं। अजय ने वर्ष 1985 में उड़िया फिल्म में सहयोगी निर्देशक के रुप में अपनी रचनात्मक यात्रा शुरू की। बाद में उन्होंने वृत्तचित्र निर्माण के क्षेत्र में कदम रखा और 300 से अधिक वृत्तचित्र फिल्मों का निर्माण और निर्देशन किया।

टू लेट
TO LET

Tamil | 99 mins
RAJAT KAMAL | ₹1,00,000/-

Direction: Chezhian
Producer: Prema Chezhian
Writer: Chezhiyan
Editor: Sreekar Prasad
Cinematographer: Chezhiyan
Cast: Santhosh Sreeram, Suseela, Dharun

प्रशस्ति :

कलात्मक रूप से अच्छी तरह से निर्मित की गई फिल्म।

टूलेट एक दंपति की कहानी है जिनके परिवार में एक बच्चा भी है। 2007 में चेन्नई में आईटी क्षेत्र में हो रहे लगातार विकास के परिणामस्वरूप जमीनी कारोबार में बढ़ोतरी होती है। इससे घरों के मालिक ज्यादा किराया लेने के लिए लालची हो जाते हैं। दंपति के घर का मालिक भी उन्हें किराया ज्यादा न देने पर बाहर निकालने की शर्त रखता है। उन्हें अपनी मध्यम श्रेणी की आय के साथ एक महीने में ही नया घर ढूंढना है। अपने मोपेड पर वे समय और सभी प्रकार के पूर्वाग्रह के खिलाफ दौड़ शुरू कर देते हैं।

TOLET is the story of a couple with a child.It takes place in 2007 in the Indian city of Chennai which is experiencing a real estate boom as a result of an exponential development of the IT sector.The owner of their accommodation a little too greedy for a higher rent,dishes out the door.They have only thirty days to find new housing with their modest middle-class income.On their Mopeds they start a race against time and all kinds of prejudice.

CITATION:

Well crafted film constructed artistically.

सर्वोत्तम तमिल कलाकार | Best Tamil Film

Chezhian

Chezhiyan is an Indian Film maker, writer, poet and cinematographer, who works primarily in the Tamil film industry. After completing his Civil Engineering degree, he started his career as a cinematographer. He is also an acclaimed author of a series of books about cinema titled 'Ulaga cinema'(world cinema) in Tamil.

चेजियान एक भारतीय फिल्म निर्माता, लेखक, कवि और छायांकार हैं, जो मुख्य रूप से तमिल फिल्म उद्योग में काम करते हैं। सिविल इंजीनियरिंग की डिग्री पूरी करने के बाद, उन्होंने एक छायांकार के रूप में अपने करियर की शुरुआत की। वे तमिल में 'उलगा सिनेमा' (विश्व सिनेमा) नाम की किताबों की एक श्रृंखला के एक प्रशंसित लेखक भी हैं।

Prema Chezhian

She is professionally a music teacher and book publisher. After completing her degree in economics, she went for higher studies at Trinity London College of Music. She has published books of 10 volumes about Western Music Theory in Tamil. These books got Best Publisher Award from Ananda Vikatan on 2011. She has been running a Music School, producing a movie had been her passion and dream.

प्रेमा चेजियान व्यावसायिक रूप से एक संगीत शिक्षिका और पुस्तक प्रकाशक हैं। अर्थशास्त्र में अपनी डिग्री पूरी करने के बाद, वह ट्रिनिटी लंदन कॉलेज ऑफ म्यूजिक में उच्च अध्ययन के लिए गईं। उन्होंने तमिल में पश्चिमी संगीत सिद्धांत के बारे में 10 खंडों की किताबें प्रकाशित की हैं। इन पुस्तकों को 2011 में आनंद विकास द्वारा सर्वश्रेष्ठ प्रकाशक पुरस्कार मिला था। वह एक संगीत विद्यालय चला रही हैं और एक फिल्म का निर्माण कर रही हैं, जो उसका जुनून और सपना था।

गाज़ी
GHAZI

Telugu | 123 mins
RAJAT KAMAL | ₹1,00,000/-

Direction: Sankalp
Producer: Prasad V. Potluri (Picture House Media Limited) (PVP Cinema), Anvesh Reddy (Matinee Entertainment Pvt. Ltd.)
Writer: Sankalp
Editor: A. Sreekar Prasad
Cinematographer: Madhie
Cast: Rana Daggubati, Kay Kay Menon, Atul Kulkarni, Rahul Singh, Satya Dev

प्रशस्ति :

भारतीय नौसेना के जवान समुद्र में 36 घंटे से अधिक समय तक रहकर हिंद महासागर में दुश्मन की एक पनडुब्बी डूबाते हुए देशभक्ति और साहस दिखाते हैं।

गाजी 1971 में भारत के पूर्वी तट पर भारतीय उपमहाद्वीप एस –21 पर जवानों के विशाल साहस और अविश्वासित देशभक्ति की एक भूमिगत कहानी है, जिन्होंने पाकिस्तानी पनडुब्बी पीएनएस गाजी को उस वक्त नष्ट कर दिया था, जब यह आईएनएस विक्रांत को नष्ट करने और विशाखापत्तनम बंदरगाह पर कब्जा करने की महत्वाकांक्षा के साथ भारतीय जल सीमा में प्रवेश करती है।

Ghazi is an epic underwater tale of the immense courage and undying patriotism of the men aboard the Indian Submarine S-21 who destroyed the Pakistani submarine PNS Ghazi when it ventured into Indian waters with the ambition of destroying INS Vikrant and conquering the Visakhapatnam port on the eastern coast of India in 1971.

CITATION:

Men of Indian Navy showing patriotism and courage, sink an enemy submarine in Indian Ocean, while remaining in Sea for more than 36 hours.

सर्वोत्तम तेलुगू कलाकार | Best Telugu Film

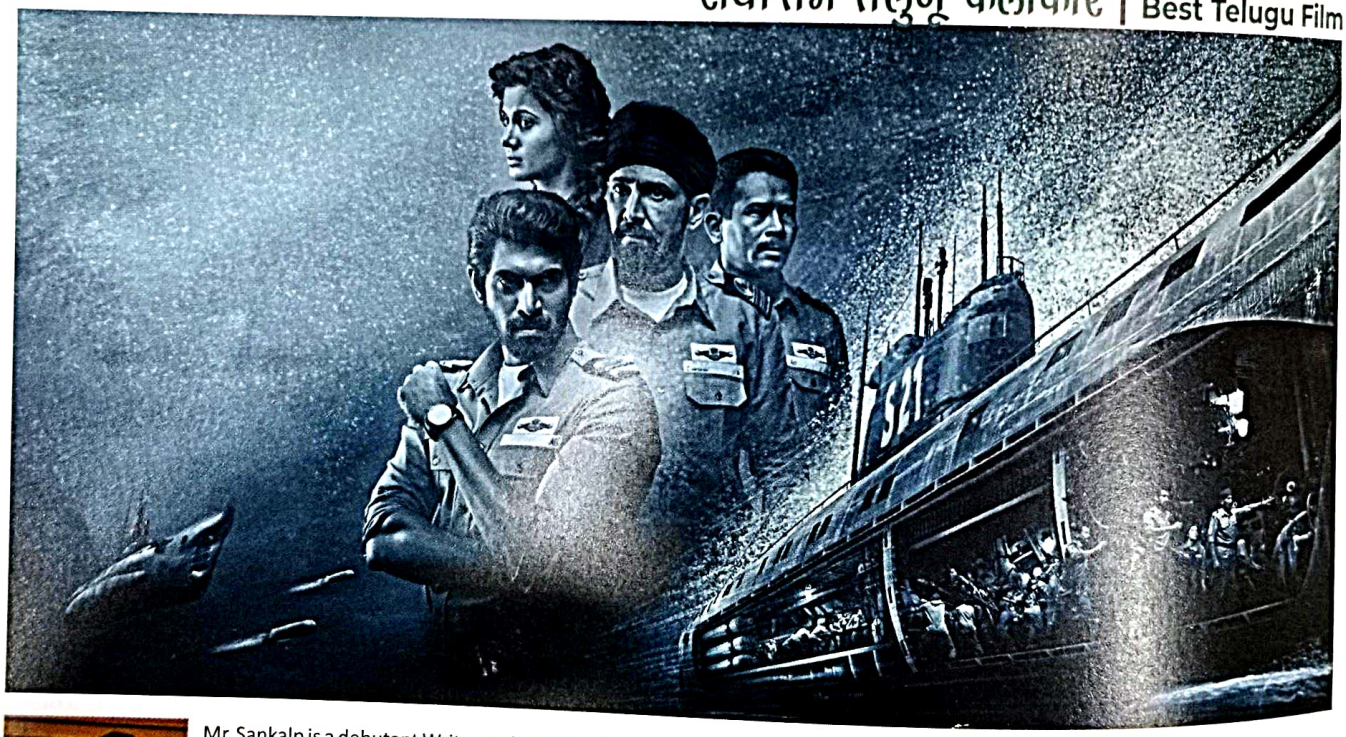

Sankalp

Mr. Sankalp is a debutant Writer and Director from the Indian Film Industry. He is credited for being the first filmmaker in India to make a first of its kind Submarine based War-at-Sea Film, Ghazi/The Ghazi Attack, which was shot both in Telugu and Hindi and dubbed into Tamil. He has done a filmmaking course in Griffith Film School, Australia.

श्री संकल्प भारतीय फिल्म उद्योग के एक पदार्पण लेखक और निदेशक हैं। उन्हें भारत में पहली फिल्म निर्माता बनने के लिए श्रेय दिया जाता है क्योंकि वह अपनी तरह की पनडुब्बी आधारित वार–एट–सी फिल्म, गाजी/द गाजी अटैक बना सके, जिसका तेलुगु और हिंदी दोनों में निर्माण किया गया और तमिल में डब किया गया। उन्होंने ग्रिफिथ फिल्म स्कूल, ऑस्ट्रेलिया से फिल्म निर्माण का कॉर्स किया है।

Prasad V. Potluri

Mr. Prasad V. Potluri is the Producer in Picure House Media Limited (PVP Cinema) which is one of the leading production houses and capital provider in South Indian marketplace. Having financed more than 100 movies and produced 18 marquee productions over the last 5 years, Mr. Prasad V. Potluri has ushered in global standards and cutting edge content in South India.

श्री प्रसाद वी. पोट्लुरी पिक्चर हाउस मीडिया लिमिटेड (पीवीपी सिनेमा) में निर्माता हैं, जो दक्षिण भारतीय बाजार में अग्रणी उत्पादन घरों और पूंजी प्रदाता में से एक है। पिछले 5 वर्षों में 100 से अधिक फिल्मों को वित्त पोषित करने और 18 मार्की प्रोडक्शन्स का निर्माण करने के बाद, श्री प्रसाद वी. पोट्लूरी ने वैश्विक मानकों और दक्षिण भारत में बढ़त सामग्री में बढ़ोतरी की है।

ढ..

DHH

Gujarati | 127.47 mins
RAJAT KAMAL | ₹1,00,000/-

Direction: Manish Saini
Producer: Amruta Parande, Rajan Saini, Manish Saini
Writer: Manish Saini
Editor: Niraj Voralia
Cinematographer: Prahlad Gopakumar
Music: Meghdhanush
Cast: Karan Patel, Kuldeep Sodha, Naseeruddin Shah, Kahaan, Archan Trivedi, Brijendra Kala

प्रशस्ति :

एक दादा जादूगर गाइड के रूप में तीन युवाओं को उनके दिमाग की पूरी क्षमता को समझने के लिए मार्गदर्शन करते हैं।

ढ.. 3 दोस्तों की एक मार्मिक कहानी है। एक दोपहर तीनों जादूगर का शो देखते हैं, जिसे देखकर वो चौंक जाते हैं। उसके बाद उन्हें लगता है कि गणित समेत हर समस्या का समाधान जादू ही है। लड़के उस जादूगर को लिखते हैं और उन्हें पास करने के लिए कुछ तरीके सीखने की मांग करते हैं. कई दिनों बाद जादूगर का पत्र एक पार्सल के साथ आता है, जिसमें दावा किया गया है कि उसमें परीक्षा पास करवाने वाली कुंजी है। जादू सीखने की कोशिश में उनको पता चलता है कि जीवन में बहुत कुछ सीखना है।

Dhh is a heartwarming story of 3 friends. An afternoon of sauntering leads them to a magic show and leaves them awestruck. Magic, it seems is a solution for all their problems including mathematics! The boys write to the Magician asking him for a trick to ace their examinations. Several days later the Magician replies! His letter arrives with a parcel that claims to hold the key to cracking their examinations. In pursuit of learning from magic they soon realise, that there is a lot more learning to be done from life itself.

CITATION:

A Grandfather acting as a magician guide three young minds to realizes their full potential.

सर्वोत्तम गुजराती फ़िल्म | Best Gujarati Film

Manish Saini

Manish Saini graduated from the NID, Ahmedabad in 2009, specializing in Film and Video Communication. It is here that he discovered and channelized his love for story telling into crafting films. He aspires to tell stories that are rooted in Indian life and have a mass appeal but at the same time are equally thought provoking.

मनीष सैनी ने फिल्म और वीडियो संचार में अहमदाबाद के एनआईडी से स्नातक की डिग्री प्राप्त की और कहानी लेखन की ओर अपनी रुचि बढ़ाई। वह उन कहानियों को बताने की इच्छा रखते हैं, जो भारतीय जीवन में निहित हैं।

Amruta Parande

Amruta Parande founded Amdavad Films in 2016 along with writer and director Manish Saini with the intention of realizing their project "Dhh". Amruta aspires to contribute to the growth Gujarati cinema which is at its nascent stage at the moment. She hopes to contribute to Indian Cinema by putting forth untold stories that are intrinsic to its culture.

अमृता परांडे ने 2016 में लेखक व निदेशक मनीष सैनी के साथ अहम प्रोजेक्ट 'ढ..' को पूरा करने के लिए अमदावाद फिल्म्स की स्थापना की। अमृता ने गुजराती सिनेमा के उत्थान में उस वक्त योगदान दिया, जब वह अपने शुरुआती दौर में था। उन्होंने अपनी संस्कृति में अंतर्निहित अनकही कहानियां का भारतीय सिनेमा में योगदान करना चाहती हैं।

पद्दई
PADDAYI

Tulu | 100 mins
RAJAT KAMAL | ₹1,00,000/-

Direction: Abhaya Simha
Producer: Nithyananda Pai
Writer: Abhaya Simha
Editor: Prashant Pandit
Cinematographer: Vishnuprasad P
Cast: Mohan Sheni, Bindu Raxidi, Chandrahas Ullal, Gopinath Bhat, Avinash Rai, Srinidhi Achar, Sadashiva Dharmast hala, Vani Periodi

प्रशस्ति :

समुद्री तूफान में एक महिला की उमंग और अभिलाषा का चित्रण, जिसमें उसके पति और स्वयं समेत कई मौत हो गई।

पददई शेक्सपियर के मैकबेथ महाकाव्य नाटक का आधुनिक अनुकूलन है। माधव और सुगधी दक्षिण भारत के मछली पकडने वाले समुदाय के नवविवाहित दम्पति हैं। मालिक दिनेश उन्हें नए सपने और उम्मीदे देता है। लेकिन जब उनका जीवन एक नए उच्च स्तर पर होता है तो दिनेश विश्वासघात करता है और उसे जो भी दिया है वो वापस ले जाता है। अब माधव और सुगधी कडवा बदला लेने के लिए तैयार हैं। उसके बाद कहानी जल्द ही हत्या और अफसोस की गाथा में बदल जाती है।

Paddayi is a modern day adaptation of the epic drama, 'Macbeth' from Shakespeare. Madhava and Sugandhi are a newly married couple from the fishing community of South India. Dinesha, owner of the fleet gives them new dreams and hopes. But when their life was on a new high, Dinesha betrays and takes back what he gave. Now Madhava and Sugandhi are determined for a bitter revenge. The story soon turns into a tale of murder and regrets.

CITATION:

Ambitions and Greed of a woman in the hurricane filled sea, leading to many deaths including her husband and herself.

सर्वोत्तम तुलु फ़िल्म | Best Tulu Film

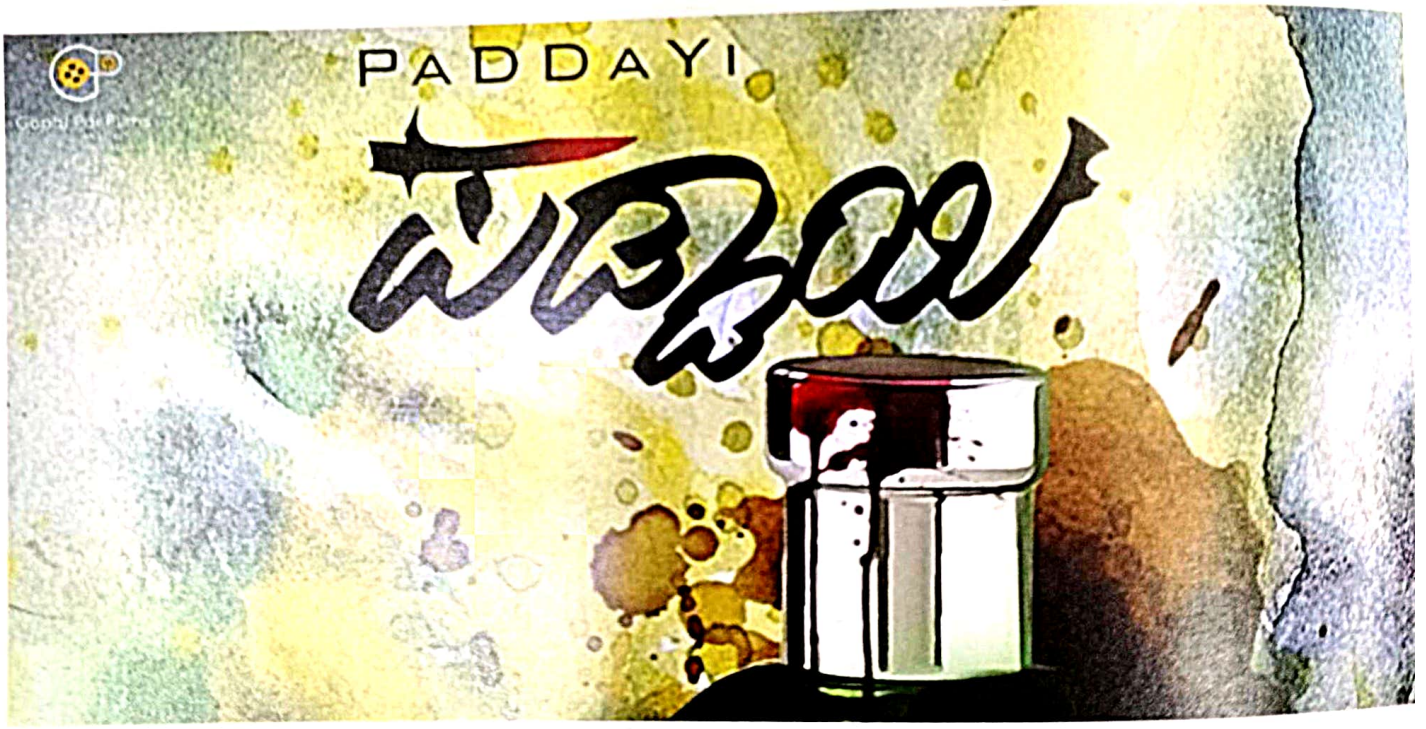

Abhaya Simha

Abhaya Simha is a graduate of Film and Television Institute of India. His first film Gubbachigalu won the National Award for the Best Children's film (2008). His second film Shikari too was screened in Kolkatta and Bangalore International Film Festival. He is also an avid documentary filmmaker who has made more than 20 documentaries on culture and environmental issues.

अभय सिन्हा एफटीआईआई से स्नातक हैं और उनकी पहली फिल्म गुबाचिगुलू ने साल 2008 में सर्वश्रेष्ठ बाल कलाकार के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिला था। उनकी दूसरी फिल्म शिकारी को भी कोलकाता और बैंगलोर अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में प्रदर्शित किया गया था। वह एक वृत्तचित्र फिल्म निर्माता भी हैं, जिन्होंने संस्कृति और पर्यावरणीय मुद्दों पर 20 से अधिक वृत्तचित्र फिल्में बनाई हैं।

Nithyananda Pai

Nithyananda Pai from Karkala, has had a lon association with various social and cultura organizations in and around Karnataka. He has als acted in Kannada, Tulu and Konkani films. He starte his production house, Gopal Pai films to produc interesting content which is sensitive towards th society and entertaining at the same time. This is h first film as a producer.

करकला के रहने वाले नित्यानंद पई, कर्नाटक और आसप विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक संगठनों से जुड़े रहे उन्होंने कन्नड़, तुलु और कोंकणी फिल्मों में भी अभिनय कि है। उन्होंने अपने समाज के प्रति संवेदनशील और उसी क मनोरंजन करने वाली फिल्में तैयार करने के लिए निर्मा कंपनी गोपाल राय फिल्म्स की शुरुआत की। यह उन निर्माता के रूप में पहली फिल्म है।

सिंजर

SINJAR

Jasari | 114.56 mins

RAJAT KAMAL | ₹1,00,000/-

Direction: Pampally
Producer: Shibu G Suseelan
Writer: Pampally
Editor: Lijo Paul
Cinematographer: Sanjay Harris
Music: Dileep Singh
Cast: Musthafa, Mythili, Srinda Arhan, Sethulakshmi, Binoy Nambala

प्रशस्ति :

फिल्म खूबसूरत और वास्तविक तरीके से अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के बदसूरत चेहरे को दर्शाता है।

फिल्म 'सिंजर' लक्षद्वीप की राजधानी कवारट्टी में रहने वाले साधारण मछुआरे की कहानी का चित्रण कर रही है। कहानी नायक अनसार, उनकी बहन सुहारा और अंसार की मंगेतर फिदा के आसपास घूमती है। अनसार और फिदा की सगाई हो चुकी है। कहानी आगे बताती है कि अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद कैसे एक द्वीप के सामान्य जीवन को प्रभावित करता है।

The movie "SINJAR" is depicting the story of an ordinary fisherman living in the capital city of Lakshadweep Island, Kavaratti. The story revolves around the protagonist Ansar, his sister SUHARA, and ANSAR'S fiancée FIDA. Ansar got engaged to FIDA. The story further unfolds how the International terrorism impacts the ordinary life of an islander

CITATION:

It depicts the ugly face of International terrorism honestly and truly

सर्वोत्तम जसारी फ़िल्म | Best Jasari Film

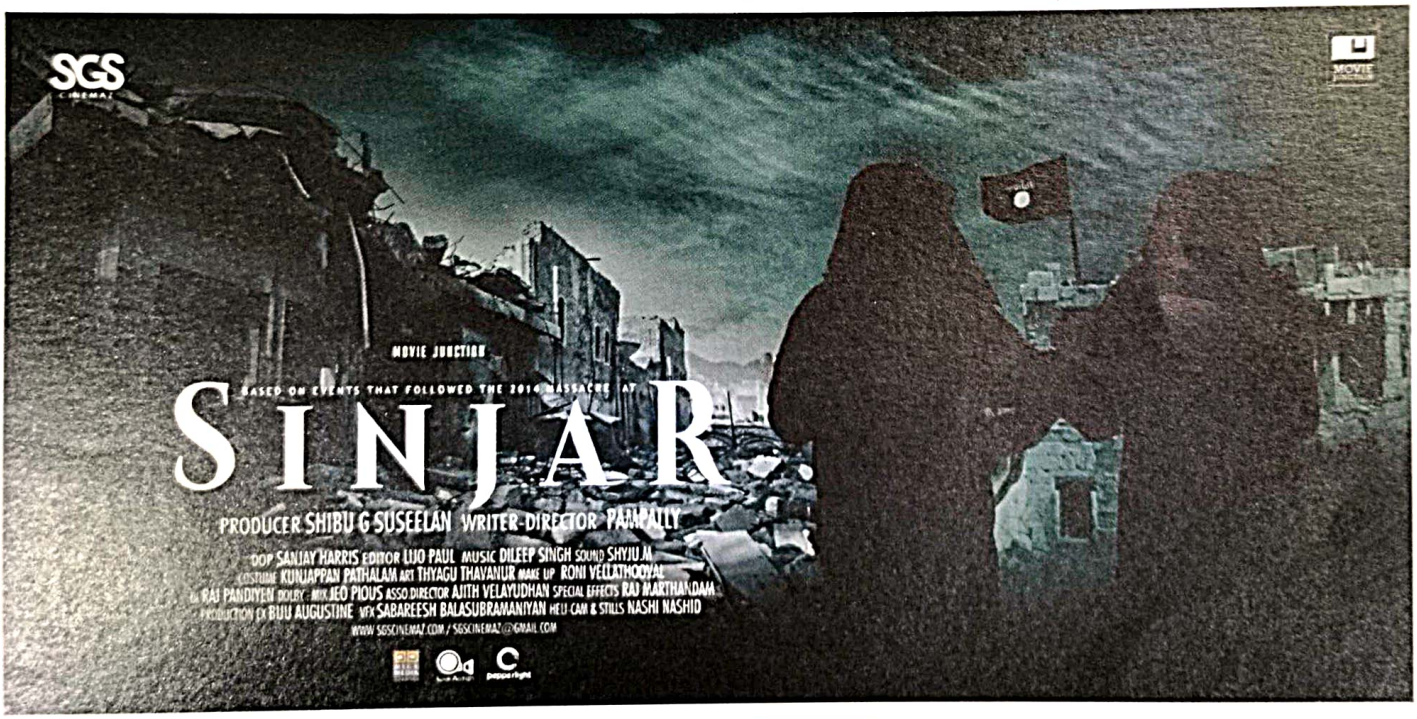
SGS
MOVIE JUNCTION
BASED ON EVENTS THAT FOLLOWED THE 2014 MASSACRE AT
SINJAR
PRODUCER SHIBU G SUSEELAN WRITER-DIRECTOR PAMPALLY
DOP SANJAY HARRIS EDITOR LIJO PAUL MUSIC DILEEP SINGH SOUND SHYJU.M
COSTUME KUNJAPPAN PATHALAM ART THYAGU THAVANUR MAKE UP RONI VELLATHOOVAL
RAJ PANDIYEN DOLBY MIX JEO PIOUS ASSO.DIRECTOR AJITH VELAYUDHAN SPECIAL EFFECTS RAJ M.ARTHANDAM
PRODUCTION EX BIJU AUGUSTINE VFX SABAREESH BALASUBRAMANIYAN HELI-CAM & STILLS NASHI NASHID
WWW.SGSCINEMAZ.COM / SGSCINEMAZ@GMAIL.COM

Pampally

Pampally is a writer-cum-director who has won multiple awards on national and international stage. Some of his notable works include films like 'Laadam', 'Lorry Girl' and 'Tooba'. Pampally has also worked as an actor with the All India Radio for a long time. He runs his own production house under the banner of 'Pampally Productions'.

पैपली एक लेखक और निर्देशक हैं, जिन्होंने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई पुरस्कार जीते हैं। उनकी कुछ उल्लेखनीय रचनाओं में 'लादम', 'लॉरी गर्ल' और 'तूबा' जैसी कई फिल्में शामिल हैं। पैपली ने लंबे समय तक अखिल भारतीय रेडियो में एक अभिनेता के रूप में काम किया है। वे 'पैपली प्रोडक्शंस' के बैनर के तहत अपना खुद का प्रोडक्शन हाउस भी चलाते हैं।

Shibu G Suseelan

Suseelan is a film producer and his movies like Oridam, Pulijanmam, Nottam, Vasthavam and Pakal has won several National-State level award. He has launched his own production house under the banner of 'Movie Junction'. By producing the film 'Sinjar', Suseelan became the first Jasari-language movie producer in India.

सुसीलन एक फिल्म निर्माता हैं एवं उनकी कई फिल्मों जैसे ओरिडम, पुलिजनमम, नॉटम, वस्थमम और पकल को कई राष्ट्रीय और राज्यीय पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। उन्होंने 'मूवी जक्शन' के बैनर के तहत अपना खुद का प्रोडक्शन हाउस भी शुरू किया था और फिल्म 'सिंजर' का निर्माण किया. इस फिल्म के निर्माण के साथ वे भारत में पहली जसारी भाषा के फिल्म निर्माता बने थे।

वॉकिंग विद द विंड
WALKING WITH THE WIND

Ladakhi (Kashmiri) | 80.32 mins
RAJAT KAMAL | ₹1,00,000/-

Direction: Praveen Morchhale
Producer: Mahesh Mohan
Writer: Praveen Morchhale
Editor: Ujjwal Chandra
Cinematographer: Mohammad Reza Jahanpanah
Cast: Sonam Wangyal, Phunchok Toldan, Rigzin Dolkar, Sachi Joko, Namgyal Dorjey, Phuntsog Dolma, Sonam Wangyal, Ama Dolma

प्रशस्ति :

हिमालय क्षेत्रों में अपने लक्ष्य को संग्रहित करने के लिए एक लड़के की यात्रा का कवितात्मक दर्शन।

हिमालय के इलाकों में रहने वाला एक 10 वर्षीय लड़का टसेरिंग गलती से अपने दोस्त की स्कूल की कुर्सी तोड़ देता है। हर रोज पहाड़ी इलाके में गधे पर 7 किलोमीटर की स्कूल की यात्रा उस वक्त चुनौतीपूर्ण हो जाती है, जब वो अपने गांव में वो कुर्सी लाने का फैसला करता है। अब यह कुर्सी जीवन की जागृति यात्रा, वयस्क दुनिया में आंतरिक सत्य और वास्तविकता की खोज में एक रूपक बन जाती है. वह इस बात से अनजान है कि यह यात्रा आखिरकार उसे एक आदमी बना देगी।

Tsering, a 10 year old boy in Himalayan terrain, mistakenly breaks his friend's school chair. His everyday, 7 kms long journey to school in mountainous terrain on donkey, turns mammoth and challenging when he decides to bring the chair to his village. Now the chair silently becomes a metaphor in his awakening journey of life, quest for inner truth and reality in the adult world, which is deeply engrossed in their own. He is unaware that this journey will finally make him a man.

CITATION:

Poetic expression of the journey of a boy for archiving his goal on Himalayan Terrain

सर्वोत्तम लदाखी फ़िल्म | Best Ladakhi Film

Praveen Morchhale

Praveen Morchhale is a new wave filmmaker known for his unique style of subtle and poetic cinema making. After few years of making short films and theatre working as a director, Praveen achieved recognition with his feature film debut "Barefoot to Goa".

प्रवीण मोर्छले एक फिल्म निर्माता हैं, जो सूक्ष्म और काव्य सिनेमा बनाने की अपनी अनूठी शैली के लिए जाने जाते हैं। निर्देशक के रूप में लघु फिल्मों और रंगमंच में काम करने के कुछ सालों बाद प्रवीण ने अपनी फीचर फिल्म 'बेयरफुट टू गोवा' के साथ पहचान हासिल की।

Mahesh Mohan

Mahesh Mohan, a Dubai based producer, is the owner of Trippy Turtle Productions which has ventured into film production with their maiden project 'Walking with the wind'. He set this organization with the motto of making only quality movies which will create a mark in the industry without considering the commercial aspect alone.

महेश मोहन ट्रिपी टर्टल प्रोडक्शंस के मालिक हैं, जिन्होंने अपनी पहली फिल्म 'वाकिंग विद द वाइंड' के साथ फिल्म निर्माण में कदम रखने का साहस किया। उन्होंने केवल गुणवत्ता वाली फिल्म बनाने के आदर्श वाक्य के साथ इस संगठन को स्थापित किया.

न्यूटन
NEWTON

Hindi | 106.27 mins
Certificate । प्रशस्ति पत्र

Direction: Amit V Masurkar
Producer: Manish Mundra, Anand L Rai
Writer: Mayank Tewari, Amit V Masurkar
Editor: Shweta Venkat
Cinematographer: Swapnil S Sonawane
Music: Rachita Arora, Naren Chandavarkar and Benedict Taylor
Cast: Rajkummar Rao, Pankaj Tripathi, Anjali Patil, Raghubir Yadav

प्रशस्ति :

एक निष्पक्ष चुनाव की व्यवस्था करने और चुनाव अधिकारी को सुरक्षा प्रदान करने वाले ड्यूटी रौनिक के उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए।

यह न्यूटन के ऐसे स्थान पर मतदान करवाने के इरादे पर आधारित कहानी है, जहां कोई भी मतदान में रूचि नहीं रखता है। अपने चारों ओर फैले खतरे से अनजान, न्यूटन अपने कर्तव्य को पूरा करने के लिए दृढ़ संकल्पित है। हालांकि जंगल में कहा जाता है कि 'चीजें अधिक बदल जाती हैं, तो वे बदतर हो जाएगी'।

It is a story about Newton's intent on enabling voting in a place where nobody is interested in the vote Unfazed with the cynicism and danger all around him, Newton is determined to do his duty. But, as they say in the jungle, 'The more things change, the worse they will get'.

CITATION:

For outstanding performance of an on duty soldier to conductan honest election and provide protection to the election officer.

विशेष उल्लेख | Special Mention

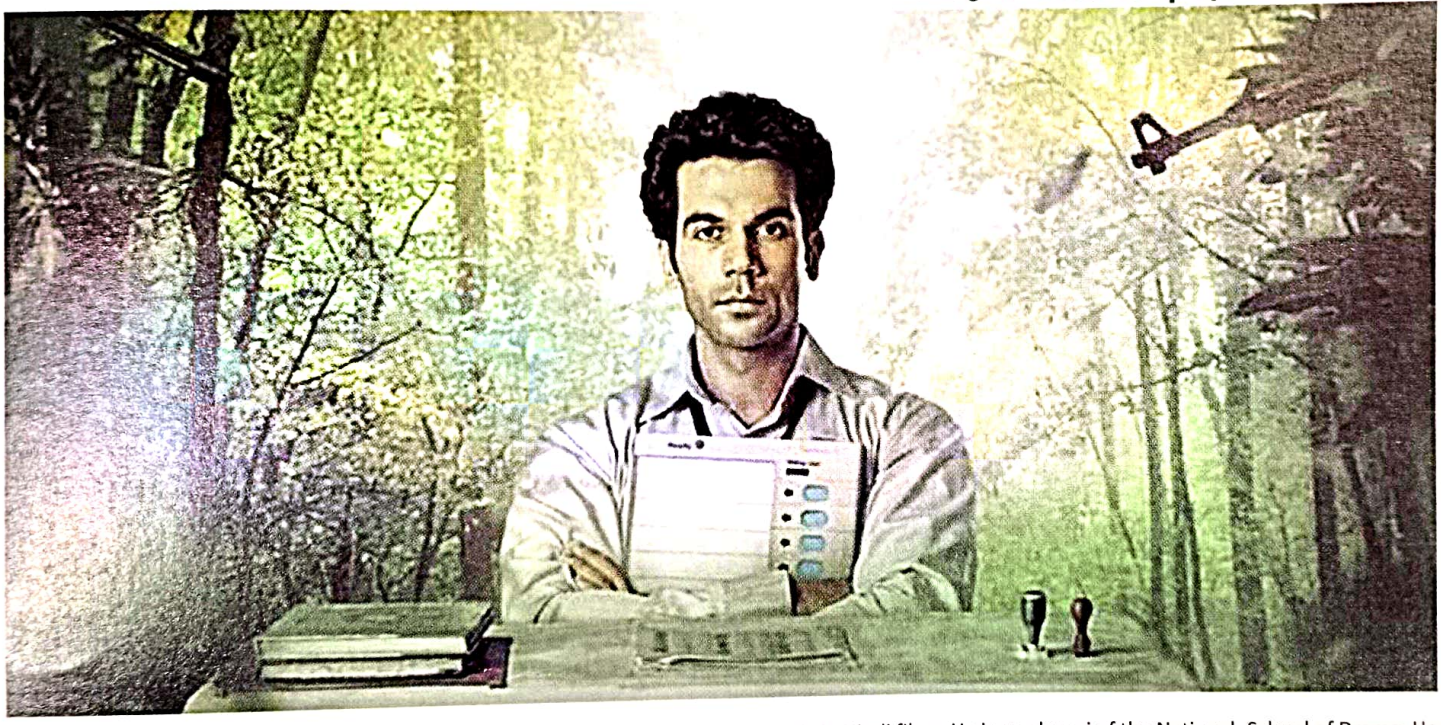

Pankaj Tripathi

Pankaj Tripathi is an Indian actor who appears predominantly in Hindi films. He is an alumni of the National School of Drama. He debuted in 2004 with a minor role in Runand has since worked in more than 40 films and 60 television shows. Tripathi's breakthrough came in 2012 for his supporting role in the Gangs of Wasseypur series. He has since received critical appraisal for multiple films, including Fukrey (2013), Masaan (2015), Nil Battey Sannata (2016), Bareilly Ki Barfi (2017) and Fukrey Returns(2017).

पंकज त्रिपाठी एक भारतीय अभिनेता हैं, जिन्होंने कई हिंदी फिल्मों में अभिनय किया है। वे नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा के पूर्व छात्र हैं। 2004 में उन्होंने रनैंड में मामूली भूमिका के साथ अपने करियर की शुरुआत की और उसके बाद वे अब तक 40 से अधिक फिल्म और 60 टेलीविजन शो में काम कर चुके हैं। त्रिपाठी ने वर्ष 2012 में गैंग्स ऑफ वासेपुर श्रृंखला में सहायक किरदार के साथ वापसी की थी। उन्हें फुकरे (2013), मसान (2015), नील बट्टे सन्नाटा (2016), बरेली की बर्फी (2017) और फुकरे रिटर्न्स (2017) समेत कई फिल्मों के लिए सराहा गया है।

टेक ऑफ
TAKE OFF

Malayalam | 132 mins
Certificate । प्रशस्ति पत्र

Direction: Mahesh Narayanan
Producer: Anto Joseph
Writer: Mahesh Narayanan and PV Shaji Kumar
Editor: Mahesh Narayanan and Abhilash Balachandran
Cinematographer: Sanu John Varghese
Music: Gopi Sundar
Cast: Parvathy Thiruvoth, Kunchacko Boban, Fahad Fasil, P G Divyaprabha

प्रशस्ति :

किरदार की बहुत अच्छी समझ और इसे मनोहर ढंग के साथ चित्रित किया गया है।

टेक ऑफ उस सत्य घटना से प्रेरित है, जब वर्ष 2014 में गृहयुद्ध के दौरान ईराक, टिक्रित, इराक में फंसी हुई भारतीय नर्सों को बचाया जाता है। फिल्म, नायिका समीरा के जीवन का अनुसरण करती है, जो एक बहादुर नर्स है और अपने पति के साथ काम के सिलसिले में इराक जाती है। यहां आईएस के आतंकवादी अस्पताल पर कब्जा कर लेते हैं। क्या सभी नर्सें आतंकियों के चंगुल से बचकर निकल पाएंगी?

Take Off is inspired by the real-life rescue of Indian nurses who were stranded in Tikrit, Iraq, during the country's civil war in 2014. The movie follows the life of its protagonist Sameera, a strong-willed nurse who along with her husband travels to Iraq for work. IS militants soon take control of their hospital. Will they make it out alive from the crisis? Under the reassuring flutter of the Indian flag, the nurses are rescued and Sameera, Shahid and Ibru find themselves reunited as a family.

CITATION:

Very well understanding of the character and depicting it with élan.

विशेष उल्लेख | Special Mention

Parvathy

Parvathy Thiruvoth Kottuvata is an Indian film actress from Kerala, who appears in South Indian films. She debuted in the year 2006, with the film 'Syllabus'. Her performances in films such as Notebook, City of God, Maran, Bangalore Days , Uttama Villain , Ennu Ninte Moideen, Charlie have been extremely popular. She made her Bollywood debut with the 2017 Hindi film Qarib Qarib Singlle opposite Irrfan Khan. Parvathy has won various awards and accolades for her acting performances.

पार्वती तिरुवोत कोट्टवता केरल की एक भारतीय फिल्म अभिनेत्री हैं, जिन्होंने कई दक्षिण भारतीय फिल्मों में काम किया है। उन्होंने फिल्म 'सिलेबस' के साथ वर्ष 2006 में करियर की शुरू की। उनकी नोटबुक, सिटी ऑफ गॉड, मारन, बैंगलोर डेज, उत्तम विलेन आदि फिल्में बेहद लोकप्रिय हैं। उन्होंने इरफान खान के साथ 2017 में हिंदी फिल्म करीब करीब सिंगल के साथ बॉलीवुड में कदम रखा था। पार्वती ने अपने अभिनय प्रदर्शन के लिए विभिन्न पुरस्कार प्राप्त किए हैं।

हैलो अर्सी
HELLO ARSI

Odia | 97.20 mins
Certificate । प्रशस्ति पत्र

Direction: Sambit Mohanty
Producer: Ajaya Routray
Writer: Sambit Mohanty
Editor: Sibaprasad Mohanty
Cinematographer: Prasantanu Mohapatra
Music: Mitrabhanu Mohanty
Cast: Prakruti Mishra, Parthasarathi Ray, Priyambada Ray

प्रशस्ति :

किरदारों की भूमिकाओं का राही चयन और इसे सुंदर रूप से दर्शाया गया।

इस पृष्ठभूमि में, एक जवान आदमी और एक जवान औरत अचानक एक टकरा जाते हैं, दोनों ही अपने जीवन का नया अर्थ ढूंढ रहे हैं। उनकी यात्रा सड़क पर एक कार में शुरू होती है। यह चलती कार वास्तविक घर से दूर एक अस्थायी घर बन जाती है। हालांकि सड़क झूठ और विश्वासघात का मार्ग बन जाती है। दोनों पात्र स्वतंत्रता की तलाश में हैं।

In this backdrop, a young man and a young woman cross each other's path accidentally, both searching for their respective identities. Their journey starts in a car on the ever expanding ROAD. The moving car becomes a temporary home away from the real home which never is anymore. The ROAD however becomes a ROAD of lies and betrayal. Both the characters are seeking freedom.

CITATION:

Very well understanding of the character and depicting it beautifully.

विशेष उल्लेख | Special Mention

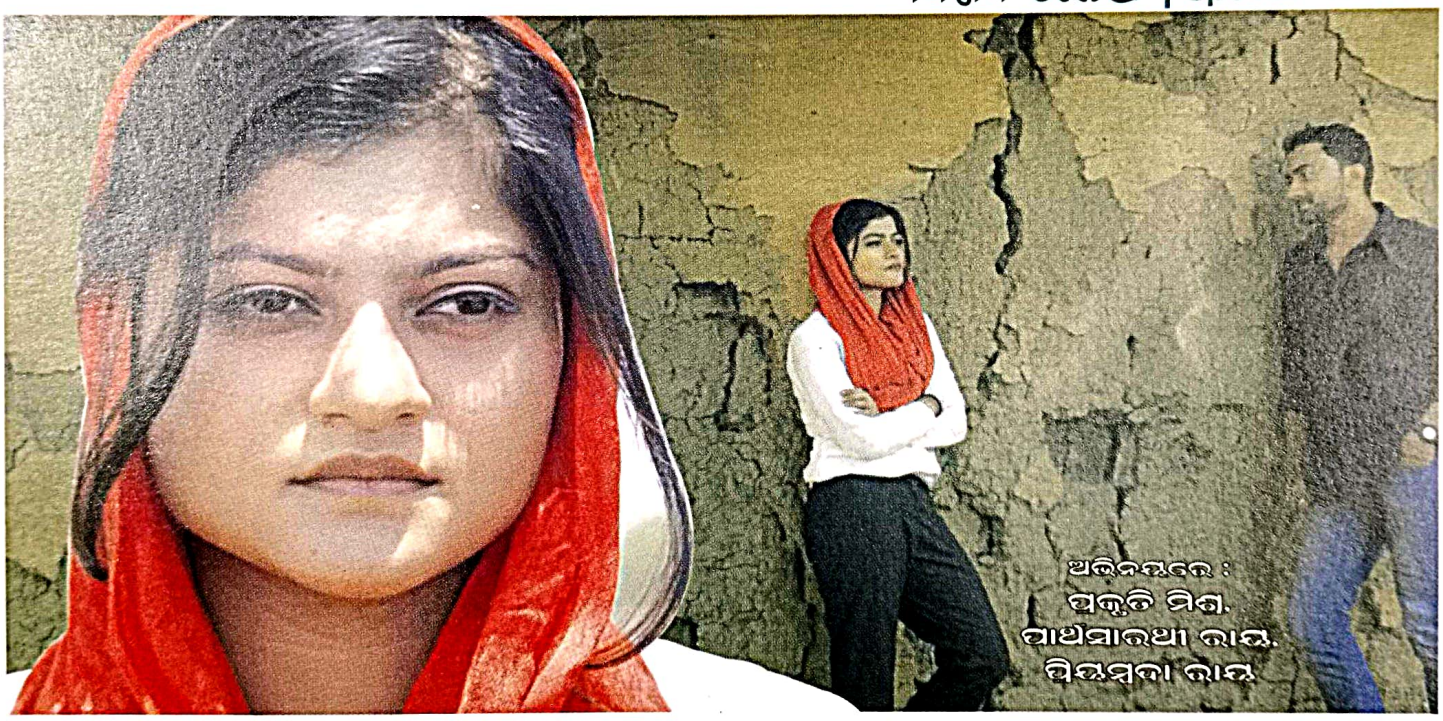

Prakruti Mishra

Prakruti Mishra is an odia actress and daughter of Odia music director Manmath Mishra and news reader Krushnapriya Mishra. Prakruti made her film debut in Sabata Maa in the year 2003 as a child artist, she has done more than 10 films as a child actor then she debuted in an major role in the year 2012 in the film titled THUKOOL. She also essayed a festival song in Hindi film 'Kaun Kitne Pani Main' featuring Kunal kapoor and Radhika Apte.

प्रकृति मिश्रा, उड़िया संगीत निर्देशक मनमथ मिश्रा और समाचार पाठक कृष्णप्रिया मिश्रा की बेटी और एक उड़िया अभिनेत्री हैं। प्रकृति ने वर्ष 2003 में एक बाल कलाकार के रूप में सबाता मां से अपनी फिल्मी करियर की शुरुआत की, उन्होंने बाल कलाकार के रूप में 10 से अधिक फिल्में की हैं, फिर उन्होंने थूकूल नाम की फिल्म में वर्ष 2012 में एक अहम भूमिका अदा की। उन्होंने कुणाल कपूर और राधिका आप्टे अभिनीत हिंदी फिल्म 'कौन कितने पानी में' में भी काम किया है।

म्होरक्या
MHORKYA

Marathi | 123.52 mins
Certificate । प्रशस्ति पत्र

Direction: Amar Bharat Deokar
Production Company: Kalyan Rajmogli| Padal
Writer: Amar Bharat Deokar
Editor: Nilesh Rasal
Cinematographer: Girish Jambhalikar
Cast: Anil Kambale, Yasharaj Karhade, Raman Vasant Devkar, Amar Bharat Deokar, Ramachandra Dhumal, Surekha Gavhane

प्रशस्ति :

जीवन में लक्ष्य को प्राप्त करने वाले युवा के दिमाग का अद्भुत रूप से चित्रण किया गया है।

'म्होरक्या' जिसका अर्थ है 'नेता'। यह अशोक (आश्या) नाम के एक लड़के की उम्र की कहानी है। एक गरीब परिवार से ताल्लुक रखने वाला आश्या एक चरवाहा है, जिसे पढ़ाई आदि में कोई रूचि नहीं है। सातवीं कक्षा में होने के बावजूद, उसे अपने झुंड के साथ घूमना अच्छा लगता है और वो स्कूल से नफरत करता है। एक दिन, उसके दोस्त उसे जबरदस्ती स्कूल ले जाते हैं और अंततः, उसे गणतंत्र दिवस परेड के अभ्यास सत्र में ले जाते हैं। यहां अपनी तेज आवाज से वह लोगों का ध्यान आकर्षित करता है और परेड का नेतृत्व करने के लिए कहा जाता है।

'Mhorkya' which means 'Leader' is a coming of age story of a boy named Ashok (Aashya). Coming from a poor household, Aashya is a shepherd, with no interest in academics, whatsoever. Despite being in class seven, Aashya loves gallivanting with his herd and hates school. One day, his friends drag him to school and eventually, he gets pulled into the Republic Day Parade practice session. Here, Aashya gets noticed for his powerful voice, and is asked to compete for the place of the leader.

CITATION:

For amazing depiction of a young mind to achieve the goal in life

विशेष उल्लेख | Special Mention

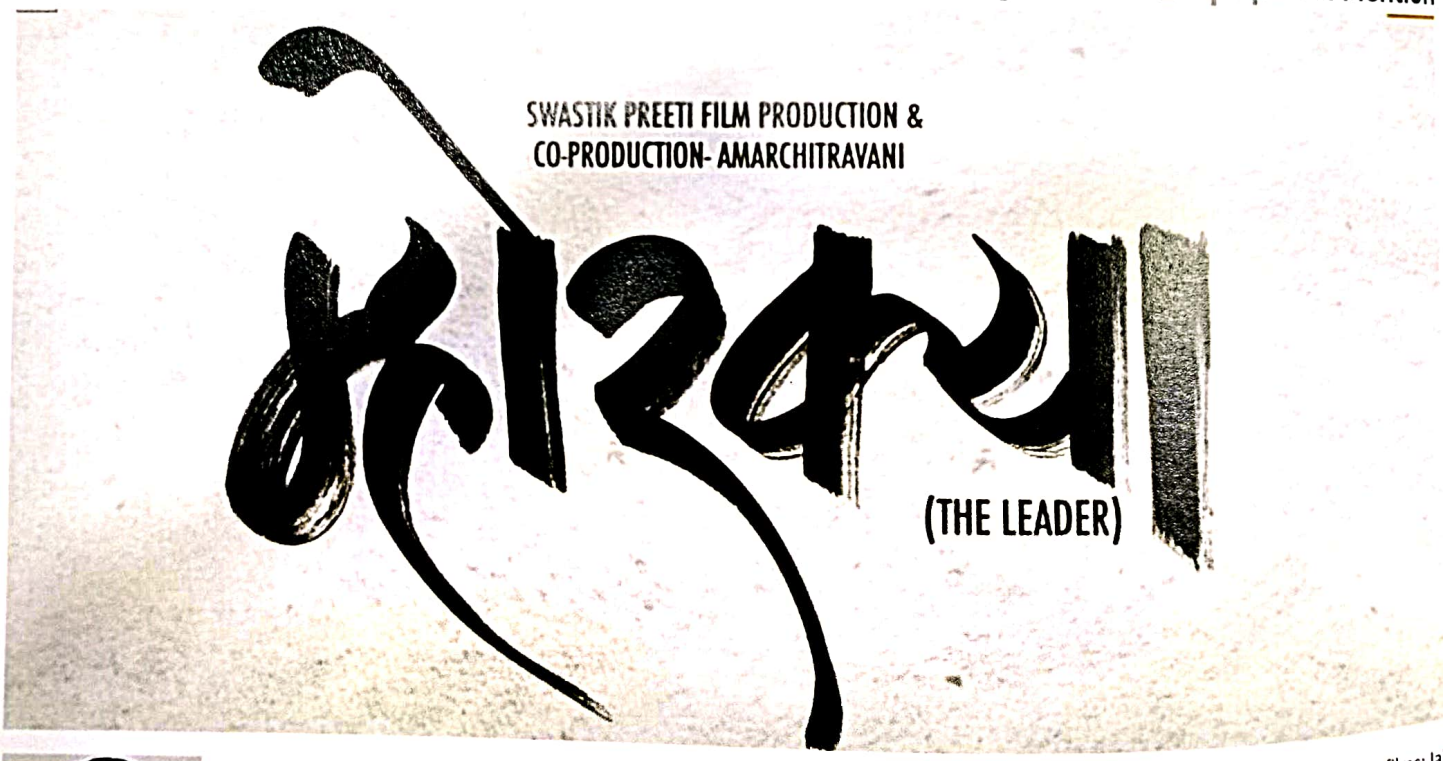

Yasharaj Karhade

Yasharaj's first performance as an actor was in a short film 'Vanchit' at the age of 4 in 2007. He went onto do many other films: Ja (the net), Bhul, Rupaye, Sahal, Journey, Babu, Zenda nidhi. His debut feature film is national award winning "Khwada", in which h played character named "Banya".

यशराज करहडे ने चार साल की उम्र में एक लघु फिल्म 'अवचित' में बाल कलाकार के रुप में काम किया था। उन्होंने कई फिल्में जाली (नेट), भू रूपये, सहल, जर्नी, बाबू में काम किया है। उनकी पदार्पण फिल्म ख्वादा को राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया था, जिसमें उन्होंने बान्या नाम क किरदार निभाया था।

म्होरक्या
MHORKYA

Marathi | 123.52 mins
Certificate । प्रशस्ति पत्र

Direction: Amar Bharat Deokar
Production Company: Kalyan Rajmogli Padal
Writer: Amar Bharat Deokar
Editor: Nilesh Rasal
Cinematographer: Girish Jambhalikar
Cast: Anil Kambale, Yasharaj Karhade, Raman Vasant Devkar, Amar Bharat Deokar, Ramachandra Dhumal, Surekha Gavhane

प्रशस्ति :

जीवन में लक्ष्य को प्राप्त करने वाले युवा के दिमाग का अद्‌भुत रूप से चित्रण किया गया है।

'म्होरक्या' जिसका अर्थ है 'नेता'। यह अशोक (आश्या) नाम के एक लड़के की उम्र की कहानी है। एक गरीब परिवार से ताल्लुक रखने वाला आश्या एक चरवाहा है, जिसे पढ़ाई आदि में कोई रूचि नहीं है। सातवीं कक्षा में होने के बावजूद, उसे अपने झुंड के साथ घूमना अच्छा लगता है और वो स्कूल से नफरत करता है। एक दिन, उसके दोस्त उसे जबरदस्ती स्कूल ले जाते हैं और अंततः, उसे गणतंत्र दिवस परेड के अभ्यास सत्र में ले जाते हैं। यहां अपनी तेज आवाज से वह लोगों का ध्यान आकर्षित करता है और परेड का नेतृत्व करने के लिए कहा जाता है।

'Mhorkya' which means 'Leader' is a coming of age story of a boy named Ashok (Aashya). Coming from a poor household, Aashya is a shepherd, with no interest in academics, whatsoever. Despite being in class seven, Aashya loves gallivanting with his herd and hates school. One day, his friends drag him to school and eventually, he gets pulled into the Republic Day Parade practice session. Here, Aashya gets noticed for his powerful voice, and is asked to compete for the place of the leader.

CITATION:

For amazing depiction of a young mind to achieve the goal in life

विशेष उल्लेख | Special Mention

Raman Devkar

Raman grew up in joint family. Being a good dancer, he participated in numerous school events and won many awards. 'MHORKYA' is his debut feature film as an actor. He also won the best actor award at the 16th Pune International Film Festival 2018.

संयुक्त परिवार में पले बढ़े रमन एक अच्छे नर्तक हैं और उन्होंने कई स्कूल कार्यक्रमों में भाग लिया और कई पुरस्कार भी जीते। 'म्होरक्या' एक अभिनेता के रूप में उनकी पहली फीचर फिल्म है। उन्होंने 16वें पुणे अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह–2018 में सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार भी जीता था।

गैर फ़ीचर फ़िल्में
NON-FEATURE FILMS

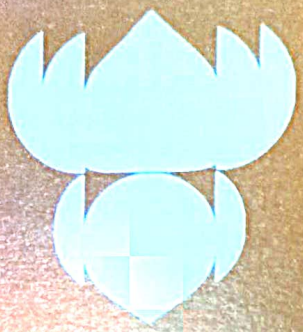

65TH

राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार 201

National Film Awards 2017

35 मि.मि. या बड़े गेज या डिजिटल प्रारूप में बनी किन्तु फ़िल्म प्रारूप अथवा वीडियो/डिजिटल प्रारूप में जारी किसी भी भारतीय भाषा में बनी और केन्द्रीय फ़िल्म प्रमाणन बोर्ड द्वारा वृत्त–चित्र/न्यूजरील/ गैर–कथाचित्र/लघु कल्पित के रूप में प्रमाणीकृत फ़िल्म गैर फ़ीचर फ़िल्म वर्ग के लिए पात्र है।

Films made in any Indian language, shot on 35 mm or in a wider gauge or digital format but released on either film format or Video/Digital format and certified by the Central Board of Film Certification as a Documentary/Newsreel/Non-Fiction/Short Fiction are eligible for non-feature film section.

NON-FEATURE FILMS | AT A GLANCE

WATERBABY
वॉटर बेबी
Best Debut Film Of A Director

NAME, PLACE, ANIMAL, THING
नेम, प्लेस, एनिमल, थिंग
Best Anthropological/
Ethnographic Film

THE SLAVE GENESIS
द स्लेव जेनेसिस
Best Anthropological/
Ethnographic Film

NAACHI SE BAANCHI
नाची से बांची
Best Biographical/ Historical
Reconstruction

SWORD OF LIBERTY
स्वॉर्ड ऑफ लिबर्टी
Best Biographical/ Historical
Reconstruction
Best Music
Ramesh Narayanan
रमेश नारायणन

GIRIJA
गिरिजा
Best Arts /Cultural Film

CHENDARINAMA
चंदेरीनामा
Best Promotional Film (to cover tourism, exports, crafts, industry etc)

THE PANGTI STORY
द पंगती स्टोरी
Best Environment Film Including Agriculture

I AM BONNIE
आई एम बोनी
Best Film On Social Issues

VEIL DONE
वेल डन
Best Film On Social Issues

THE LITTLE GIRL WE WERE... AND THE WOMEN WE ARE
द लिटिल गर्ल वी वर... एंड द वुमेन वी आर
Best Educational Film

LADAKH CHALE RICKSHAWALA
लद्दाख चले रिक्शावाला
Best Exploration/
Adventure Film (To Include Sports)

1984, WHEN THE SUN DIDN'T RISE
1984, वेन द सन डिडंट राइज
Best Investigative Film

MAACHER JHOL
माछेर झोल
Best Animation Film

THE BASKET
द बास्केट
Best Animation Film

A VERY OLD MAN WITH ENORMOUS WINGS
ए वेरी ऑल्ड मैन विद एनॉरमस विंग्स
Special Jury Award

MONDAY
मंडे
Special Jury Award

MAYAT
मयत
Best Short Fiction Film

HAPPY BIRTHDAY
हैप्पी बर्थडे
Best Film On Family Values

REBIRTH
रिबर्थ
Special Mention

THE CAKE STORY
द केक स्टोरी
Special Mention

BHAR DUPHARI
भर दुपहरी
Special Mention

SEHER
सहर
Best Cinematography
Arnold Fernandes
एमॉल्ड फर्नांडीस

PAVASACHA NIBANDHA
पवासचा निबंध
Best Direction
Nagraj Manjule
नागराज मंजुले
Best Audiography
Avinash
Sonawane
अविनाष सोनावने

EYE TEST
आई टेस्ट
Best Cinematography
Appu Prabhakar
अप्पू प्रभाकर

THE UNRESERVED
द अनरिजर्व्ड
Best On location Sound Recordist
Samarth Mahajan
समर्थ महाजन

MRITYUBHOJ THE DEATH FEAST
मृत्युभोज द डेथ फिएस्ट
Best Editing
Sanjiv Monga & Tenzin Kunchok
संजीव मोंगा और तंजीन कुंचॉक

THE LION OF LADDAK
द लॉयन ऑफ लद्दाख
Best Narration/ Voice Over
Francois Castellino
फ्रांसिस कास्तेलिनो

वाटर बेबी
WATERBABY

English & Konkani | 15 mins
RAJAT KAMAL | ₹75,000/-

Direction: Pia Shah
Producer: Varun Shah, Pia Shah
Editor: Shweta Venkat Mathew
Cinematographer: Mitesh Mirchandani
Music: Nicolas Dumensnil
Audiographer & Sound Recordist: Baylong Fonseca

प्रशस्ति :

किशोरावस्था के डर और आकांक्षाओं का एक संवेदनशील चित्रण, जो आशाजनक निर्देशक प्रतिभा को प्रदर्शित करता है।

स्कूल में एक नई लडकी के आने से एक 11 वर्षीय शर्मीले लड़के को अपने सबसे बड़े डर– पानी का सामना करने के लिए मजबूर होना पड़ता है। उसकी साहसभरी यात्रा में एक रहस्यमयी चित्रकला की किताब, एक सुपरहीरो और एक पालतू जानवर उसके साथ होते हैं।

The arrival of a new girl in school compels a shy 11 year old boy to face his greatest fear - WATER. A mysterious drawing book, a water-controlling superhero and an unlikely pet accompany him on a little journey of courage.

CITATION:

"A sensitive portrayal of adolescent fears and aspirations, displaying promising directorial talent."

निर्देशक की सर्वोत्तम प्रथम फिल्म | Best Debut Film Of A Director

Varun Shah

Varun is an Executive Producer at Dharma 2.0, Dharma Productions endeavor into branded content creation and production. He manages the executive functions of the organization while handling the entire roster of directors with Dharma 2.0.
वरुण धर्मा 2.0, धर्मा प्रोडक्शंस में एक कार्यकारी निर्माता हैं और ब्रांडेड सामग्री निर्माण और उत्पादन में सहयोग करते हैं। वह धर्मा 2.0 के निर्देशकों के पूरे रोस्टर को संभालने के साथ संगठन के कार्यकारी कार्यों का प्रबंधन भी करते हैं।

Pia shah

Pia Shah is a voracious reader, compulsive traveler and a passionate storyteller. She completed her Bachelors in Mass Media from Jai Hind College, Mumbai and subsequently the 1 year film-making conservatory from New York Film Academy.
पिया शाह एक मुखर पाठक, यात्री और एक जोशीली कथाकार है। उन्होंने मुंबई में जय हिंद कॉलेज से मास मीडिया में स्नातक किया था और बाद में न्यूयॉर्क फिल्म अकादमी से 1 वर्ष की फिल्म निर्माण की पढ़ाई की

नेम,प्लेस,एनिमल,थिंग (साझा)

NAME|PLACE|ANIMAL|THING (Shared)

Hindi | Kannada | 23mins
RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction& Sound Recordist: Nithin R
Producer: Nithin R, K Bhagyalakshmi
Editor: Nithin R, Appu N. Bhattathiri
Cinematographer: Rakesh Ramakrishnan, Gowtham Lenin
Audiographer: Clifford Cleetus

प्रशस्ति :

सभी बाधाओं के खिलाफ अद्वितीय सामाजिक कार्यों और समृद्ध अस्तित्व का एक सहज प्रलेख और एक प्रचुर अस्तित्व।

यह फिल्म भारत के दक्षिणी हिस्से की एक दिलचस्प जनजाति के जीवन का चित्रण करती है। यह जनजाति अपनी परंपरा के रूप में एक अनोखे नामकरण रिवाज और विचित्र रीति–रिवाजों का पालन करती है। जनजाति की परंपराओं और संस्कृति के साथ–साथ, फिल्म यह भी दर्शाती है कि इस जीवनशैली का अनुसरण करने वाले लोग जब पुनर्वास करते हैं तो वातावरण में परिवर्तन उनके जीवन को कैसे प्रभावित करता है।

The film captures the life of an interesting tribe settled in southern part of India. The tribe follows a strange naming practise and also some bizarre customs as a part of their tradition. Along with traditions and culture of the tribe, the film also explores the things which need focus while rehabilitating a group of people who had been following certain lifestyle and how the change of atmosphere affects their life.

CITATION:

A spontaneous documentation of unique social practices and an exuberant existence against all odds.

सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय/मानवजातीय फिल्म | Best Anthropological / Ethnographic Film

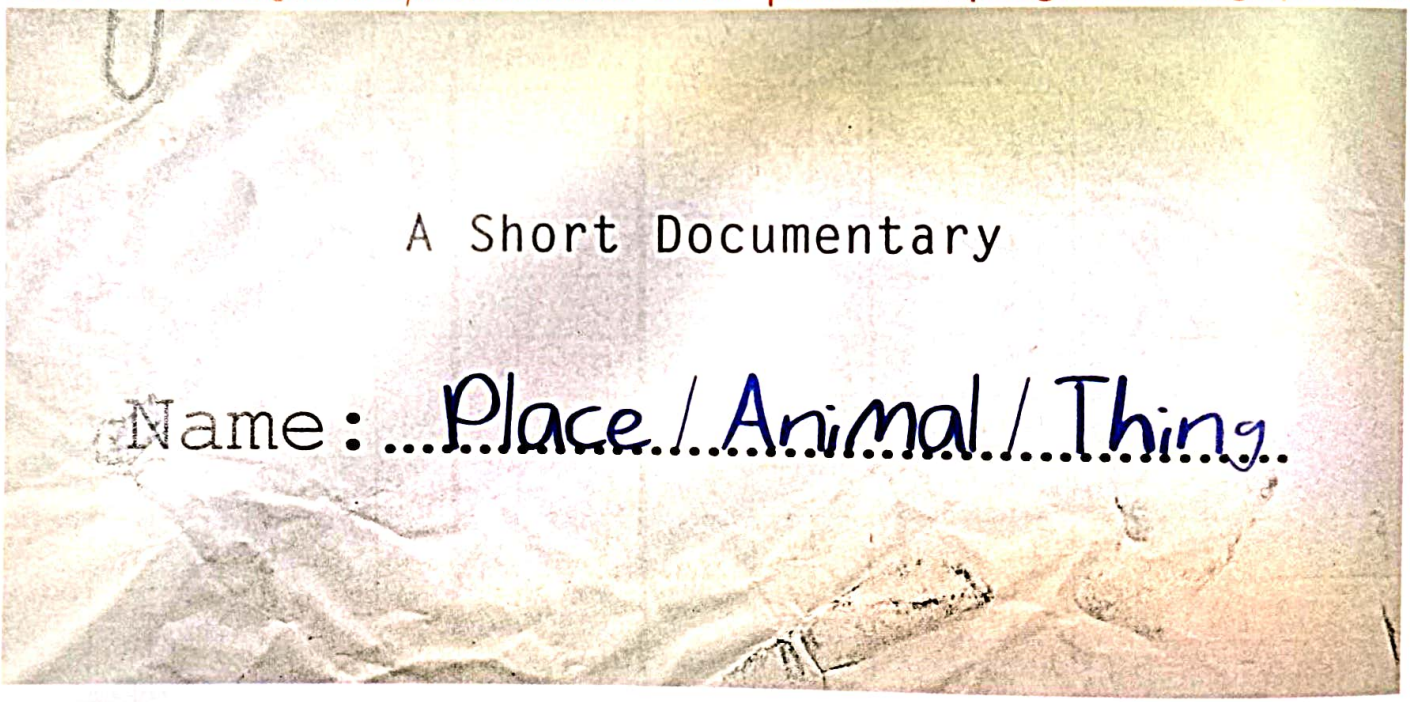

Nithin R

Nitin R, hails from Trivandrum, Kerala. Currently pursuing a course in Sound Recording and Sound Design from FTII, he has been involved in the making of films for the past few years assisting different film-makers in various feature length films as well as other independent short films. This is his debut film as a director.

नितिन आर, केरल के त्रिवेंद्रम से हैं। वे वर्तमान में एफटीआईआई से ध्वनि रिकॉर्डिंग और साउंड डिजाइन में एक कोर्स कर रहे हैं. उन्होंने पिछले कुछ सालों में विभिन्न फिल्म निर्माताओं के साथ कई फीचर फिल्मों और कई स्वतंत्र लघु फिल्मों में कार्य किया है। यह उनकी एक निर्देशक के रूप में पहली फिल्म है।

द स्लेव जेनेसिस (साझा)

THE SLAVE GENESIS (Shared)

Malayalam | 64.20 mins

RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction, Producer, Editor, Sound Recordist & Narrator: Aneez K M

Cinematographer: Aneez K M, Biju Ibrahim

Music: Rajiv Wind

Audiographer: Shyju Unity

प्रशस्ति :

एक छोटे से जनजातीय समुदाय का एक सिनेमाई अन्वेषण, जिसमें व्यापक निर्माण मिथकों के माध्यम से अपने स्वयं के उत्पीड़न को समावेश किया है।

'दे स्लेव जेनेसिस' दक्षिण भारत के पश्चिमी घाटों के दक्षिण में स्थित पहाड़ी जिले वायानाड की 'पनिया' आदिवासियों की जातीयता और सामाजिक परिवर्तन को दर्शाती है। 'पनिया' का शाब्दिक अर्थ 'मजदूर' होता है। प्रवासियों के खेतों में काम करने वाले और समय–समय पर वायनाड जाने वाले इन आदिवासियों के अलग–अलग कला और गीत होते हैं, जो उनकी पहचान को दर्शाते हैं। उनके गीतों में से सबसे प्रमुख पेनप्पाट्टू (भूत का भाषण) है। यह वृत्तचित्र पेनप्पाट्टू पर आधारित है, जो पनियों के सामाजिक परिवर्तन पर बनाई गई थी।

The Slave Genesis' deals with the ethnicity and the social transformation of Paniya tribals, who belong to Wayanad, the hill district to the south of Western Ghats in South India. 'Paniya' literally translates to a 'labourer'. These tribals—who were deployed to work in the farms of migrants, who trickled into Wayanad from time to time, have distinct arts and songs that reflect their identities. The prime among their songs is Penappaattu (speech of ghost). Based on the contents of Penappattu, the documentary explores the social transformation of the Paniyas.

CITATION:

"A cinematic exploration of a little known tribal community that has internalized its own oppression through elaborate creation myths."

सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय/मानवजातीय फिल्म | Best Anthropological / Ethnographic Film

Aneez K M

Aneez K M is a documentary maker from Wayanad, Kerala India. He has been active in the field since 2007 with his films depicting the dimensions of man and environmental relations and the culture. He is been into cinematography and editing for most of his films.

अनीज के एम वायनाड, केरल के रहने वाले वृत्तचित्र निर्माता हैं। वे वर्ष 2007 से इस क्षेत्र में सक्रिय रहे हैं और उनकी फिल्मों में मनुष्य और पर्यावरण संबंधों और संस्कृति के आयाम को दर्शाया गया है। उन्होंने अपनी ज्यादातर फिल्मों में संपादन और चलचित्रण का काम किया है।

नाची से बांची (साझा)
NAACHI SE BAANCHI (Shared)

Hindi| 70mins
RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction: Biju Toppo, Meghnath
Producer: Films Division
Audiographer: Rupesh Kumar Sahu

प्रशस्ति :

रांगीत, शिक्षा और राजनीति के माध्यम से वैश्विक स्तर पर पहचान बनाने वाले और पद्मश्री से सम्मानित राम दयाल मुंडा की प्रेरणादायक यात्रा का बखूबी चित्रण।

अपने जीवनकाल में ही डॉ राम दयाल मुंडा स्वदेशी सांस्कृतिक पुनरुत्थान का प्रतीक बन गए। झारखंड में तामार के आदिवासी परिवार में पैदा हुए मुंडा अपने उच्च अध्ययन के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका चले गए थे। बाद में, उन्होंने मिनेसोटा विश्वविद्यालय में शिक्षक के तौर पर कार्य किया। उसके बाद वे रांची विश्वविद्यालय के जनजातीय और क्षेत्रीय भाषा विभाग में पढ़ाने के लिए भारत आए और बाद में उसी विश्वविद्यालय के कुलपति बने। उन्हें 2009 में साहित्य अकादमी पुरस्कार और पद्मश्री से सम्मानित किया गया। उनका सितंबर, 2011 में निधन हो गया।

In his lifetime itself Dr. Ram Dayal Munda has become a symbol of indigenous cultural reawakening. Born in an Adivasi family of Tamar in Jharkhand, he went for his higher studies to the United States of America. Later, he taught at the University of Minnesota. He came back to India to teach at Tribal and Regional Language Department of Ranchi University and subsequently become the Vice Chancellor of the same University. He has been awarded with Sahitya Academy Award and Padmashree in 2009. He passed away on September, 2011.

CITATION:

Tracing the footprints of the global yet rooted leader Padmashree Ram Dayal Munda's inspirational journey through his music, academics and politics.

सर्वोत्तम जीवनी/ऐतिहासिक पुनर्निर्माण | Best Biographical/historical Reconstruction

FILMS DIVISION

The Films Division was established in 1948. The organization has relentlessly striven to maintain a record of the social, political and cultural imaginations and realities on film. It holds more than 8000 titles on documentaries, short films and animation films in its archives.
फिल्म डिविजन की स्थापना 1948 में हुई थी। संगठन ने फिल्मों में सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक कल्पनाओं के लिए प्रयास किए हैं। उसके अभिलेखागार में 8000 वृत्तचित्र, लघु फिल्म और एनीमेशन फिल्म शामिल है।

Biju Toppo

Biju Toppo is one of the first Adivasi film makers from India who have worked for his community. His films have received national and international recognition.
बिजू टोप्पो भारत के पहले आदिवासी फिल्म निर्माताओं में से एक है, वे अपने समुदाय के लिए काम कर रहे है। उनकी कई फिल्मों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मान्यता मिली है।

Meghnath

Meghnath is a social activist working in Jharkhand for last 30 years. He has been with the people's struggle against destructive development. At present, he teaches at the St. Xavier's College, Ranchi.
मेघनाथ एक सामाजिक कार्यकर्ता है जो पिछले 30 सालों से झारखंड में काम कर रहे है। वे विनाशकारी विकास के खिलाफ संघर्ष कर रहे लोगों के साथ है। वर्तमान में वह सेंट जेवियर्स कॉलेज, रांची में पढ़ाई करवाते है।

स्वॉर्ड ऑफ लिबर्टी :
लाईफ एंड डेथ ऑफ वेलुत्तम्पी दलावा (साझा)
SWORD OF LIBERTY :
Life and Death of Veluthampi Dalawa (Shared)

Malayalam | 54.36 mins
RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction: Shiny Jacob Benjamin
Producer: R C Suresh
Editor: Ajayakumar VV
Cinematographer: Jebin Jacob
Audiographer: Shaji Madhavan
Music: Ramesh Narayanan
Narrators: P Balachandran

प्रशस्ति :

पूर्ववर्ती त्रावणकोर राज्य में एक दीवान के जीवन का विस्तृत पुनर्निर्माण।

फिल्म में एक दिग्गज की कहानी को याद दिलाने के लिए एक अपरंपरागत कथा का इस्तेमाल किया गया है। मैरियनेट्स उस असाधारण व्यक्तित्व के ऐतिहासिक वर्णन को बताते हैं, जिसने भारत में राष्ट्रवाद की शुरुआत होने से पहले ही अपनी मातृभूमि के लिए लड़ाई लड़ी थी। साथ ही इसमें वेलु थांबी को श्रद्धांजलि देते हुए उनके जीवन से मृत्यु तक की अहम घटनाओं को दर्शाया गया है।

Film uses an unconventional narrative to recap the story of a legend. Marionettes dance in the shadows and spin the chronicle of an extraordinary personality, a man who fought for his homeland, long before the seeds of nationalism were sown in India. Touching places significant to his life and death, the film engages the viewer in the unravelling of a saga: Velu Thambi's initial association and later hostility with the British, his success and failure as a Dalawa, his famous ' Kundara Vilambaram' which called forth the masses to unite against the British, and his self-annihilation, are a few of the many incidents covered in this tribute to Velu Thambi, the immortal hero.

CITATION:

An elaborate reconstruction of a Diwan's life in the erstwhile Travancore State.

सर्वोत्तम जीवनी/ऐतिहासिक पुनर्निर्माण | Best Biographical/historical Reconstruction

Shiny Jacob Benjamin

Shiny has been a documentary director since 1999. Earlier, she worked as a feature writer with the leading Malayalam newspapers. She won 20 prestigious awards including 2 National Awards and 7 Kerala State Awards for her documentaries. Shiny has previously served on the Indian Panorama jury for the non-feature section.
शिनी 1999 से एक वृत्तचित्र निर्देशक है। इससे पहले, उन्होंने प्रमुख मलयालम समाचार पत्रों के साथ फीचर लेखक के रूप में काम किया है। उन्होंने 20 पुरस्कार जीते हैं, जिसमें 2 राष्ट्रीय पुरस्कार और 7 केरल राज्य पुरस्कार शामिल है। उन्होंने गैर-फीचर सेक्शन के लिए भारतीय पैनोरमा ज्यूरी के तौर पर भी सेवाएं दी है।

R C Suresh

With over 30 years of experience, R.C. Suresh is an NRI based in Middle East with companies spread across Kuwait, USA, Egypt and India. He set up an export-oriented processing unit for French fries in South East Asia, in the real estate sector his RCS group of companies ventured into property acquisition and development, investing in numerous projects under realty flagship brand.
आर सी सुरेश को 30 सालों का अनुभव है। वे मध्य पूर्व देशों के साथ कुवैत, अमेरिका, मिश्र और भारत में अपना कार्य करते हैं. वे कई देशों में निर्यात संबंधी कार्य कर रहे हैं।

गिरिजा, ए लाइफ टाइम इन म्यूजिक

GIRIJA, A Lifetime in Music

Hindi | 93 mins
RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction: Debapriya Adhikary, Samanwaya Sarkar, Sankalp Meshram
Producer: Madhu Chandra, Sudha Datta
Editor: Sankalp Meshram, Ganesh Prasad
Cinematographer: Gulfran Naiyar
Audiographer & Sound Recordist: Parthosarthy Sanyal
Music: Debapriya Adhikary, Sambaya Sarkar

प्रशस्ति :

छह दशकों से अधिक की उनकी संगीत यात्रा, उनके हर सुर और प्रत्येक शब्द को उत्कृष्ट बनाने की क्षमता पर प्रकाश डालते हुए विदुशी गिरिजा देवी को एक तर्कसंगत सम्मान।

'गिरिजा', भारत में सबसे प्रसिद्ध गायकों में से एक गिरिजा देवी (1 9 2 9–) की कहानी को दर्शाती है। उनका जन्म उत्तरी भारत के बनारस शहर में एक पारंपरिक हिंदू परिवार में हुआ था। यह शहर कई महान संगीतकारों का घर रहा है और यह वह जगह भी है जहां गिरिजा देवी ने संगीत की शुरुआत की थी. पवित्र गंगा नदी के रेतीले तटों पर मछली पकड़ने की गिरिजा देवी की बचपन की यादें उन्हें ताउम्र प्रेरित करती रहीं। शहर उनके जीवन और संगीत का एक अभिन्न अंग बन गया। यह फिल्म उनकी व्यक्तिगत यात्रा, बनारस में उनका जीवन और उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में उनके अद्वितीय योगदान का चित्रण करती है।

Girija tells the story of Girija Devi (1929—), one of the most celebrated vocalists in India. She was born and raised in a traditional Hindu family in and around the city of Banaras in Northern India. This oldest living city was the home of some of the most famous Indian musicians, and this is also where Girija Devi's passion for music began. Girija Devi's childhood memories of catching fish on the sandy banks of the holy Ganga River inspire her even today. The city has become an integral part of her life and music. This film explores her personal journey, her life in Banaras, and her unique contribution to Classical North Indian music.

CITATION:

A reasoning reverence to Vidushi Girija Devi through her musical journey of more than six decades, highlighting her ability to caress each note and make every word exquisite.

सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फिल्म | Best Arts/Cultural Film

Sudha Datta

Madhu Chandra

Dr. Sudha Datta is well a known Odissi dancer and a brilliant choreographer.
डॉ सुधा दत्ता लोकप्रिय ओडिसी नर्तका और अपने वक्त की शानदार नृत्य सयोजक भी है।
Madhu Chandra lives in the U.S, but originally from Allahabad. She is a Music lover
मधु चंद्रा यू.एस. में रहती हैं, लेकिन मूल रूप से इलाहाबाद से हैं और वह एक संगीत प्रेमी है।

Samanwaya Sarkar

Debapriya Adhikary

Sankalp Meshram

Samanwaya Sarkar, an excellent Sitarist of the present generation.
समन्वय सरकार वर्तमान पीढ़ी के एक उत्कृष्ट सितारवादक है।
Debapriya Adhikary, disciple of the legendary Padmavibhushan Smt. Girija Devi ji, is an outstanding classical vocalist.
पद्म विभूषण से सम्मानित गिरिजा देवी के शिष्य देबप्रिय अधिकारी युवा पीढ़ी के एक उत्कृष्ट शास्त्रीय गायक है।
Sankalp Meshram passed out of FTII as an editor in 1994.
संकल्प मेशराम ने वर्ष 1994 में एक संपादक के रूप में एफटीआईआई से पढ़ाई की थी।

चन्देरी नामा
CHANDERINAMA

Hindi | 13.40 mins
RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction: Rajendra Janglay
Producer: Madhya Pradesh Hastashilp Evam Hathkargha Vikas Nigam Limited & ProArt India
Editor: G. Sethu Kieran
Cinematographer: Rajendra Janglay
Audiographer: Asit Jain
Music: Gundecha Brothers
Sound Recordist: Sachin
Narrator: Aayushri Saxena Singh

प्रशस्ति :

रोल्युलॉइड पर एक सुंदर गीत, जो चंदेरी शहर की विरासत और प्रसिद्ध साड़ी बुनकरों को एक साथ गूंथता है।

चंदेरी मध्य प्रदेश के मालवा और बुंदेलखंड क्षेत्र के बीच में स्थित एक ऐतिहासिक शहर है। यह शहर अपने हाथ से बुनी हुई साड़ियों के लिए दुनिया भर में मशहूर है। यह फिल्म सुल्तानों और शासकों के समय से लेकर वर्तमान युग तक कई शताब्दियों के माध्यम से चंदेरी साड़ियों की यात्रा को दर्शाती है। यह अपने विविध सामाजिक कपडे के मिश्रण के अलावा अपनी वास्तुशिल्प विरासत के बारे में भी बताती है। इसकी हाथ से बुनी हुई सुन्दरता आने वाली पीढ़ियों को खुला कैनवास दे रही है, जहां उन्हें 'चंदेरी' नामक उत्तम अभिव्यक्ति और अर्थ मिल सकता है।

Chanderi is a town of historical importance situated between Malwa and Bundelkhand region of Madhya Pradesh. The town is worldwide famous for its exotic hand woven sarees. The film depicts the journey of Chanderi Sarees through the centuries, from the time of the Sultans and Rulers to current era. It also tells about the amalgamation of its diverse social fabric as well as the ascetics of its architectural heritage. Its hand-woven fine delicacy is giving an open canvas to the upcoming generations, where they can find a new expression and meaning with the exquisite called "Chanderi".

CITATION:

A beautiful song on celluloid that weaves together Chanderi town's heritage and famed saree weavers. – CHANDERINAMA

सर्वोत्तम प्रोत्साहन देनेवाली फिल्म | Best Promotional Film
(to cover tourism, exports, crafts, industry etc)

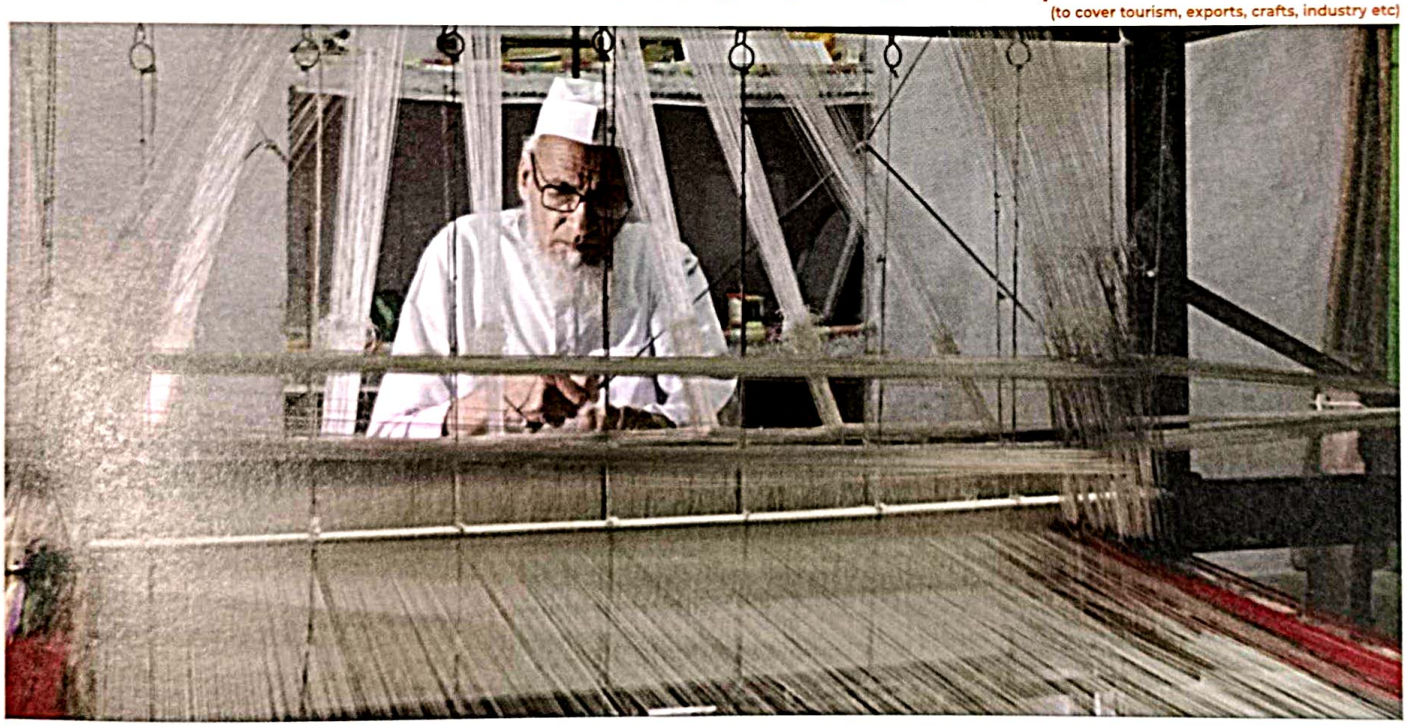

Rajendra Janglay

Born in 1956 Rajendra is a Director and Cinematographer having made over 100 documentaries, short and ad films on various subjects. HE has previously won four National Film Awards. He is an FTII alumini.
1956 में पैदा हुए राजेंद्र एक निर्देशक और छायांकार हैं, जिन्होंने विभिन्न विषयों पर 100 से अधिक वृत्तचित्र, लघु और विज्ञापन फिल्में बनाई हैं। उन्होंने पहले चार राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार जीते हैं। वे एफटीआईआई के विद्यार्थी रह चुके हैं।

Madhya Pradesh Hastashilp Evam Hathkargha Vikas Nigam Limited Craft Development Centres and Common Facility Centres right across Madhya Pradesh.
मध्य प्रदेश हस्ताशिल्प इवम हाथकरघा विकास निगम लिमिटेड, मध्यप्रदेश में क्राफ्ट विकास केंद्र और सामान्य सुविधा केंद्र है।

ProArt India is a premiere production house located in Bhopal, MP, India.
प्रोआर्ट इंडिया, भोपाल (मध्यप्रदेश) में स्थित एक प्रोडक्शन हाउस है।

द पन्गती स्टोरी
THE PANGTI STORY

English | 26 mins
RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction: SESINO YHOSHU
Producer: RAJIV MEHROTRA
Editor& Sound Recordist: Neithonuo Tungoe
Cinematographer: Sesino Yhoshü, Megotsolie Dolie
Music: Jonathan Lushai

प्रशस्ति :

पन्गती के वार्षिक विदेशी मेहमान–अमूर फॉल्कन और इस पक्षी को शिकारियों से बचाने के लिए समुदाय के प्रयास पर आधारित एक सकारात्मक फिल्म।

एक प्रेरणादायक फिल्म, जो एक गांव में हुए परिवर्तन का चित्रण करती है, जहां पहले सैंकड़ों लोग हजारों अमूर फॉल्कन (दुनिया में यात्रा करने वाला एक पक्षी, जो हर साल साइबेरिया से नागालैंड के एक छोटे से गांव पन्गती में आते थे।) का शिकार करते थे और अब उनका संरक्षण कर रहे हैं.

The inspiring film explores the transition of an entire village from one that slaughtered hundreds and thousands of Amur Falcons, the longest travelling raptors in the world, who fly from Siberia every fall to roost in Pangti, a small village in Nagaland, to becoming their most fervent preservationists.

CITATION:

A positive film on Pangti's annual foreign guests – the magnificent Amur Falcon – and community efforts to save the bird from poachers – THE PANGTI STORY

सर्वोत्तम पर्यावरण फिल्म (कृषि सहित) | Best Environmental Film Including Agriculture

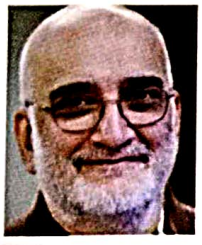

Rajiv Mehrotra

Rajiv Mehrotra, is an independent filmmaker, Managing Trustee, Producer and Commissioning editor of The Public Service Broadcasting Trust. He has directed /produced more than 630 documentary films, awarded 30 national awards.

राजीव मेहरोत्रा एक स्वतंत्र फिल्म निर्माता, प्रबंध निवेशी, निर्माता और पब्लिक सर्विस ब्रॉडकास्टिंग ट्रस्ट के कमीशन संपादक हैं। उन्होंने 630 से अधिक वृत्तचित्र फिल्मों का निर्देशन/उत्पादन किया है। उन्हें 30 राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है।

Sesino Yhoshu

Sesino Yhoshu is a filmmaker from Nagaland. Her love for films started way back in late 90's while she was still in high school. She is allumn of Film and Television Institute of India (FTII).

सेसिनो योशू नागालैंड से आती हैं और एक फिल्म निर्माता हैं। वे फिल्मों के प्रति 90 के दशक से आकर्षित हैं और उस वक्त वो स्कूल में पढ़ाई करती थी। उन्होंने प्रतिष्ठित संस्थान फिल्म और टेलीविजन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया (एफटीआईआई) से इलेक्ट्रॉनिक छायांकन में पढ़ाई की।

आई एम बोनी (साझा)
I AM BONNIE (Shared)

Bengali | 45.15mins
RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction: Satarupa Santra, Farha Khatun, Sourabh Kanti Dutta
Producer: Films Division
Editor: Farha Khatun
Audiographer: Sukanta Majumdar
Music: Tajdar Junaid

प्रशस्ति :

एक फुटबॉल चौंपियन की दुर्दशा को दर्शाया गया, जो अपने परिवार और समाज के साथ एक सम्मानजनक जीवन और करियर के लिए संघर्ष कर रहा है।

यह फिल्म बोनी के बारे में है, जो 'सेक्स रीअसाइनमेंट सर्जरी' से गुजरती है और एक आदमी बन जाती है और उसकी लड़ाई पहचान, जीवन और अस्तित्व के लिए संघर्ष की होती है. साथ ही उसका लक्ष्य इस समाज में दूसरे लिंग को गंभीरता से लेने के लिए समाज को सीख देना है।

The film is about Bonnie, who goes through 'Sex Reassignment Surgery' later transformed him to a man, and his fight to establish his identity, to live and struggle for existence met by a sarcastic society yet to learn to take other genders seriously.

CITATION:

The pitiful plight of a football champion struggling with his family and society for a respectable life and career.

सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फिल्म | Best Film On Social Issues

FILMS DIVISION

The Films Division was established in 1948. The organization has relentlessly striven to maintain a record of the social, political and cultural imaginations and realities on film. It holds more than 8000 titles on documentaries, short films and animation films in its archives.
वर्ष 1948 में स्थापित हुए फिल्म डिविजन फिल्मों में सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक कल्पनाओं के लिए प्रयास किए हैं। उसके अभिलेखागार में 8000 वृत्तचित्र, लघु फिल्म और एनीमेशन फिल्म शामिल है।

Farha Khatun

Satarupa Santra

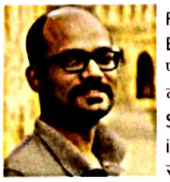

Sourabh Kanti Dutta

Farha Khatun started as an editor after her Diploma in Video Editing.
फरहा खातून एक संपादक है और उन्होंने कोलकाता के रूपकला केंद्र से वीडियो संपादन में डिप्लोमा प्राप्त किया है।

Satarupa is a teacher of Journalism and Mass communication in Birati College under Calcutta University.
सतरुपा कलकत्ता विश्वविद्यालय के तहत बिरती कॉलेज में पत्रकारिता और जन संचार का शिक्षक है

Sourabh Kanti Dutta is a cinematographer worked in many documentary/Television/Advertising industry.
सौरभ कांती दत्त ने एक छायाकार के रूप में वृत्तचित्र / टेलीविजन / विज्ञापन उद्योग में काम किए।

वेल डन (साझा)

VEIL DONE (Shared)

Hindi | 30.36mins
RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction: Juhi Bhatt
Producer: Rajiv Mehrotra
Editor& Cinematographer: Alok Verma
Sound Recordist: Shailendra Singh

प्रशस्ति :

उन महिलाओं का एक आभ्यंतर चित्रण, जिनके लिए
अपने घरों के बाहर कदम उठाना एक साहसी और सशक्त कार्य है।

फिल्म दर्शाती है कि आज के दौर में किस तरह महिलाएं भारत में बदलाव कर सकती हैं और खुद को पुनर्जीवित कर सकती हैं। फिल्म में नायिका उसे मोटी बुलाने से तंग आ जाती है और उसकी दोस्त निशा उसे घर से बाहर निकालना चाहती है। साथ ही वह अपने हाथ में बढ़ती हुई सुन्नता से डरती है. वहीं दिल्ली में एक बस्ती से तीन महिलाएं खुद को ढूंढने का निर्णय करती हैं और वे जिम जाना शुरू करती हैं।

The film affirms how women in today's India can revision and reinvent themselves. The protagonist is fed up with people calling her fat. Her friend Nisha longs to step out of the house. Another is terrified of the growing numbness in her hands. Three women from a basti in Delhi, take a decision that sets them on a journey to find themselves – they join a gym.

CITATION:

"An intimate depiction of women for whom merely stepping outside their homes is a courageous and empowering act."

सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फिल्म | Best Film On Social Issues

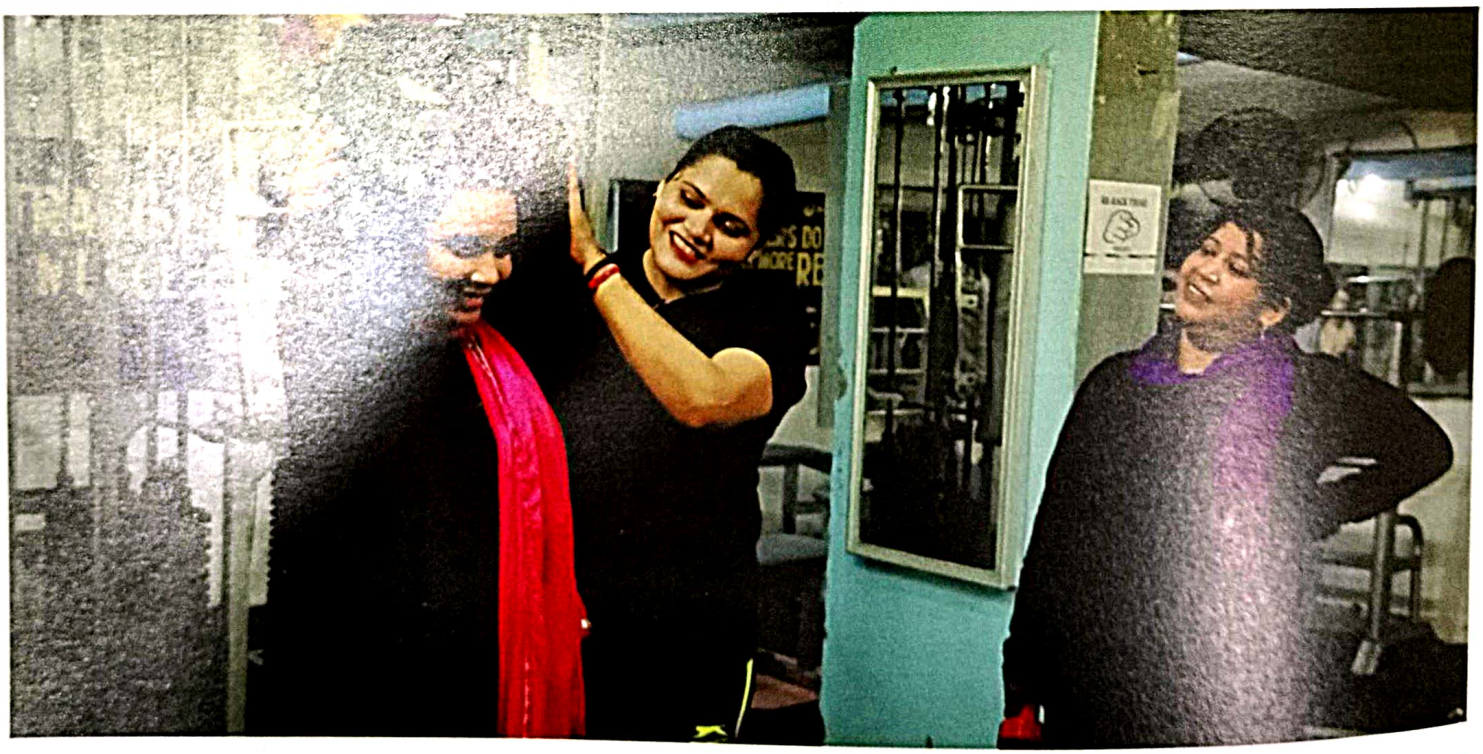

Juhi Bhatt

Juhi is a freelance filmmaker based in Mumbai. She is alumni of AJKMCRC. She has worked on documentaries, television commercials, TV shows and corporate films over the last eight years.
जूही मुंबई में स्थित एक स्वतंत्र फिल्म निर्माता है। उन्होंने एजेके एमसीआरसी से फिल्म निर्माण में प्रशिक्षण हासिल किया। उन्होंने पिछले आठ वर्षों में वृत्तचित्र, टेलीविजन विज्ञापनों, टीवी शो और कॉर्पोरेट फिल्मों पर काम किया है।

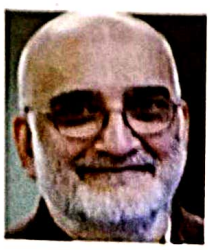

Rajiv Mehrotra

Rajiv Mehrotra, is an independent filmmaker, Managing Trustee, Producer and Commissioning editor of The Public Service Broadcasting Trust. He has directed /produced more than 630 documentary films, awarded 30 national awards.
राजीव मेहरोत्रा एक स्वतंत्र फिल्म निर्माता, प्रबंध निदेशी, निर्माता और पब्लिक सर्विस ब्रॉडकास्टिंग ट्रस्ट के कमीशन संपादक हैं। उन्होंने 630 से अधिक वृत्तचित्र फिल्मों का निर्देशन/उत्पादन किया है। उन्हें 30 राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है।

द लिटिल गर्ल्स वी वर...
एंड द वुमेन वी आर
THE LITTLE GIRLS WE WERE...
And The Women We Are

English | 37.48mins
RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction: Vaishali Sood
Producer: RAHI Foundation
Editor: Mahadeb Shi
Cinematographer: Manish Chanana, Ranjan Palit
Sound Recordist: Durgesh Bhaiswala

प्रशस्ति :

एक हृदयस्पर्शी सामाजिक मुद्दा साहसपूर्वक संवेदनात्मक रूप से दर्शाया गया, जो सकारात्मक भविष्य के लिए डरावने अतीत से चला आ रहा था।

एक वृत्तचित्र, जहां नफरत और बाल यौन शोषण से बचने वाली पांच भारतीय महिलाएं इस दुर्व्यवहार से बाहर आने की अपनी कहानी साझा करती है। वे बताती हैं कि उनके साथ कैसे दुर्व्यवहार हुआ, कहां किया गया, किसने किया, उनके जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा, उनके लिए इससे बचने का क्या मतलब है और क्यों वो इसका हिस्सा बनी? यह फिल्म व्यक्तिगत साक्ष्य, सूचना और विशेषज्ञों की टिप्पणियों का एक जबरदस्त मिश्रण है। यह बचे हुए लोगों को आशा और बचने का संदेश देती है और इसका उपयोग शिक्षा और हस्तक्षेप के उद्देश्यों के लिए किया जाना है।

A documentary where five Indian women survivors of incest and child sexual abuse share their journey from abuse to recovery. They talk about how and where they were abused, who their abuser was, responses they got when they disclosed, the effects of abuse on their lives, what recovery means to them and why they agreed to be part of this project. The film is a poignant blend of personal testimonies, information and expert comments. It gives the message of hope and recovery to survivors and is meant to be used for education and intervention purposes.

CITATION:

A poignant social issue handled boldly yet sensitively, steering the scarred past to a healing future.

सर्वोत्तम शैक्षणिक फिल्म | Best Educational Film

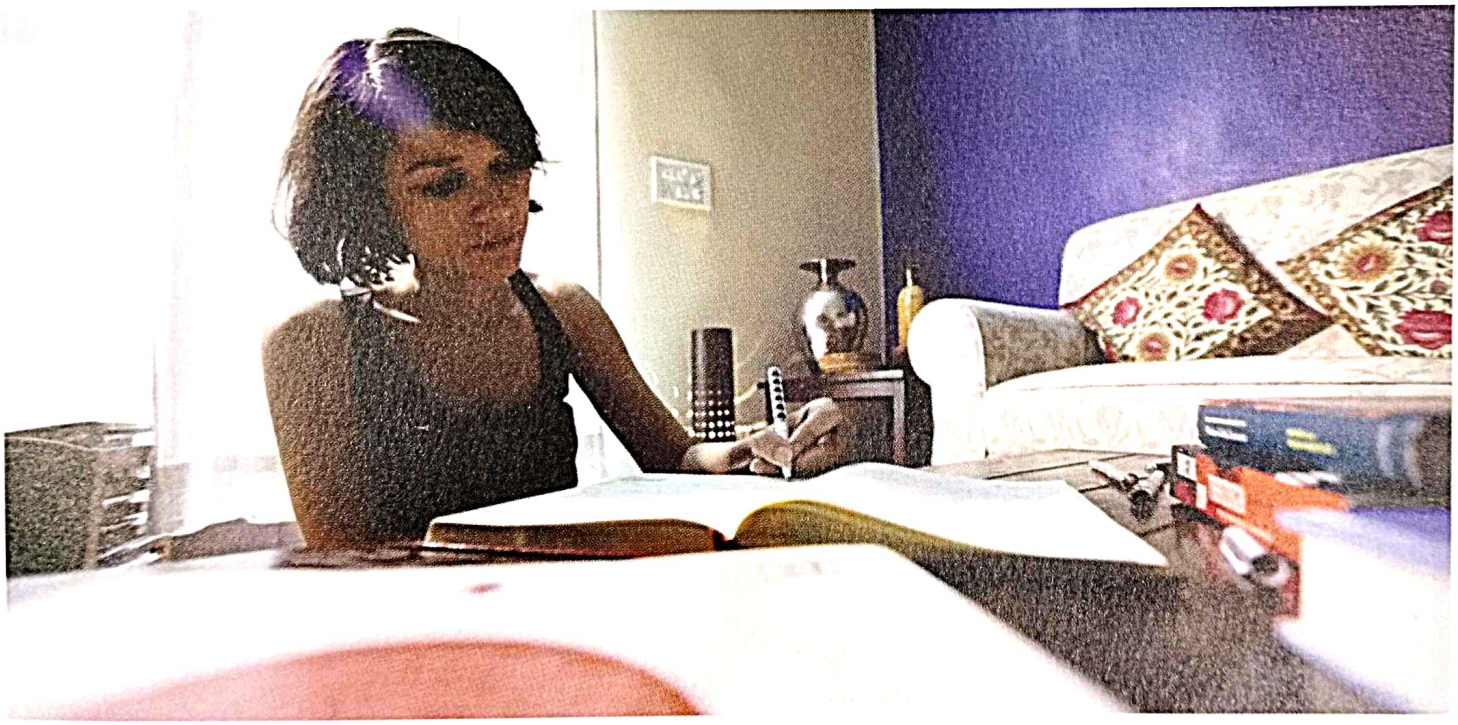

Vaishali Sood

She is an award winning creative director, scriptwriter and producer with over 18 years of experience in the media field. Between years 2014 to 2017, she worked extensively as a creative director and writer for documentaries and lifestyle shows for many networks.

वैशाली सूद एक रचनात्मक निर्देशक, पटकथा लेखक और निर्माता हैं, जिन्हें रचनात्मक और समाचार मीडिया में करीब 18 साल का अनुभव है। 2014 से 2017 के बीच, कई नेटवर्क के लिए वृत्तचित्र और लाइफस्टाइल शो के लिए एक रचनात्मक निर्देशक और लेखक के रूप में बड़े पैमाने पर काम किया है।

rahi FOUNDATION

RAHI Foundation

RAHI Foundation is a centre for women survivors of incest and child sexual abuse (CSA). it has been working since 1996 to end incest/CSA and address its long-term impact on women survivors. It is India's first incest/CSA organisation and the only one focusing exclusively on women survivors. RAHI is a trauma informed and trauma sensitive organisation.

राही फाउंडेशन बाल यौन शोषण (सीएसए) से पीड़ित महिलाओं के लिए एक केंद्र है। 1996 से सीएसए खत्म करने और महिलाओं के लिए काम कर रहा है। यह भारत का पहला सीएसए संगठन है, जो महिला पीड़ितों पर ध्यान केंद्रित करता है।

लद्दाख चले रिक्शावाला
LADAKH CHALE RICKSHAWALA

Bengali and Hindi | 63.27mins

RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction: Indrani Chakrabarti
Producer: Films Division
Editor: Shantanu Mukherjee, Shirsendu Biswas
Cinematographer: Biswarup Nath, Sabuj Konar, Satyen Das, Shirsendu
Audiographer: Ayan Bhattacharya
Music: Yash - Amit

प्रशस्ति :

अराधारण रापने के साथ एक साधारण आदमी के 3 पहिया पर की गई एक अविश्वसनीय यात्रा।

'लद्दाख चले रिक्शावाला' एक वृत्तचित्र है, जो कि एक रिक्शा चालक की कोलकाता से लेह तक की यात्रा पर आधारित है. यह रिक्शा चालक बंगाल, झारखंड, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, जम्मू, कश्मीर घाटी की विभिन्न संस्कृतियों को पार कर के उत्तरी भारत के दिल लेह–लद्दाख तक जाता है।

"Ladakh Chale Rickshawala' is a documentary on this unique journey of a rickshaw puller from Kolkata to Leh traversing the heart of Northern India, crossing the different cultures of Bengal, Jharkhand, Uttar Pradesh, Haryana, Punjab, Jammu, Kashmir valley and finally that of Leh-Ladakh.

CITATION:

An incredible journey on 3 wheels of an ordinary man with extraordinary dreams.

सर्वोत्तम गवेषणा/साहसिक फिल्म | Best Exploration/Adventure Film (to Include Sports)

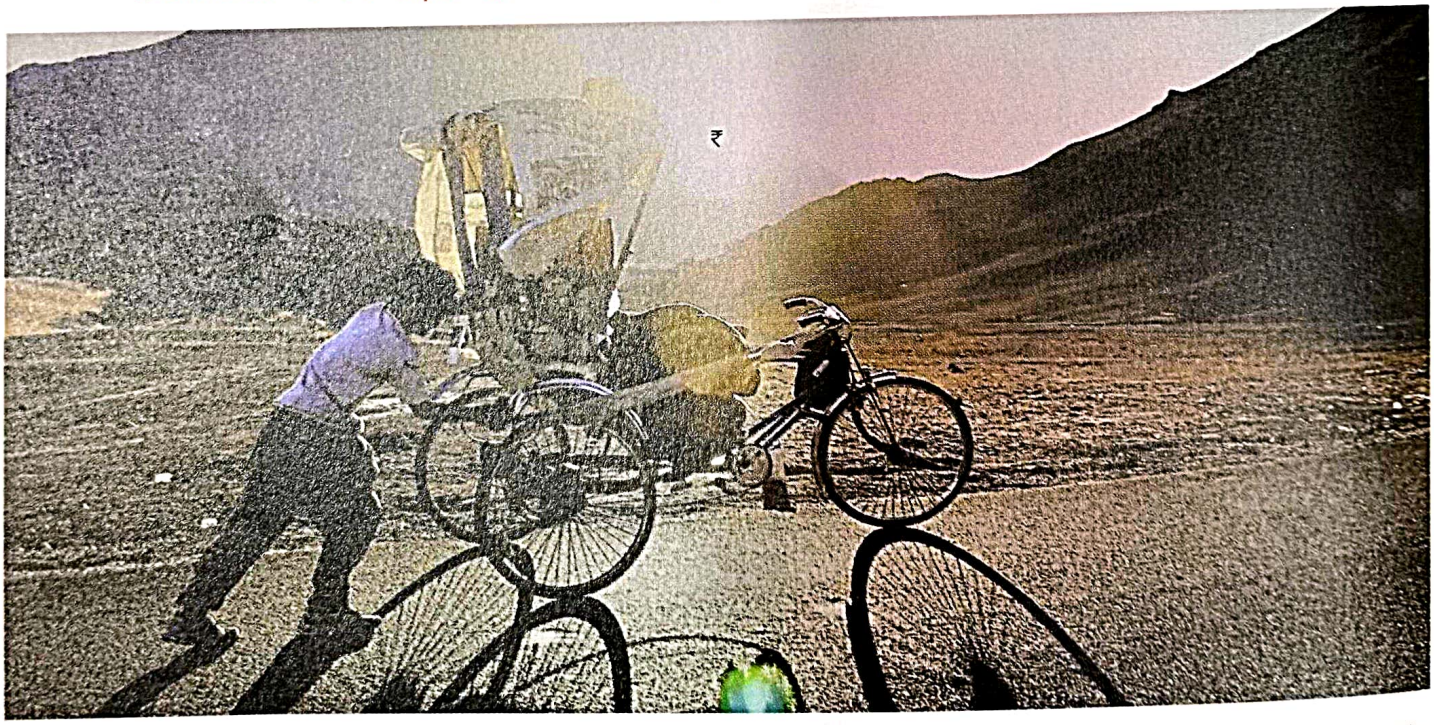

Indrani Chakrabarti

Indrani is a filmmaker based in Kolkata. After completing her master degree in Economics from the University of Calcutta, she took the filmmaking course from Chitrabani-an institute.
Indrani has also made Video Documentations and Audio-Visual Presentations.
इंद्राणी चक्रवर्ती कोलकाता आधारित एक फिल्म निर्माता हैं। उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर करने के बाद फिल्म निर्माण कोर्स किया और कई वृत्तचित्र और वीडियो–ऑडियो तैयार किए हैं।

FILMS DIVISION

The Films Division was established in 1948. The organization has relentlessly striven to maintain a record of the social, political and cultural imaginations and realities on film. It holds more than 8000 titles on documentaries, short films and animation films in its archives.
वर्ष 1948 में स्थापित हुए फिल्म डिविजन फिल्मों में सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक कल्पनाओं के लिए प्रयास किए हैं। उसके अभिलेखागार में 8000 वृत्तचित्र, लघु फिल्म और एनीमेशन फिल्म शामिल है।

1984, वेन द सन डिडंट राइज

1984, WHEN THE SUN DIDN'T RISE

Hindi | 56.52mins

RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction, Producer& Narrator: Teena Kaur
Editor: Teenaa Kaur, Suvir Nath
Cinematographer: Tanweer Ahmed, Susheel Gautam
Audiographer: P. M. Satheesh
Music: Yogendra Sodha
Sound Recordist: Sanjay Malakar

प्रशस्ति :

इतिहास में हुई एक घटना के लिए फिल्म निर्माता का एक दृढ़ प्रयास।

हर शाम, विधवा कॉलोनी में 1984 में विधवा हुई महिलाएं अपनी यादें साझा करती हैं। वे तथाकथित विकसित मेट्रोपोलिस नई दिल्ली से पुनर्वासित कॉलोनी में घूम चुके हैं क्योंकि उनके पति और परिवार के सदस्य मारे गए थे और वो दैनिक मजदूरी करते थे। 63 वर्षीय कुलदीप कौर अपने पुराने घर की तलाश में जाती है, जहां वह एक बार अपने पति के साथ तीस साल पहले रहती थी और हत्यारों के खतरनाक इलाके में कदम रखती है। 58 वर्षीय हरबंस कौर अपने पति की मौत को दशकों बाद भी स्वीकार नहीं कर सकी है. उधर, 32 वर्षीय मोहन सिंह, जिसे नशे की लत है और जो अपने पिता को नरसंहार में खो देती है, वो विधवा कॉलोनी की भावना को व्यक्त करती है। यह फिल्म इन तीन महिलाओं के जीवन के अवलोकन दृष्टिकोण की कथा है।

Every evening, women from the Widows Colony bond and share their memories of 1984. They have nestled away from the so-called developed Metropolis New Delhi to a rehabilitated colony as their men and family members who were killed were daily wage earners. Kuldeep Kaur, 63, goes in search of her old house where she once lived with her husband thirty years back and treads the dangerous territory of the murderers. Harbans Kaur, 58, could never come to terms with the reality of her husband's death. After a three-decade-long trial, the court sets Sajjan Kumar, the accused politician in the massacre free. Mohan Singh, 32, a drug addict who lost his father to the massacre, personifies the spirit of the Widows colony as trapped between the vicious circle of time and hope for justice. The film is a narrative following an observational approach to the lives of three heroic women.

CITATION:

A determined effort of a filmmaker to come to terms with a disturbing event in history.

सर्वोत्तम खोजी फिल्म | Best Investigative Film

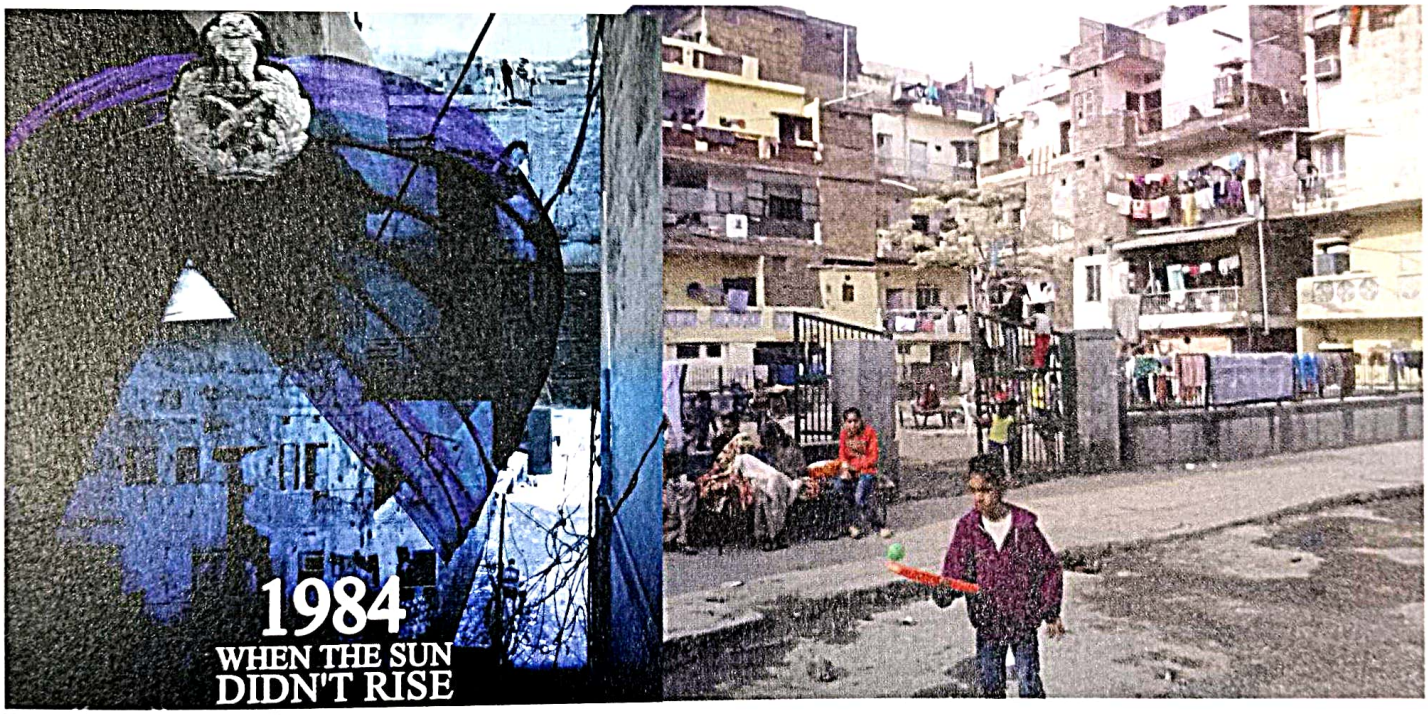

Teenaa Kaur

Teenaa is an independent Director/Producer and Screenwriter having wide range of experience in documentary genres Social Justice to Environment Conservation. Credits here include National Geographic, Fox History, Doordarshan, PSBT India, Ministry of Information and Broadcasting, Govt. of India. She studied Film Appreciation from Film and Television Institute India, Pune 2012.

टीना एक स्वतंत्र निर्देशक / निर्माता और पटकथा लेखक हैं, जिनके पास पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक न्याय पर आधारित वृत्तचित्रों का व्यापक अनुभव है। उन्होंने नेशनल ज्योग्राफिक, फॉक्स हिस्ट्री, दूरदर्शन, पीएसबीटी इंडिया, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, सरकार के साथ काम किया है। उन्होंने वर्ष 2012 में फिल्म और टेलीविजन संस्थान भारत, पुणे से फिल्म एप्रीसिएशन का अध्ययन किया था।

माछेर झोल (साझा)

MAACHER JHOL (Shared)

Hindi | 12.02mins

RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction, Animator & Production Design: Abhishek Verma
Producer: Munish Tewari
Editor: Antariksh Jain
Audiographer & Sound Recordist: Shantanu Yennemadi
Music: 126ers

प्रशस्ति :

वैकल्पिक यौन वरीयताओं वाले लोगों को
स्वीकार करने के बारे में एक अच्छी तरह से तैयार चित्रण।

28 वर्षीय एक युवा ललित घोष अपने माता–पिता के पास आने का फैसला करता है। वह एक आदमी आशुतोष गौतम से प्यार करता है, जो उसका कमरे का साथी है. वह अपने पिता का पसंदीदा पकवान पारंपरिक मछली करी (माछेर झोल) बनाने के बारे में सोचता है और यह एक प्रसिद्ध रेडियो कुक शो से सीखता है. वह कोशिश करके यह पकवान बनाता है और अपने पिता को परोसता है और रात्रिभोज के वक्त अपने समलैंगिक प्यार के बारे में बताता है।

A young man Lalit Ghosh, 28, decides to come-out to his parents. He is in love with a man, his very own room partner, Ashutosh Gautam. He plans his day by cooking his father's favorite dish, the traditional fish curry (Maacher Jhol) and that by learning from a famous radio cook show. He prepares the dish with effort and serves his father the delicious fish curry and confronts his sexuality over the dinner table. The societal structure and prejudices related to homosexuality is huge around us. Acceptance of one's sexuality by their closed ones matters a lot to an individual.

CITATION:

A well crafted portrayal about accepting those with alternate sexual preferences."

सर्वोत्तम कार्टून फिल्म | Best Animation Film

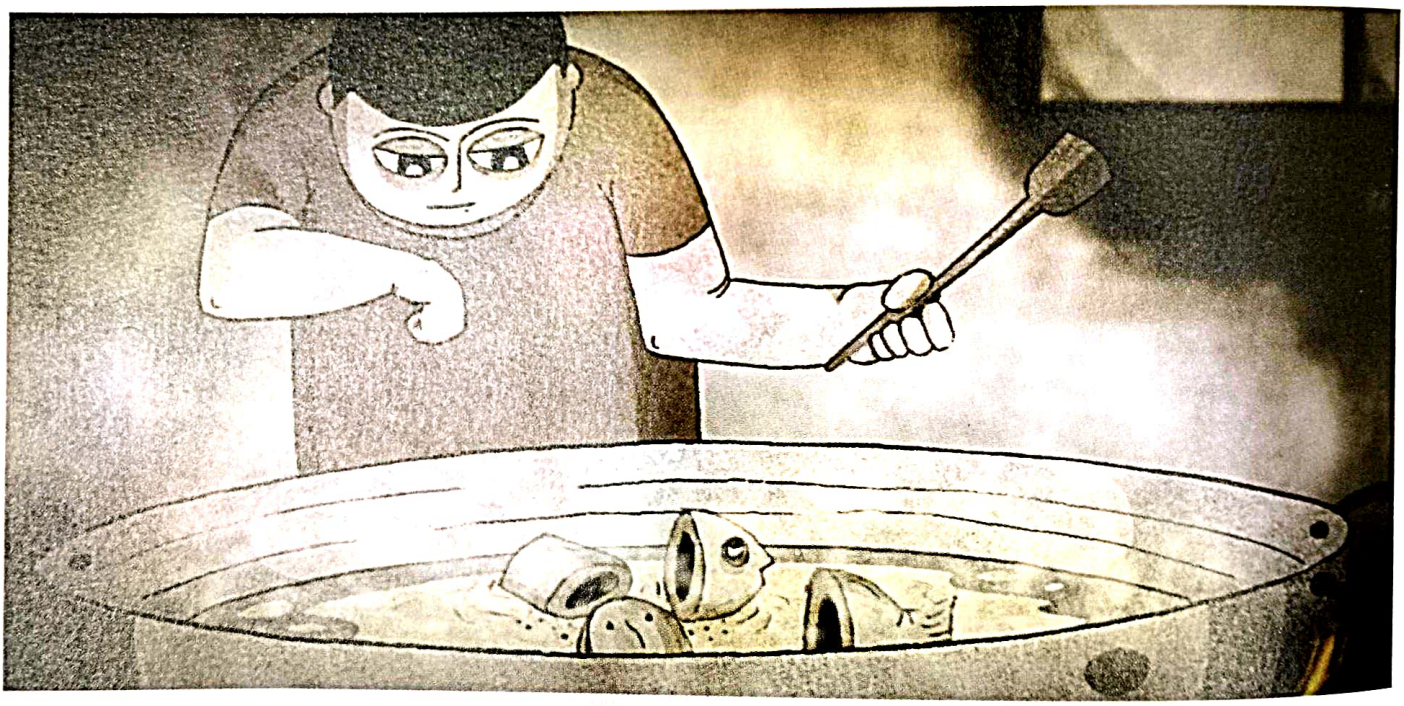

Abhishek Verma

Abhishek Verma is a storyteller through and through. His first short film Chasni which dealt with the plight of acid attack victims has been screened over in more than 37 film festivals and won 10 awards national & international.

अभिषेक वर्मा एक कहानीकार हैं। तेजाब हमलों की पीड़िताओं की दुर्दशा पर आधारित उनकी पहली लघु फिल्म चाशनी को 37 से अधिक फिल्म समारोहों में प्रदर्शित किया गया और उसने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 10 पुरस्कार भी जीते।

Munish Tiwari

Munish is the founder of jamuura.com; India's largest platform for film makers. He curated Movies & co produced by films have acclaimed nationally & internationally.

मुनीश jamuura.com के संस्थापक हैं, जो फिल्म निर्माताओं के लिए सबसे बड़ा मंच है। उनके द्वारा निर्मित फिल्मों की राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसा की गई है। वे कई राष्ट्रीय और बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए कई फिल्में तैयार कर चुके हैं।

टोकरी (साझा)

TOKRI (Shared)

No Language | 15mins

RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction: Suresh Eriyat
Producer: Nilima Eriyat
Editor: Tintu K Philip, Bargav Sridar
Cinematographer: Srinivas Reddy
Audiographer & Sound Recordist: Jayesh Dhakan
Music: Rajat Dholakia
Animator: Studio Eeksaurus Productions Pvt Ltd
Production Designer: Sandeep Meher, Krishna Kedar, Sandeep Shelar

प्रशस्ति :

जटिल एनीमेशन तकनीकों का उपयोग करते हुए तैयार की गई एक साधारण प्रेमपूर्ण कथा।

एक वक्त में दो महत्वहीन लोगों के खोने और पुनः पाने की कहानी।

Two insignificant lives lost and found in time.

CITATION:

A simple loving narrative using complex animation techniques.

सर्वोत्तम कार्टून फिल्म | Best Animation Film

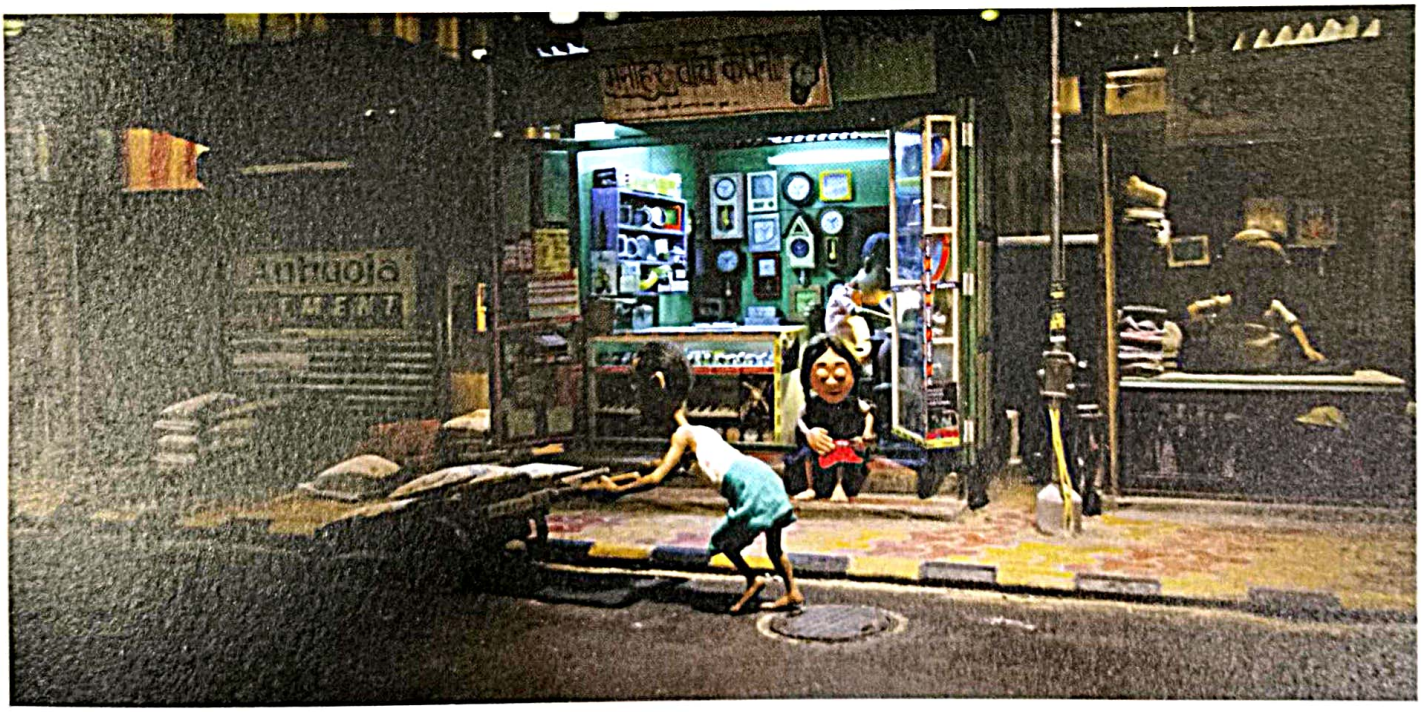

Suresh Eriyat

Suresh Eriyat is a 1997 graduate from the National Institute of Design. He created numerous animated ads, shorts, music videos with many firsts that brought not only national and international recognitions but also changed the way people perceived animation in India.

सुरेश एरियत राष्ट्रीय डिजाइन संस्थान से वर्ष 1997 से स्नातक हैं। उन्होंने कई एनिमेटेड विज्ञापन, शॉर्ट्स, संगीत वीडियो बनाए हैं, जिन्हें न केवल राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिली है, जबकि उन्होंने भारत में लोगों को एनीमेशन के तरीके को भी बदल दिया है।

Nilima Eriyat

Nilima Eriyat is the Executive Producer of Studio Eeksaurus, a company jointly owned and formed by her and E. Suresh in 2009. Her film 'Fisher woman and Tuk-Tuk' bagged the National Film Award in 2016.

नीलिमा एरियत स्टूडियो एक्सासॉरस की कार्यकारी निर्माता हैं, जो उनके पति के साथ संयुक्त स्वामित्व वाली कंपनी है। उनकी फिल्म 'फिशरवूमन एंड टुक-टुक' ने 2016 में राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार जीता था।

Studio Eeksaurus Productions Pvt Ltd

ए वेरी ऑल्ड मैन
विद एनॉरमस विंग्स (साझा)

A VERY OLD MAN
WITH ENORMOUS WINGS (Shared)

English, Hindi & Bangla | 72mins

RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction: Prateek Vats
Producer: Films Division
Editor: Tanushree Das Sahi, Paramita Ghosh
Cinematographer: Mehul Bhanti
Audiographer: Bigyna Bhushan Dahal

प्रशस्ति :

एक पूर्व विश्व सुंदर पर गहराई से तैयार की गई चिंतनशील फिल्म, जो बुढ़ापे से जूझ रहा है।

यह फिल्म भारतीय बॉडीबिल्डर और मिस यूनिवर्स रह चुके मोनोहर एच के जीवन पर प्रकाश डालती है। जैसे ही उसको शारीरिक दुर्बलता आती है, वैसे ही फिल्म शुरू होती है। फिल्म एच के 101 वें जन्मदिन की शाम से शुरू होती है। एच अपने जीवन के बारे में कुछ भी याद ना रखने का आग्रह करते हैं यहां फिल्म आगे बढ़ती है और बायोपिक जैसी कहानियों से अलग होते हुए उनके बारे में बताती है। फिल्म की शूटिंग में दो साल का लंबा समय लगा। साथ ही इसमें शूटिंग कर रहे दल और फिल्म में काम कर रहे लोगों के बीच घनिष्ठ संबंध दिखाई देते हैं।

A film anchored in the twilight years of the life of legendary Indian bodybuilder and former Mr.Universe, Monohar Aich. As the body fades away, the film begins to take shape. The film starts on the eve on Mr. Aich's 101st birthday. Mr. Aich's insistence on not remembering anything about his life is where the idea of the film germinates- to consciously move away from the evidential burden of a 'biopic' towards an intimate portrait - A story that transcends time to reveal the oddities that make human stories worth telling. The film has been shot over a period two years. An intimate relationship developed between the shooting crew and the people appearing in the film.

CITATION:

A deeply reflective film on a former Mr. Universe, who is silently battling with old age.

निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार | Special Jury Award

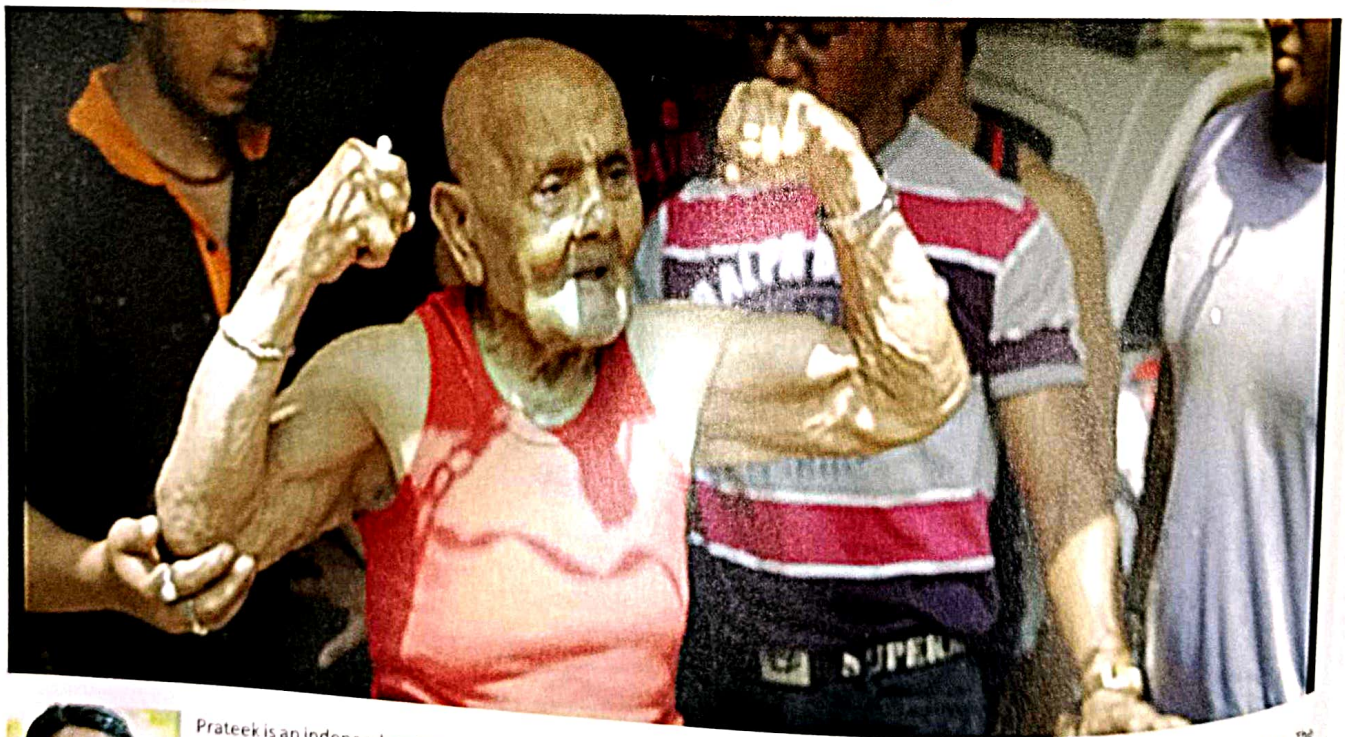

Prateek Vats

Prateek is an independent filmmaker and writer based in Mumbai/Goa. A graduate of the film direction course from Film & Television Institute of India, he has been working on fiction as well as non-fiction films. This is his first feature length film.

प्रतीक एक स्वतंत्र फिल्म निर्माता और लेखक हैं। उन्होंने फिल्म और टेलीविजन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया से फिल्म निर्देशन पाठ्यक्रम से स्नातक किया है और वे काल्पनिक और गैर-काल्पनिक फिल्मों के लिए काम कर रहे हैं। यह उनकी पहली फीचर फिल्म है।

FILMS DIVISION

The Films Division was established in 1948. The organization has relentlessly striven to maintain a record of the social, political and cultural imaginations and realities on film. It holds more than 8000 titles on documentaries, short films and animation films in its archives.

वर्ष 1948 में स्थापित हुए फिल्म डिविजन फिल्मों में सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक कल्पनाओं के लिए प्रयास किए हैं। उसके अभिलेखागार में 8000 वृत्तचित्र, लघु फिल्म और एनीमेशन फिल्म शामिल है।

मन्डे (साझा)
Monday (Shared)

Silent | 17mins

RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction: Arun K
Producer: Film & Television Institute of India
Editor: Lavanya Ramaiah
Cinematographer: Raju Biswas
Audiographer & Sound Recordist: KV Subramanian
Production Designer: Roshan Kumar

प्रशस्ति :

यांत्रिक और लौकिकता का एक सरल और असली प्रतिनिधित्व।

यह फिल्म हमारे देश की कॉर्पोरेट संस्कृति और उससे संघर्ष कर रहे लोगों की नजर से तैयार की गई अनोखी और हास्यास्पद रचना है। एक तरफ युवाओं का एक स्टार्ट–अप है जो इलेक्ट्रॉनिक बाइक का निर्माण करने में लगा है। दूसरी तरफ एक बेरोजगार आदमी गगनचुंबी इमारतों को साफ करने के लिए रस्सी के बारे में सीख रहा है और वहीं एक भित्तिचित्र कलाकार है जो अपने काम को दिखने के लिए स्थान ढूंढ रहा है।

The film is an absurd and comical take on the corporate culture of life taking over our country, through the eyes of people who struggle under its weight every day. A start up of youngsters pitching an electric bike, an unemployed man learning the ropes to clean skyscrapers, a graffiti artist finds unlikely places to spray his work, and so on. The city copes with a malady in the strangest ways.

CITATION:

A simple and surreal representation of the mechanical and mundane.

निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार | Special Jury Award

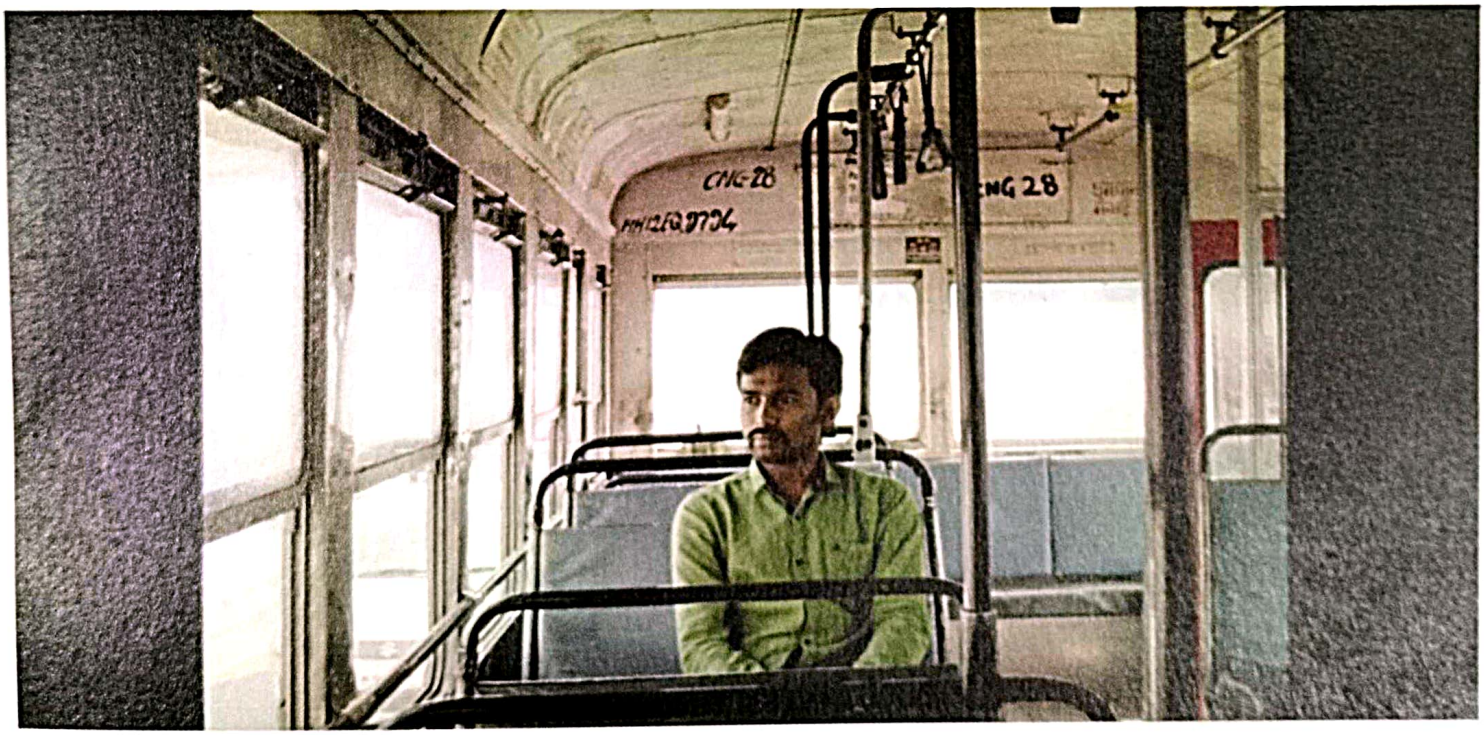

Arun K.

Arun K studied physics before enrolling at the FTII. His films try to pit the private realities of our lives against our public aspirations, to find out what is being spun and who is spinning it.
अरुण के ने एफटीआईआई में दाखिला लेने से पहले भौतिकी का अध्ययन किया है। उनकी फिल्में हमारी सार्वजनिक आकांक्षाओं के खिलाफ हमारे जीवन की निजी वास्तविकताओं को यह जानने के लिए चिह्नित करती है कि क्या रोका जा रहा है और क्या फैलाया जा रहा है।

FTII

Established as 'Film Institute of India' in 1960 on the erstwhile Prabhat Studio premises at Pune, FTII boasts of a rich legacy in quality Indian cinema. The FTII is an autonomous body under the Ministry of Information and Broadcasting of the Government of India.
भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान भारत के पुणे शहर में स्थित है। यह संस्थान भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के अंतर्गत एक स्वशासी संस्था है। साल 1960 में पुणे के प्रभात स्टूडियो परिसर में इस संस्थान को स्थापित किया गया।

मयत
MAYAT

Marathi| 25.59mins

RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction & Producer: Dr. Suyash Shinde
Editor: Vipul Kadam
Cinematographer: Girish Jambhalikar
Audiographer& Sound Recordist: Sayali Kulkarni
Music: Gandhaar
Production Designer: Sudhir Sutar

प्रशस्ति :

एक स्तरित फिल्म जो नैतिकता और नीतियों को वैसे ही प्रस्तुत करती है जैसे हमारे बहुत हताश और जरूरतमंद क्षणों में हमारे पास विकल्प उपलब्ध रहते हैं।

नामा एक गरीब, बेरोजगार, अकाल प्रभावित गांव का रहने वाला शख्स है, जो काम खोजने के लिए निराशाजनक रूप से संघर्ष कर रहा है। वो अंतिम संस्कार में, अनुष्ठान के रूप में मृत शरीर पर फेंके जाने वाले सिक्कों को इकट्ठा करना शुरू करता है। हालांकि ये काम समाज में गलत माना जाता है और इस तरह वह अपने भूख से पीड़ित परिवार के लिए कुछ रोटी का इंतजाम करता है। यह उसको उस रास्ते पर खड़ा कर देता है, जहां उसे नौतिकता और पाप के बीच एक रास्ता चयन करना होता है।

Nama is a poor, unemployed, famine struck villa hopelessly struggling to find work. At a fune instinctively, he starts collecting the coins which thrown over the dead body as a part of the ritu though this act is considered to be a taboo, and t continues to earn some bread for his hunger stric family. This soon takes him to crossroads, where has to choose between morality and sin.

CITATION:

"A layered film that presents morality and ethics as choices available to us even in our most desperate and needy moments."

सर्वोत्तम लघु कल्पित फिल्म | Best Short Fiction Fi

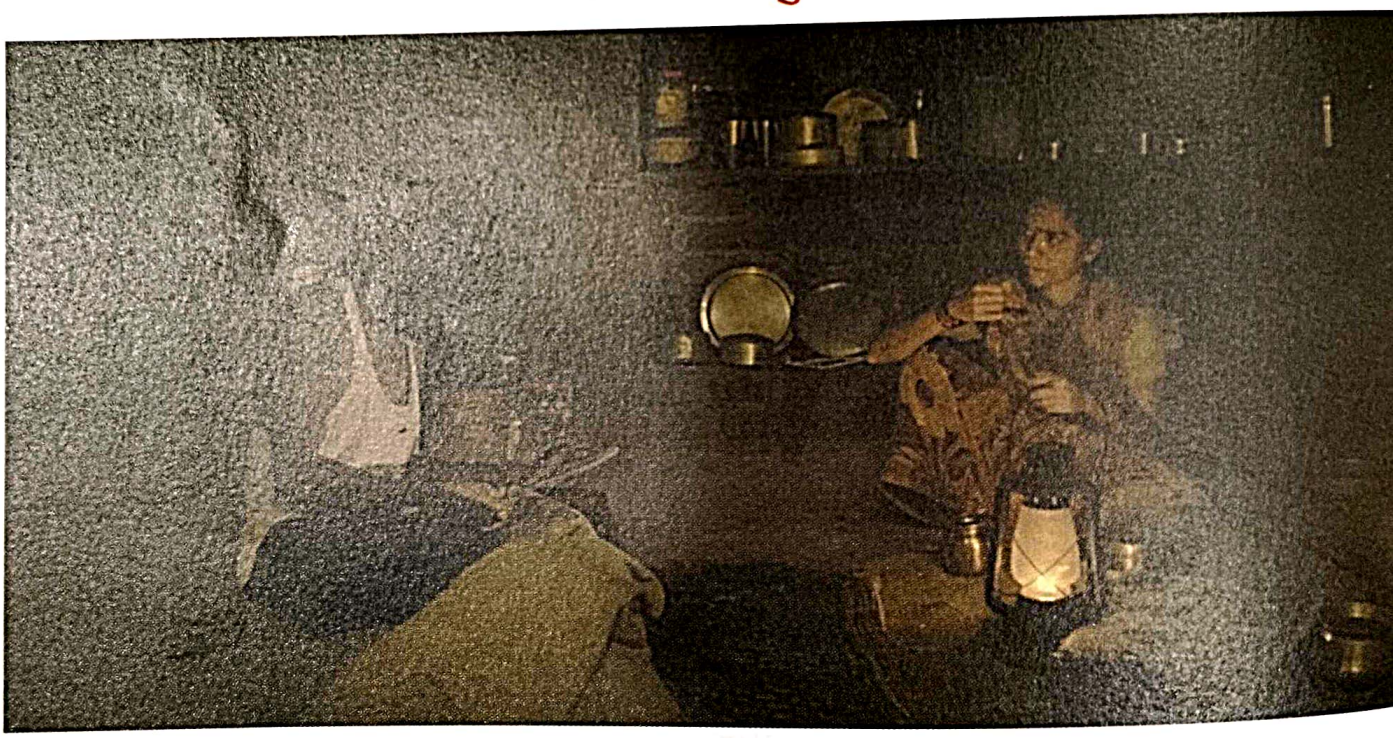

Dr Suyash Shinde

Dr Suyash Shinde is a Dentist and Filmmaker. He has produced 5 short films before.
डॉ सुयाश शिंदे एक दंत चिकित्सक और फिल्म निर्माता हैं। उन्होंने पांच लघु फिल्में निर्मित की हैं।

हैप्पी बर्थडे
HAPPY BIRTHDAY

Marathi| 14 mins

RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction: Medhpranav Babasaheb Powar

Producer: Film & Television Institute Of India

Editor: Vaishnavi Krishnan

Cinematographer: Riyas Arun

Audiographer& Sound Recordist: Sohamjit Deb

Music: Prithviraj Chavan

प्रशस्ति :

अपने पिता के बलिदान और प्रेम के प्रति एक छोटे लड़के के बदलते दृष्टिकोण का एक अर्थपूर्ण अन्वेषण।

शरद एक कार्यशाला में एक मशीन ऑपरेटर के रूप में काम करता है। जब भी उन्हें मौका मिलता है तो वह जन्मदिन पार्टियों में पार्ट टाइम मनोरंजक के रूप में भी काम करता है। संयोग से एक दिन शरद अपने बेटे के दोस्त की जन्मदिन की पार्टी में मनोरंजन करता रहता है। वह अपने बेटे आकाश से बचने की कोशिश करता है, लेकिन आकाश का एक मित्र उसे देख लेता है। उस दौरान आकाश अपने जन्मदिन को अपने दोस्तों की तरह मनाने की इच्छा व्यक्त करता है। हालांकि, अगले दिन आकाश के दोस्त स्कूल में चिढ़ाते हैं कि उसके पिता मिकी माउस हैं। वह वापस आता है और खुद को अपमानित महसूस करता है, क्योंकि उसे यकीन था कि उसके पिता एक कार्यशाला में काम करते हैं। आकाश को पता चलता है कि वास्तव में उनके पिता मिकी माउस के रूप में काम करते हैं। इस वास्तविकता को स्वीकार करना उसके लिए मुश्किल हो जाता है। आखिरकार आकाश समझता है कि क्यों और किसके लिए उसके पिता यह काम कर रहे हैं और वह पूरी तरह से हकीकत को स्वीकार करता है।

Sharad works as a Machine Operator at a workshop. He also works as a part time Mascot Entertainer at birthday parties whenever he gets an opportunity. Incidentally one day Sharad is entertaining at a birthday party of his son's friend. He manages to hide himself from his son Aakash until he leaves but one of Aakash friend notices Sharad. Awed with the party and not knowing that it was his father performing under the mask, Aakash expresses his desire to celebrate his birthday the same way as his friends. Next day Aakash's friends tease him in the school that his father is a Mickey Mouse. He is taken aback and feels insulted, since he is sure that his father works at a workshop. Aakash finds out that his father in fact works as a Mickey Mouse. It becomes hard for him to accept this reality. Eventually Aakash understands why and for whom his father is taking all the extra efforts and he accepts the reality whole heartedly.

CITATION:

A meaningful exploration of a small boy's changing attitude towards his father's sacrifice and love.

पारिवारिक मूल्यों पर आधारित सर्वोत्तम फिल्म | Best Film On Family Values

Medhpranav Babasaheb Powar

Medhpranav actively participated in all the performing arts right from his schooling till his graduation. He consistently sought for opportunities to work in theatre or by enrolling in part time short Film Making and Acting Course to hone his skills. He finally joined the FTII in 2016-17.

मेधप्रणव बाबासाहेब पवार ने अपनी स्कूली शिक्षा से लेकर स्नातक स्तर तक सभी प्रदर्शन कलाओं में सक्रिय रूप से भाग लिया। उन्होंने लगातार रंगमंच में काम करने के अवसरों की तलाश की या अंशकालिक लघु फिल्म बनाने और अभिनय पाठ्यक्रम में अपने कौशल को बढ़ाने के लिए कोशिश की। आखिरकार वे 2016–17 में एफटीआईआई में शामिल हो गए.

FTII

Established as 'Film Institute of India' in 1960 on the erstwhile Prabhat Studio premises at Pune, FTII boasts of a rich legacy in quality Indian cinema. The FTII is an autonomous body under the Ministry of Information and Broadcasting of the Government of India.

भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान भारत के पुणे शहर में स्थित है। यह संस्थान भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के अंतर्गत एक स्वशासी संस्था है। साल 1960 में पुणे के प्रभात स्टूडियो परिसर में इस संस्थान को स्थापित किया गया।

पावसाचा निबंध
PAVASACHA NIBANDHA

Marathi | 25.41mins

SWARNA KAMAL | ₹1,50,000/-

Direction: Nagraj Manjule
Producer: Balkrushana Manjule, Sheshraj Manjule
Editor: Kutub Inamdar
Cinematographer: Sudhakar Reddy Yakkanti
Audiographer & Sound Recordist: Avinash Sonawane
Production Designer: Amit Bhokse, Sheshraj Manjule

प्रशस्ति :

सिनेमाई कौशल और स्थायी सहानुभूति के साथ एक यथार्थवादी और मार्मिक कहानी को दर्शाया गया है।

एक 10 वर्षीय लड़का राजा, बारिश, रोमांस और कविता द्वारा आशीर्वादित भूमि में रहता है। वह स्कूल के असाइनमेंट के रूप में बारिश के बारे में एक निबंध लिखने के लिए तैयार है।

Raja, a 10-year-old boy lives in a land blessed in abundance by rain, romance, and poetry. He sets out to write an essay about rain as a school assignment.

CITATION:

"A realistic and moving story told with masterful cinematic skill and enduring empathy."

सर्वोत्तम निर्देशन | Best Direction

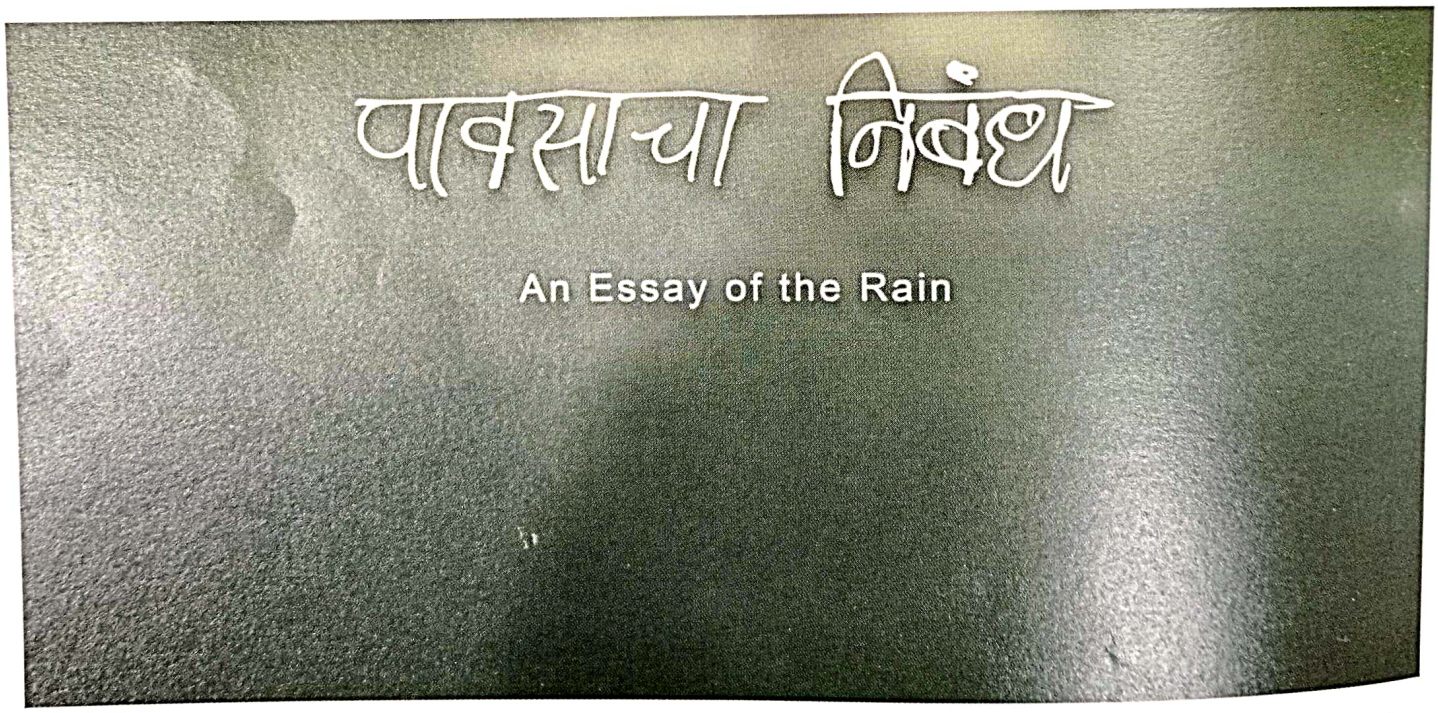

Nagraj Manjule

Nagraj Manjule from Jeur, a small village in Maharashtra is one of the most noted film makers of this generation. His debut short film, Pistulya won the best non-feature film and special mention for actor Surajpawar at the 58th National Film awards. His debut feature film, Fandry won the Indira Gandhi award for Best first film of a Director. He went onto make one of the most successful Indian films, SAIRAT, awarded at numerous festivals.

महाराष्ट्र के एक छोटे से गांव ज्यूर के रहने वाले नागराज मंजूले इस पीढ़ी के सबसे प्रसिद्ध फिल्म निर्माताओं में से एक है। उनकी पहली लघु फिल्म, पिस्तुल्या को 58 वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार में सर्वश्रेष्ठ गैर–फीचर फिल्म और अभिनेता सूरजपावर को विशेष उल्लेख मिला था। उनकी पहली फीचर फिल्म, फैंड्री ने निर्देशक की सर्वश्रेष्ठ पहली फिल्म के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार हासिल किया था। साथ ही उन्होंने सफल भारतीय फिल्मों में से एक सैराट भी बनाई है, जिसे कई फिल्म समारोह में सम्मानित किया गया।

आई टेस्ट (साझा)
EYE TEST (Shared)

Malayalam | 15.30 mins

SWARNA KAMAL | ₹1,50,000/-

Direction & Producer: Sudha Padmaja Francis
Editor: Naseeb Ahammed Sainaba
Cinematographer: Appu Prabhakar
Audiographer: Robin Kunjhukutty, ramod Thomas
Sound Recordist: Lenin Valappad
Production Designer: Anees Nadodi

प्रशस्ति :

यादों और परिकल्पना के साथ बुना हुआ एक अन्वेषण।

आई टेस्ट एक अर्ध–आत्मकथात्मक फिल्म है, जिसमें निर्देशक ने कुछ साल पहले हुई अपनी मां की मौत के बाद, स्मृति के आधार पर मां–बेटी के रिश्ते, मृत्यु और शोक के प्रभावशाली माहौल का चित्रण किया है। फिल्म भारतीय कामकाजी मां की मुश्किल रोजमर्रा की वास्तविकताओं को बखूबी दर्शाती है। फिल्म उस वक्त खत्म होती है, जहां निवेदिता अपनी मां के साथ समुद्र तट की आकांक्षात्मक जगह पर जा सकती है।

Eye Test is a semi-autobiographical film in which the director has sought to explore the affective atmosphere of a mother-daughter relationship, death and bereavement through the realm of memory, following her own mother's death a few years back. The film captures the difficult everyday realities of a working single mother in India. The film ends in a time and space of fantasy where Nivedita is able to visit her aspirational space of the beach with her mother.

CITATION:

An exploration in tonalities and contrast, woven with memories and vision.

सर्वोत्तम छायांकन | Best Cinematography

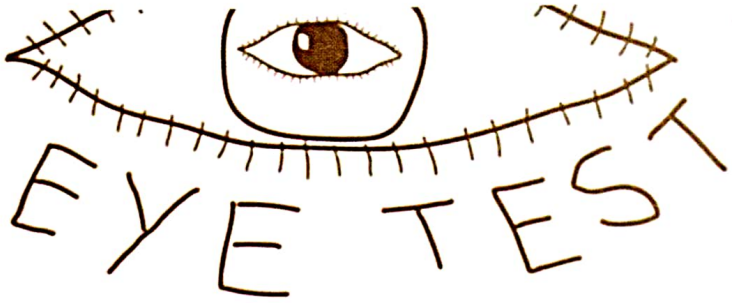

Appu Prabhakar

Appu Prabhakar is a 31-year-old cinematographer from Kozhikode, Kerala. He holds a PG diploma in motion picture photography from SRFTI, and a degree in mechanical engineering from NIT, Calicut. His final diploma project at SRFTI was screened at the 47th edition of IFFI as part of the Indian Panorama (non-feature) section. After graduating from SRFTI, Appu worked as a cinematographer in several short films and short documentaries.

अप्पु प्रभाकर केरल के कोझिकोड के रहने वाले 31 वर्षीय छायांकार है। उन्होंने एसआरएफटीआई से मोशन पिक्चर फोटोग्राफी में पीजी डिप्लोमा और एनआईटी, कालीकट से मैकेनिकल इंजीनियरिंग में डिग्री हासिल की है। अप्पू ने फिल्म स्कूल में जाने से पहले टेलकॉन लिमिटेड एक इंजीनियर के रूप में काम करते थे। एसआरएफटीआई में अपने अंतिम डिप्लोमा प्रोजेक्ट के लिए उन्होंने एक लघु फिल्म रंदू कुरुप्पुकल बनाई थी, जिसे भारतीय पैनोरमा के सेक्शन में आईएफएफआई के 47 वें संस्करण में चलाया गया था। एसआरएफटीआई से पढ़ाई करने के बाद उन्होंने कई लघु फिल्मों और लघु वृत्तचित्रों में एक छायांकार के रूप में काम किया।

सहर (साझा)
SEHER (Shared)

Hindi | 18.40mins
SWARNA KAMAL | ₹1,50,000/-

Direction & Editor: Manas Shashidharan Jacob
Producer: Triace Entertainment, Juhi Hegde
Cinematographer: Arnold Fernandes
Audiographer: Sudeepta Sadhukhan
Production Designer: Juhi Hegde
Music: Arjun Nair

प्रशस्ति :

यादों और परिकल्पना के साथ बुना हुआ एक अन्वेषण।

मुबंई की किसी छोटी गलियों में एक लड़की एक टैक्सी किराए पर लेती है। एक बूढ़े टैक्सी ड्राईवर के साथ यह एक और यात्रा है। सेहर में लड़की की उस कहानी का चित्रण किया गया है, जो सीमा, संदेह, आत्म–भय से परे समाज के समक्ष यह साबित करती है कि आशा से आजादी की शुरुआत होती है।

Somewhere in the bylanes of Mumbai, a girl boa taxi. With an old taxi driver as a companion, is just another journey or something much more. Se explores the story of girl who rises above lin doubts, fear of self and the society proving that seed of liberation is hope.

CITATION:

Potent imagery bordering on darkness and hope.

सर्वश्रेष्ठ छायांकन | Best Cinematography

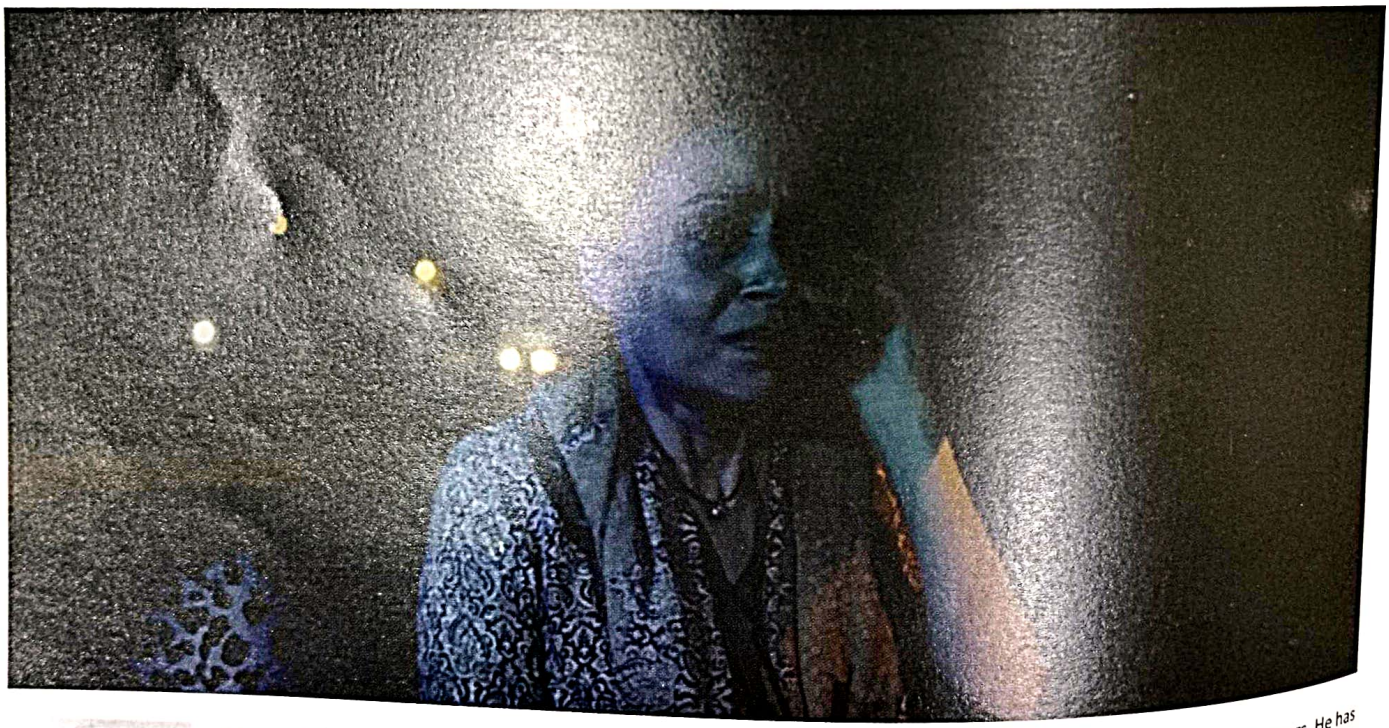

Arnold Fernandes

A lover of cinematic arts, DOP Arnold Fernandes is an SRFTII alumnus who has been working in the industry for a few years. He has assisted on feature films and independently shot multiple advertisements.
सिनेमा प्रेमी और डीओपी अर्नाल्ड फर्नांडीस एसआरएफटीआईआई के पूर्व छात्र हैं और वे कुछ सालों से इस क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। उन्होंने फीचर फिल्मों में सहायता किया है और स्वतंत्र रूप से कई विज्ञापन तैयार किए हैं।

पावसाचा निबंध
PAVASACHA NIBANDHA

Marathi | 25.41mins

SWARNA KAMAL | ₹1,50,000/-

Direction: Nagraj Manjule
Producer: Balkrushana Manjule, Sheshraj Manjule
Editor: Kutub Inamdar
Cinematographer: Sudhakar Reddy Yakkanti
Audiographer & Sound Recordist: Avinash Sonawane
Production Designer: Amit Bhokse, Sheshraj Manjule

प्रशस्ति :

सिनेमाई कौशल और स्थायी सहानुभूति के साथ
एक यथार्थवादी और मार्मिक कहानी को दर्शाया गया है।

एक 10 वर्षीय लड़का राजा, बारिश, रोमांस और कविता द्वारा आशीर्वादित भूमि में रहता है। वह स्कूल के असाइनमेंट के रूप में बारिश के बारे में एक निबंध लिखने के लिए तैयार है।

Raja, a 10-year-old boy lives in a land blessed in abundance by rain, romance, and poetry. He sets out to write an essay about rain as a school assignment.

CITATION:

"A realistic and moving story told with masterful cinematic skill and enduring empathy."

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन | Best Audiographer

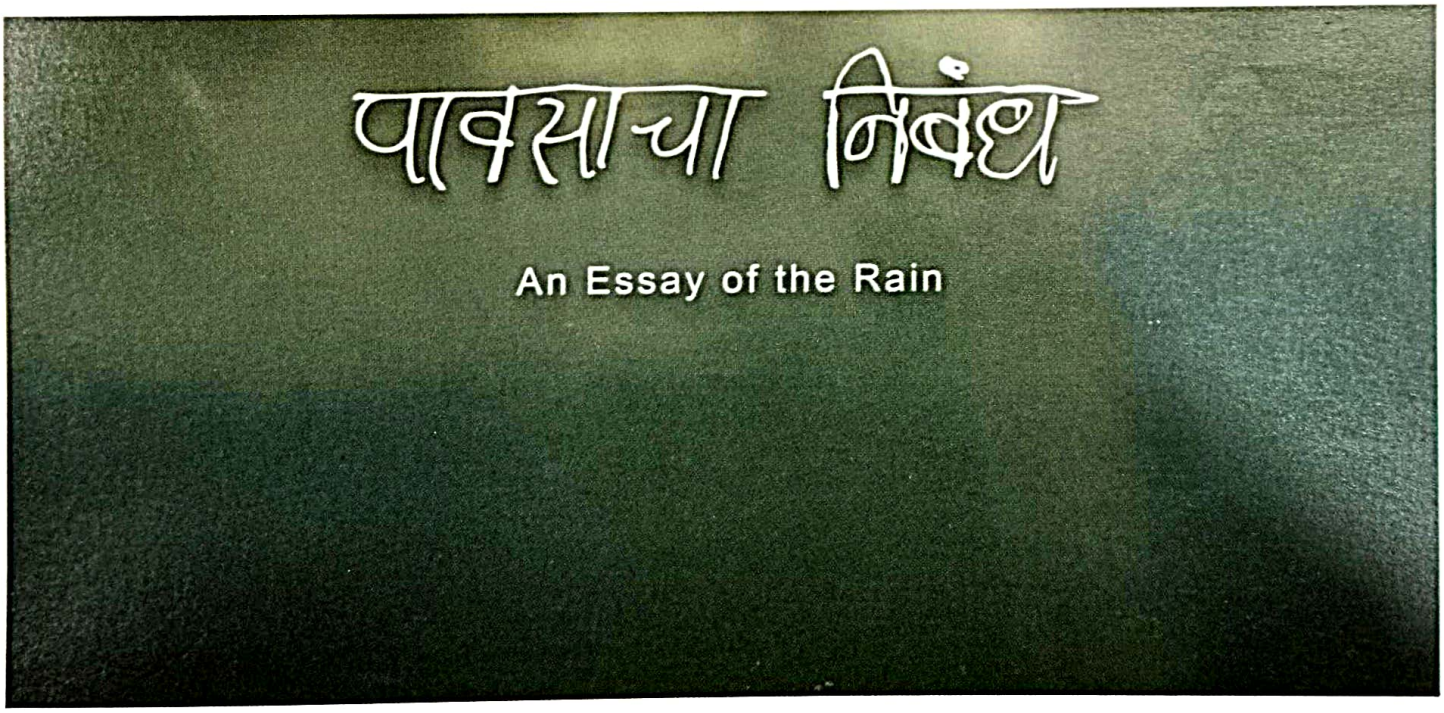

Avinash Sonawane

Avinash Sonawane is an experienced creative sound designer and pioneer in the field of sync sound techniques. He is known for the work and executions of sync sound projects with different and creative approaches to modern film sound. He has worked on numerous films like Sairat, Fandry, Muramba, Rakshas, Phuntroo, Ajoba Shala, Chourya, Sniff, Haider, Baby, Airlift and many more.

अविनाश सोनावने सिंक ध्वनि तकनीक के क्षेत्र में एक अनुभवी रचनात्मक ध्वनि डिजाइनर हैं। वे आधुनिक फिल्मों में विभिन्न और रचनात्मक दृष्टिकोण के साथ सिंक ध्वनि पर कार्य करने और निष्पादन के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने सैराट, फैंड्री, मुरम्बा, राक्षस, बैबी, एयरलिफ्ट जैसी कई फिल्मों में काम किया है।

द अनरिजर्व्ड
THE UNRESERVED

Hindi | 60mins

SWARNA KAMAL | ₹1,50,000/-

Direction &Sound Recordist: Samarth Mahajan

Producer: Ashay Gangwar

Editor: Anadi Athaley

Cinematographer: Omkar Divekar

Audiographer: Mukesh Lobo

Music: Indian Ocean

प्रशस्ति :

मुश्किल और जटिल स्थानों में ऑडियो की
कुशल रिकॉर्डिंग, जिसने फिल्म को जीवित किया है।

द अनरिजर्व्ड उन लोगों पर फिल्माई गई है, जो लोग भारतीय रेलवे के अनारक्षित डिब्बों में सफर करते हैं, जो कि रेल में यात्रा करने का सबसे सस्ता तरीका या माध्यम है। फिल्म यात्रियों के बीच होने वाली बातचीत और व्यक्तिगत कहानियों के माध्यम से उनकी आकांक्षाओं, प्रयासों और विचारों को चित्रित करती है।

The Unreserved is an intimate inquiry into the lives of passengers who use the Unreserved Compartment, the cheapest way to travel across India on the Indian Railways system. The film portrays the passengers' aspirations, efforts and opinions through conversations and personal stories.

CITATION:

Skilful recording of audio in difficult and complicated locations that has made the film come alive.

सर्वोत्तम ऑन लोकेशन साउण्ड रिकॉर्डिस्ट | Best On Location Sound Recordist

Samarth Mahajan

Samarth Mahajan is a non-fiction filmmaker based in New Delhi. Self-taught in the art of filmmaking, he loves to tell stories that highlight invisible narratives. His documentary projects have received critical and mass attention in media. "The Unreserved", his debut feature documentary, premiered at Film Southasia 2017 and has been screened in more than 50 national and international forums. His work-in-progress "India Screams", about India's protest street Jantar Mantar Road, was awarded at Docedge Kolkata - Asian Forum for Documentary. Samarth completed his education from IIT, Kharagpur.

समर्थ महाजन एक गैर–काल्पनिक फिल्म निर्माता हैं। खुद ही फिल्म बनाने की कला सीखने वाले महाजन को कहानियां बताना पसंद है और वे अदृश्य कथाओं को उजागर करते हैं। उनकी कई वृत्तचित्र फिल्मों को काफी सराहा गया है और मीडिया काफी स्थान मिला है। 'अनारक्षित', उनकी पहली फीचर वृत्तचित्र है, जिसे फिल्म साउथेसिया 2017 में दिखाया गया है और 50 से अधिक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर इसका प्रदर्शन किया गया है। समर्थ ने आईआईटी, खड़गपुर से अपनी पढ़ाई पूरी की है।

मृत्युभोज–द डेथ फीस्ट
MRITYUBHOJ-THE DEATH FEAST

Hindi | 52 mins

RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction: Akanksha Sood Singh

Producer: Praveen Singh

Editor: Sanjiv Monga & Tenzin Kunchok

Cinematographer & Sound Recordist: Sanjiv Monga & Rakesh Rana

Music: Soumadeep Sen

प्रशस्ति :

एक निराशाजनक विषय का खूबसूरत संपादन जो अंत तक दर्शकों को बांधे रखता है।

हिंदू धर्म में किसी की मृत्यु हो जाने के 13वें दिन मृत्युभोज का आयोजन किया जाता है और कहा जाता है कि इससे मृतक की आत्मा को स्वर्ग में स्थान मिलता है। इस समारोह में तेरह 'ब्राह्मणों' को भव्य भोजन खिलाया जाता है, इसके बाद मंदिर में आत्मा की शांति के लिए दान भी दिया जाता है। इस आयोजन में रिश्तेदारों, पड़ोसियों और बाकी गांव वालों को भोजन करवाया जाता है। आज के समय में, मृत्युभोज किसी भी परिवार की सामाजिक स्थिति का प्रतिबिंब और प्रतीक बन गया है। यहां तक कि गरीब शख्स को अपनी मजबूरियों को दूर रखते हुए अपने अस्तित्व के लिए इसका आयोजन करना पड़ता है। यह फिल्म भारत के पश्चिमी उत्तर प्रदेश के चंबल क्षेत्र में एक बेटे पर फिल्माई गई है, जो अपने पिता की मृत्यु के बाद मृत्यु समारोह आयोजित करने के लिए तैयार हो जाता है।

Hindus celebrate 'Mrityubhoj', or the Death Feast, on the 13th day after a cremation as a remembrance for the departed soul, and as a ritual to help the soul find heavenly abode. At this event, thirteen 'Brahmins' are fed a lavish meal, followed by donations to the temple in the hope to garner peace and blessings for the departed. The feast is later extended to the relatives, neighbours and the rest of the village. Today, Mrityubhoj has become akin to a status symbol and a reflection of a family's social standing. Even the poorest of poor are compelled under circumstances beyond their control to organize large death feasts, taking a toll on their very existence. This film takes a fly on the wall approach, following a son in the Chambal belt of western UP, as he gets ready to organize a death feast following the demise of his father.

CITATION:

Well-paced editing of a sombre subject that keeps the audience engaged till the end.

सर्वोत्तम संपादन | Best Editing

Sanjiv Monga

Sanjiv Monga started out as an editor with BiTV, he has been a Senior Editor for BBC Media Action for their campaign on AIDS awareness; National Geographic Channel India's `Science Safari'; shot, directed & edited documentaries for many channels.

संजीव मोंगा, एक स्वतंत्र निर्देशक–निर्माता–संपादक–कैमरामैन–ध्वनि रिकॉर्डिस्ट हैं और दो दशकों से कारोबार कर रहे हैं। उन्होंने बीआईटीवी से करियर की शुरुआत की और वे बीबीसी मीडिया एक्शन में एड्स जागरुकता अभियान में वरिष्ठ संपादक भी रहे।

Tenzin Kunchok

Tenzin Kunchok helms Mogstar Media, specializing in providing audio-visual solutions for development sector and corporate clients. He has directed and edited films for a host of clients like UN Women, the Ministry of Health & Family Welfare, BBC Media Action, NACO, US based PBS, etc.

टेनजिन कुंचोक ने दिल्ली एनसीआर में एक बुटीक प्रोडक्शन हाउस शुरु किया है, जो कई कंपनियों को ऑडियो–विजुअल समाधान प्रदान करने वाली कंपनियों नें से एक है। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र महिला सहित संस्थानों के लिए फिल्मों को निर्देशित और संपादित किया है।

स्वॉर्ड ऑफ लिबर्टी :
लाईफ एंड डेथ ऑफ वेलुत्तम्पी दलावा (साझा)
SWORD OF LIBERTY:
Life and Death of Veluthampi Dalawa(Shared)

Malayalam | 54.36 mins
RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction: Shiny Jacob Benjamin
Producer: R C Suresh
Editor: Ajayakumar VV
Cinematographer: Jebin Jacob
Audiographer: Shaji Madhavan
Music: Ramesh Narayanan
Narrators: P Balachandran

प्रशस्ति :

पूर्ववर्ती त्रावणकोर राज्य में एक दीवान के जीवन का विस्तृत पुनर्निर्माण।

'स्वॉर्ड ऑफ लिबर्टी, द लाइफ एंड डेथ ऑफ वेलु थांबी दलावा' में एक दिग्गज की कहानी को याद दिलाने के लिए एक अपरंपरागत कथा का इस्तेमाल किया गया है। मैरियनेट्स उस असाधारण व्यक्तित्व के ऐतिहासिक वर्णन को बताते हैं, जिसने भारत में राष्ट्रवाद की शुरुआत होने से पहले ही अपनी मातृभूमि के लिए लड़ाई लड़ी थी। साथ ही इसमें वेलु थांबी को श्रद्धांजलि देते हुए उनके जीवन से मृत्यु तक की अहम घटनाओं को दर्शाया गया है।

'The Sword of Liberty, the Life and Death of Velu Thambi Dalawa' uses an unconventional narrative to recap the story of a legend. Marionettes dance in the shadows and spin the chronicle of an extraordinary personality, a man who fought for his homeland, long before the seeds of nationalism were sown in India. Touching places significant to his life and death, the film engages the viewer in the unravelling of a saga: Velu Thambi's initial association and later hostility with the British, his success and failure as a Dalawa, his famous ' Kundara Vilambaram' which called forth the masses to unite against the British, and his self-annihilation, are a few of the many incidents covered in this tribute to Velu Thambi, the immortal hero.

CITATION:

An elaborate reconstruction of a Diwan's life in the erstwhile Travancore State.

सर्वोत्तम संगीत | Best Music

Ramesh Narayanan

Pandit Ramesh Narayan from Kerala, trained in Carnatic music up to the age of twenty. He has single-handedly paved the way for Indian vocal classical music to resonate across Kerala and South India and to the world. Ramesh Narayan's vocalizing is characterized by a harmonious blend of the classic and opulent elements projecting traditional music as an intense spiritual expression, at once chaste and yet densely coloured. He also has scored music for films and television programmes in Hindi Malayalam and Tamil.

केरल के रहने वाले पंडित रमेश नारायण बीस वर्ष की आयु तक कर्नाटक संगीत में प्रशिक्षित हो गए थे। उन्होंने अकेले भारतीय शास्त्रीय संगीत को केरल और दक्षिण भारत से लेकर दुनिया भर में पहचान दिलाई है। रमेश नारायण का गायन संस्कृति से लेकर कई अन्य समृद्ध तत्वों से परिपूर्ण है। उन्होंने हिंदी, मलयालम और तमिल फिल्मों और टेलीविजन कार्यक्रमों के लिए भी संगीत दिया है।

द लायन ऑफ लद्दाख
THE LION OF LADAKH

English | 14.19 mins

RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction: Soumil Shetty
Producer, Sound Recordist& Music: Somesh Saha
Editor: Rohan Sharma
Cinematographer: Soumil Shetty, Rohan Sharma
Audiographer: Devang Rachh
Narrator: Francois Castellino

प्रशस्ति :

भारतीय सेना के एक निडर अधिकारी का एक स्पष्ट और प्रभावी विवरण।

यह फिल्म कर्नल सोनम वांगचुक पर आधारित है, जिन्हें कारगिल युद्ध के दौरान 'लदाख स्काउट्स' का नेतृत्व करने के लिए महावीर चक्र से सम्मानित किया गया था. यह युद्ध में पहली महत्वपूर्ण जीत थी और इससे काफी परिवर्तन हुआ था. इस अभियान में पाकिस्तान के बलों का अहम स्थान था, यह फिल्म इस ऑपरेशन में भाग लेने वाले सैनिकों और दिग्गजों, ऑपरेशन में साथ देने वाले प्रशासनिक अधिकारियों और नेताओं के साक्षात्कारों की श्रृंखला पर आधारित है।

This film is based on Col. Sonam Wangchuk who was awarded the Mahavir Chakra during the Kargil War while leading a column of the Ladakh Scouts in the Batalik Sector. This was the first significant victory in the war and turned the tables. This operation also established the involvement of regular forces of Pakistan, The film has been based on a series of interviews of serving soldiers and veterans who participated in the operation, civil administration officials who supported the operations and other leaders of the society.

CITATION:

A crystal clear and effective narration of a fearless officer of the Indian Army

सर्वोत्तम प्रकथन/वायस ओवर | | Best Narration/Voice Over

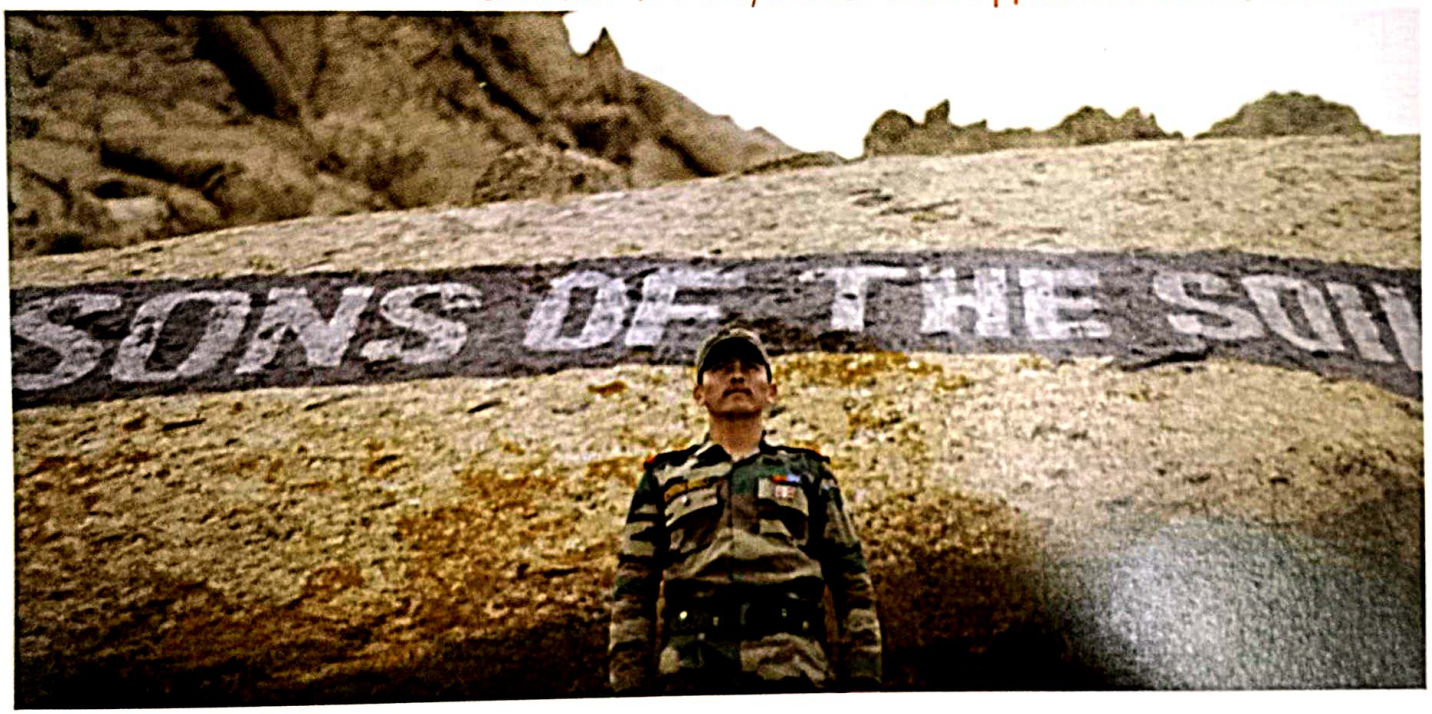

Francois Castellino

Francois Castellino started his career in theatre as a singer. In 1995 he started doing voiceovers for television channels. He voiced the character of Shah Rukh Khan in the English dubbed version of Devdas, he has also sung for movies like, Action Replayy, Guzaarish, Telugu movie song "Luv Ante" and he also rapped a song for Rajnikant.

फ्रेंकोईस कास्टेलिनो ने गायक के तौर पर अपने करियर की शुरुआत की थी। 1995 में उन्होंने टेलीविजन चैनलों के लिए वॉयसओवर करना शुरू कर दिया था। उन्होंने फिल्म देवदास के अंग्रेजी संस्करण में शाहरुख खान के किरदार की आवाज डब की है। साथ ही उन्होंने एक्शन रीप्ले, गुजारिश, तेलुगू फिल्म के गीत 'लव एंटे' जैसी फिल्मों के लिए गाने गाए हैं। इसके अलावा उन्होंने रजनीकांत की फिल्म काबिल में एक गाना गाया था. एक छात्र के रूप में उन्होंने कई पेशवर रंगमंच प्रस्तुतियों में हिस्सा लिया है।

रिबर्थ
REBIRTH

Malayalam | 25mins
RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction& Producer: Jayaraj
Editor: Anoop Chacko
Cinematographer: Nikhil S Praveen
Audiographer & Sound Recordist: Ranganath Ravi
Music: Sachin Sankar Mannathu
Production Design: Ranesh

प्रशस्ति :

सार्थक और सम्मानित जीवन के लिए अलग–अलग की खोज पर ध्यान केंद्रित करने वाली एक मार्मिक फिल्म।

रिबर्थ उन दिव्यांग बच्चों की उपलब्धियों के बारे में है, जो किसी अन्य सामान्य इंसान के रूप में जीवन में आगे बढ़ रहे हैं। मैसूर में अपने सकारात्मक इरादे से माता–पिता का एक समूह इस उद्यम में अच्छी तरह से सफल रहा है और उसने साबित कर दिया है कि ऐसे बच्चों को नजर अंदाज नहीं करना चाहिए।

Rebirth is about the achievements of Developmentally Disabled Children coming to the forefront of life as any other normal human being. A group of parents at Mysore with their positive intention has succeeded well in this venture and proved that such children doesn't have to be side lined as they are.

CITATION:

A heartfelt film focussing on the quest of the differently-abled for meaningful and dignified lives.

विशेष उल्लेख | Special Mention

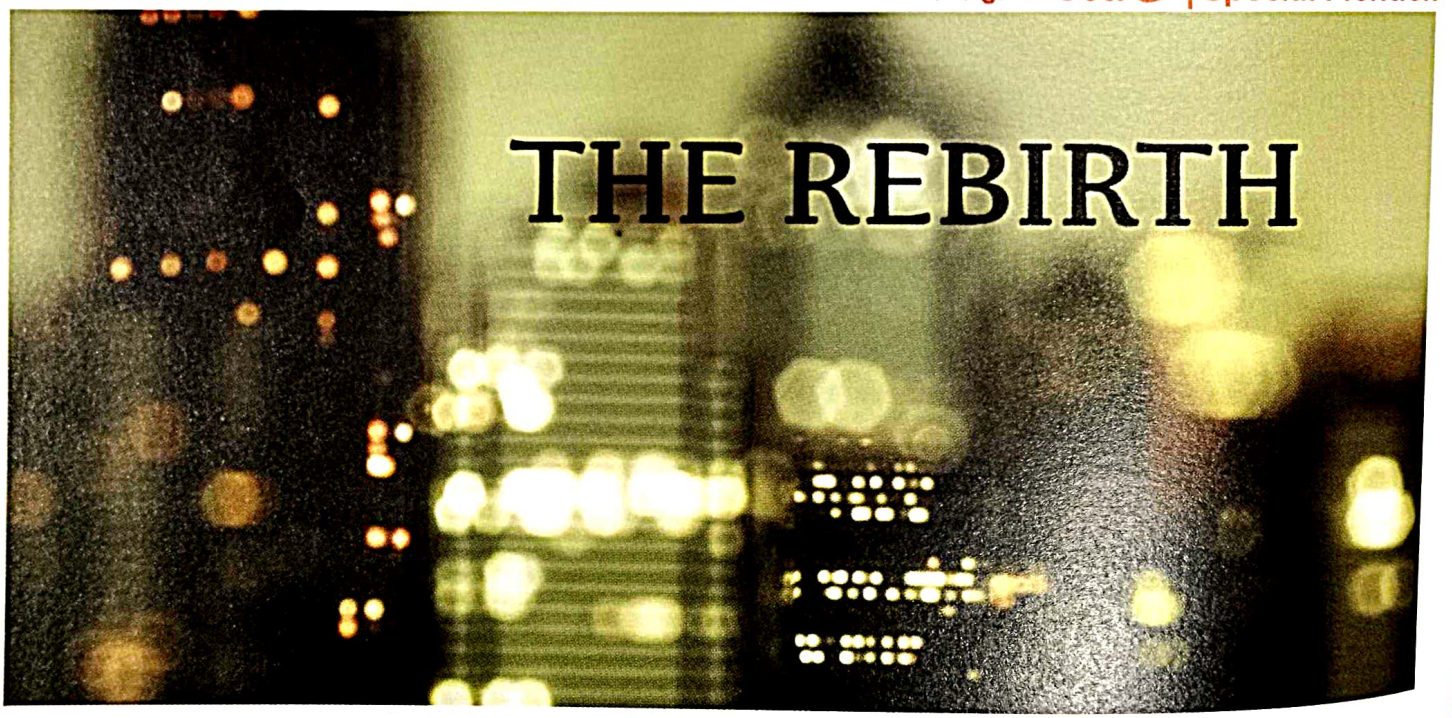

Jayaraj

Jayarajan Rajasekharan Nair, professionally credited as Jayaraj, is an Indian filmmaker, who predominantly works in Malayalam film industry. He is the founder of the Birds Club International and is actively involved in philanthropic work. Jayaraj is a recipient of the Crystal Bear Award at the Berlin International Film Festival, the Golden Peacock award at the IFFI , the Golden Crow Pheasant award at the IFFK , the FIPRESCI Award from the International Federation of Film Critics, the Don Quijote Award from the International Federation of Film Societies, The Network for the Promotion of Asian Cinema (NETPAC) award and a special mention award at the Karlovy Vary International Film Festival.

जयराजन राजशेखरन नय्यर एक भारतीय फिल्म निर्माता हैं, जो मुख्य रूप से मलयालम फिल्म उद्योग में काम कर रहे हैं। वह बर्ड्स क्लब इंटरनेशनल के संस्थापक हैं और सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहते हैं। उन्हें बर्लिन अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में क्रिस्टल बियर पुरस्कार, आईएफएफआई में गोल्डन पीकॉक पुरस्कार, आईएफएफके में गोल्डन क्रो फिजेंट अवॉर्ड, इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ फिल्म क्रिटिक्स से एफआईपीआरएससीआई पुरस्कार और इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ फिल्म सोसाइटीज की ओर से द डॉन क्विजोट अवॉर्ड प्राप्त किया है। उन्हें 6 बार राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार और कई केरल राज्य फिल्म पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है उनकी कुछ उल्लेखनीय फिल्मों में देसादनम, कलियट्टम, करुणम, शानम, ओटाल आदि फिल्में शामिल है।

द केक स्टोरी
THE CAKE STORY

Hindi | 29.26 mins
RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction: Rukshana Tabassum
Producer: Children's Film Society, India
Editor: Paramita Ghosh
Cinematographer: A. Ravi Kiran
Sound Recordist: Bigyna Bhushan Dahal/ Aliulla B Khan
Music: Sagar Desai
Production Design: Laxmi Keluskar

प्रशस्ति :

एक सशक्त पिता–पुत्र के
रिश्ता का महान निपुणता और मनोवृत्ति के साथ निर्देशन।

केक स्टोरी मोनू और उनके पिता की दिल को छू जाने वाले कहानी है, जो मोनू के जन्मदिन पर किसी और के साथ रहते हैं। सुबह से उत्साहित बच्चे का उत्साह उस वक्त खत्म हो जाता है, जब उसके पिता बेकरी का पता और बिल ले जाना भूल जाते हैं, जहां से उसकी मां ने केक बनवाया था। मां का फोन नहीं मिलने और पिता का फोन बंद हो जाने के बाद मोनू द्वारा बताए गए अस्पष्ट स्थलों और संदर्भों के साथ दुकान की खोज करना ही एक विकल्प बच जाता है।

THE CAKE STORY is a heart-warming tale of Monu and his father who are left to spend the day with each other on his birthday. A serious of hilarious goof ups since morning ends up in the father forgetting to carry the bill with the address of the bakery where mother had ordered the cake from. Mother's phone being out of range and father's phone drained out of battery the only option they were left with was to continue the search with the obscure landmarks and references provided by Monu.

CITATION:

A vibrant father – son relationship directed with great dexterity and humour.

विशेष उल्लेख | Special Mention

Rukshana Tabassum

RukshanaTabassum comes from the beautiful state of Assam. She is a film maker, painter and trained Bharatnatyam dancer. She specialized in direction from FTII Pune and has been working in Mumbai. She has directed ad films for prestigious brands like Asian Paints Godrej and Orissa Tourism. Her short films 'Adharottar' and 'Mission Sunday' have been a part of many prestigious film festivals in India and abroad.

रुक्साना तबसम असम से आती हैं। वह एक फिल्म निर्माता, चित्रकार और प्रशिक्षित भरतनाट्यम नर्तक हैं। उन्होंने एफटीआईआई पुणे से निर्देशन में पढ़ाई की है और वो मुंबई में काम कर रही है। उन्होंने एशियन पेंट्स गोदरेज और उड़ीसा पर्यटन जैसे प्रतिष्ठित ब्रांडों के लिए विज्ञापन फिल्में निर्देशित की हैं। उनकी लघु फिल्म 'आधारोट्टर' और 'मिशन संडे' को भारत और विदेश में कई प्रतिष्ठित फिल्म समारोह में प्रदर्शित किया गया है।

भर दुपारी
BHAR DUPARI

Marathi | 15 mins
RAJAT KAMAL | ₹50,000/-

Direction: Swapnil Vasant Kapure
Producer: Film and Television Institute of India
Editor: Sathish G.
Cinematographer: Tejashri Joshi
Audiographer& Sound Recordist: Siddharth Kushwaha
Music: Pruthviraj Chavan
Production Design: Swapnil Vasant Kapure

प्रशस्ति :

एक दुश्मनों से लड़ने के लिए साहस करने वाली एक महिला का एक व्यावहारिक चित्रण।

स्नेहा और सुहास एक युगल है, जो चॉल में किराए के मकान में रहते हैं। सुहास एक मशीन पर्यवेक्षक के रूप में काम करता है, जबकि स्नेहा गृहणी है और सात महीने की गर्भवती भी है। वह सिलाई का काम करके घर चलाने में अपना हाथ बंटाती है। दंपत्ति बहुत खुश रहते है, क्योंकि 5 साल के इंतजार के बाद परिवार में एक नए सदस्य का आगमन होने वाला है। हालांकि जब वे रविवार को आने वाले बच्चे को लेकर खरीदारी करने जाते हैं तो एक अप्रत्याशित घटना हो जाती है। यह घटना सुहास और स्नेहा के जीवन को काफी हद तक बदल देती है, उन्हें ना सिर्फ अपने अजन्मे बच्चे को खोने का दुख होता है, बल्कि वे अप्रत्याशित और अनियंत्रित घटनाओं में भी फंस जाते हैं।

Sneha and Suhas are happy couple residing in a rented place in a chawl. Suhas works as a machine supervisor while Sneha is a homemaker, seven months pregnant. She supports the family needs by doing tailoring work. The couple is very happy as after 5 years of wait there will be a new member in the family. One pleasant Sunday they are about to leave to shop for the upcoming 'baby shower' next week and an unexpected incident happens. This incident changes Suhas and Sneha's life drastically, they not only face the trauma of losing their unborn child but also get trapped in sequence of unexpected and uncontrollable events.

CITATION:

An insightful portrayal of a woman finding courage to fight her demons.

विशेष उल्लेख | Special Mention

Swapnil Vasant Kapure

Swapnil comes from a small village, Parola from Jalgaon district, Maharastra. Right from his school days, he actively participated in Theatre/Cultural Activities, which drew him towards the passionate art of filmmaking. After completing B.Sc in Chemistry, he did is Masters in Communication Studies from Pune Unvirsity, where he was introduced to the film medium. He later went onto to study at FTII also. He as worked on regional Marathi feature films like LOOSE CONTROL, OLI KI SUKI, SALAAM, and TUHYA DHARM KONCHA? as an Associate Director & Chief Assistant Director.

स्वप्निल महाराष्ट्र के जलगांव जिले के पारोला नाम के एक छोटे से गांव से आते हैं। अपने स्कूल के दिनों से, वे थियेटर, सांस्कृतिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग ले रहे हैं, जिसकी वजह से वे फिल्म निर्माण की भावुक कला की ओर आकर्षित हुए। रसायन विज्ञान में बीएससी करने के बाद, उन्होंने पुणे यूनिवर्सिटी से संचार में स्नातकोत्तर किया। उसके बाद वे एफटीआईआई में भी अध्ययन करने गए। उन्होंने मराठी फीचर फिल्मों जैसे लूज कंट्रोल, ओली की सुकी, सलाम, और तुह्या धरम कोंछा? में सहायक निर्देशक और मुख्य सहायक निर्देशक के रूप में कार्य किया है।

सिनेमा पर सर्वोत्तम लेखन
BEST WRITING ON CINEMA

65TH

राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार 2017

National Film Awards 2017

पुस्तकों, लेखों एवं समीक्षा के माध्यम से सिनेमा का एक कला के रूप में मूल्यांकन करने के लिए यह पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

The awards aim at encouraging study and appreciation of cinema as an art form and dissemination of information and critical appreciation of this art form through publication of books, articles, reviews etc.

सिनेमा पर सर्वोत्तम पुस्तक
Best Book on Cinema

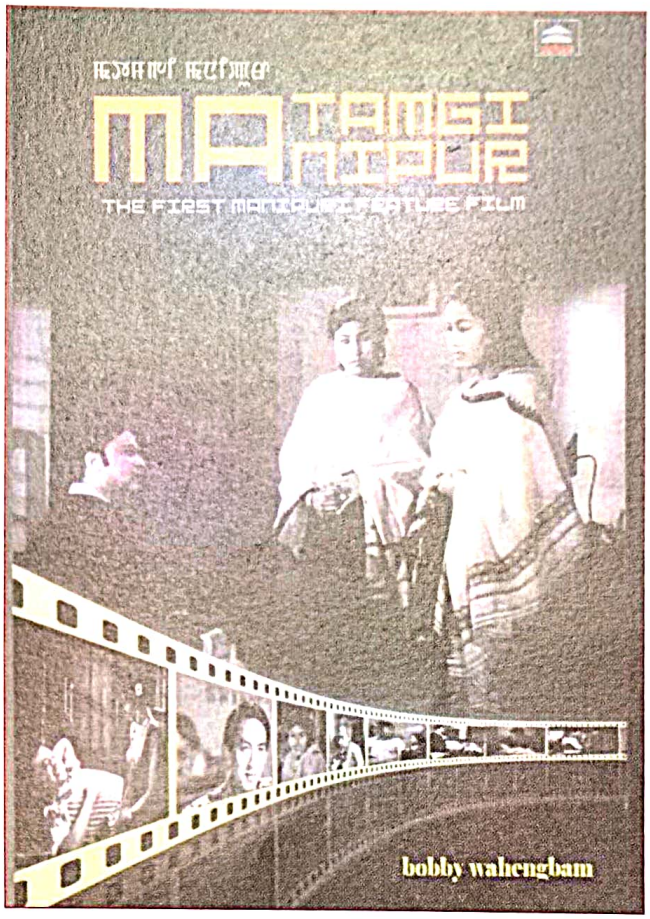

मतमगी मणिपुर –
द फर्स्ट मणिपुरी फीचर फिल्म
Matamgi Manipur -
The first Manipuri Feature Film

Swarna Kamal ₹75000/-

Author: Bobby Wahengbam
Publisher: Angomningthou Preservation & Documentation

प्रशस्ति :

Bobby Wahengbam's book Matmagi Manipur-The first Manipuri Feature Film provides a vivid account of the socio-political scenario in which Manipur regional cinema was born. The book denotes a compassionate account of the dreams, challenges, preparation, execution and success of the team involved. The critical analysis of the film makes it more praiseworthy and insightful.

बॉबी वेंगबम की पुस्तक मटमागी मणिपुर– द फीचर मणिपुरी फीचर फिल्म सामाजिक–राजनीतिक परिदृश्य का एक स्पष्ट विवरण प्रदान करती है, जिससे मणिपुर क्षेत्रीय सिनेमा का जन्म हुआ था। इस किताब में फिल्म की टीम की सपने, चुनौतियों, तैयारी, निष्पादन और सफलता को एक करुणामय रुप में दर्शाया गया है। फिल्म का महत्वपूर्ण विश्लेषण इसे अधिक सराहनीय और अंतर्दृष्टि बनाता है।

CITATION:

लेखक परिचय | About the Author

Bobby Wahengbam

Bobby Wahengbam known as Wahengbam Khemananda Singh obtained his Masters degree from the University of Bombay and a Diploma in Film Production at XIC, Mumbai. He has also done the Film Appreciation (FTII, Pune) and has also assisted Gyan Correa, Sanjay Talreja, Lancha and Jahnu Barua in their projects. He has become a regular columnist for the People's Chronicle, English daily, writing extensively on cinema every Sunday for more than four years. He had critically discussed good films like Kairee, Vaanaprastham, The Good Road, Kothanodi, Tree Tongues in Tripura among others.

वहेंगबम खेमानंद सिंह के नाम से प्रसिद्ध बॉबी वहेंगबम ने बॉम्बे विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर करने के साथ एक्सआईसी, मुंबई से फिल्म निर्माण में डिप्लोमा हासिल किया है। साथ ही उन्होंने एफटीआईआई पुणे से फिल्म एप्रीसिएशन कोर्स भी किया है। फिल्मी करियर में वे ज्ञान कोरिआ, संजय तलरेजा, लांछा और जाहनु बरुआ के साथ भी कई फिल्मों में सहयोग कर चुके हैं। वे पिछले चार सालों से अंग्रेजी दैनिक अखबार पीपुल्स क्रॉनिकल में नियमित रूप से हर रविवार को सिनेमा पर लेख लिख रहे हैं। उन्होंने फिल्म कैरी, वानप्रस्थम, द गुड रोड, कोठानोडी, वृक्ष जीभ जैसी अच्छी फिल्मों के बारे में चर्चा की है।

Angomningthou Preservation & Documentation

Angomningthou Preservation and Documentation with its office at Naoremthong, Imphal West, Manipur, have been publishing books in English, Manipuri (Bangali) and Manipuri (Meitei Mayek) scripts covering mostly subjects on arts, culture and literature for the last five years. Books entitled 'Pena', and 'Lamkoi Wari' penned by Dr. Makhonmani Mongsaba are some of the distinguished works published by the firm.

नाओमिंगथोंग, इम्फाल वेस्ट, मणिपुर में अपने कार्यालय के साथ एंगोमिंगथौ संरक्षण और दस्तावेजीकरण, पिछले पांच वर्षों से कला, संस्कृति और साहित्य पर ज्यादातर विषयों को कवर करने वाली अंग्रेजी, मणिपुरी (बंगाली) और मणिपुरी (मीतेई मायेक) स्क्रिप्ट में किताबें प्रकाशित कर रहे हैं। डॉ माखोनमनी मोंगसाबा द्वारा लिखे गए 'पेना' और 'म्कोई वारी' नामक किताबें फर्म द्वारा प्रकाशित कुछ विशिष्ट काम हैं।

सर्वोत्तम फ़िल्म समीक्षक
Best Critic on Cinema

Swarna Kamal ₹75000/-

प्रशस्ति :

Giridhar Jha has a keen eye on current cinema trends. In lucid and simple English language, he writes about both popular and serious cinema with equal command. His writings cover vast horizon of Hindi cinema with authenticity and originality.
गिरिधर झा की मौजूदा सिनेमा प्रवृत्तियों पर गहरी नजर रखते हैं। वे साधारण अंग्रेजी भाषा में, लोकप्रिय और गंभीर सिनेमा दोनों पर बखूबी लिखते हैं। उनके लेखन में प्रामाणिकता और मौलिकता के साथ हिंदी सिनेमा का विशाल क्षितिज शामिल है।

CITATION:

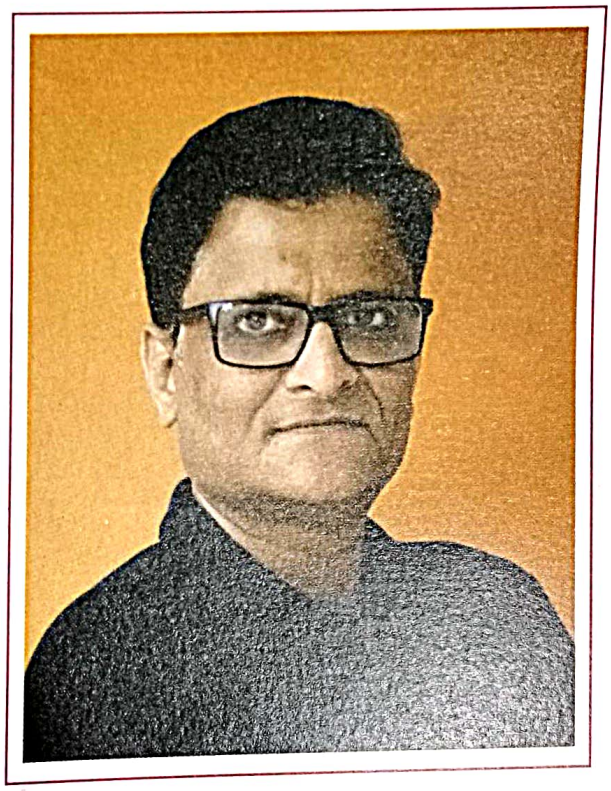

Giridhar Jha

Giridhar Jha is a veteran film critic with an experience of over 27 years in the media industry. In his long career, he has covered Indian cinema extensively for various national publications. At present, he is working as a Senior Editor with the New Delhi-based weekly news magazine, Outlook where he has been writing regularly on cinema for both English and Hindi editions. Prior to joining Outlook, he had a long stint with the India Today Group where he wrote a widely-read column, 'Patna Durbar' for its daily newspaper, Mail Today. Jha started his career at the Patna edition of Hindustan Times, way back in 1991 where he wrote film reviews and two columns on cinema, 'Talk of Tinsel Town' and 'Bollywood Bonanza' in the Sunday magazine of the newspaper for several years. Apart from cinema, he has also been writing on diverse subjects, including politics, sports, art and culture with special emphasis on human interest stories. He is also a film script writer. One of his short stories, Love Defiled is part of the English textbook prescribed for Class X students of the State government-run Bihar School Examination Board. As of now, he is writing a book each on Indian cinema and Bihar politics.

गिरिधर झा एक अनुभवी फिल्म आलोचक हैं, जिन्हें मीडिया जगत में करीब 27 साल से अधिक सालों का अनुभव है। अपने करियर में उन्होंने विभिन्न राष्ट्रीय प्रकाशनों में बड़े पैमाने पर भारतीय सिनेमा पर कई लेख लिखे हैं। वर्तमान में, वे नई दिल्ली स्थित साप्ताहिक समाचार पत्रिका आउटलुक में एक वरिष्ठ संपादक के रूप में काम कर रहे हैं और अंग्रेजी–हिंदी दोनों भाषाओं में नियमित रूप से सिनेमा पर लिख रहे हैं। आउटलुक में जाने से पहले उन्होंने कई मीडिया संस्थानों में काम किया है, जिसमें इंडिया टुडे, श्पटना दरबारश, मेल टुडे, हिंदुस्तान टाइम्स आदि शामिल है। सिनेमा के अलावा उन्होंने राजनीति, खेल, कला और संस्कृति सहित मानव हित कहानियों पर लेखन कार्य किया है। वे एक फिल्म पटकथा लेखक भी हैं। उनकी छोटी कहानियों में से एक, लव डिफिल्ड है। अब वे भारतीय सिनेमा और बिहार की राजनीति पर अलग अलग किताब लिख रहे हैं।

विशेष उल्लेख
Special Mention

प्रशस्ति पत्र | Certificate

प्रशस्ति :

Sunil Mishr's articles on cinema, written in eloquent Hindi, are delightful readings ranging from biography of an individual to critical analysis of the films. His insightful writings on varied subjects of Indian cinema are useful for all cine lovers.
सिनेमा पर हिंदी में लिखे गए सुनील मिश्र के लेखों में फिल्मों का महत्वपूर्ण विश्लेषण और किसी व्यक्ति की जीवनी आदि शामिल है। भारतीय सिनेमा के विभिन्न विषयों पर उनके अंतर्दृष्टिपूर्ण लेख सभी सिने प्रेमियों के लिए उपयोगी हैं।

CITATION:

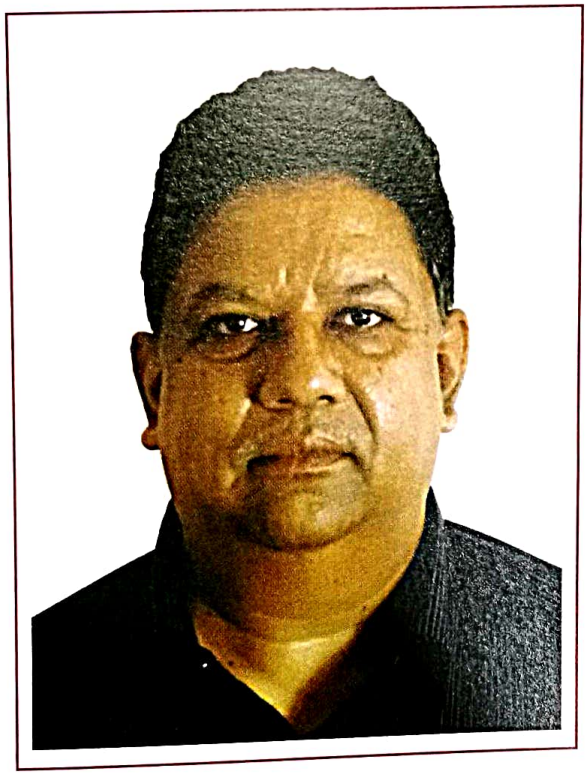

Sunil Mishr

Sunil Mishr has been doing creative writing for the last 25 years. He has extensively written analytical and critical articles on cinema related topics in Hindi and he is regarded for his writings in the patrika, nai duniya and many other newspapers. He has done interviews of numerous personalities throughout his career. A decade ago, he also published a book on Amitabh Bachchan. He has written articles in almost all the major magazines of India including India Today, Outlook, Dharmayuga, Madhuri, Film Fair, Tehelka, Jansatta, Navbharat Times, Hindustan, Amar Ujala, Dainik Bhaskar and Dainik Jagran. He has created a series of special talks, combination of interviews, cinematic programs for AIR, Doordarshan etc. He has also been honored with several state and national awards for his writings on Indian cinema.

सुनील मिश्र विगत 25 वर्षों से सृजनात्मक लेखन कार्य कर रहे हैं। विशेष रुप से उन्होंने हिंदी में सिनेमा संबंधी विषयों पर विश्लेषात्मक और गंभीर लेख लिखे है और वे पत्रिका, नई दुनिया, पीपुल्स समाचार अखबारों में सिनेमा स्तम्भ के लिए सुपरिचित हैं। वे अपने करियर में फिल्म जगत की कई दिग्गज हस्तियों का साक्षात्कार प्रकाशित कर चुके हैं। एक दशक पहले उन्होंने अमिताभ बच्चन पर एक किताब भी प्रकाशित की थी। उन्होंने देश की प्रायरू सभी बड़ी पत्रिकाओं में लेख लिखे हैं, जिसमें इंडिया टुडे, आउटलुक, धर्मयुग, माधुरी, फिल्म फेयर, तहलका, जनसत्ता, नवभारत टाइम्स, हिंदुस्तान, अमर उजाला, दैनिक भास्कर और दैनिक जागरण आदि शामिल है। वे आकाशवाणी, दूरदर्शन के लिए विशेष वार्ताओं का संयोजन, साक्षात्कारों का संयोजन, सिनेमा विषयक कार्यक्रमों का निर्माण कर चुके हैं। उन्हें सिनेमा में लेखन के लिए कई पुरस्कारों से सम्मानित भी किया जा चुका है।

फ़िल्म अनुकूल प्रदेश पुरस्कार
FILM FRIENDLY STATE AWARD

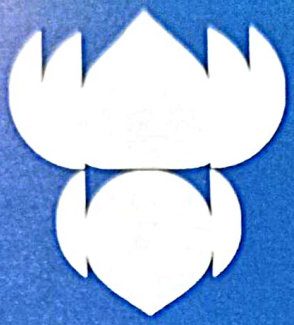

65TH
राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार 2017
National Film Awards 2017

राज्य सरकार द्वारा सिनेमा गतिविधियों और प्रमोशन के लिए समर्पित प्रयास, जो भारतीय सिनेमा के संवर्धन के लिए सकारात्मक माहौल बनाए, 'फ़िल्म अनुकूल राज्य' पुरस्कार के योग्य होगा।

A state government that makes dedicated effort in the direction of facilitating film shootings and in creating a conducive environment towards promotion of Indian Cinema shall be eligible for the award for 'Most Film Friendly State'

फ़िल्म अनुकूल प्रदेश पुरस्कार
Film Friendly State Award

Madhya Pradesh
मध्य प्रदेश

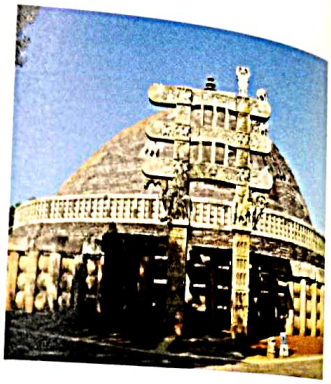

Most Film Friendly State
सर्वोत्तम फ़िल्म अनुकूल राज्य

रजत कमल एवं प्रशस्ति पत्र
Rajat Kamal & Certificate

The heart of Incredible India

प्रशस्ति | Citation

Most Film Friendly State to the State of Madhya Pradesh for its efforts towards easing filming in the State by creating a well-structured website, film friendly infrastructure, offering incentives, maintaining databases, undertaking marketing and promotional initiatives. Madhya Pradesh also received positive feedback from established filmmakers who have shot there. The efforts taken by the State to present their case for the Awards were also appreciated.

फिल्मांकन को आसान बनाने के प्रयास में एक अच्छी तरह से संयोजित वेबसाइट बनाने, फिल्मों के अनुकूल बुनियादी ढांचा तैयार करने, प्रोत्साहन प्रदान करने, डेटाबेस बनाए रखने, विपणन और प्रचार संबंधी कार्य के लिए मध्य प्रदेश राज्य को फिल्म अनुकूल राज्य पुरस्कार। मध्य प्रदेश को उन दिग्गज फिल्म निर्माताओं द्वारा सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली, जिन्होंने वहां शूटिंग की है। पुरस्कार के लिए अपना आवेदन भेजने के प्रयासों की भी सराहना की गई।

Uttarakhand
उत्तराखंड

Special Mention
विशेष उल्लेख

प्रशस्ति पत्र
Certificate

उत्तराखंड शासन

प्रशस्ति | Citation

To recognize the efforts made by the State of Uttarakhand towards creating a film friendly environment. Thus, the Jury recommends that State of Uttarakhand should be given a Special Mention Certificate.

फिल्म अनुकूल माहौल बनाने की दिशा में उत्तराखंड राज्य द्वारा किए गए प्रयासों को मान्यता प्राप्त प्रदान करने के लिए। इसलिए जूरी ने उत्तराखंड राज्य को विशेष उल्लेख प्रमाणपत्र दिए जाने की सिफारिश की है।